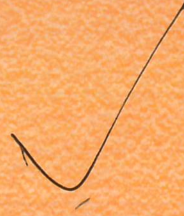
प्रतिमान



सम्पादक

अशोक

प्रतिमान

सम्पादक
अशोक

PRATIMAN : A BOOK OF LITERARY CRITICISM

प्रकाशक
प्रतिमान
राधाकृष्ण कुंज
सी.पी. ठाकुर पथ
शिवपुरी, पटना-23

संस्करण
पहिल, 2013 इ.

पुस्तक प्राप्ति स्थान
अशोक, सचिव, प्रतिमान
राधाकृष्ण कुंज
सी.पी. ठाकुर पथ
शिवपुरी, पटना-23
मो०-8986269001

मूल्य : 400/- (चारि सय टाका)

मुद्रक :
सरस्वती प्रेस, बोरिंग कैनाल रोड, पटना
मो०-9304625963, 9334601243

अनुक्रम

■

आयोजन

वर्ष 2005 मे तीन सितम्बर केँ हमरालोकनि ई निर्णय लेने रही जे रमानाथ झा (जन्म 21 सितम्बर 1906) काशीकान्त मिश्र 'मधुप' (जन्म 02 अक्टूबर 1906) आ कांचीनाथ झा 'किरण' (जन्म 01 दिसम्बर 1906)क जन्म शताब्दी मनाओल जाय। से समारोह रमानाथ झाक मार्च-अप्रील 2006 मे, मधुपजीक अगस्त-सितम्बर 2006 मे आ किरणजीक नवम्बर-दिसम्बर 2006 मे हो। ओहि अवसर पर दू दिनक संगोष्ठी हुअय। दू दिना संगोष्ठी मे पहिल दिन पहिल सत्र मे उद्घाटन ओ ओहि साहित्यकारक रचनाक पाठ हुअय। दोसर सत्र मे लिखित आलेख तीनटा रहय जाहि मे एक मूल आलेख आ दू टा विमर्श आलेख हुअय। संगहि संगोष्ठी मे उपस्थित प्रतिनिधिलोकनिक बीच सँ जिज्ञासा आ विमर्श हुअय। विश्रामक बाद तेसर सत्र मे साहित्यकारक रचना पर आधारित आडियो ओ भिडियो (दृश्य-श्रव्य) कार्यक्रम हो। दोसर दिनक संगोष्ठी मे दू सत्र रहय। दूनू सत्र मे एक मूल आलेख ओ ताहि पर दूटा विमर्श आलेख पढ़ल जाय। ओहि पर जिज्ञासा ओ विचार-विमर्श हो। अन्त मे समापन भाषण हो। दू दिना संगोष्ठी मे साहित्यकारक व्यक्तित्व ओ कृतित्व पर फोल्डर, फोटो अलबम, पुस्तक-प्रदर्शनी ओ साहित्यकारक नव प्रकाशित पोथीक लोकार्पण आदिक ओरिआओन कयल जाय। एक स्मारिका सेहो ओहि अवसर पर निकलय। आयोजन लेल एक संस्थाक गठन कयल गेल आ तकर नाम 'प्रतिमान' राखल गेल। संस्थाक अध्यक्ष राजमोहन झा, कोषाध्यक्ष नरेन्द्र झा आ सचिव हम भेलहुँ। संगोष्ठीक स्वरूप, विषय आ वक्तालोकनिक निर्धारण हेतु बैसक भेल। निर्धारणक उपरान्त सभके पत्र देल गेल। पत्र मे कार्यक्रमक उद्देश्य, विषयक अवधारणा तथा वक्ता सँ अपेक्षा पर विस्तार सँ लिखल गेल। कहल गेल जे एहि तीन साहित्यकारक जन्म शताब्दी मनेबाक उद्देश्य मात्र हुनकर स्मृति के जगायब तथा जोगायब नहि होयत, वर्तमान मे हुनकर प्रासंगिकता तथा भाषा-साहित्यक वर्तमान दशा केँ आँकब-परेखब सेहो होयत। पत्र मे फराक सँ विषयक अवधारणा तैयार क' संलग्न कयल गेल। वक्तालोकनि सँ एहिप्रकारेँ आलेख मे आयोजनक सन्दर्भ मे की अपेक्षित अछि सेहो कहल गेल छल। निर्धारित वक्तालोकनि मुदा ससमय आलेख नहि पठा सकला। हुनकालोकनि केँ स्मार

पत्र देलहुँ। एहि क्रम मे पूर्व निर्धारित समय पर कार्यक्रम आयोजित नहि भ' सकल। अन्ततः हमरालोकनि कें दू जुलाई 2006 कें ई निर्णय कर' पड़ल जे रमानाथ झा आ मधुपजीक जन्मशती समारोह संयुक्त रूपें मनाओल जाय। ई संगोष्ठी तीन दिनक हो। एहि प्रकारें 15 सँ 17 सितम्बर 2006 कें आचार्य रमानाथ झा आ कविचूड़ामणि काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क जन्मशतीक राष्ट्रीय संगोष्ठी ज्योतिरीश्वर नगर, दीप नारायण सिंह क्षेत्रीय सहकारी प्रबंध संस्थान, शास्त्री नगर, पटना मे आयोजित भेल।

ई आयोजन प्रतिमान, पटना आ भारतीय भाषा संस्थान, मैसूरक संयुक्त तत्वावधान मे भेल। गोष्ठीक उद्घाटन राजनीतिशास्त्रक विद्वान आ मैथिली साहित्य परिषद्क पूर्व प्रधान मंत्री डा. शंकर कुमार झा केलनि। उद्घाटन सत्रक अध्यक्ष रहथि कैलीफोर्निया मे अंग्रेजीक प्रोफेसर डा. प्रभाकर झा (आब स्वर्गीय)। ओ संगोष्ठी मे सक्रिय रूपें भाग लेलनि। विमर्श मे मनोयोगपूर्वक सहभागी भेला। आइ हुनकर स्मृतिएटा शेष अछि। तहिना डा. जयधारी सिंह सेहो आब नहि छथि। ओहि आयोजनक छह मासक भीतरे फरबरी 2007 मे हुनकर देहावसान भ' गेलनि। ओ 'रमानाथ झा आ मैथिली आलोचना' विषय सँ सम्बन्धित सत्रक अध्यक्षता केने रहथि। आइ त' मैथिलीक प्रसिद्ध गायक महेन्द्र झा सेहो नहि छथि जे ओहि आयोजन मे उद्बोधन गीत 'के थिक मैथिल, की थिक मिथिला' गौने छला। एम्हर प्रसिद्ध साहित्यकार मायानन्द मिश्र सेहो हमरासभकें छोड़ि क' चल गेला जे 'काशीकान्त मिश्र 'मधुपक महत्व' विषय सम्बन्धी सत्रक अध्यक्षता केने रहथि। एहि चारु मनीषीलोकनिक स्मृति के नमन करैत छी।

संगोष्ठीक सम्पूर्ण कार्यवाही टेप भेल रहय। उद्घाटक, विभिन्न सत्रक अध्यक्षलोकनि, विमर्श मे भाग लेनिहार विमर्शीलोकनि जे बजला सभ रेकार्ड भेल। आलेखक संग ओ सभ मौखिक भाषण एहि पोथी मे सम्मिलित कयल जा रहल अछि। ई काज जे सम्भव भ' सकल तकर एकमात्र श्रेय तारानन्द वियोगी कें छनि। दसटा कैसेट सँ ओ सभक भाषण कागज पर उतारलनि। एहि प्रकारक मेहनति ओ महत्वपूर्ण काज लेल वियोगी कें हम बधाई आ धन्यवाद दैत छियनि। एहि राष्ट्रीय संगोष्ठी मे दिल्ली सँ, दरभंगा, सहरसा, कोलकाता आ गाम सभसँ सहभागीलोकनि आयल रहथि। पटनोक बहुत साहित्य-प्रेमी सम्मिलित भेला। हिन्दीक विद्वान-साहित्यकार कर्मेन्दु शिशिर आ साहित्यकार-पत्रकार अरूण नारायणक सेहो सक्रिय सहभागिता रहल। अरूण नारायण त' अखबार मे एक रिपोर्ट सेहो आयोजनक मादे लिखलनि से एहि पोथी मे देल गेल अछि। तीन दिना संगोष्ठी मे कुल छह सत्र भेल रहय। उद्घाटन सत्र मे रमानाथ झाक महत्व पर मोहन भारद्वाज आ श्रीधरम्‌क आलेख रहय। तहिना दोसर सत्र मे मधुपक महत्व पर भीमनाथ झा आ रमण कुमार सिंहक आलेख छल। तेसर सत्र 'रमानाथ झा आ मैथिली आलोचना, विषय पर केन्द्रित छल। जाहि मे देवशंकर नवीन ओ तारानन्द वियोगीक आलेख रहय। ई तेसर सत्र संगोष्ठीक दोसर दिन 16 सितम्बर 2006 के भेल। ओही दिन चारिम सत्र 'रमानाथ झा आ मैथिली भाषा' विषय पर छल। जाहि मे आलेख रामलोचन ठाकुर आ विभूति आनन्दक रहय। सत्रक अध्यक्षता केने रहथि प्रसिद्ध समाजशास्त्री हेतुकर झा। तेसर दिन अर्थात् 17 सितम्बर कें दू सत्र 'मधुप आ मैथिली गीत' तथा 'मधुप आ मैथिली काव्य' विषय पर आधारित छल। 'मधुप आ मैथिली गीत' मे आलेख नवीन चौधरी आ नारायणजीक रहय आ अध्यक्षता केने रहथि प्रसिद्ध गीतकार ओ कवि रविन्द्र नाथ ठाकुर। अंतिम सत्र 'मधुप आ मैथिली काव्य' मे आलेख फूलचन्द्र मिश्र 'रमण' आ देवकान्त मिश्रक छल। अध्यक्षता केलनि पं. गोविन्द झा। समापन भाषण मोहन भारद्वाजक रहय। समारोहक अन्त मे अशोक कुमार मेहताक स्वर मे गाओल समुदाउन सभकें भावुक बना देलक। तीन दिना संगक बाद विछोह सभ के कचोट' लागल। एहि आयोजन मे विभिन्न विमर्शीलोकनिक सहभागिता सम्पूर्ण विमर्श के जेना जीवन्त बना देलक। प्रायः एतेक रोचक ओ ज्ञानवर्द्धक विमर्श लोक पहिने नहि देखने छल। एहि लेल सभ सहभागी धन्यवादक पात्र छथि। आयोजन मे नरेन्द्र झा, अग्निपुष्प, अजित कुमार आजाद, प्रमोद कुमार झाक मेहनति आ सक्रियता सदैव मोन रखबा जोगर अछि। अग्निपुष्प एहि अवसर पर एक स्मारिकाक सेहो सम्पादन केलनि जे लोकार्पित भेल।

सभक इच्छा रहय जे आयोजन मे पठित आलेख, भाषण, विमर्श कें पोथीक रूप मे प्रकाशित कयल जाय। मुदा एहि मे बहुत विलम्ब भेल। सात वर्ष भ' गेल। मुदा आइ प्रसन्नता अछि जे ई पोथी प्रकाशित भ' रहल अछि। कांची नाथ झा 'किरण'क जन्मशती पर आयोजन 25-26 नवम्बर 2006 के सम्पन्न भेल रहय। ओकरो कार्यवाही टेप करबाक व्यवस्था छल। मुदा बिजली आदिक गड़बड़ीक कारणे से भ' नहि सकल। किछु भेल किछु नहि भेल। तें ओहि आयोजन मे पठित आलेखटा प्रकाशित भेल अछि। 'किरण' नाम सँ प्रकाशित ओहि पोथीक सम्पादक छथि मोहन भारद्वाज।

एहि पोथीक प्रकाशनक अवसर पर जखन सम्पूर्ण आयोजनक परिकल्पना आ कार्यान्यनक सम्बन्ध मे विचार करैत छी त' लगैत अछि जे, हमरालोकनि जेना सोचलहुँ

से सभटा ओहिना भ' नहि सकल। तथापि जे भेल से कम नहि अछि। सार्थक ओ उपयोगी अछि। एकर आलोक मे काज के आगू बढ़ाओल जा सकैत अछि। ई संगोष्ठी एहि रूपें महत्वपूर्ण रहल जे एहि मे खुलि क' जीवन्त वाद-विवाद भेल। हमरालोकनि संवाद दिस आगू बढ़लहुँ। लगैत अछि जे खाली सोचला सँ नहि होइत छैक, कयला सँ होइत छैक। संवाद लेल वाद-विवाद कर' पड़त। से दिमाग आ हृदय खोलि क' कर' पड़त। एहि प्रक्रिया सँ बिना गुजरने समाज आ साहित्यक सम्बन्ध मे श्रेयस आ सार्थक संवाद धरि पहुँचब सम्भव नहि थिक।

रमानाथ झा, काशीकान्त मिश्र 'मधुप' आ कांचीनाथ झा 'किरण'क जन्मशतीक अवसर पर भेल संगोष्ठी मे पठित आलेख आ विमर्श सँ ई स्पष्ट लगैत अछि जे मिथिला ओ मैथिलीक प्रति एहि तीनू मनीषीलोकनिक जे जुड़ाओ ओ लगाओ रहनि जे संलग्नता ओ प्रतिबद्धता रहनि से अद्भुत छल। मतभेदक ओ दूरीक अछैत ई स्वीकारल जेबाक चाही जे भूमि आ भाषाक प्रति ओहेन जुड़ाओ ओ लगाओ हमरालोकनिक लेल बहुते आवश्यक अछि। ओहेन गहन निष्ठा आ सक्रियता जँ हमरा सभ मे आबि सकय आ मैथिली भाषा ओ साहित्य केँ वर्त्तमानक अपेक्षाक अनुरूप आगू बढ़ा सकी त' से हुनकालोकनिक प्रति यथार्थ कृतज्ञताज्ञापन होयत।

हम प्रतिमानक दिस सँ ओहि राष्ट्रीय संगोष्ठी मे सहभागिता लेल सभक प्रति आभार व्यक्त करैत छी। भारतीय भाषा संस्थान, मैसूरक प्रति सेहो आभार जकर आर्थिक सहायता सँ रमानाथ झा आ मधुपक संयुक्त जन्मशती आयोजन सम्भव भ' सकल। संगहि किरणजीक जन्मशती आयोजन मे आर्थिक सहायता लेल किरणजीक पुत्र केशरीनाथ झा तथा पौत्र वसंत कुमार झाक प्रति सेहो आभार व्यक्त करैत छी

एहि पोथीक प्रकाशनक अवसर पर फेर सँ सभ किछु मोन पड़ि रहल अछि। एहन आयोजन फेर हमरालोकनि क' सकब की नहि, कहल नहि जा सकैत अछि। मुदा इच्छा त' अछिए जे काज आगू बढ़य। एहन आयोजन फेर हुअय। आयोजन सभ आर जीवन्त ओ सार्थक हुअय। समाज लेल उपयोगी हो।

पोथी प्रकाशन मे विलम्ब त' भेल मुदा आब छपि गेल अछि। आशा अछि, पाठक एकर स्वागत करता।

पटना — अशोक
14-12-2013

उद्घाटन भाषण

शंकर कुमार झा

रमानाथ बाबू आ मधुपजी सँ हमरा बहुत दिन धरि सम्पर्क रहल। यैह कारण रहल हेतनि हमरा आग्रह करबा मे, आ हम बुझै छी जे एही बहाने हम एहि दुनू मनीषी केँ, जे मिथिलाक त्रिदेव मे सँ विभूतिद्वय छथि, तनिका हम अपन श्रद्धा सुमन अर्पित करैत छियनि।

जेना अपने केँ बूझल अछि, 1906 ई० जगज्जननीक कृपा सँ मिथिला लेल बड़ उर्वर छल। त्रिदेवक उत्पति भेल। मिथिला आन्दोलनक आधारस्तंभ किरणजी, मैथिली केँ वर्त्तमान स्तर धरि पहुँचेबा मे महत्वपूर्ण भूमिका निमाहनिहार आचार्य रमानाथ झाजी आ लोक कवि मधुपजी-एहि त्रिदेव मे सँ दू गोटेक आइ जन्मशती मना रहल छी। आ, भने हमरालोकनिक संख्या आइ कम हो, लेकिन जाहि तरहक लोक, जाहि क्वालिटी लोक एहि ठाम उपस्थित छी, ताहि सँ बूझि पड़ैत अछि जे हिनकालोकनिक योगदान आ अवदान व्यर्थ नहि गेलनि।

रमानाथ बाबूक प्रसंग मे हमरा आइंस्टीनक एकटा वाक्य, जे ओ महात्मा गांधीक सम्बन्ध मे कहने छलाह, मोन पड़ैए जे एहन हाड़-मांस के बनल आदमी, साधारण व्यक्ति एत्तेक असाधारण कोना भ' सकैत अछि। रमानाथो बाबूक सम्बन्ध मे हमरा लगैत अछि, अपने सोचियौ, जे मधेपुर स्कूल मे शिक्षकक कार्य, राज लाइब्रेरी मे पुस्तकाध्यक्षक काज, आ सी.एम. कॉलेज मे मात्र लेक्चररक काज और, एहन आर्थिक सम्पन्नताक अभाव मे, एत्तेक रास काज, एत्तेक उच्च स्तरक काज, गुणात्मक आ मौलिक काज, गवेषणात्मक काज ओ कोना केलनि! ई आश्चर्यक विषय लगै छै। रमानाथ बाबूक सम्बन्ध मे अपने आर बेसी बात आगां सुनब—हम एतबे कहि सकै छी जे आइ जे मैथिलीक स्थान छैक— ओ नहि रहितै जँ रमानाथ बाबूक रचना-संसार प्रकाश मे नहि आयल रहैत। रमानाथ बाबूक ई देन छियनि जे ओ शोध क'क' गवेषणा

क'क' पुरातत्त्वक सहायता सँ मैथिलीक प्राचीन गौरव केँ निकालि-निकालि क' प्रकाश मे आनि क' मैथिली केँ अपन स्थान दियौलनि। एकटा छोट उदाहरण। गोविन्द दास केँ बंगाली सब अप्पन कहै छलनि। रमानाथ बाबू एकरा, अनेको पोथी अनेको प्रमाण सँ सिद्ध क' देल जे नहि, ओ मैथिल छलाह-श्रोत्रिय ब्राह्मण छलाह। एहन कतेको उदाहरण छै।

रमानाथ बाबूक संग रहबाक हमरा सौभाग्य भेल अछि। दू दशक धरि हुनका संग हम सी.एम. कॉलेज मे काज केने छी। ओ मैथिली सँ संबंधित कोनो विषयक प्रति जाहि मे नव बात भेटबाक संभावना हो, तते उत्सुक रहै छलाह जे ओ जी-जान सँ ओहि मे लागि जाइ छलाह। पंडौल लगक भगीरथपुरक सम्बन्ध मे एक बेर हुनका पता चललनि जे ओतय किछु पुरातात्त्विक महत्त्वक वस्तु छै, तँ ओ, हमरालोकनि मे सँ किछु गोटे केँ प्रोत्साहित क' क' भगीरथपुर ल' गेलाह। ओहि ठामक सम्बन्ध मे सी.एम. कॉलेजक मैग्जिन मे छपबो कयल छलै-आब एखन ओ स्थान कोन अवस्था मे छै, से हम नहि कहब- लेकिन रमानाथ बाबूक अप्पन प्रयास सँ ओ स्थान प्रकाश मे एलै। हुनकर ई बहुत पैघ गुण छलनि। प्राचीनक गौरव केँ निकालि क' नवीन सन्दर्भ मे लोक केँ बुझेबा मे ओ आगू अबै छलाह। केवल प्राचीनेक ओ नहि केलनि। नवीन पीढ़ीक जे महत्त्वपूर्णलोक छल, जकर योगदान छलै साहित्य मे, समाज मे, तकरो बारे मे ओ बहुत किछु लिखलनि जेना आदित्यनाथ बाबूक जीवनी ओ लिखलनि आ तकर संगे-संग वाचस्पति मिश्रक, गंगेशक परिचयपत्र सेहो प्रस्तुत केलनि। आ एहू सब सँ बढ़ि क' हुनकर जे योगदान छनि जे ओ एक एहन व्यक्ति छलाह जे एहि बात लेल हरदम चिन्तित रहै छला जे मैथिली एक रूपेँ लिखल जाय, बाजल जाय, एकरूपता होइ मैथिलीक शैली मे। तेँ, अपने, अपन सहयोगी संगे-तंत्रनाथ बाबू, ईशनाथ बाबू, सुमन जी संगे बहुत बेर ओ चेष्टा केलनि जे एकर एक निश्चित रूप स्थापित कएल जाय। एहि मे हुनका सफलता नहि भेटलनि, लेकिन हुनकर ई भगीरथ प्रयास इतिहास मे अमर रहत।

तहिना, पंजी व्यवस्था सेहो हुनके देन छियनि। पंजीकार रहै छलाहे, बहुत दिन सँ कार्यरत छलाहे, लेकिन पंजीव्यवस्थाक प्रमाणिकता, एकर वैज्ञानिकता, सार्थकता छैक-तकर लोक केँ ज्ञान नहि छलैक। रमानाथ बाबू अपन शोधक

क्रममे ई देखलनि जे पंजी व्यवस्था केँ जँ ठीक सँ प्रकाश मे आनल जाय तँ ओहि सँ पाँच सय-सात सय बर्खक मिथिलाक इतिहास के, सामाजिक आ आर्थिक इतिहास के, नव रूप, वैज्ञानिक रूप देल जा सकैए। आ ताहि लेल ओ बहुत परिश्रम केलनि। महाराज दरभंगा हुनका सहायता सेहो केलखिन आ ई हुनके देन छनि। पंजी व्यवस्था पर प्रामाणिक ग्रंथ हुनके छनि। ई आइ भिन्न बात थिक जे किछु गोटे हुनकर विचार सँ मतभेद रखै छथि। बहुत प्रसिद्ध विद्वान पं० गोविन्दबाबू, हुनकर विचार सँ असहमत छथि। हाल मे हुनकर एकटा लेख हम पढ़लहुँ, जाहि मे ओ रमानाथ बाबूक पंजी-सम्बन्धी विचारक खंडन केने छथिन। लेकिन, ई मान' पड़त जे रमानाथे बाबू पंजीक वैज्ञानिकता, सार्थकता, प्रामाणिकता आ इतिहासलेखन मे ओकर महत्त्वक विषय केँ प्रकाश मे अनलनि। एतबे नहि, हुनकर योगदान हम ईहो मानै छी जे ओ अपने तँ लिखबे केलनि, हमरा मोन पड़ैए जे प्रो० अमरनाथ झा, सरिसव पाहीक, अपन एक प्रकाशित पुस्तक मे, रमानाथ बाबूक एकतीस गोट किताबक चर्चा केलनि अछि। तं, हमर ई कहबाक अर्थ नहि जे 31टा किताब ओ लिखलनि तें बड़ पैघ लोक छलाह, ई नहि कोनो बात भेलै, एक्को टा किताब, एक्को टा कहानी लिखि क' लोक अमर भ' जाइए- हम कह' चाहै छी जे बहुत लिखलनि तें नहि, कोन तरहक लिखलनि-जेना साहित्यक इतिहास, भाषाक इतिहास आदि संबंधित आ विद्यापतिक सम्बन्ध मे गोट दसेक पोथी जे ओ लिखलनि-साहित्य अकादेमीक मोनोग्राफ सँ ल'क', हिन्दी मे, अंग्रेजी मे, मैथिली मे-ओहि मे जाहि तरहक ओ सामग्री देलखिन, जे दृष्टिकोण देलखिन-से प्राय: विद्यापति-साहित्य मे आर कतहु नहि भेटत। हमरा, अंग्रेजीक प्रसिद्ध विद्वान प्रो० दामोदर ठाकुर, एकठाम कहलनि आ ओ लिखनहु छथि जे विद्यापतिक एहन कोनो पद नहि, ओझरायल सँ ओझरायल, जकर अर्थ बुझबाक लेल जहिया कहियो जाइ छलहुँ, रमानाथ बाबू टा छलाह जे लालित्यपूर्ण ढंग सँ ओकरा सोझरा क' अर्थ बुझा दै छलाह। ई हुनकर बड़ पैघ गुण छलनि, विद्यापति साहित्य तँ हुनका पूर्णत: धांगल छलनिहें। आ हम तँ कहब जे एहू सँ बढ़ि क' हुनक देन ई छलनि जे अनको ओ साहित्य लिखबा ले' प्रेरित केलनि। आइ ई ऑन रिकार्ड अछि जे मैथिलीक प्रसिद्ध विद्वान पं० गोविन्द झा आदि कतेको लोक स्वयं ई उल्लेख केलनि अछि रमानाथ बाबूक प्रेरणा सँ हम लिख' लगलहुँ। हुनक अनुज प्रो० तंत्रनाथ

झा, जे अपना-आप मे लिजेन्ड्री फिगर छथि मैथिलीक, सेहो लिखने छथि जे हम सिर्फ 'भाइ' के प्रेरणा सँ एहि क्षेत्र मे एलहुँ। अनकर कथा जाय दिय'। हम अप्पन बात कहै छी जे कतेक ओ प्रोत्साहित करै छलखिन साधारणो लोक सब केँ, हमरा मैथिली लिखबा मे संकोच होइ छलय, मुदा ओ हमरा, आ प्रो० हरिहर बाबू केँ बेर-बेर कहथि जे अहाँ हिन्दी मे लिखै छी, अंग्रेजी मे लिखै छी-मैथिली मे किए नहि लिखब? ओ ततेक प्रोत्साहित केलनि जे हम मैथिली मे एकटा लेख लिखलहुँ-'विश्वशान्तिक समस्या' उत्साहवर्द्धनक दुआरे रमानाथ बाबू ओकरा बी.ए. मे प्रेस्क्राइब क' देलखिन, कोर्स मे-आ लगले कोर्स मे आबि गेलहुँ। ई एकटा उदाहरण हम देलहुँ अछि जे हमरा सन अकिंचन लोक केँ सेहो मैथिली मे लिखबा लेल ओ कतेक प्रोत्साहन देलखिन! आर तेँ कतेको गोटा सँ कतेको चीज पर ओ लिखौलनि, तकर चर्चा नहि होअय। आ रिसर्च मे तँ हम कहि सकै छी जे हिस्ट्री, पॉलिटिकल साइन्स, इकनोमिक्स मे,-ओहि जमाना मे दरभंगा-मुजफ्फरपुर-पटना मे कतेको विद्वान एहन आयल हेताह जनिका ओ राज लाइब्रेरी मे कतेको विषयक ज्ञान आ जानकारी देने हेथिन, सब कथू हुनका ओ उपलब्ध करा देने हेथिन आ ताहि सँ हुनक पी-एच.डी.क काज पूर्ण भेल हेतनि। एहि सँ बेसी हम आब कतेक कहू? यात्रीजी जे हुनका बारे मे, अपन एकटा कविता मे लिखने छलखिन, तकरे पाँती सँ हम हुनका श्रद्धासुमन अर्पित करै छी-

सारस्वत सर मे हे मराल
हे साहित्यक उद्यानपाल
तुअ तेज पाबि मैथिलीक उत्फुल्ल कमल-नाल

मधुपजी, जे हुनक समकालीन छलखिन, ओहो अपन एकटा इन्टरव्यू मे, रमानाथ बाबूक बारे मे कहलखिन जे ओ मैथिलीक 'ऋषिकल्प' छलाह। एहि सँ बेसी हम हुनका सम्बन्ध मे की कहब? हम हुनका श्रद्धा-सुमन अर्पित करै छियनि।

मधुपजी मूलतः हमर ग्रामीण छलाह-कोइलख वासी, आ हमर टोलक छलाह। पारिवारिक सम्बन्ध सेहो छल। हमरा बाल्यकालक स्मृति अछि जे हमर उपनयन मे ओ आयल छलाह। आर, एखन हुनकर बालक सँ आइ हमरा भेंट

भेल। हमर किरायाक मकान मे, जकरा एस.के. झा लॉज कहै छलै-ओहि मे हुनकर बालक रहै छलखिन। अबै छलाह तँ मधुपजी भेंट-घांट करै छलाह। मधुपजी शत-प्रतिशत कवि छलाह। आपादमस्तक। हुनकर कवित्व केहन छलनि जे साधारणो पत्राचार मे ओ कवितेक व्यवहार करै छलाह। एक ठाम कतहु पढ़लहुँ जे परीक्षा मे अपन उत्तर सेहो ओ काव्ये मे लिखलखिन। लेकिन, हुनक महत्त्व कवि के रूप मे जे होइन, मैथिली मे हम बुझै छी जे ओ अपन गीतक द्वारा, गीति-काव्यक द्वारा, मैथिलीक बहुत उपकार केलखिन। जाहि जबाना मे, मिथिलाक लोकक आकर्षण मैथिली सँ हँटि क' हिन्दी दिस जाइ छलैए, फिल्मी गाना दिस जाइ छलैए- तकरा हँटेबाक लेल ओ लोकप्रिय फिल्मी धुन पर मैथिली गीत बनाब' लगला। ओ एहन सुन्दर संस्कारगीत सब बनौलनि, जे मैथिली गीत व्यवहार मे आबि गेल। ई हुनकर बड़ पैघ देन छियनि जें हिन्दीक चांगुर सँ मिथिलाक समाज केँ ओ बहार केलनि। मैथिली गीतक आकर्षण शक्ति सँ ओ लोक केँ प्रभावित केलनि। हम ई बात विशेष रूप सँ कह' चाहब जे आइ जे अधोगति भ' गेलैए मैथिली-गीतक, आइ देखै छी जे उपनयन-विवाह-द्विरागमन मे समेत हिन्दीक गीत होइ छै-ई जे आइ अधोगति भ' गेलैए-तकर अन्त हेबाक चाही। आ दोसर, भोजपुरी कैसेट तते बाजार मे आबि गेल छै जे मैथिली गीत पर अस्तित्वक संकट उपस्थित छै। मैथिलीक आजुक गीतकार लोकनि सँ हम विशेष अनुरोध करब जे मधुपजीक जे देन छनि, ओकरा स्मरण करैत, ओही तरहक गीत, ओही तरहक लोकप्रिय धुन बना क' एहि संकट सँ मुक्तिक उपाय करथु।

मधुपजी आ रमानाथ बाबू मे किछु अन्तर एहि ल'क' छनि जे रमानाथ बाबू एलीट वर्ग-अभिजन वर्ग के छलाह-आ, मधुपजी दुर्भाग्यवश निम्न-मध्यवर्गीय परिवारक हेबाक कारणे किछु आर्थिक विपन्नता मे रहलाह। साहित्य-साधना मे ओ रमानाथ बाबू जकाँ अपन स्वतंत्र विचार, कल्पनाशक्तिक भरपूर प्रयोग इच्छा रहितो नहि क' सकलाह। तेँ, हुनका बहुत ठाम आरोपित कयल जाइ छनि जे ओ सामन्त सभक चाकरी केलनि, खोसामद केलनि, महराज केँ खुशी करै लेल कोबरगीत लिखलनि, बनैली-रानी चन्द्रावती के चरित-गान गौलनि, लेकिन प्रायः ओ ई सब नहि करतथि जँ हुनका एहन

आर्थिक विपन्नता नहि रहितनि। सामाजिक आ आर्थिक परिस्थिति एहन छलैक जे ओ लाचार भ'क' अपन जीविकोपार्जन लेल अपन स्कूल कैँ मान्यता दियेबा ले' कोबरगीत आदि लिखलनि। कुमार गंगानन्द सिंह कैँ हुनका पत्र देबाक छलनि, कु० गंगानन्द सिंह कहलखिन जे महाराजक कोबर भ' रहलनिहें, ओहि मे जँ गीत लिखब तँ काज हएत–की करितथि बेचारे, गीत लिखलनि! पिताजीक आग्रह छलनि जे हमरा काशी कहुना पहुँचा दिय'–ओ खर्च अहीं बुते हएत। रानी साहिबाक सम्बन्ध मे किछु लिखि देबनि तँ ओ खर्च देतीह। रानी चन्द्रावतीक सम्बन्ध मे ओ लिखलनि तँ किछु पाइ भेटलनि। तँ, हम कहब जे परिस्थिति हुनकर एहन छलनिहें। ई हम एहि दुआरे कहि रहल छी जे बहुत लोकक एहन विचार देखै छी जे मधुपजी परम्परावादी छलाहे, केवल सामंतक आगू–पाछू करैत रहलाह– से बात नहि छै। हुनको मे यात्रीजी आ किरणजी जकाँ गरीबक प्रति करुणा–भाव छलनि, संवेदना छलनि। अंतर एतबे छलैए जे यात्रीजी क्रान्तिकारी छलाह, किरणजी क्रान्तिकारी छलाह, ओ लड़बाक आह्वान देलखिन, हम हारि नहि मानब, तों लड़, हम भीड़ब, हम सर्वहारा छी हम अहाँ कैँ द्वन्द्व मे हरायब–लेकिन मधुपजी से नहि छलाह। ओ मूलतः कवि छलाह, कवि-हृदय छलाह, कोमल आ करुणावान छलाह, आ अपनो तते टूटि गेल छलाह जे हुनका मे करुण रस भरि गेल छलनिहें। आ ई बहुत अस्वाभाविको नहि छै। करुण रस साहित्य मे प्रधान बनि क' रहलैए। से, मधुपजीक ई करुण–भाव अवश्य उल्लेखनीय अछि। ओ अपनो कनलाह, अनको कनौलखिन। युद्ध मे भिड़लाह नहि, ई तँ स्वभावगत दोख छलनिहें। एहि दोखक बाबवजूद मैथिली हुनक ऋणी रहत। एकर अतिरिक्त बहुतो गोटे कैँ प्रेरित क'क' ओ मैथिलीक क्षेत्र मे अनलनि, तकरो श्रेय हुनका छनि।

एहि दुनू गोटेक बहुत पैघ गुण छलनि जे रमानाथ बाबू आ मधुपजी, दुनू गोटे, सदैव सकारात्मक दृष्टिकोण रखैत छलाह। संकीर्णता सँ बहुत दूर छलाह। आ, मैथिली मे गोलैसीक जे कुप्रवृत्ति रहलैएँ तकरा सँ ऊपर छलाह। दुनू गोटेक दृष्टि बड़ा व्यापक छलनि। अपने सब कैँ प्रायः बुझले हएत जे रमानाथ बाबू देवघरक पंडा भवप्रीतानन्दक कविता सभकेँ अनूदित क'क' आ जोर द'क' कहलनि जे गंगाक दक्षिण मे, मुंगेर आ संथालपरगनाक भाषा सेहो मैथिलीए

छिऐक, ओकरा मैथिली नहि कहब अन्याय थिक। ओ भवप्रीतानन्द जी पर खूब लिखलनि। तहिना, मधुपजी सेहो, कतेक ठाम ई कहलनि आ लिखलनि जे जे मिथिला मे रहै छथि, सब मैथिल छथि। एहि मे कोनो भेदभाव नहि छै। क्षेत्रीय भाषा रूप कैँ मैथिली कहबा मे हुनका कहियो संकोच नहि भेलनि।

आइ जखन हमरालोकनि, एहि दुनू गोटेक जन्मशती मना रहल छियनि तँ उचित होयत जे हुनकालोकनिक जे अप्रकाशित रचना छनि तकरा पहिने प्रकाशमे आनी। मैथिली मे ई बड़ पैघ समस्या रहलैए। हमरा, भीम बाबूक पुस्तक सँ ई जानकारी भेटल जे जहिया मधुपजीक देहान्त भेलनि तहिया आठ टा पांडुलिपि अप्रकाशित छलनि। एहना मे हमर आग्रह जे ओ सब प्रकाशित होअय। तहिना, रमानाथ बाबूक सम्बन्ध मे सेहो सुनलहुँ-ए जे किछु अप्रकाशित छनि, ओ प्रकाश मे आबय। आ सब सँ पैघ बात जे आब जखन मैथिली कैँ अष्टम अनुसूची मे स्थान भेटि गेलैए–आर बेसी उत्तरदायित्व हमरालोकनिक भ' जाइए जे भारतीय भाषा सभ मे जे उत्कृष्ट साहित्य छैक–तकरा सभक समकक्ष हमर साहित्य हो। आ ताहि लेल अनुवाद बड़ आवश्यक छै। संयोग सँ, भारतीय भाषा संस्थानक सहयोग भेटल अछि- हम आग्रह करबनि जे सक्षम लोक सब अनुवाद कार्य मे लागथि। विभिन्न भारतीय भाषा-बंगला असमिया, कन्नड, मलयालम–सँ मैथिली मे उत्कृष्ट साहित्य अनूदित हो आ एतुक्का साहित्य ओहि सब भाषा मे सेहो आबय। एहि अवसर पर हमरालोकनि कैँ ई संकल्प लेबाक चाही।

■

रमानाथ झाक महत्त्व

मोहन भारद्वाज

रमानाथ झा मैथिली साहित्यक भावयित्री प्रतिभाक अपूर्व आ अनुपम रचनाकार छथि। मैथिली मे ज्योतिरीश्वर–विद्यापति सँ चन्दा झा धरि, कि तकर बादो, कविक कमी नहि रहय, मुदा भावकक घोर अभाव छल। अनुसन्धान–अनुशीलन कार्यक बीजांकुर चन्दा झाक समय मे भेल, तथापि रचनाक परीक्षण–समीक्षणक प्रति पूर्णतः समर्पित साहित्यकार एकोटा नहि भेलाह। रमानाथ झा पहिल लेखक छथि जे अनुसन्धान–आलोचना कें अपन लेखनक केन्द्र मे रखलनि। मैथिली साहित्य मे समीक्षा कें विधा–रूप मे स्थापित कयलनि। प्रतिष्ठा दिऔलनि।

ई काज ओहिना नहि भेल। रमानाथ झा मैथिली साहित्य आ साहित्यकारक खोज–खबरि कात–करौट सँ नहि लेलनि। हुनक उद्देश्य छलनि साहित्य मे निहित विशेषता कें रेखांकित एवं विकसित करब। एहि लेल ओ मैथिली परम्परा, मैथिल संस्कृति तथा मिथिलाक इतिहासक उपयोग कयलनि। उपयोग करबा सँ पूर्व ओहि सभ आधार–सामग्रीक रूपरेखा स्थिर कयलनि आ तखन समीक्षा–कर्म मे प्रवृत्त भेलाह। एहि प्रक्रिया मे हुनका लेल गंभीर आ व्यापक अध्ययनक आवश्यकता छलनि। संयोगवश दरभंगा–राजक अनुकूलता हुनका उपलब्ध रहनि। राज–पुस्तकालयक प्रकाशित–अप्रकाशित लिखित संसाधन तँ हुनका प्राप्त रहबे करनि, देश–विदेश मे राखल पांडुलिपि वा पुस्तक सेहो सुविधा सँ भेटि जाइन। तेँ हुनक अध्ययनक क्षेत्र आ ज्ञानक गाम्भीर्य क्रमशः बढ़ैत गेलनि। किन्तु, ताहि अनुपात मे ओ लिखि नहि सकलाह। लेखनक अनेक कार्यक्रम बनले रहि गेल, क्रियान्वित नहि भ' सकल। एतेक धरि जे साहित्य

अकादेमी सँ प्रकाश्य विद्यापति नामक पोथी कें ओ इच्छित रूप नहि द' सकलाह आ अन्ततः ओकर प्रकाशन जहिनाक तहिना भेल।

किन्तु एकर ई अर्थ नहि जे हुनक लेखन आकार मे झुझुआन अछि। ओ जतेक लिखि सकैत छलाह ततेक नहि लिखलनि, जे सभ लिखबाक योजना छलनि सेहो नहि लिखा सकलनि–ई सभ भिन्न बात भेल, मुदा ओ जतेक लिखि गेल छथि से एखनो मैथिली साहित्यकारक लेल प्रतिमान अछि। एहिठाम एक बिन्दु पर ध्यान देब आवश्यक अछि। रमानाथ झा कथा–कविता–उपन्यास सँ भिन्न प्रकारक वस्तु बेसी लिखलनि आ ओकर लेखन मे जाहि अनुशासनक पालन करब अपेक्षित छैक से ओ कयलनि। उदयन कथा आ वररुचि कथा हुनक प्रारम्भिक लेखन–कालक रचना थिक आ रमानाथ झाक रचना–संसार मे ओ अपवादे जकाँ अछि। रमानाथ झा जानल जाइत छथि समीक्षक आ सम्पादक रूप मे, निबन्धकार आ अनुवादकक भूमिका मे। ओ मैथिलीक अतिरिक्त हिन्दी, अंग्रेजी आ संस्कृत मे सेहो लिखने छथि। हिन्दी आ अंग्रेजी लेखन तँ मुख्यतः मैथिली भाषा–साहित्य पर केन्द्रित अछि, मुदा संस्कृत–रचनाक प्रेरणा–स्रोत अछि मिथिला। तन्त्रकौमुदी, मन्त्रकौमुदी तथा हरिहर–सुभाषित नामक पोथीक रचनाकार मैथिल छलाह से रमानाथ झाक सम्पादित कृति सँ सर्वथा प्रमाणित भ' जाइत अछि। एतबे नहि, मन्त्रकौमुदी आ तन्त्रकौमुदीक अध्ययन सँ ईहो ज्ञात होइत अछि जे मिथिला तन्त्र एवं तन्त्रशास्त्रक विद्वानक गढ़ छल। हरिहर–सुभाषित सूक्ति–मुक्तावली थिक। एकर रचनाकार मैथिल छलाह आ हुनक एहि मुक्तक–रचना सँ सोलहम–सत्रहम शताब्दीक मिथिलाक सामाजिक–सांस्कृतिक स्थितिक परिचय प्राप्त होइत अछि। कालिदास रचित अभिज्ञानशाकुन्तलम् क सम्पादन करबाक प्रयोजन रमानाथ झा कें एहि लेल भेलनि जे ओहि कृतिक मैथिल–पाठ कें सारस्वत–समाजक सम्मुख प्रस्तुत करब आवश्यक छल। उक्त पोथीक मिथिलाक्षर मे लिखित पाण्डुलिपिक आधार पर ओ एकर सम्पादन कयलनि जाहि सँ कालिदासक विश्व–प्रसिद्ध नाटकक मैथिल–रूप प्रकट भेल।

स्पष्ट अछि जे रमानाथ झाक लेखनक बीज–मंत्र थिक मिथिला। मिथिलाक उत्थान। हुनक लेखकीय जीवन प्रारम्भ भेल अछि मिथिलाक विकास–कामना

सँ लिखित निबन्ध सँ। संयुक्त लेखन केँ छोड़ि देल जाय त' हुनक पहिल प्रकाशित निबन्ध अछि मैथिल ओ मैथिली।[1] मिथिलांचल मे आन्दोलनक सूत्रपात भेल विद्यापति-गीतक भाषा-विवाद सँ। ई विवाद जखन बंगला बनाम मैथिली सँ आगाँ बढ़ि हिन्दी बनाम मैथिली भेल तखन 1929 ई० मे रमानाथ झा ई लेख लिखलनि। एहि मे मिथिलाक दुर्बलताक कारण एकताक अभाव कहल गेल अछि। ओहि समय मे किछु मैथिल विद्वान सेहो मैथिलीक विरोध आ हिन्दीक समर्थनक' रहल छलाह। एहि पृष्ठभूमि मे रमानाथ झा मैथिलक एकता पर जोर दैत छथि। हुनक कहब छनि जे धर्ममूलक सामाजिक बन्धन ढील भ' गेल अछि। जे स्थान पूर्व मे धर्म केँ से सम्प्रति भाषा केँ भए गेलैक अछि।[2] तेँ भाषाक आधार पर मैथिल केँ एकतावद्ध कयल जाय। तखने मिथिलाक विकास संभव भ' सकत। उल्लेखनीय अछि जे मिथिलाक ई विकास-कामना रमानाथ झाक लेखनक आधार अन्त धरि बनल रहल। अनेक रचना मे अनेक प्रकारेँ हुनक ई इच्छा व्यक्त भेल अछि। पटना सँ प्रकाशित 'अभियान' पत्रिका (1963) मे हुनक एकटा निबन्ध छपल अछि-'मिथिलाक उत्कर्ष'। एहि मे ओ मिथिलाक इतिहासक रूपरेखा प्रस्तुत करैत ओकर उत्कर्षक बाट देखौलनि अछि। एहि प्रकारक स्वतंत्र निबन्धे मे नहि, साहित्य-विवेचन मे सेहो ई चिन्तन अन्तर्धारा जकाँ प्रवाहित होइत रहल अछि। विद्यापति केँ रमानाथ झा मिथिलाक नव-जागरणक अग्रदूत मानैत छथि। तकर अनेक कारण मे एकटा अछि-

A Common Language has since those far-off days been recognised as the surest mark of nationhood and the adoption of the language of Mithila as the language of his popular songs was, indeed, the first and surest step to turn Mithila into a nation in the truest sense of the term.[3]

स्पष्ट अछि जे मिथिलाक उत्कर्ष रमानाथ झाक लेखनक प्रथम प्राथमिकता छल। मिथिलाक विकासक इच्छुक होयब मैथिलीक रचनाकार लेल ओना कोनो खास विशेषता नहि भेल, मुदा बात ततबे नहि अछि। रमानाथ झा जाहि विषय केँ छात्रावस्था मे लिखित अपन प्रथम प्रकाशित रचनाक आधार बनौलनि से हुनक सम्पूर्ण रचना-संसारक मूलाधार बनि गेल-ई अत्यन्त महत्त्वपूर्ण बात थिक। समय-सन्दर्भक परिचिति, दृष्टिकोणक परिपक्वता आ लेखनक प्रयोजनीयता

केँ रेखांकित करबाक एहन उदाहरण विरल अछि। एहि महत्त्वक एकटा आओर आयाम अछि। साहित्यकारक महत्त्व काल सापेक्ष होयबाक संगहि कालजयी होयबा मे अछि। आजुक भाषामे कहि सकैत छी जे प्रासंगिककता साहित्यकारक महत्ताक निर्धारक अछि। एहू दृष्टिकोण सँ रमानाथ झा महत्त्वपूर्ण छथि। आइ हमसभ भूमण्डलीकरणक विरड़ो मे उधिया रहल छी। जनपदीय निजता, स्थानीय सांस्कृतिक सत्ता समाप्त भ' रहल अछि। एहन समय मे रमानाथ झाक ओ वाक्य मन पड़ि जाइत अछि जे ओ अपन पहिल निबन्ध मे आइ सँ लगभग पचहत्तरि वर्ष पहिने लिखने छलाह-'भारतीय कहयबा सँ पूर्व मैथिल कहायब आवश्यक अछि।'[4] ई कथन जाहि भावना आ वैचारिकता केँ स्वर प्रदान करैत अछि से मिथिले नहि, भारतीय समाज आ संस्कृतिक स्वत्व-रक्षाक लेल सेहो नितान्त आवश्यक अछि। तखनहि हम भारतीय कहा सकब।

रमानाथ झा मिथिलाक विकास चाहैत छलाह, मुदा हुनका लेल विकासक अर्थ ओ नहि छल जे आइ साधारणतः बूझल जाइत अछि। आर्थिक वा भौतिक उन्नति हुनक विकासक परिधि मे नहि छल। हुनक दृष्टि मे मिथिला 'अपन ज्ञानलोक सँ, विद्या-वैभव सँ, आचार-चारुता सँ एवं विचारक वैशद्य सँ महत्वपूर्ण रहल अछि। आगुओ यैह सभ एकर उत्कर्षक आधार होयत।' मोटामोटी कहि सकैत छी जे रमानाथ झा केँ सभ्यता आ संस्कृतिपरक विकास काम्य छलनि। यैह कारण अछि जे ओ मिथिलाक उत्थानक लेल दूटा विषय केँ चुनलनि आ ओहि प्रसंग गहनता सँ विचार कयलनि। ओ दुनू विषय अछि मैथिली भाषा ओ साहित्य। आब देखबाक ई अछि जे मैथिली भाषा एवं साहित्यक प्रसंग रमानाथ झाक धारणा-अवधारणा की छल आ ओहि माध्यम सँ ओ मिथिलाक सांस्कृतिक मूल्य-बोध केँ कतेक बलगर बना सकलाह अछि।

मैथिली भाषाक उत्पत्ति ओ विकासक सम्बन्ध मे रमानाथ झाक सुविचारित दृष्टिकोण अछि। संस्कृतक प्रसंग हुनक कथन छनि जे-'ओ वर्ग-विशेषक भाषा छल, शिष्टक भाषा, द्विजातिक भाषा, पण्डितक भाषा।'[5] एकर विपरीत प्राकृत भाषा सब जनसामान्यक भाषा छल, दैनन्दिन व्यवहारक भाषा छल। एहि पृष्ठभूमि मे ओ कहैत छथि-'भारतीय भाषा मध्य आधुनिक भाषा सब केँ हम संस्कृत-मूलक नहि मानैत छी। संस्कृत आर्य जातिक भाषा छल ओ संस्कृतक

प्रभाव सब भारतीय भाषा पर पड़ल अछि, आधुनिक भारतीय भाषा सब पर अत्यधिक पड़ल अछि। परन्तु, एहि भाषा सबहिक मूल संस्कृत सँ भिन्न स्वतंत्र छल।... प्राकृत भाषा जे बुद्धक पश्चात् भारतवर्ष मे प्रमुखता प्राप्त कएलक ओ जकर प्रयोग संस्कृत साहित्यहु मे, नाटक मे, होमए लागल से देश-भेदेँ भिन्न-भिन्न छल तथा शौरसेनी, मागधी, वैदर्भी, गौड़ी, महाराष्ट्री इत्यादि नाम सब देशपरक अछि। हमरा विश्वास अछि जे तहिना गुप्तोत्तर काल मे जखन प्राकृत आओर बेसी विकसित अथवा कहू विकृत भेल तँ ओ सब अपभ्रंश कहओलक तथा ओकरो भेद देशभेदहिँ भेल। मिथिला-देशक अपभ्रंश-भाषा मे साहित्य-निर्माण जखन आरम्भ भेल तखन ओ भाषा मिथिलापभ्रंश कहओलक तथा लोक मे अवहट्ठ कहि प्रसिद्ध भेल।'[6] ज्योतिरीश्वर वर्णरत्नाकर मे जाहि तेरह भाषाक नाम लेलनि अछि ताहि मे अवहट्ठ सेहो अछि। अवहट्ठ अपभ्रंश भाषा थिक, एहि मान्यताक आधार पर लोचन (सत्रहम शताब्दीक उत्तरार्द्ध) मिथिलाक भाषा केँ 'मिथिलापभ्रंश भाषा' कहलनि। चन्दा झा 'अपभ्रंश' शब्द केँ हँटा देलनि आ सोझे 'मिथिलाभाषा' कहब उचित बुझलनि। हुनके समय मे ग्रियर्सन एहिठामक भाषा लेल 'मैथिली' शब्दक प्रयोग करय लगलाह जे आब सर्वमान्य प्रचलित नाम अछि।

भाषाक अर्थ मे मैथिली शब्दक उपयोगक उक्त पृष्ठभूमि महत्वपूर्ण अछि। एकर महत्ता आओर बढ़ि जाइत अछि जखन रमानाथ झा लिखैत छथि-'जनपदीय भाषा जनपदक सबहुँक भाषा छल, मुदा संस्कृत जे केओ विद्वान होथि तनिक मात्र, विशेषतः ब्राह्मणक, भाषा भए गेल। एवं क्रमेँ संस्कृत जनजीवन सँ दूर हटि एकवर्गीय भए गेल, ओ केवल एक वर्ग मे, पण्डितवर्ग मात्र मे सीमित भए रहल, परन्तु से भए गेल ओ भारतवर्षक समस्तक, ओकर कोनहु एक भूभागक नहि। भूभाग भेदेँ भिन्न-भिन्न भए गेल जनपदीय भाषा जकरा ओहि भूभागक समस्त जनता, ब्राह्मण सँ चाण्डाल धरि, पुरुष ओ स्त्री, आबालवृद्ध जानए।'[7]

रमानाथ झाक मतानुसार मैथिलीक उत्पत्ति आ विकासक ई स्वरूप मैथिली साहित्योक स्वरूप-निर्धारण कयलक अछि। मैथिलीक प्राचीन साहित्य मे प्रमुख अछि सिद्धलोकनिक कृति बौद्धगान ओ दोहा तथा डाक-वचन। एहि दुनू

रचनाक विवेचन-विश्लेषण करैत रमानाथ झा जाहि निष्कर्ष पर पहुँचलाह अछि से थिक-'एतबा निश्चय जे ओहि सिद्धलोकनि मे ब्राह्मण थोड़ व्यक्ति छलाह, विशेषतः ई सिद्धलोकनि ब्राह्मणेतर छलाह। ई यदि सत्य तँ मिथिला जनभाषाक साहित्यक आरम्भ मुख्यतः ब्राह्मणेतर व्यक्तिक द्वारहि भेल अछि। ब्राह्मणलोकनि ब्राह्मणत्वक गौरव सँ संस्कृतेतर भाषा मे रचना ताहि दिन प्रायः नहिए करैत छला।.. अवहट्ठक रूप मे एहि भाषाक जे कोनो रचना उपलब्ध अछि से सब मुख्यतः पण्डितक रचना नहि, ब्राह्मणक रचना नहि, साधारण जनसमाजक साहित्य थिक। यथार्थ अर्थ मे लोक-साहित्य थिक जकर रचना प्रायः डाक गोआर अथवा भुसुक राउत सदृश ब्राह्मणेतर जातिक कएल थिक।'[8]

मैथिली आ ओकर साहित्य-भाषा बनबाक प्रक्रियाक ई ऐतिहासिक विवेचन रमानाथ झाक कीर्त्तिकर कार्य थिक। मैथिली केँ संस्कृतक सन्तान नहि, मिथिलाक माटि-पानिक उपजा मानब, मैथिली साहित्यक आदि रचनाकारक रूपमे ब्राह्मणेतर समुदायक योगदानक ऐतिहासिक तथ्य केँ निरूपित करब निश्चित रूप सँ प्रशंसनीय कार्य थिक। एहि कार्यक महत्व आजुक जातिवादी वातावरण मे आओर बढ़ि गेल अछि। ई बात रमानाथ झाक ध्यान मे छलनि। तेँ एहि प्रसंग ओ इहो लिखब आवश्यक बुझलनि-'अतएव एमहर आबि जे प्रवाद कतिधा सुनलाँ मे अबैत अछि जे मैथिली ब्राह्मणलोकनिक भाषा थिक, एकर साहित्य ब्राह्मणलोकनिक साहित्य थिक से ऐतिहासिक दृष्टि सँ कतेक असत्य से सबहुँ सहृदय व्यक्ति बूझि सकैत छथि।'[9]

रमानाथ झा मैथिली भाषाक स्थिति आ समस्या पर, ओकर भविष्य आ समाधान पर अपन अनेक निबन्ध मे विचार कयलनि अछि। ओकर विस्तार मे जायब सम्प्रति संभव नहि अछि। मुदा, मैथिलीक प्रसंग हुनक एकटा चर्चित कार्य अछि मैथिलीक मानकीकरणक प्रयास। हुनक एहि कार्य केँ अनेक नाम सँ अभिहित कयल गेल अछि- भाषाक एकरूपता, लेखन-शैलीक एकरूपता, भाषाक मानकीकरण आदि। रमानाथ झा आ हुनक किछु मित्रलोकनि 'मुर्दाक्लब' नामक एक संस्था बनौलनि। संस्था द्वारा एकटा पत्र प्रकाशित करबाक निर्णय लेल गेल। पत्र मे प्रकाशित रचनाक वर्णविन्यास कोन रूपक हो से समस्या छल। समस्याक समाधानक लेल रमानाथ झा मिथिलाक बीस विद्वान केँ पत्र लिखलथिन। पत्र एहि प्रकारक छल-[10]

राज लाइब्रेरी
20.05.1938 ई०

आगाँ एमहर किछु दिन सँ मिथिला-भाषामे किछु-किछु लिखबाक प्रयत्न करैत छी, किन्तु जखन लिखए बेसैत छी, मैथिलीक शुद्ध रूप की होबक चाही तकर तारतम्य होअए लगैत अछि। जे कोनो आदर्श देखैत छी ताहि सभमे नाना प्रकारक भेद दृष्टिगोचर होइत अछि। अतएव जहाँ धरि स्फूर्ति भए सकल अछि गोट सत्तरिएक एहन सन्देहास्पद रूपक संग्रह कएल अछि। तकर एक प्रति अहाँकेँ पठाए रहल छी ओ अहाँकेँ कष्ट दैत छी जे एहि सभ मे जाहि रूप केँ अहाँ विशुद्ध मिथिला भाषाक स्वरूप मानी ताहि मे तत्सूचक चिन्ह लगाए जे शब्द अशुद्ध बुझना जाए तकरा काटि एहि सूचीकेँ कृपया फेरि पठाए दी। यदि कतहु विशुद्ध रूप हमरा छूटि गेल हो तँ कृपया तकरा ओहीठाम चढ़ाए दिऐक।

हमर अभिप्राय अछि जे विशुद्ध मैथिलीक एक गोट शैली स्थिर करी जाहिमे विशुद्धिक संगहि संग शिष्टजनक व्यवहार एवं लिखबाक सुगमताहुक ध्यान रहए। पूर्ण भरोस अछि जे अहाँ ई कृपा अवश्य करब तथा पत्रोत्तर दए प्रोत्साहित करब। विशेष कुशल जानब ओ लिखब। इति।

श्री रमानाथ झा

उक्त पत्रक दोसर कंडिकाक अनुसार रमानाथ झा मैथिली शब्दक शैली-निर्धारण लेल तीनटा आधार-बिन्दु निश्चित कयलनि- (1) शब्द विशुद्ध हो, (2) शिष्टजनक व्यवहारक अनुकूल हो, (3) लिखब सुगम हो। एहि तीनू आधार-बिन्दु सँ हुनक अभिप्राय की छलनि से स्पष्ट नहि अछि। विशुद्धक अर्थ यदि व्याकरण-सम्मत होयब थिक तँ पहिने मैथिलीक व्याकरण लिखल जाय से जरूरी अछि। संस्कृत-व्याकरण अर्थात् पाणिनीक शब्दानुशासन-प्रक्रिया मैथिलीक लेल ने उपयोगी अछि, ने उचित। रमानाथ झा मैथिली भाषाक उत्पत्ति तथा ओकर साहित्यक विकासक जे रूपरेखा प्रस्तुत कयने छथि ताहि सँ एहि मान्यता केँ तालमेल नहि बैसैत अछि। मैथिलीक प्रकृतिक अनुरूप व्याकरण-ग्रन्थक प्रणयनक बादे भाषाक शुद्धताक समस्याक समाधान संभव अछि। ओहि सँ पहिने मैथिलीक यथार्थ केँ संस्कृतक आदर्श मे खुटेसब उचित नहि अछि।

'शिष्ट-जनक व्यवहारक अनुकूल' माने की सेहो पत्र मे स्पष्ट नहि अछि। मुदा, ओहि पत्रक उत्तर दैत डॉ० अमरनाथ झा जे लिखने छथि ताहि सँ एकर संकेत भेटैत अछि। हुनक कहब छनि[11]—....The written forms are so way-ward that in order to have a standarised spelling you can only be guided by the pronunciation of the cultured members of the community in the inhabitants of सोतिपुरा and राँटी, मँगरौनी and सौराठ।' कहबाक आवश्यकता नहि जे ई दृष्टिकोण मैथिलीक व्यापकता आ देशीयताक विरोधी थिक। भाषाक तकनीकी औपचारिकता पर जोर देब तथा जनजीवनक भाषाकेँ अव्यवस्थित, अतार्किक आ असंस्कृत (Uncultured) कहब मैथिलीक जन्मजात विशेषता केँ नष्ट करब अछि।

लिखबाक सुगमता शिक्षा आ अभ्यासक वस्तु अछि। मैथिली संस्कृते सँ नहि, आनो भाषा सँ मधुर अछि–ई तथ्य निर्विवाद अछि। मैथिली भाषाक ई मधुरता वाचिक विशेषताक अतिरिक्त शाब्दिक सरलता एवं सहजताक देन थिक से फराक सँ कहब जरूरी नहि अछि।

एहि प्रसंग एकटा बात ध्यानीय अछि। भाषाक मानकीकरण एवं लेख-शैलीक एकरूपताक सम्बन्ध मे भारतक प्रायः सभ भाषा-भाषी क्षेत्र मे घमर्थन भेल अछि। बंगला मे संस्कृतनिष्ठ साधु भाषाक स्थान पर चलित भाषाकेँ प्राथमिकता देबाक आन्दोलनक नेतृत्व कयलनि रवीन्द्रनाथ ठाकुर एवं प्रमथ चौधरी। एहिना उड़िया मे वीरेशलिंगम, मलयालम मे चन्दू मेनन तथा वल्लतोल किताबी भाषाक विरोध मे ठाढ़ भेलाह। किताबी भाषाक रूपमे एकटा कृत्रिम भाषाक प्रचलन केँ ई सभ भाषिक विकासक अवरोधक तत्व सिद्ध कयलनि आ ताहि मे सफलतो भेटलनि। मैथिलीक जन्म संस्कृतक कोखि सँ नहि, सर्वसाधारणक भावाभिव्यक्तिक आकुलता एवं सामर्थ्य सँ भेल छल आ तकर प्रमाण ज्योतिरीश्वर, विद्यापति, मनबोध एवं चन्दाझाक साहित्यमे भेटैत अछि। मुदा, हिनका सभक लोकप्रियता सँ लोभायल पंडितलोकनि जखन मैथिलीमे लिखय लगलाह तखन मैथिली भाषा पंडिताम भ' गेल। एहि सँ मैथिली भाषाक लोकप्रियता एवं व्यापकता प्रभावित भेल। सीताराम झा, हरिमोहन झा, यात्री, मणिपद्म, सुधांशु शेखर चौधरी, चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' सनक रचनाकार एहि

भाषाक देशज रूपकेँ पुन: जीवन्त बनौलनि। एही समय मे मैथिलीक उपभाषाक आन्दोलन एकर अस्तित्व पर प्रहार कयलक। तखन, 1966 ई० मे 'मैथिलीक उपभाषाक समस्या' पर विचार करैत रमानाथ झा अपन मन्तव्य एहि रूपेँ प्रकट कयलनि–'एकरूपता तँ जेहने मधुबनीक भाषामे, तेहने देवघरक भाषामे, तेहने बेतिाक भाषामे, सबठाम समान रूपेँ वांछनीय थिक। अशुद्ध मधुबनीक भाषा सेहो होइत अछि, होएत, देवघरक भाषा सेहो, बेतियाक भाषा सेहो। भाषाक अशुद्धि ओ भाषाक विभेद दू वस्तु थिक ओ ताहि मे परस्पर विरोध नहि छैक। हमरा भाषाक विरोध स्वीकार अछि, मान्य अछि, मुदा भाषाक अशुद्धि मान्य नहि अछि।'[12] कहबाक प्रयोजन नहि जे भाषाक अशुद्धि ककरो मान्य नहि भ' सकैत छैक, किन्तु शुद्धताक मापदण्ड स्थिर करबा काल रमानाथे झाक एहि कथन केँ ध्यान मे राखब उचित होयत–'ई सत्य जे मैथिली-साहित्यक विकास संस्कृत-साहित्यक प्रभाव सँ भेल, मुदा इहो ओतबे सत्य जे मैथिली भाषा संस्कृतक विरोध मे विकसित भेल।'[13]

हाल-साल मे आबि क' भाषाक मानकीकरणक एक आओर आयाम जोर पकड़लक अछि। पहिने बजबाक भाषा छल, ओकरा शिष्टजनक उपयोगक अनुकूल बना क' किताबी भाषा तैयार कयल गेल, आब एकटा नव भाषा विकसित भेल अछि–कम्प्यूटर-भाषा। मैथिली केँ कम्प्यूटरक भाषा बनयबाक लेल अँग्रेजी भाषाक आदर्श परिपाटी केँ अपनायब आवश्यक अछि। एकर प्रचार-प्रसार सम्पूर्ण विश्व मे जोर-शोर सँ भ' रहल अछि। किछु गोटेक मत छनि जे कम्प्यूटर-भाषाक द्रुतगामी विकास भूमंडलीकरण अभियानक अंग थिक। विश्व-स्तर पर वर्चस्व-स्थापनक माध्यम थिक। भाषा पर अधिकारक अर्थ होइत अछि भाषा-भाषी पर अधिकार। अंग्रेजी साम्राज्यवादक एहि विस्तार केँ कोना रोकल जाय, रोकब उचित आ संभव अछि वा नहि से मैथिलीओक भाषावैज्ञानिक लेल विचारणीय अछि। मैथिलीक स्वायत्तताक पक्षधरलोकनि आइयो मानैत छथि जे भाषाक विकासक मापदण्ड जे विद्यापति निर्धारित कयने छथि सैह आजुक समय मे सेहो सत्य अछि। हुनका अनुसार भाषाक विशेषता थिक सब-जन मिट्ठा होयब आ सबजन मिट्ठा होयबाक लेल भाषा केँ देसिल बयना होयब जरूरी अछि।

रमानाथ झा चिन्तक रचनाकार छलाह। ओ जे किछु लिखलनि से सोचि-विचारि क', गंभीरतापूर्वक। जकरा बामा हाथक लेखन कहल जाइत छैक से ओ कहियो नहि कयलनि। सभा-सम्मेलनक लेल भाषणक आलेख हो वा आकाशवाणी सँ प्रसारित होमयवला कोनो लेख-हड़बड़ी मे किछु लिखि लेलहुँ, ई हुनक प्रवृत्तिए नहि छलनि। तेँ हुनक सभ रचना सुचिन्तित आ सुगठित अछि। माने ई जे लेखन केँ ओ दायित्व-पूर्ण कार्य बुझैत छलाह। ई हुनक बड़ पैघ विशेषता थिक। सोना मे सुगन्धि तँ तखन भेटैत अछि जखन सोचि-सोचि क', तौलि-तौलि क' लिखयवला रमानाथ झाक विशालकाय लेखन केँ देखैत छी। बेसी लिखला सँ स्तरीयता प्रभावित भेल हो तकर बोध कोनो रचना पढ़ला सँ नहि होइत अछि। एकर विपरीत पुरुष परीक्षाक अनुवाद हो अथवा 'गुरु गोविन्द सिंह'क, मैथिली नाटकक ऐतिहासिक प्रसंग हो वा मैथिली लिपिक, मिथिला मे फगुआ पर लिखबाक हो कि महामहोपाध्याय पं० बालकृष्ण मिश्र आ वाचस्पति पर-सर्वत्र अध्ययनक गहनता, वैदुष्यक विलक्षणता आ प्रस्तुतिक निजता देखबा मे अबैत अछि। एहि मे सन्देह नहि जे रमानाथ झाक रचना मे संस्कृत शब्दक प्रयोग बेसी भेल अछि, मुदा ताहि सँ हुनक रचना अस्पष्ट रहि गेल हो, ओकर विषय-वस्तु कि कथ्य फरिछायल नहि हो से नहि भेल अछि। एकर कारण अछि विषयक स्पष्ट अवधारणा आ प्रस्तुतिक निर्लेप रूप। रमानाथ झा केँ जे कहबाक रहैत छनि से सोझे-सोझ कहैत छथि। भाषाक एहन स्पष्टता विषय-वस्तुक मर्मज्ञताक देन होइत अछि, रमानाथ झाक लेखन एहि तथ्यक प्रमाण थिक। तेँ हुनक रचना मैथिली गद्यक विकास मे प्रस्थान-बिन्दु मानल जाइत अछि, तँ से सर्वथा स्वाभाविक अछि। उचित अछि।

रमानाथ झाक रचनाक महत्ता ओकर गुणवत्ता मे रेखांकित होइत अछि। जेना कहि चुकल छी, ओ मैथिलीक भावयित्री प्रतिभाक उत्कर्ष छथि। ई उत्कृष्टता दू क्षेत्र मे अपेक्षाकृत अधिक आकर्षक अछि–सम्पादन आ समालोचना। सम्पादन-कार्य केँ तीन चौबटिया पर बिलमि क' देखय पड़त–साहित्य-पत्र, छात्रोपयोगी पाठ्य-पुस्तक तथा अन्य कृतिक सम्पादन। साहित्यक-पत्रक प्रकाशनक प्रसंग एकर प्रथम अंकक 'संपादकीय वक्तव्य' मे रमानाथ झा लिखने छथि–...'ई 'साहित्य-पत्र' नाममात्रहिक पत्र थिक तथा

पत्र जेकाँ केवल वर्ष मे चारि बेरि नियत समय पर प्रकाशित होएत। वस्तुतः एहि पत्रक उद्देश्य मैथिलीक स्थायी साहित्यक भण्डारकेँ यथासाध्य पूर्ण करब अछि। एहिमे केवल पुस्तकहिकटा क्रमशः धारावाहिक रूपेँ प्रकाशन होएत। सामयिक निबन्धादि विषयक समावेश एहि पत्रमे नहि होएत।' स्पष्ट अछि जे साहित्य-पत्रक माध्यम सँ सेहो रमानाथ झा पुस्तकेक सम्पादन कयलनि, ओकरे अनुभव भेलनि। लेखकक चयन, प्रकाश्य पोथीक निर्णय, पाण्डुलिपिक वाचन, लेख-शैलीक एकरूपता आदि कार्य करब हिनके दायित्व छल। एकर निर्वाह स्वयं करैत छलाह वा उपयुक्त व्यक्ति सँ करबैत छलाह।[14] एहि मे हिनका संस्कृत आ अंगरेजीक कतोक मूर्धन्य विद्वानक मार्गदर्शन तथा सहयोग भेटलनि। पुस्तक-सम्पादनक पटुता सहजहि प्राप्त भ' गेलनि।

एहिठाम एकटा तथ्य मन पाड़बाक थिक। साहित्य-पत्रक प्रकाशन शुरू भेल 1939-40 ई०मे। ई ओ समय थिक जखन मैथिली केँ बिहार सरकारक मान्यता भेटले छलैक। मैथिली शिक्षण-व्यवस्था मे प्रवेश पाबिए रहल छल। छात्रक लेल पाठ्य-पुस्तकक आवश्यकता रहैक। एहि दृष्टिकोण सँ उच्चस्तरीय साहित्यक प्रकाशन समयक माँग छल। यद्यपि स्नातकोत्तर कक्षा मे मैथिलीक अध्ययन किछु बाद मे शुरु भेल, मुदा 'साहित्य-पत्र'मे श्रृंगार-भजन, उषाहरण, चीनीक लड्डू, कीचकबध, अगिलही, वेकफिल्डक पादरी तथा रामायण शिक्षा सदृश अनेक कृतिक प्रकाशन कतेक उपयोगी आ महत्वपूर्ण भेल से स्वतः सिद्ध अछि। रमानाथ झा छात्रोपयोगी पोथीक प्रकाशन दिस एही मानसिकता सँ अग्रसर भेलाह। एहि प्रकारक पोथीक निर्माण मे आर्थिक कमजोरी रहैत छैक। दोसर बात ई जे छात्रोपयोगी पाठ्य-ग्रन्थक रूपरेखा अथवा स्वरूप सेहो एक प्रकारक दवाब बनबैत अछि। रमानाथ झा द्वारा सम्पादित मैथिली पद्य संग्रह (1941), मैथिली साहित्य-संग्रह (1949), कविता-कुसुम (1956), मैथिली गद्य-संग्रह (1959), प्राचीन-गीत (1965), कथा-काव्य (1965), नवीन गीत (1965) आदि पोथी एहि विवशता सँ सर्वथा मुक्त अछि से कहब कठिन होयत, तथापि एहि मे सन्देह नहि जे ई सभ मात्र कोर्सक किताब नहि अछि। रमानाथ झा एहि सभ पोथीक आधार पर सम्पादन-कार्यक मानक प्रस्तुत कयलनि अछि। सम्पादन कला थिक। सम्पादन दृष्टि थिक। छात्रक लेल सम्पादित पोथीक

उपयोगिता केँ ध्यान मे रखैत ओकरा साहित्यिक मर्यादा प्रदान करब रमानाथ झाक सम्पादन-कला आ हुनक स्फीत दृष्टिक प्रमाण अछि। एहि प्रसंग मन रखबाक बात ई अछि जे सम्पादन अथवा कोनो प्रकारक लेखन व्यक्ति-सापेक्ष होइत अछि। अपन अध्ययन आ विचार, इच्छा आ रुचि केँ ताक पर राखि क' सम्पादन नहि भ' सकैत अछि। तेँ रमानाथ झा अपन सम्पादित पोथी मे हिनका लेलनि-हुनका नहि, अथवा किनका सम्बन्ध मे की कहलनि तकरा निरपेक्ष-उक्तिक रूप मे देखब बहुत उपयुक्त नहि अछि। देखबाक मूल बात ई अछि जे मैथिली साहित्य ओ साहित्यकार केँ देखबाक जे बाट ओ देखौलनि अछि, जे निकष ओ स्थापित कयलनि अछि से कतेक उपयोगी अछि। हमरा जनैत सम्पादन कार्यक जे प्रारूप ओ अपन एहि प्रकारक पोथी मे देलनि अछि से आइए नहि, आगुओ लेल सार्थक अछि। एकर अतिरिक्त, गुणवत्ताक दृष्टिकोण सँ सेहो एहि पोथी सबहक उपादेयता निर्विवाद अछि। उदाहरणक रूप मे 'कविता-कुसुम' आ 'प्राचीन-गीत' मे विद्यापति आ हुनक गीत सँ सम्बद्ध लेखन केँ लेल जा सकैत अछि। संक्षेप मे हम एतबे कहब जे विद्यापतिपरक ई लेखन मैथिलीक कोश थिक। एकरा एकबेर पढ़ला सँ काज नहि चलैत अछि, कोश जकाँ बेर-बेर देखबाक प्रयोजन होइत अछि। ई बात विद्यापतिएक प्रसंग नहि, किछु अन्यो रचनाकारक लेल कहल जा सकैत अछि।

रमानाथ झाक सम्पादन-दृष्टिक उल्लेखनीय विशेषता अछि रचनाक पाठ आधारित विश्लेषण। संस्कृतक भाष्यकार एवं व्याख्याकारक शैली मे ओ रचनाक बखलोइया छोड़ौलनि अछि। ओकर हीर केँ तकबाक प्रयास कयलनि अछि। आजुक समय मे एकर प्रासंगिकता बेसी अछि।

रमानाथ झाक तेसर कोटिक अर्थात् विशुद्ध साहित्योपयोगी सम्पादन-कार्यक नमूना अछि पुरुष-परीक्षा, कीर्तिलता, भाषा-गीत-संग्रह आदि। पुरुष-परीक्षाक अनुवाद देश-विदेशक मैथिली-हिन्दी-अंग्रेजीक बीसो विद्वान कयने छथि। एहिमे रमानाथ झाक अनुवाद एहि लेल सर्वोपरि अछि जे ओ मात्र अनुवादे नहि, ओकर सम्पादनो कयलनि अछि। मूल रचनाक संग चन्दा झाक अनुवाद केँ सम्मिलित करब आ तखन अपन अनुवाद देब ओहि कृति केँ

जतेक उपयोगी बनबैत अछि, ओकरा जे गरिमा प्रदान करैत अछि से अप्रतिम अछि। ऐतिहासिक आ साहित्यक दुनू दृष्टिकोण सँ एकर महत्व अद्वितीय अछि। एतबे नहि, विशालकाय भूमिका त' पोथीक मुकुट थिक। एहि सँ ओकर शोभा बढ़ि गेल अछि। एहिना कीर्त्तिलता, भाषागीत-संग्रह प्रभृति पुस्तक रमानाथ झाक सम्पादित-कृतिक अन्यतम उपलब्धि अछि।

रमानाथ झा सर्वाधिक महत्वपूर्ण छथि समालोचक-रूप मे। एहि रूपमे हुनक पहिल महत्वपूर्ण कार्य अछि मैथिली साहित्य मे समीक्षाक महत्व स्थापित करब। ई कार्य ओ दू तरहेँ कयने छथि- व्यावहारिक समीक्षा द्वारा तथा समीक्षाक सैद्धांतिक विवेचनक माध्यम सँ। व्यावहारिक आलोचना तीन प्रकारक अछि-निबन्ध रूपमे, पुस्तक रूपमे आ भूमिका रूपमे। निबन्ध मे सभा-सम्मेलन मे देल गेल लिखित भाषण, आकाशवाणी मे पठित आलेख तथा स्वतंत्र रूप सँ लिखित निबन्ध अछि। विषय अथवा रचनाकार केन्द्रित पुस्तक एकेटा अछि-साहित्य अकादेमी सँ प्रकाशित 'विद्यापति'। भूमिका रमानाथ झा बहुत पोथीक लिखने छथि-अपन आ अनकर दुनू कोटिक पोथीक। एहि भूमिका सबमे संबद्ध कृतिक गुण-दोषक विश्लेषणक संगहि विषय-वस्तुक सैद्धांतिक पक्ष पर सेहो ध्यान राखल गेल अछि।

रमानाथ झा मैथिली आलोचना केँ दिशा आ दृष्टि देलनि अछि। चन्दा झा सँ प्रेरित भ' ओ अनुसन्धान केँ आलोचना सँ मिला देलनि। अनुसन्धान ओ दू स्तर पर कयलनि-तथ्यक अनुसन्धान आ अर्थक अनुसन्धान। तथ्यक अनुसन्धान सेहो दू प्रकारक अछि-रचनाक खोज आ रचनाकारक परिचय-पातक खोज। हमसभ जनैत छी जे रमानाथ झा विद्यापतिक सैंतीस गीतक उत्खनन कयलनि जे हुनका द्वारा सम्पादित 'भाषागीत-संग्रह' मे संकलित अछि। एहि सँ मैथिली साहित्यक भंडार भरल अछि। ओकर गरिमा बढ़ल अछि।

रचनाकारक परिचय तकबाक क्रम मे रमानाथ झा पंजी-व्यवस्थाक उपयोग कयलनि अछि। पंजी-व्यवस्थाक उपयोग करयवला पहिल साहित्यकार छथि चन्दा झा। रमानाथ झा हुनक अनुसरण करैत एहि व्यवस्थाक साहित्यिक

उपयोग साधन रूप मे कयलनि अछि। किन्तु, एहि सम्बन्ध मे आगाँ बढ़बा सँ पूर्व पंजी-व्यवस्थाक प्रसंग किछु बात जानि लेब जरूरी अछि। जाति रक्षाक लेल जखन मैथिल ब्राह्मणक सूची बनायब आवश्यक भेल तखन किछु ब्राह्मण एहि मे लागि गेलाह। एकटा पंजी मे नाम आ ओहि व्यक्तिक वंशगत एवं व्यक्तिगत विवरण लिखल गेल। एहेन कतेक पंजी कतेक गोटे तैयार कयलनि। एही आधार पर मैथिल ब्राह्मणक विवाह-कार्य नियंत्रित होमय लागल। कालान्तर मे ई कार्य व्यवसाय बनि गेल। पंजी लिखल जाय एहन चिकारीवला शैली मे जे ओकरा पढ़ब आ बूझब दुनू कठिन रहय। व्यावसायिक एकाधिकार लेल ई जरूरी छल। तेँ पंजीकार होयब वंशगत प्रथा बनि गेल। मुदा रमानाथ झा पंजी केँ पढ़ब आ बूझब सिखलनि। ध्यान राखक थिक जे पंजी दू प्रकारक अछि। मूल पंजी आ शाखा पंजी।[15] प्रारम्भ मे व्यक्तिक मूलक अनुसार पंजी लिखल जाइत छल। फलतः जतेक मूल ततेक पंजी भ' गेल। कोनो एक व्यक्तिक परिचय तकबाक लेल अनेक पंजीक प्रयोजन पड़ि जाइक। ओहि पंजी मे पुत्र आ पुत्री दुनूक परिचय लिखब आवश्यक छल। जेना-जेना जनसंख्या बढ़ैत गेल, पंजीक पोथा मोट होइत गेल। तखन सोलहम शताब्दीक अन्तिम समय मे पंजी तैयार करबाक एकटा नव परिपाटी प्रारंभ भेल। एकर आधार छल खण्डवला-कुल, आ ओहि सम्बन्धेँ आनो कुलक परिचय क्रमशः ओहि मे लिखाइत गेल। पुरना भेल मूल पंजी आ नवका शाखापंजी। आइकाल्हि यैह शाखा-पंजी प्रचलन मे अछि। रमानाथझा केँ दुनू कोटिक पंजीक उपयोग करब आबि गेलनि, बहुत किछु उपलब्धो भ' गेलनि। एहि मे हुनक बलवती इच्छाक योगदान बेसी छलैक अथवा राज दरभंगाक टाकाक से कहब कठिन अछि। पंजीक गोपनीय दस्तावेज गोपनीय ढ़ंग सँ बिकायल, गोपनीय ढंग सँ टाका देल-लेल गेल। एतेक धरि जे रमानाथ झा केँ पंजी पढ़ब-लिखब आ बूझब सिखाओल गेल टाकाक गुप्त आदान-प्रदान द्वारा।[16] एहि पृष्ठभूमि मे पंजीक विश्वसनीयता संदिग्ध भ' जाइत अछि। मूल-पंजीक स्थान पर शाखा-पंजीक निर्माण करब, शाखा-पंजी मे पुत्रीक परिचय नहि देब, पंजी-लेखन केँ व्यवसाय बना क' ओकरा जीविकोपार्जनक साधन बनायब, शाखा-पंजीक आधार एकटा कुल केँ मानब आ अन्य कुल केँ ओकर डारि-पात बूझब किछु एहन तथ्य अछि जे पंजी-व्यवस्थाक प्रति सन्देह

उत्पन्न करैत अछि। एहि संदेह केँ सम्पुष्ट करयवला कतेक दन्तकथा जखन-तखन सुनबो मे अबैत अछि। एतबे नहि, पंजी जखन गोपनीय अभिलेख अछि आ ओहि सँ कोनो व्यक्तिक परिचय केँ सत्यापित करब कठिने नहि, असंभव जकाँ अछि तखन एकरा ज्ञानक विश्वसनीय स्रोत कोना मानल जाय?

किन्तु, एकर ई अर्थ नहि जे रमानाथ झा ज्योतिरीश्वर, विद्यापति, गोविन्द दास, विष्णुपुरी आदि साहित्यकारक जे परिचय-पात प्रस्तुत कयने छथि से निरर्थक अछि। एहि मे कतहु कोनो गड़बड़ी अछि वा नहि से शोधक विषय थिक, मुदा ताहि सँ रमानाथ झाक शोधक पाछाँ कार्यरत भावना आ तकर परिणामक महत्व कम नहि होइत अछि। इतिहासकार लोकनि केँ जखन मैथिली जनपदक इतिहास लिखबा मे लाज ओ हीनताक बोध होइत छनि तखन रमानाथ झा एहि दिशा मे अग्रसर भेलाह, से निश्चित रूप सँ प्रशंसनीय काज थिक। ओ जनैत छलाह जे पंजी सँ सभ जातिक साहित्यकारक परिचय नहि भेटत, ओ ईहो जनैत छलाह जे पंजी-लेखन कोनो व्यवस्थित प्रारूपक आधार पर नहि भेल अछि, तथापि ओ पंजी-व्यवस्थाक पोखरि मे डूबि क' हथोरिया देलनि आ गड़ल धन केँ बाहर निकाललनि। एहि प्रकारेँ मैथिलीक अनेक भसियाइत साहित्यकार केँ महार पर आनि क' ठाढ़ करबाक श्रेय रमानाथ झा केँ छनि।

रमानाथ झाक एहि कार्यक महत्व आओर बढ़ि जाइत अछि जखन ओकर प्रेरक भावना पर ध्यान दैत छी। समालोचकक रूप मे रमानाथ झाक लक्ष्य छल रचनाक विवेचन-विश्लेषण करब। ओ अंग्रेजी आ पाश्चात्य काव्य-शास्त्रक मर्मज्ञ छलाह। तेँ मैथिली-साहित्यक अर्थानुसंधान लेल ओ रचनाक संग रचनाकार केँ जानब जरूरी बुझलनि। रचनाकार समय आ स्थानक देन होइत अछि। ओकर कृति पर काल आ देशक प्रभाव पड़ब स्वाभाविक छैक। एहि पृष्ठभूमि मे रचनाक अर्थ-व्याप्ति केँ रेखांकित करबाक हेतु रमानाथ झा पंजी-व्यवस्थाक सामग्रीक उपयोग कयलनि। मुदा, ओ अंगरेजीए नहि, संस्कृत काव्य-शास्त्रक सेहो गहन अध्ययन कयने छलाह। तकरे परिणाम थिक जे ओ अर्थक स्पष्टीकरण लेल 'प्राचीन-गीत' मे, वा आनो पोथी मे, टीका-शैलीक

प्रयोग करैत छथि। पाठ-आधारित समीक्षाक अपन विशेषता छैक जे आजुक मैथिली समालोचना मे विरल अछि। रमानाथ झा मैथिली-साहित्य केँ एकटा एहन समीक्षा-पद्धति देलनि जाहि मे पाश्चात्य आ संस्कृत समालोचना-प्रक्रियाक सम्मिश्रण भेल अछि।

समालोचक रमानाथ झा पर विचार करबा सँ पूर्व एहि पर विचार करब आवश्यक अछि जे समालोचना किएक? एकर की प्रयोजन? रमानाथ झा एहि प्रसंग लिखने छथि—'जनताक रुचि केँ परिष्कृत, व्यवस्थित, सन्तुलित अथवा विवेकशील बनएबाक निमित्त, बनओने रहबाक निमित्त कोनहु वस्तु किंवा रचनाक ठीक-ठीक परीक्षण ओ मूल्यांकन कएनिहार कुशल समीक्षकक होएब मानव-समाजक सत्प्रवृत्तिक सुरक्षाक हेतु आवश्यके नहि, अनिवार्य सेहो अछि।[17] एहिठाम हम केवल एक बिन्दु पर ध्यान आकृष्ट करय चाहब। रमानाथ झा समीक्षाक सामाजिक प्रयोजन पर जोर दैत छथि। ई श्रेयस्कर बात थिक। मैथिली समालोचनाक न्यों एहि सुविचारित आधार पर राखल गेल से प्रसन्नताक विषय अछि। किन्तु, एहि सोच मे विसंगति तखन उत्पन्न होइत अछि जखन पबैत छी जे रमानाथ झाक लेल मिथिला माने अछि ओहि ठामक ब्राह्मण समुदाय। मैथिल समाजक अर्थ अछि ब्राह्मण समाज। एकटा उदाहरण देखल जाय। रमानाथ झाक समालोचना-कर्मक सबसँ विशिष्ट उपलब्धि छथि विद्यापति। हिनका प्रसंग ओ लिखने छथि—'अंगरेजी साहित्यक विधिवत अध्ययन सँ जे कथा हृदय मे जमि गेल छल जे कविक व्यक्तित्व देश, काल ओ समाजक वातावरण मे प्रस्फुटित होइत छैक ताहि संस्कारवशात् विद्यापतिक समयक सामाजिक स्थितिक मौलिक अनुसन्धान ओ अध्ययन कएल। तथा ई कोनो अभिमाने नहि, केवल सत्य कथा टा कहैत छी जे विद्यापति-कालीन मैथिल-ब्राह्मण-समाजक प्रामाणिक (जकरा आइ काल्हि वैज्ञानिक कहबैक ताहि रीति सँ) अध्ययन कएने संसारमे हमहि टा छी, दोसर ककरो प्रवृत्तिओ नहि देखैत छिऐक।[18] रमानाथ झा अध्ययन कयने छलाह से सत्य, मुदा सत्य ईहो अछि जे विद्यापति केँ बुझबाक लेल मैथिल ब्राह्मण-समाजक अध्ययन उपयोगी भ' सकैत अछि, पर्याप्त नहि।

रमानाथ झाक समालोचनाक अधिकांश केन्द्रित अछि पद्य-रचना पर। मैथिली गद्य-कृति पर ओ अपेक्षाकृत कम लिखने छथि। ताहि मे महत्वपूर्ण

अछि किछु पोथीक भूमिका। यद्यपि भूमिका छात्रोपयोगी पाठ्य-पुस्तक जकाँ दवाबक कार्य थिक, तथापि रमानाथ झा ई कार्य बहुत-किछु मुक्त-भाव सँ कयलनि अछि। उदाहरण रूप मे विडम्बना तथा ललकापागक भूमिका केँ देखल जा सकैत अछि। एहि दुनू भूमिकाक संयुक्त-पाठ मैथिली कथा केँ बुझबाक आँखि दैत अछि। सैद्धांतिक आ व्यावहारिक समीक्षाक अपूर्व समन्वय एहि मे भेल अछि। उपेन्द्रनाथ झा 'व्यास' आ राजकमल चौधरीक कथा सँ सम्बन्धित हिनक टिप्पणी सँ असहमति भ' सकैत अछि, तइयो मैथिली कथा-साहित्य पर कार्य कयनिहार समीक्षकक हेतु एकर अध्ययन उपयोगी अछि।

रमानाथ झा मे अध्ययनजनित आत्मविश्वास तथा विचारपरक दृढ़ता छलनि। समालोचकक लेल ई आवश्यक अछि। किन्तु, कखनो काल एहि मे व्यवधान सेहो होइत छैक। हमसभ जनैत छी जे लेख-शैलीक एकरूपताक प्रति ओ कतेक आग्रही छलाह। मुदा, हुनक सम्पादन मे प्रकाशित मैथिली गद्य-संग्रह मे लेख-शैलीक एकरूपता नहि, बहुरूपता अछि। एकर कारण अछि सम्पादन ओ समीक्षा-धर्मक प्रति निष्ठा। समीक्षाक लेल जरूरी छैक जे रचना केँ मूल रूप मे पढ़ल जाय। तेँ ओकर यथावत् प्रस्तुतिओ अनिवार्य छैक। रमानाथ झा एहू बिन्दु पर एकटा मानक देलनि अछि।

मैथिलीक आजुक समीक्षा रमानाथ झाक ऋणी अछि। समालोचनाक लेल अध्ययनशीलता, चिन्तनपरकता, वैचारिकता, अवधारणाक स्पष्टता तथा सम्प्रेषणीयताक जाहि मूलाधार केँ ओ रेखांकित क' गेल छथि से अजुके नहि, कल्हुको समालोचक लेल मार्गदर्शक अछि। हुनक कृतित्व समीक्षकक हेतु जाहि तीनटा गुणक तर्जनी-निर्देश करैत अछि ओ थिक-शोध-प्रवृत्ति, मौलिकताक आग्रह आ समाज-सापेक्षता। ई तीनू गुण आओर प्रभावकारी भ' जाइत अछि जखन समीक्षक मे दोसरक विचार केँ आदर देबाक आदति भ' जाइत छैक। रमानाथ झा 'प्रबन्ध-संग्रह कं' रचनाक सम्बन्ध मे लिखने छथि-'हम तँ केवल तत्तद् विषय पर हमरा जे प्रमाण भेटल अछि अथवा युक्ति सूझल अछि तकर प्रतिपादन कए अपन मत मात्र एतए उपस्थित कएल अछि।... विषय सबटा अछि महत्वपूर्ण ओ विचार-सरणि नवीन अछि। युक्ति अछि मौलिक एवं प्रमाण गवेषणापूर्ण। तेँ द्रष्टव्य ओ मननीय थिक युक्ति ओ प्रमाण। निष्कर्ष हमर अपन थिक ओ यदि केओ हमरा विचार सँ सहमत नहि होथि तँ तकरा ओ हमर अपन विचार मानि लेथि।' रमानाथ झाक व्यक्तित्वक यैह विशेषता हुनक कृतित्व केँ कालजयी बना दैत अछि।

एहि प्रसंग एकटा आओर बिन्दु विचारणीय अछि। प्रश्न अछि जे की मैथिली समालोचनाक वर्तमान रमानाथ झाक अग्रिम रूप थिक? हँ वा नहि मे उत्तर देब एकभगाह भ' जायत। ई सत्य जे रमानाथ झा-सन समर्पित समालोचकक संख्या मे अपेक्षित वृद्धि नहि भेल अछि। समालोचना आ अनुसंधान केँ एक-दोसराक पूरक बुझबाक आ तदनुसार काज करबाक प्रवृति मे तँ कहबाक चाही जे ह्रासे भेल अछि। अध्ययनक गहनता तथा वैचारिक दृढ़ताक स्फीत प्रस्तुतिओ कम्मे देखबा मे अबैत अछि। रमानाथ झा ज्ञानक उपयोग शक्तिक रूप मे कयलनि। निष्कर्ष पर पहुँचबाक लेल तथ्य आ तर्कक सीढ़ी केँ कखनो नहि छोड़लनि। आजुक अधिकांश समालोचना मे तर्क रहितो नहि अछि, रहितो अछि त' तथ्यहीन। तेँ निष्पत्ति झटहा सँ तोड़ल आम भ' जाइत अछि। एहि सभ सीमाक अछैत आजुक मैथिली समालोचना रमानाथ झा लग ठमकल अछि से कहब उचित नहि होयत। सब सँ महत्वपूर्ण प्रस्थान अछि दृष्टिकोणक विस्तार। रमानाथ झा भाषिक एकरूपताक पक्षधर छलाह। आजुक समालोचक बहुरूपता केँ भाषाक निजता आ श्रेष्ठता मानैत छथि। वैयाकरण लेल एकरूपता अनिवार्य अछि त' साहित्यकार केँ बहुरूपते प्रिय छनि। मन रखबाक थिक जे प्राकृत-अपभ्रंश-अवहट्ठ-मैथिलीक स्वायत्तता-स्थापन मे वैयाकरण सँ साहित्यकारक योगदान अधिक अछि। तेँ ओकर बहुरूपी विशेषताक संरक्षणक चिन्तो हुनके बेसी छनि त' से स्वाभाविक अछि। दोसर बात ई जे आजुक समालोचना अधिक लोकतांत्रिक अछि। समय-साल बदलला सँ समाज आ साहित्यक धारणा-अवधारणा सेहो परिवर्तित भेल अछि। आब

धर्म आ जातिक बन्धन ढील भेल अछि। राजनीति मे ई सब भने हड़बिरड़ो मचबैत हो, समाज आ साहित्य मे आइ दृष्टिकोण आ विचारक प्रधानता छैक। पहिने मैथिली साहित्य मे धार्मिक एवं जातिगत दर्प बजैत छल, आब एकरा सबहक समभावक स्वर गुँजैत अछि। आजुक समालोचना एकरा संग डेग मे डेग मिला क' चलि रहल अछि। तेसर, रमानाथ झा प्राचीन साहित्य पर अपेक्षाकृत बेसी लिखलनि। आजुक समालोचक समकालीन लेखन केँ प्राथमिकता दैत अतीतक प्रेरक साहित्य केँ पृष्ठभूमिक रूप मे उपयोग करैत छथि। यैह कारण थिक जे आजुक समीक्षा मे भविष्यक पूर्वाभासक खोज सेहो रहैत अछि। चारिम, आजुक समय मे समाज आ साहित्यक सम्बद्धता मे वृद्धि भेला सँ समालोचनाक निकष प्रभावित भेल अछि। आब समालोचनाक काज साहित्य मे समाज केँ ताकब मात्र नहि छैक, समाज मे साहित्यक खोज करब सेहो छैक। माने ई जे समालोचनाक लेल काव्यशास्त्रक शास्त्रीय मानक गौण भ' गेलैक अछि, सामाजिक विकास-कामना सँ लिखित रचनाक लोकप्रियताक मानदण्ड बेसी प्रभावी अछि। पाँचम, आजुक समय मे समालोचनाक प्रति अभिरुचि बढ़ल अछि। रचनाकार सँ पाठक धरि समालोचनाक इच्छे नहि, प्रतीक्षा करैत देखल जाइत छथि। ई आकर्षण समीक्षा-कर्मक महत्ताक द्योतक थिक। एहि सँ प्रमाणित होइत अछि जे आजुक समीक्षा साहित्य आ समाजक मध्य सेतुक काज सफलतापूर्वक क' रहल अछि। आवश्यकता केवल एहि बातक अछि जे रमानाथ झा कालीन समालोचनाक गुण-तत्व केँ ग्रहण करैत आगाँ बढ़ल जाय।

विकासशीलता समाज आ साहित्यक स्वभाव थिक। समालोचना सेहो एहि प्रक्रियाक अंग अछि। रमानाथ झा मैथिली समालोचना केँ स्थापित आ मर्यादित कयलनि। मुदा, ई तथ्य मन रखबाक थिक जे ओ मैथिलीक प्रथम समालोचक छथि, अन्तिम नहि। हुनक सब सँ महत्वपूर्ण देन यैह अछि जे मैथिली मे केओ अन्तिम समालोचक नहि होयत से ओ सुनिश्चित क' देलनि। हम सभ गौरवान्वित आ प्रोत्साहित छी।

सन्दर्भ

1. मिथिला : लहेरियासराय, दरभंगा सँ योगानन्द कुमर तथा भोलालाल दासक सम्पादन मे प्रकाशित, वर्ष-1, अंक-6, 1929 ई०
2. रमानाथ झा : पूर्ववत्
3. रमानाथ झा : विद्यापति (मोनोग्राफ), साहित्य अकादमी, 1987, पृष्ठ-19 । रमानाथ झा विद्यापतिकेँ मैथिली राष्ट्रीयताक जनक कतेक निबन्ध मे कहने छथि। जेना, 'विद्यापति केवल मैथिली भाषाक नहि, मैथिल राष्ट्रीयताक सेहो व्युत्पत्यर्थ मे पिता थिकाह।' - 'युगपुरुष विद्यापति', कौशिकी, पुर्णिया तथा मिथिला मिहिर, 18.4.1971
4. रमानाथ झा : पूर्ववत्
5. रमानाथ झा : प्रबन्ध-संग्रह मे संकलित प्राचीन मैथिली-साहित्यक रूपरेखा नामक निबन्ध, पृष्ठ-3
6. रमानाथ झा : विद्यापतिक कीर्त्तिलताक प्रसंग, मिथिला मिहिर 15/29 अगस्त एवं 5 सितम्बर, 1971
7. रमानाथ झा : प्राचीन मैथिली-साहित्यक रूपरेखा नामक निबन्ध, पृष्ठ-16
8. रमानाथ झा : पूर्ववत्, पृष्ठ-57
9. रमानाथ झा : पूर्ववत्
10. प्रो० अमरनाथ झा : 'सारस्वत सरमे हे मराल' नामक पुस्तकक अध्याय 3 द्रष्टव्य। रमानाथ झा पर प्रकाशित एकमात्र सन्दर्भ-ग्रन्थ। एहि सँ हम अनेक तथ्य एवं सूचना लेल अछि, तदर्थ आभारी छी।
11. प्रो० अमरनाथ झा : पूर्ववत्
12. रमानाथ झा : 'मैथिलीक वर्तमान समस्या' नामक लघु पुस्तिका, 1966 ।
13. रमानाथ झा : 'मैथिली काव्यमे रस ओ अलंकार' नामक वार्ता, आकाशवाणी, पटना सँ प्रसारित, 31 अगस्त, 1966
14. उमानाथ झा : 'मुर्दा-क्लब' नामक लेख द्रष्टव्य, रमानाथ झा अभिनन्दन-ग्रन्थ, 1968, पृष्ठ-79
15. विश्वेश्वर मिश्र : 'पंजी-साहित्यक क्षेत्रमे' नामक लेख, रमानाथ झा अभिनन्दन ग्रन्थ, 1968, पृष्ठ-129
16. विश्वेश्वर मिश्र : पूर्ववत्
17. रमानाथ झा : 'समीक्षा-वृत्ति' शीर्षक निबन्ध, विविध-प्रबन्ध, 1970 ई०
18. रमानाथ झा : विद्यापति, अध्यक्षीय भाषण, विद्यापति-स्मृति-पर्व, विसपी, 1967 ई०

रमानाथ झाक सामाजिक ओ भाषिक चिन्तन

श्रीधरम

मैथिली मे एखन धरि आलोचना विधाक सम्यक रूपेण विकास नहि भ' सकल अछि। मैथिली मे आलोचनाक मतलब होइत अछि भूरि-भूरि प्रशंसा अथवा पूर्वाग्रहग्रस्त निन्दा। मैथिलीक प्राध्यापकीय आलोचनाक स्थिति त' आरो बेहाल अछि। आधुनिक मैथिली साहित्य पर एक खास वर्ग आ खास क्षेत्रक आधिपत्य एकर मुख्य कारण रहल अछि। आलोचना रचना ओ रचनाकारक द्वन्द्व सँ उपजैत अछि। दू विचारधाराक तनाव ओ टकराव सँ उपजैत अछि। मुदा मैथिली आ मिथिलामे मुख्यतः ब्राह्मण आ ब्राह्मणवादक वर्चस्व रहल। यैह कारण थिक जे मैथिली साहित्यक गोलैसी श्रोत्रिय बनाम अन्य ब्राह्मण अथवा मधुबनी बनाम दरभंगाक बीच चलैत रहल।

रमानाथ झाक समय मे मैथिली भाषा ओ साहित्य अपन अस्तित्वक लड़ाइ लड़ि रहल छल। चारू भर सँ मैथिली पर प्रहार भ' रहल छल। आन-आन भाषा सभ राज्य आ राष्ट्रक सभा-संस्थान मे घुसिया रहल छल। मुदा मैथिलीक उपेक्षा कयल गेल। एक तरह सँ ई आधुनिक मैथिली साहित्यक शैशव काल छल। एहनामे रमानाथ झा आ हुनक समकालीन विद्वानलोकनि मैथिलीक परंपरा आ सामर्थ्य सँ मिथिलाक संग-संग बाहरक लोक केँ सेहो परिचित करौलनि। अपन भाषा ओ साहित्यक प्रति आत्मविश्वास भरल गौरव-बोध उत्पन्न करौलनि। ई ऐतिहासिक महत्त्वक बात थिक। देखल जाय त' रमानाथ झा मैथिलीक पहिल आचार्य छलाह जे मैथिलीक अतीत ओ वर्तमानक बीच अविच्छिन्न परंपराक सूत्र केँ जोड़लनि। मुदा, हुनक विचार ओ दृष्टिकोण केँ

आँखि मूनि क' स्वीकार नहि कैल जा सकैत अछि। हुनक चिन्तन मे जे विरोधाभासी तत्त्व विद्यमान अछि ओकरा अनठा क' आगू बढ़ब, आलोचना-कर्मक प्रति सरासर अन्याय होयत।

निःसंदेह, मैथिली आलोचना परंपरा रमानाथ झा केँ कात क' आगू नहि बढ़ि सकैत अछि। अपना समय मे जतेक कार्य ओ कैलनि तकर जोड़ा मैथिली मे केओ नहि। मुदा विचारणीय बात ई थिक जे वर्तमान संदर्भ मे हुनक आलोचना ओ चिन्तन परंपरा कतेक प्रासंगिक अछि। प्रसिद्ध पाश्चात्य विद्वान टी.एस.इलियट परंपरा केँ जानबाक लेल 'इतिहास-बोध' केँ एकटा जरूरी तत्त्व मानैत छथि। इतिहास-बोधक व्याख्या करैत ओ कहैत छथि जे अतीत केँ अतीतत्व मे नहि देखि ओकरा वर्तमान संदर्भ मे देखब इतिहास-बोध थिक। जखन हम एहि संदर्भ मे रमानाथ झाक चिन्तनक परीक्षण करैत छी त' ओ यथास्थितिवादी साहित्यकार लोकनि सँ बहुत अलग नहि देखाइत छथि। हुनक चिन्तन मे जे मैथिल समाज अछि तकर परिधि ब्राह्मण आ कायस्थ सँ दूर नहि जाइत अछि।

रमानाथ बाबूक सभसँ पैघ देन अछि हुनक अनुसंधान कार्य। जाहि समय मे मैथिली केँ बोलीक रूप मे एक तरह सँ हड़पि लेल गेल छल, ओ अपन अनुसंधान कार्य द्वारा मैथिलीक अप्राप्य आ ओझल साहित्य केँ सामने अनलनि आ दुनिया केँ ई देखेबाक प्रयास कैलनि जे हमर साहित्य कोनो भारतीय भाषाक साहित्य सँ पुरान आ समृद्ध अछि। एहि संदर्भ मे हुनकर लेख 'प्राचीन मैथिली-साहित्यक रूपरेखा'क महत्त्व ऐतिहासिक अछि। मुदा हुनक विचारसँ सभ ठाम सहमत भेनाइ सेहो मुश्किल अछि।

देखल जाय तँ रमानाथ झाक वैचारिक चिन्तन मे शुरूसँ अन्त धरि एकटा फाँक अछि जाहि दिस मोहन भारद्वाज अपन लेखमे इशारा करैत छथि। एकर मूल कारण ई थिक जे हुनकर चिन्तन मे मिथिलाक समाज गौण अछि। राजसत्ता आ ओकर आसपासक वर्ग पर हुनक निर्भरता अधिक छनि। मिथिला ओ मैथिलीक विकासक हेतु ओ जनताक अपेक्षा महाराजक कृपादृष्टि पर अधिक निर्भर छथि। संगहि मिथिलाक प्रगतिक लेल धर्म आ जातिव्यवस्थाक सेहो आग्रही छथि।

ई एकटा तथ्य थिक जे संपूर्ण भारत जखन नवजागरणक प्रक्रिया सँ आलोड़ित भ' रहल छल तखन मिथिलाक लोक अपन कानमे तूर-तेल देने शास्त्रार्थ आ धौत-परीक्षा मे लागल रहल। दरभंगा-राज एहि प्रवृत्तिक आश्रय स्थल छल। यैह कारण थिक जे हमरा ओतए कोनो राजा राममोहन राय, दयानन्द सरस्वती, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, ज्योतिबा फुले अथवा पंडिता रमाबाई, सावित्री बाई फुले नहि भेलीह। आ ने हिनका लोकनिक विचार केँ पोंगा-पंथी सभ मिथिला मे आब' देलक। रमानाथ झा अंग्रेजी पढ़ने रहथि, मुदा हुनकर चेतनाक निर्माणक पृष्ठभूमि मे मिथिलाक यथास्थितिवादी दृष्टिकोण अछि। यैह कारण थिक जे ओ सामाजिक एकताक सूत्र धर्म मे खोजैत छथि। ओहि मनुवादी धार्मिक व्यवस्थामे जे भारतीय समाज केँ खंड-खंड मे बाँटि क' शोषण, अत्याचार आ गुलामीक वातावरण तैयार केलक। एहि क्रम मे ओ विज्ञानक सेहो उपेक्षा करैत छथि। 1929 ई० मे प्रकाशित अपन लेख 'मैथिल आ मैथिली' मे रमानाथ झा लिखैत छथि, ''अंग्रेजी शिक्षा सँ पश्चिमी सभ्यताक आकर्षण ततेक पैघ भेलैक जे धार्मिकता सँ चित्त हटि गेलैक। विज्ञानहुक वृद्धएँ धर्म मे श्रद्धा कम भए गेलैक। कहबाक तात्पर्य जे अखिल भारत वर्ष मे सभ समाज सँ धर्म-मूलक सामाजिक संबंध चलि गेलैक।''[1]

भाषाकेँ धर्मक पर्याय मानैत ओ आगाँ कहैत छथि, ''जाहि धर्मक बलें हमर समाज सकल भारतीय समाजक नेता छल तकर आब सम्मान नहि रहलैक।''[2] तैँ रमानाथ बाबू मिथिला आन्दोलनक नेतृत्व दरभंगा नरेश सँ करबाक आग्रह करैत लिखैत छथि, ''एक बेरि उत्साहक तरंग सँ यदि समस्त युवकक संग संचालित भय जाय तँ श्री 5 मान मिथिलेशक नेतृत्व मे मैथिलीक पुनरुद्धार बिना श्रम केँ अनायास सिद्ध भ' जायत।''[3]

जाहि मिथिलेशक संस्था 'मैथिल महासभा'क अनुसारेँ मात्र मैथिल ब्राह्मण आ कर्ण कायस्थ मैथिल छल तकरा आन्दोलनक नेतृत्व देनाइ एकटा ऐतिहासिक भूल मानल जायत। एहि संदर्भ मे 'यात्री' जी 1938 मे प्रकाशित अपन लेख 'मैथिल महासभा : मैथिलत्वक मानदंड' मे लिखैत छथि– ''मैथिल महासभाक सिद्धान्तानुसार मैथिल ब्राह्मण तथा कर्ण कायस्थ (!) मात्र सुच्चा मैथिल थिकाह।

मिथिलाक सीमाक भीतर बसैत, मिथिलाक अन्न-जलसँ निर्वाह करैत, विशुद्ध मैथिली बजैत भूमिहार-क्षत्रिय आदि अन्य जातीय यदि क्यो अपना केँ मैथिल कहताह तँ जातीय 'महासभा' नाङ्रि ठाढ़ कऽ हुनका दिस बधुऔत, मुँह बिजुकौत! परिणामस्वरूप हुनका लोकनि अपना घर-आँगन मे व्यवहृत भाषा – ठेठ मैथिली केँ मैथिली कहबामे अपन हेठी बुझै लागल छथि।''[4]

यात्री सन दूरद्रष्टा भविष्यकेँ देखैत मैथिलीक एहि परिभाषाक विरोध कैलनि। किऐक त' ई प्रवृत्ति मैथिली केँ मिथिलाक आम-जनता सँ काटबाक षडयंत्र छल। मुदा रमानाथ बाबू महासभा द्वारा बनाओल मैथिलक मानदंडक अनुगामी देखि पड़ैत छथि। हिन्दी मे लिखल अपन पोथी 'मैथिल ब्राह्मणों की पंजी व्यवस्था' मे ओ लिखैत छथि, ''मिथिला की संस्कृति मे केवल मैथिल ब्राह्मण और मैथिल कायस्थों का ही योगदान प्रमुख है। ये ही दोनों अपने को सर्वतोभावेन मिथिला का मानते रहे, अपने को मैथिल कहते रहे। और कोई दूसरी जाति नहीं है जिसने अपने को मिथिला के ही अन्तर्गत रखी। यही कारण है कि जब मैथिल महासभा की स्थापना हुई तो मैथिल से केवल ब्राह्मण और कायस्थ दो ही जाति के लोग गृहीत हुए।''[5]

स्पष्ट अछि जे रमानाथ झा सेहो मैथिल माने ब्राह्मण आ कायस्थ मानैत छथि। तखन मैथिली ककर भाषा भेल? आश्चर्यक बात ई जे ओ अपन पोथी पंजी-व्यवस्था मे मैथिल ब्राह्मणक एहि व्यवस्थाक गुणगान तँ करैत छथि, मुदा एहि व्यवस्थाक कारणेँ जे समाज मे असमानता व्याप्त भेल, 'बिकउआ' परंपरा शुरू भेल, अनाथ बालक, मसोमात आ विधवाक हेंज ठाढ़ भेल संगहि समाज मे अनाचार ओ अवैध संबंध बढ़ल, ताहि दिस ओ ध्यान नहि दैत छथि। जखन हमरालोकनि आन्दोलनक प्रारंभहि मे अपना भाषा केँ दलित ओ अन्य मिथिलावासी सँ काटि देलहुँ जे मूलतः हुनकहि भाषा छल, तखन एकर श्रेष ककरा देल जायत? अष्टम अनुसूची मे चलि गेल मात्र सँ मैथिली नहि बनि सकैत अछि। किएक त' ओहि अनुसूची मे संस्कृत आ पालि सन भाषा सेहो अछि जकरा बजनिहार नगण्ये जकाँ छथि। हँ, ई जरूर होयत जेना अकादेमी

मे अपन भाई-भातिज आ चटिया-गोतियाकेँ पुरस्कार दियाबैत रहलहुँ अछि, तहिना किछु आरो समांगक भला भ' जायत। आ आब मैथिलीक पोथी सेहो सरकारी गोदाम मे सड़त। मुदा ताहि सँ मैथिली जनताक बीच नहि पसरत। ई हमरा सभकेँ जानि लेबाक चाही।

जे दरभंगा महाराज अपन जागीर बचेबाक लेल हरदम दिल्ली दरबार आ अंग्रेजक चाटुकार बनल रहल। जे दरभंगा महाराज धर्मक नाम पर पंडित वर्ग केँ प्रश्रय द' मिथिलाक किसान आ आम जनताक अबाध शोषण करैत रहल, जे मिथिलेश 'मैथिल महासभा बनाक' ब्राह्मण आ कायस्थक खुट्टीमे मैथिल आ मैथिली केँ खुटेस देलक, ताहि मिथिलेशक नेतृत्व केँ मिथिलाक शोषित-दलित जनता कोना स्वीकार क' सकैत छल? एहिठाम कने विषयांतरमे जाए चाहब किएक तँ ई वैह बिन्दु थिक जत' सँ ई आन्दोलन भटकल आ मैथिली-मिथिलाक विस्तृत जनता सँ कटैत गेल जे आइ धरि जुड़ि नहि सकल अछि।

जाहि समयमे रमानाथ बाबू मिथिलेश सँ मैथिलीक पुनरुद्धार करबाक आग्रह करैत ई लेख लिखने छलाह ताहि काल मे मिथिलाक किसान आ आम जनता दरभंगा राजक शोषणक विरुद्ध लड़बा लेल जमा भ' रहल छल। समाजशास्त्री महेन्द्र नारायण कर्णक अनुसारेँ ''बीसम शताब्दीक दोसर दशक मे स्वामी विद्यानन्दक नेतृत्व मे दरभंगा राजक जमींदारी शोषणक खिलाफ उठल स्वर सँ शुरू भ' स्वामी सहजानन्द सरस्वतीक किसान सभा आन्दोलनक समय मे रैयत सभक संघटित प्रतिरोध-ग्रामीण क्षेत्रक वातावरण केँ बदलि देबा मे मात्र सक्षमे टा नहि भेलै, आगाँक लेल एकटा राजनीतिक आधार सेहो बना देलकै।''[6]

ध्यातव्य अछि जे आन-आन ठामक भाषा आन्दोलन ओतुका सामाजिक आन्दोलनसँ उपजल छल। स्वयं आधुनिक हिन्दी आजादीक आन्दोलन सँ उपजल भाषा थिक। मुदा मैथिली आन्दोलन सामाजिक-संघर्ष सँ कटल रहल। कारण मिथिलाक सामाजिक संघर्ष मिथिलेशक विरुद्ध छल आ मैथिलीक आन्दोलनकारी लोकनि अपन ब्राह्मण राजाक प्रति अंधभक्त।

जाहि तरहेँ किसान-मजदूर पर दरभंगा नरेश अत्याचार क' रहल छल, तकर इतिहास सुरक्षित अछि। भाषाक स्वाभिमान तखनहि जगैत अछि जखन कि मुँहमे पाँचो आंगुर जाइत अछि, देह पर वस्त्र होइत अछि आ साले-साल घर पर खढ़ चढ़ैत रहैत अछि। मुदा मिथिलाक पैघ वर्ग एकरे धुनमे बताह छल। भूखक भाषा आक्रोश होइत छै। तेँ विद्यानन्द आ सहजानन्द सरस्वती मिथिलाक बाहर सँ आबि एतुका आक्रोशकेँ नेतृत्व देलनि आ मिथिलाक लोक मिथिलेशक जी-हुजूरी मे लागल रहलाह। स्वामी सहजानन्द अपन एकटा संस्मरण मे लिखैत छथि ''जखन हम दरभंगा जिलाक पड़री परगनाक एकटा गाममे गेलहुँ, तँ 20-25 हजारक भीड़ ठाढ़ छल। सभ प्रायः नांगट, मैल आ फाटल चिथड़ा पहिरने कारी झामर, दरिद्रताक मूर्ति देखाए पड़ैत रहय। हमरा कनाय गेल।''[7] आगू ओ लिखैत छथि जे पड़री परगना मे लगान नहि देबाक कारणे जमीन्दार अपन अमला केँ हुक्म देलक जे ''एहि मौगी केँ नांगट कर आ एकर ससूरक जाँघ मे एकर जाँघ बान्हि दे।''[8] एहन अत्याचारी नरेश आ हुनक संरक्षण पौनिहार लोक जनताक विश्वास कोना जीत सकैत छल?

भारतीय नवजागरणक पृष्ठभूमि मे सामाजिक ओ राजनीतिक आन्दोलन छल। नवजागरण मे सती प्रथा, विधवा-समस्या आ जाति-पाति, छुआ-छूत पर पहिल बेर विमर्शक शुरुआत भेल। भाषा ओ साहित्य एहि विमर्शक संवाहक बनल। पहिल बेर भाषा भारतमे सामाजिकताक प्रतीक बनल। बंगला नवजागरण, मराठी नवजागरण, हिन्दी नवजागरण आदि भाषा नामसँ जानल गेल जे भारतीय नवजागरण अथवा पुनर्जागरणक हिस्सा बनल। मिथिला मे एहि तरहक सामाजिक आन्दोलन नहि भेल। मुदा, रमानाथ झा विद्यापति पर लिखल अपन पोथीमे विद्यापतिकेँ 'मैथिल पुनर्जागरणक दीप्ततम देन कहैत छथि।''[9]

ध्यान देबाक बात ई अछि जे ओ मैथिल पुनर्जागरण शब्दक प्रयोग करैत छथि ने कि मैथिली पुनर्जागरण। हुनक ध्येय सेहो वैह अछि। मैथिल पुनर्जागरण अर्थात् 'ब्राह्मण-कायस्थक' पुनर्जागरण। जाहिमे रूढ़िवाद आ जातिवाद अपन चरम सीमा केँ छूलक। रमानाथ झा मिथिला पर ब्राह्मण शासन केँ मैथिल नवजागरण मानैत छथि। हुनका अनुसारेँ मुसलमानक शासनक बाद मिथिलामे

ब्राह्मणक शासन भेल आ ओ शासक लोकनि मनुवादी जातीय अनुशासनकेँ नियंत्रित कयलनि–सैह भेल मैथिल पुनर्जागरण। ओ लिखैत छथि, ''प्रबुद्ध आ हितैषी कर्णाट सभक अधीन मैथिल समाजक अगुआ लोकनि मुसलमान सभ केँ दूर रखबाक सभ यत्न कयलनि आ अपन सामाजिक संरचना केँ संघटित करबामे लागि गेलाह। समस्त समाजक आचार आ प्रत्येक जाति वा वर्गक अनुशासन केँ नियंत्रित करबा लेल एकटा नब व्यवस्था नियोजित आ उद्घोषित कयल गेल।''[10]

रमानाथ झा अपन लेख 'प्राचीन मैथिली साहित्यक रूप-रेखा' मे विस्तार सँ मिथिलाक अतीत आ ओकर अविछिन्न परंपरा केँ बेराबै छथि। ओ अहू आरोप केँ सप्रमाण कटैत छथि जे मैथिली मात्र ब्राह्मणेक भाषा रहल अछि ओ एत' धरि कहैत छथि जे 'ब्राह्मण लोकनि ब्राह्मणक गौरवसँ संस्कृतेतर भाषामे रचना ताहि दिन नहिए करैत छलाह।''[11] मुदा तखन दलित-पीड़ित आ अवर्ण समाजक भाषा मैथिली कोना सवर्ण लोकनिक भाषाक रूपमे रूढ़ होइत गेल, ताहि प्रक्रिया केँ ओ स्पष्ट नहि करैत छथि।

मैथिलीक मानकीकरण आ शैली निर्धारणक प्रति जे हुनक आग्रह अछि सेहो हुनक दृष्टिकोणक परिचय दैत अछि। ओ स्पष्ट कहैत छथि जे ''हमरा भाषाक विरोध स्वीकार्य अछि, मान्य अछि, मुदा भाषाक अशुद्धि मान्य नहि।'' मैथिलीक शैली निर्धारणक जे कसौटी रखैत छथि ओ मुख्य रूप सँ ब्राह्मण मात्रक कसौटी थिक। हुनका अनुसारेँ 'शब्द विशुद्ध आ 'शिष्ट जनक व्यवहारक अनुकूल' हेबाक चाही। ई आश्चर्यक बात थिक, जे लोक भाषा शिष्ट जनक विशुद्धताक विरोध मे विकसित भेल ओकरा पुनः शिष्टजन द्वारा हड़पि लेल गेल। निःसन्देह, शिष्टजन सँ रमानाथ बाबूक तात्पर्य पंजी अधिकृत ब्राह्मण-कायस्थ सँ अछि कि कहीं राड़-रोहिया द्वारा प्रयुक्त शैली ने आबि जाय।

देखल जाय तँ एखन धरि मैथिली मे मानकीकरण ओ शैली निर्धारणक तमाम बहस मात्र ब्राह्मण लोकनिक शैली-विविधता पर आधारित रहल अछि। सोतिपुराक शैली चलय कि भलमानुषक। पंचकोसीक ब्राह्मणक शैली चलय

कि दरभंगाक ब्राह्मणक। 'हमरा लोकनि काँ' लिखल जाय कि 'हमरा सभकेँ' लिखल जाय। मुदा मिथिलाक वृहत समुदाय 'हमरा आरुक' बाजैत अछि ताहि पर कहियो विचार नहि कैल गेल। कोनो भाषाक मानकीकरण मे इहो ध्यान राखल जाइत अछि जे कोन शैली वृहत जन-समुदाय द्वारा प्रयुक्त होइत अछि। ओ कतेक सरल ओ वैज्ञानिक अछि। मुदा मैथिली मे से एखन धरि नहि भेल।

रमानाथ बाबूक सबसँ पैघ देन ई अछि जे ओ पहिल बेर एहि क्षेत्र मे गम्भीरतापूर्वक प्रयास कयलनि जकरा अंतिम रूप देनाइ बाकी अछि। जँ मिथिलाक जनता मैथिली केँ बचा क' राखि लेत तँ चाहे ओ कोनो लिपि मे लीखल जाय, मरि नहि सकैत अछि। हिन्दी, मराठी वा नेपाली सन कतेको भाषा देवनागरी मे लिखल जाइत अछि। अंग्रेजी रोमन केँ अपनौलक, तेँ कोनो भाषाक हेतु स्वतंत्र लिपि भेनहि ओकर अस्तित्व नहि बचैत अछि। भूमंडलीकरणक एहि सर्वग्रासी दौर मे अंग्रेजी जाहि तरहेँ अपन पैर पसारि रहल अछि ताहिसँ हिन्दी समेत अन्य सभ भारतीय भाषा पर खतरा बढ़ि गेल अछि। एहना स्थिति मे कोनो भाषा केँ बचेबाक लेल जनताक स्वीकार्यता आ रोजगारक निर्माण अंततः सबसँ पैघ हथियार साबित होयत।

अंतमे, एहि बिन्दु पर पुनः आबी जे रमानाथ बाबूक वर्तमान संदर्भ मे की महत्त्व अछि। की हुनक विचार पुरान अछि तेँ त्याज्य अछि। की तैं हुनक योगदान केँ बिसरि जेबाक जाही? कथमपि नहि। ओ जाहि समय मे भेलाह ताहि मे हुनका पर ई आरोप नहि लगा सकैत छी जे हमारा सभक सभटा समस्याक समाधान ओ किएक नहि क' देलनि। ओ जे केलनि ताहि सँ आगाँ करबाक जरूरत अछि। एहि अवसर पर हुनक प्रत्येक कथन केँ चरणामृत जहाँ घोंटि जायब सेहो उचित नहि। मिथिला दार्शनिकक स्थान रहल अछि। एत' प्राचीन काल सँ खंडन-मंडनक परंपरा रहल जे बाद मे 'गंजन'क रूप लैत गेल। रमानाथ बाबूक एहि जन्म-शताब्दीक अवसर पर ई आशा कैल जा सकैत अछि जे मैथिली मे तटस्थ ओ स्वस्थ आलोचना परंपराक विकास होयत आ एहि बिन्दु सभ पर स्वस्थ ओ सार्थक बहस होयत। हुनका मोन रखबाक अहि सँ नीक तरीका दोसर नहि भ' सकैत अछि किएक तँ ओ अंततः हृदय सँ मैथिलीक सेवक छलाह।

संदर्भ :

1. 'मिथिला' वर्ष-1, अंक-6 मे प्रकाशित रमानाथ झाक लेख 'मैथिल ओ मैथिली'।
2. उपरोक्त
3. उपरोक्त
4. यात्री समग्र, राजकमल प्रकाशन, संस्करण-2003, पृ.-352
5. रमानाथ झा-'पंजी व्यवस्था', कन्हैयालाल कृष्णदास, दरभंगा, संस्करण-1977, पृ.-53
6. अँतिका, अप्रैल-2005-मार्च-2006
7. राघव शरण शर्मा (संपादक) सहजानंद रचनावली, भाग-4, पृ.-229
8. उपरोक्त
9. रमानाथ झा 'विद्यापति', साहित्य अकादमी, सं.-1987, पृ.-5
10. उपरोक्त, पृ.-7
11. रमानाथ झा, 'प्राचीन मैथिली साहित्यक रूपरेखा

■

पंकज पराशर

आलोचनाक मादे, मैथिली मे खास क' क' सोचब'एखन धरि हमरा लगैत रहल अछि जे ई हमर धर्म नहि थिक। एखन जे किछु कह' लेल एलहुँ अछि, तकरा हमर आपद्धर्म बूझल जा सकैत अछि।

मोहन भारद्वाज जीक आलेख हम बहुत ध्यान सँ सुनलहुँ अछि। हम एतय किछु प्रश्न उपस्थित करय चाहै छी आ आशा करै छी जे अगिला वक्ता एहि सन्दर्भ मे बजताह। टी०एस० इलियट के एकटा लेख छनि-ट्रेडिशन एंड टैलेन्ट। एहि सँ पूर्व कि हम ट्रेडिशनक मादे अपना दिस सँ किछु कही, भारद्वाजजीक आलेख सँ किछु बिन्दु अहाँ सभक सोझा राख' चाहब। आ चाहब जे परंपराक मादे, हम सब, जे कि प्रगतिशीलक रूप मे अपना आप कें आडेंटिफाई करै छथि, तिनका सब के लेल सेहो ई एकटा सोचबाक बात भ' सकैए। खास क' क', ओहि काल मे जखन अहाँ आलोचनात्मक दृष्टि के बात करै छियै। रमानाथ बाबूक मादे जे भारद्वाज जी कहलनि ओहि मे एकटा पंक्ति कहलनि तथ्यक अनुसंधानक मादे। हम मोन पाड़' चाहब जे 'ह्वाट इज हिस्ट्री' (ई०एच० कार) कहैत अछि जे इन्टरप्रिटेशन इतिहास मे सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण होइत अछि। यैह तँ कारण बनैत अछि 1857क विद्रोह कें क्यो इतिहासकार 'गदर' वा सिपाही-विद्रोह कहि जाइत अछि। तँ, दोसर दिस आन इतिहासकार ई कहैत अछि जे भारतीय स्वतंत्रताक ई प्रथम संग्राम छल। एक्के 1857 पर दू मत!

तहिना, रमानाथ बाबूक मादे जे विचार व्यक्त कएल गेल, हम कहब जे प्रगतिशील धाराक लोकक दिस सँ एहन गलती नहि होअय जे परंपराक मूल्यांकन करैत काल ने तँ हम एतेक बेसी अतिवादी भ' जाइ जे परंपराक संरक्षित कर' बला तत्त्व कें बिसरि क' सो कॉल्ड प्रोग्रेसिवनेस कें प्रश्न चिह्नक अन्तर्गत क' ली! स्वयं इलियटे कहने छलाहें जे जँ अहाँ कें आलोचक

बनबाक अछि, तँ अहाँ कें होमर आ चासर सँ ल'क' इलियट जे लिखि रहल अछि, तकर सम्पूर्ण जानकारी हेबाक चाही। तहिना, जँ अहाँ आजुक कविता पर आलोचना लिख चाहै छी तँ जाधरि अहाँ लग भरत मुनि सँ ल'क' आइ धरिक आलोचनात्मक विकासक स्पष्ट रूपरेखा नहि हएत, ताधरि संतुलन आ पूर्णता प्राप्त करब असंभव अछि। अस्तु, किछु प्रश्न अछि जे आजुक मैथिली आलोचना, जेना कि भारद्वाज जी कहलनि जे रमानाथ झाक ऋणी अछि, तँ हम जान' चाहब जे ई ऋणी हमसब कोन-कोन रूप मे छी। आ, पंजी प्रथा मिथिलाक कोन वर्गक वस्तु छलै? ककरा लेल छलै ओ? एखन तँ, सबॉल्टर्न थ्योरीक अवधारणाक काल थिक। की मिथिलाक आम जनता एकर इतिहास मे जगह पाबि सकल अछि? लड़ल सिपाही, तलवार बनौलक कमार, उद्यम केलक घोड़ा मुदा जितलाह के? शिवसिंह। इतिहास शिवसिंहक थिकनि। पंजीक उपयोग तँ भेल मुदा निष्पत्ति की बहरायल? हम आग्रह करब जे एहू दृष्टिकोण सँ रमानाथ बाबूक काज पर ध्यान देल जेबाक चाही। ऋणी हम सब कोना छी, आ कतेक छी-सेहो एहि सँ स्पष्ट भ' सकत।

तत्कालीन मैथिली आलोचनाक सम्बन्ध मे हम एकटा बात आर कह' चाहब। हमरा तँ लगैत अछि जे तहिया रचना बहुत पाछू चलि गेल छलैक आ आलोचना ओकरा ढोइबला एकटा गाड़ी बनि गेल छलैक। कारण, रचना सँ कतौ ई अपेक्षा कयल जाय जे ई एही धारा मे लिखल जाय? हमरा क्षमा करब। भारत-विभाजन, जाहि मे कि एक लाख लोक मारल गेल छला आ दस लाख बेघरबार भ' गेल रहथि, मुदा मैथिली मे एकर कोनो ध्वनि सुनाइ नहि पड़ैत अछि। अस्तु, आगाँक आलेखपाठकर्त्ता एहि बिन्दु पर चर्चा करताह, से आशा करै छी।

अगिनपुष्प

हमरा बूझि पड़ैत अछि जे परंपरा सँ कोनो साहित्य आ कि आलोचना बहुत बेसी फराक नहि भ' पबैत अछि। एकटा सुदीर्घ कालखण्ड मे राखि क' ओकरा हम पृथकता मे देखि सकैत छी। चाहे ओ परंपरागत रचनाकार होथि

चाहे प्रगतिशील रचनाकार होथि। ताहि दुआरे, एकरा बहुत विवादक सन्दर्भ मे देखबाक आवश्यकता हमरा नहि बुझाइत अछि। मम्मटक 'काव्यप्रकाश' निश्चित रूप सँ आइ हमर मानक नहि भ' सकैत अछि, थोड़ बहुत ओ हमर मार्गदर्शन क' सकै छथि-बस ततबे। लेकिन, ओहि परम्परा सँ हम बिल्कुल छिन्न नहि भ' सकै छी।

दोसर एकटा बात, जेना कि पंकज पराशर कहै छलाह-भारद्वाज जीक जे लेख छल से रमानाथ झाक महत्त्वपरक लेख छल। निश्चित रूप सँ, रमानाथ झाक जे योगदान छलनि पंजीप्रथा कें व्यवस्थित करै मे, ओत्तहि धरि ओ सीमित छलाहे। निश्चित रूप सँ ई विवाद छैक। एहि पर हम सब चर्चा करब फेर जे ओ ककर छलै, ककरा लेल छलै, ओ निश्चिते सबॉल्टर्नक वस्तु नहि छलै।

हमरा सभक ई दायित्व थिक आ एहि संगोष्ठीक सफलता सेहो जे रमानाथ झाक जे आलोचना छलनि, ततहि हमरा लोकनि सीमित नहि रही। ओकर सीमा कें टपी, ओहि सँ आगू बढ़ी।

■

प्रभाकर झा

हम प्रतिमान-परिवारक बहुत आभारी छी जे एहि अवसर पर हमरा आमंत्रित कयल गेल। एक लम्बा समय सँ हम साहित्य आ संस्कृति पर शोध करैत रहल छी, अध्यापन करैत रहल छी। जेना कि संचालक (अशोक) अपने केँ सूचना देनहि छथि, रमानाथ बाबू हमर मातामह छलाह। तेँ, पहिने एक प्रसंग हुनक दौहित्रक रूप मे।

हमरा मोन अछि जे अपन आखिरी समय मे बाबा ककरो-ककरो कहने छथिन, जतय हमहूँ रही, जे अपन संरक्षक महाराज कामेश्वर सिंह सँ जखन कखनहुँ हुनका भेंट होइनि,—ओना तँ भेंट कमे होइन, कारण ओ दरबार मे नहि जाथिन—तँ महाराज हुनका पहिल प्रश्न पुछथिन—की यौ, किछु एहन लिखै छी ने जे लोक मुइलाक दसो बर्खक बाद स्मरण करत! दुनूक वयस करीब-करीब एके रहनि। महाराज दू बर्ख जेठ रहथिन प्रायः।

से, आजुक ई संगोष्ठी द्योतक अछि जे मुइलाक 35 बर्खक बाद हुनकर स्मरण आ हुनक कार्यक विश्लेषण भ' रहल अछि, से बहुत आनन्ददायक थिक।

अस्तु। ई तँ अपना सब गोटे जनै छियै जे मिथिला मे जे कल्चरल नेशनलिज्म के मूवमेन्ट पहिने इंडिया मे शुरू भेलै, बंगाल अथवा मुद्रास प्रेसिडेन्सी अथवा बाम्बे प्रेसिडेन्सी, से मिथिला मे बहुत देरी सँ आयल। बंगाल सँ हमर सभक सम्बन्ध बहुत पुरान आ बड़ निकट रहल। मुदा, उनैसम शताब्दीक मध्य सँ जे बंगाल मे, ओकर जे 'वेव' एलै से हमरा सब धरि नहि पहुँचल। किछु सम्पर्क रहै। मुदा, ओतेक बेसियो नहि रहै। एकर कारण एकटा भ' सकैए जे हमर सभक जे पुरान ट्रेडिशनल कॉन्ट्रैक्ट्स छल, से एहि बीच मे बंगाल सँ टुटि क' काशी सँ भ' गेल छल। जहिना यू.पी. मे बहुत लेट सँ

एलै, तहिना मिथिलामे। बल्कि, यू.पी.क सेहो 29 बर्खक बाद। यू.पी. मे डेट कएल जाइ छै जे 1860-1870 मे बनारस मे जे एक्टिविटी भेलै, तँ हमरा सभक जे लेट मॉडर्नाइजेशन मिथिला मे शुरू भेल, तकर पहिल मेनिफेस्टेशन, जकरा कल्चरल नेशनलिज्म कहबै—आ, कल्चरल नेशनलिज्म के मात्र मिथिले टा मे नहि, मात्र रमानाथ बाबूक रचनाए टा मे नहि, सब ठाम कल्चरल नेशनलिज्म के एकटा कैरेक्टरिस्टिक होइ छै, जे ओ समाजक जे इन्टरनल डिफरेन्सेस छै, समाज मे जे आन्तरिक विभेद छै, तकरा ओ कोलैप्स क' क' ओ एकटा अस्मिता केँ स्थापित करबाक कोशिश करै छै। एकर पहिल स्रोत होइ छै—नैरेटिव हेरिटेज, जेना मिथिलाक इतिहास। जेना, हम सब कहै छी जे चन्दा झा प्रथम-प्रथम एहि दिस उपक्रम केलनि, ताही परिप्रेक्ष्य मे म०म० परमेश्वर झा एहि काज केँ आगू बढ़ौलनि। आनो लोक जेना रास बिहारी लाल दास (मिथिला दर्पण) एकरा आगू बढ़ौलनि।

मुदा, ओहि प्रोजेक्ट केँ एकटा कोडीफिकेशन-ओकरा कन्डेन्स क' क' ओहि सँ एकटा कोहैरेन्ट नैरेटिव एकाउन्ट प्रोड्यूस करी, ई जे गुरुत्तर कार्य छै, से 1930क दशक मे शुरू भेल आ से हमरा सब ले, जे बादक पीढ़ी के छी, बड्ड बेसी प्रेरणादायक जुग लागल। ओहि जुग मे, जाहि मे हरिमोहन बाबू-सन कथाकार, यात्री जी सन कवि, रमानाथ बाबू-सन गद्यकार, अनुसंधानकर्त्ता, मुदा सबसँ बेसी मैथिली साहित्य केँ एकटा व्यवस्थित रूप देनिहार, एकटा एहन दृष्टिक प्रस्तोता जाहि सँ सम्पूर्ण मैटेरियल केँ अपन अस्मिताक परिप्रेक्ष्य मे देखल जा सकय—से छलाह रमानाथ झा।

एहि दृष्टिएँ, कोडीफिकेशनक काज, मात्र क्लासीफिकेशन नहि, एकटा एहन क्रिटिकल डिस्कोर्स, जाहि सँ भाषा, साहित्य आ सांस्कृतिक इतिहास, तीनू केँ बान्हि क' एक संगे देखल जा सकय। तेँ, ई कार्य ओहि समय मे शुरू भेल। यैह काज आनो भाषा सब मे भेलै। आन भाषा सब मे प्रायः मैथिली सँ पहिनहि भेलै, कतहु 40 वर्ष पहिने तँ कतहु 10 वर्ष पहिने। हमर सभक क्षेत्र मे ई काज देरी सँ भेल।

आब, एही सम्बन्ध मे, हम मानकीकरणक प्रश्न पर अपन किछु विचार राख' चाहब। एहि सन्दर्भ मे जे एत' बात भेल अछि ओहि मे पॉलिटिकल

लैंग्वेज व्यवहार कएल गेलैए। सामान्यतः, जकरा लिंग्विस्टिक्स (फंक्शनल) कहल जाइ छै, ओहि सँ हमरा सब केँ बहुत इनसाइट नहि भेटैए। ओ डिस्क्रिप्टिव छै। फंक्शनल छै। आ, बहुत मामला मे ओ हमरा सब केँ सहायता करत–कोनो भाषा सिखबै मे आ कि सिखै मे– तकर आशा नहि। मुदा जकरा फिलॉसोफी ऑफ लैंग्वेज कहल जाइ छै, आ जकर हम दू टा विद्वानक मत एत' राख' चाहब। पहिल– रूस के-मिखाइल वाख्तीन, जनिकर भाषा संबंधी विचार आइ यूरोप आ अमेरिका मे अत्यन्त प्रशस्त मानल जा रहल अछि, वाख्तीनक विचार मे, कोनो भाषाक अध्ययन एकटा एब्सट्रैक्शन थिक। एकटा विशिष्ट स्पीच कम्यूनिटी होइ छै, जाहि मे एकटा न्यूट्रल इंटैलिजिबिलिटी रहै छै, लेकिन स्पीच कम्यूनिटी मे कोनो होमोजेनिटी नहि रहै छै। बहुत प्रकारक भाषा, कोनो स्पीच कम्यूनिटी मे रहै छै। तखन, एकर जे ऑपेन फील्ड छै, ताहि मे दू टा फोर्सेस हरदम रहै छै, एकटा जकरा ओ 'मोनोब्लॉट' कहै छथिन–आ दोसर जेकरा ओ 'हेट्रोब्लॉट' कहै छथिन। मोनोब्लॉट फोर्स ऊपर सँ भाषाक एकटा रूपकेँ इम्पोज करै छै– सम्पूर्ण स्पीच कम्यूनिटी पर। मुदा संगहि संग, कोनो स्पीच कम्यूनिटी मे, हेट्रोब्लॉट फोर्सेस जे होइ छै से नीचाँ सँ, ओहि मोनोब्लॉट फोर्स केँ हरदम चैलेंज करैत रहतै। आ, वाख्तीनक निश्चित विचार छनि जे मोनो ब्लॉट्रियल जकरा ओ आन ठाम ऑथोरिटेटिव डिस्कोर्स कहै छथिन, से एकटा पॉलिटिकल आ एथिकल ऑथोरिटेनिज्म के द्योतक होइ छै। आ, हेट्रोब्लोशिया जे भेल से विभेद के सिम्बल छियै। कोनो यूनिटरी लैंग्वेज, ताहि दुआरे हुनका लेल एकटा टोटलिटेरियन फेनोमेना छियनि। हमरा सभ केँ ई ध्यान मे रखबाक चाही जे मिखाइल वाख्तीन जखन लिखि रहल छला, तखन स्टालिन के शासन सोवियत संघ मे छलै। आ, एक हद तक ओ सोवियत यूनियन मे जे टोटलिटेरियन कन्ट्रोल छलै, तकर क्रिटिसिज्म लिखि रहल रहथि। ई हुनकर 'फिलॉसोफी ऑफ लैंग्वेज' किताब मे नीक जकाँ विश्लेषित भेलनि अछि।

एहिना, आन्तोनियो ग्राम्शी जे कि इटालियन थिंकर रहथि, आ जनिके आधार ल' क' सबॉल्टर्न स्टडीक कंसेप्ट एलै, तँ से ग्राम्शी सेहो एहि पर बहुत विस्तारपूर्वक अपन नोटबुक मे लिखलनि अछि। 1926 ई० मे मुसोलिनी हुनका अरेस्ट क' लेने रहनि। आ तकर बाद 1936 धरि ओ जेल मे रहथि, ओना तँ

ओ पॉर्लियामेन्टक मेम्बर सेहो रहथि, तथापि। बात तँ छलै जे खास तौर पर ग्राम्शी केँ अरेस्ट करबाक लेल पूरा मामला बनाएल गेल छलै। मुदा ग्राम्शी जेल मे बड़ एक्सटेन्सिवली एहि पर काज केलनि, पूर्ण मनोयोग सँ। आ बहुत अंश मे ग्राम्शी केँ भाषा-परीक्षण, भाषाक राजनीतिक परिप्रेक्ष्य, वाख्तीनक निष्कर्ष सँ मिलैत जुलैत रहनि। मुदा, एकटा बड़ भारी अन्तर छै। अन्तर ई छनि जे ग्राम्शी कोनो भाषा केँ, मोनो-ब्लॉट वा हेट्रो-ब्लॉट केँ कोनो निश्चित पॉलिटिकल कैरेक्टर मे नै देखै छथिन। ओ कहै छथिन जे ई स्पेसिफिक हिस्टोरिकल कंजक्चर पर निर्भर करै छै जे कोन रूप प्रोग्रेसिव छै आ कोन रूप कंजर्वेटिव छै। जखन, मैथिली केँ मान्यता नहि देल जा रहल छै, कहल जा रहलैए जे ई बोली थिक, एहि मे एकटा स्टेबुल फॉर्म नहि छै। मैथिली लिखित भाषा (रिटेन लैंग्वेज) नहि थिक। अहाँ जँ दस तरहें लिखै छी मैथिली तँ एकर मतलब भेल जे अहाँ केँ लिखै के ट्रेडिशन नहि अछि। जँ अहाँक ओही मिथिला मे लोक संस्कृत लिखथि एकदम शुद्ध मुदा मैथिली लिखै मे एक्के गोटे एक्के लेख मे विभिन्न तरहेँ एक्के शब्द केँ लिखथि तँ ओहि राजनीतिक आ ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य मे एकरूपता जे होयत, से सब सँ प्रगतिवादी डेग होयत। आ, एहि सन्दर्भ मे ई कहनाइ जे सब केँ लिख' दियौ जेना लिखै छै, समय औते तँ अपने सबटा ठीक भ' जेतै, ई सब सँ प्रतिक्रियावादी बात थिक।

कोनो भाषा के जे रूप होइ छै, से कोनो एक बेर स्थिर भ' गेला सँ ई नहि हेतै जे सब दिन ओ ओहिना रहि जायत। सब भाषा परिवर्त्तनशील होइ छै। ओ रूप बदलैत रहै छै। लेकिन, यदि एकरूपता अहाँ आबहि नहि देबै एक बेर, कहबै जे लिख' दियौ जेना लिखै छै, तँ तखन तँ निस्तारक कोनो उपाय नहि छै।

अपना सब केँ मोन राखक चाही जे 1939-40 मे, जाहि समय मे अहाँ केँ पहचान भेटल अछि भाषा केँ, अहाँक भाषा कोर्स मे आयल आ पढ़ाओल जाय लगलै–आ ओहि भाषा मे यदि शुद्ध आ अशुद्ध के पहचान नहि रहतै तँ अहाँ केँ पहचान आ स्वीकृति कतेक दिन धरि वैलिड रहत? विचारणीय बात थिक जे एहना मे अहाँ अपन भाषा केँ रिप्रोड्यूस करबै। कोर्सबुक मे अहाँ केँ अपन भाषाक एकटा रूप केँ रिप्रोड्यूस करबाक रहैत अछि। ई मात्र मिथिलेटा

मे नहि, सब ठाम, ई प्रश्न उठै छै। ओना, जे उदाहरण देल गेल अछि एतय, साधु भाषा आ चलित भाषा के जे दू टा रूप बंगाल मे भेल छै, से वैह चीज नै छियै। ओ छियै साहित्य-भाषाक अंगीकारक प्रश्न, जकर वरण रवीन्द्रनाथ, प्रमथ चौधुरी आदि केलनि। साधारण भाषा, जाहि मे हम अहाँ गप करै छी, आ साहित्यिक भाषा दुनू तँ भिन्न हेबे करतै। बंगला मे साहित्यिक भाषा संस्कृतनिष्ठ रहै। तँ ई लोकनि निर्णय केलनि जे हम सब चलित भाषाक प्रयोग साहित्य मे करब। ई चीज साहित्यक इतिहास मे बहुतो ठाम, बहुतो भाषा मे भेटै छै। अंग्रेजिए मे, स्पेन्सर के भाषा जे रहनि, तकरो प्रतिक्रिया भेल रहै, स्पेन्सर के भाषा कने लैटिनेट रहनि, स्पेन्सर के प्रोजेक्ट ई रहनि जे हम अंग्रेजी केँ ओतबे स्वीटनेस सँ सराबोर करब, जेना लैटिन मे छै। ओहि समय मे इंग्लैण्ड मे प्राइड लेल ई आवश्यक रहै मुदा, एकर प्रतिक्रिया भेलै मेटाफिजिकल पोएट के भाषा मे जे एकटा चलित भाषाक छवि छै, से वैह चीज छियै। आनो भाषा सब मे साधु भाषा आ चलित भाषाक अन्तर तँ रहबे केलैक अछि।

कतेक ठाम एहनो देखल जाइ छै जे एक्के लेखक अपन कोनो एक रचना मानक भाषा (साधु भाषा) मे लिखताह आ ओतहि अपन कोनो दोसर रचना चलित भाषा मे। तकर उदाहरण हम सब हिन्दीक निराला मे देखि सकैत छियनि। एक दिस जँ 'राम की शक्ति पूजा' मे मानक भाषा व्यवहृत केलनि अछि तँ दोसर दिस 'वह तोड़ती पत्थर' मे चलित भाषा। मुदा, एकर अर्थ ई नहि थिक जे भाषाक मानकीकरण, ओकर यूनिटरी फार्म हेबाक कोनो आवश्यकता वा उपादेयता नहि छै। हमरा सभ ले' ओहि समय मे आवश्यक रहय जे हम सब अपन भाषा केँ लिखित आ मुद्रित स्वरूप मे आनी। ततेक गोलैसी भेलै दरभंगा मे, जे ओ नहि चललै आ हमरा सब केँ कोनो 'प्रिन्ट कल्चर' नहि भेल। आइ जँ मैथिली मे 'प्रिन्ट कल्चर' एत्तेक अविकसित अछि–बड़ आवश्यक अछि– बड़-बड़ आवश्यक अछि जे हमर सभक भाषाक एकटा मानक स्वरूप निर्धारित हो। 'मिथिला मिहिर' साप्ताहिक एहि दिशा मे सक्रिय छल, सेहो बन्द भ' गेल। मैथिली मे प्रकाशन नहि अछि। जे किछु अछि से बहुत अपर्याप्त अछि। बहुत दुख अछि हमरा ई कहैत जे हमरा सब केँ 'प्रिन्ट कल्चर' नहि आबि सकल। एकर अभाव मे हमरा सभक मैथिली

भाषा, मैथिली संस्कृति केँ जतेक प्रगति करबाक चाही, से नहि भेल। एकर प्रगति ततेक रुकलैए से हमरा सबकेँ विचार करबाक चाही।

ओहि विवादक अध्ययन हमरा सब केँ अत्यन्त गम्भीरतापूर्वक करबाक चाही जे कोन तरहेँ प्रिन्ट कल्चर के अभाव मे हमरा सभक सांस्कृतिक विकास बाधित भेल। जेना, भाषाक मानकीकरणक प्रयास मे जे बाधा कयल गेल, जे लोकनि ई बाधा उपस्थित केलनि, से कोन तरहेँ मैथिलीक उन्नति केँ रोकलक। हमर आग्रह रहत जे एहने-एहने विषय सब पर, समय-समय पर, संगोष्ठी आयोजित क'क' एकटा गंभीर अध्ययन, जाहि सँ भाषाक सामाजिक राजनीतिक आ साहित्यिक पक्ष केँ उद्घाटित कयल जा सकय से कायल जाय। एतबे कहि क' हम पुनः धन्यवाद दै छी जे हमरा ई अवसर देलहुँ। धन्यवाद।

■

मधुपक महत्त्व

भीमनाथ झा

मधुपक महत्त्व तँ यैह अछि जे ओ विभिन्न फूलसँ रस चूसि समाजकेँ मधु-दान करैछ। मधुप गुंजन करैछ, घुमि-घुमिक' गीत गबैछ, जे सुनि-सुनि लोकक कान तृप्त होइछ। ओ कटैछ सेहो। जे ओकरा उपद्रव करैछ, तकरा पाचि दैछ, डंक मारैछ। तेँ लोक ओकरासँ डेराइछ, साकांक्ष रहैछ, हट्ठे ओकरामे सटैछ नहि। जे गओँ सँ ओकर मधु प्राप्त क' लैछ, से कृतकृत्य भ' जाइछ। ओकरा मानू अमृत भेटि गेलैक! चाटत तँ मीठ लगतैक, कफ-सर्दीसँ त्राण भेटतैक, अनेक जड़िआयल रोगमे औखधक काज करतैक। नेनासँ ल'क' बूढ़ धरि ओकर चाह करैछ, ओकरा चाहैछ, मनकेँ मधुरा लैछ। सभ काल उपकारके, कोनो स्थितिमे अपकारक नहि।

काव्य तँ वस्तुए सैह थिक जे सभ काल उपकारे करत, कखनो अपकारक नहि होयत। मुदा, सभ काव्य मधु नहि होइछ। मधु सन गाढ़, मधु सन मीठ, मधु सन निर्दुष्ट, मधु सन सर्वजन-गुणकारक, सर्वजन-सुखकारक, सर्वजन-उपकारक काव्य सहजेँ नहि प्राप्त होइछ; बड़ साधने, बड़ परिश्रमे, बड़ यत्ने, बड़ कौशलेँ तैयार कयल जाइछ। से जकरा सँ सम्भव भेल, ओ 'मधुप' थिकाह। ओ मधुप थिकाह पं० काशीकान्त मिश्र।

काशीकान्त मिश्र कैलेंडरक हिसाबेँ आगामी दू अक्टूबरकेँ अपन जन्मशताब्दी पूरा करताह, जँ पंचांगक हिसाबेँ कही तँ कोजागरा दिन जन्मक एक सय वर्ष पुरा लेताह। कालक अनन्त प्रवाहमे सय वर्षक अवधि बिन्दुमात्र थिक, किन्तु व्यक्तिक जीवन-व्याप्तिमे एतबा अवधिकेँ बड़ दीर्घ मानल जा सकैछ। सय वर्षक बाद अपन परिवारोमे बड़ विरल व्यक्ति मन पाड़ल जाइत

होयत। सौभाग्यसँ काशीकान्त मिश्र; अर्थात् काशीबाबू ओहि विरल व्यक्तिमे छथि। हुनक सन्तानलोकनि हुनका आइयो मन पाड़ैत छथिन। ताहूसँ विशाल शिष्य-परिवार छनि, जकरा ओ शिक्षित कयने छलथिन, दीक्षित कयने छलथिन, आइ मन पाड़ि रहलनि अछि, यावत् धरि रहतनि तावत धरि पाड़ैत रहतनि। तकर बाद?...

मुदा, काशीकान्त मिश्र 'काशिए बाबू' टा नहि छलाह, 'मधुप' सेहो छलाह। काशीबाबू तँ अपन गाम-परिवार लेल छलाह, जे साधारण मनुष्य जकाँ अयलाह-गेलाह। मुदा मधुप जे ओ भेलाह, से तेहन भेलाह जे समस्त मैथिली काव्योपवनकेँ गुंजार क' देलनि। कहियो पढ़ने रही एक लेख 'क्वीन बी'। से ओ आधुनिक मैथिलीक 'क्वीन बी' छलाह। ई हमरा लोकनिक सौभाग्य थिक जे मैथिलीक एहि क्वीन बीक प्रथम जन्मशताब्दीक साक्षी बनल छी।

मैथिली साहित्यमे बीसम शताब्दीक आरंभिक किछु वर्षमे अनेक प्रतिभा-पुरुष जन्म लेलनि जे की गद्य की पद्य-कथा हो, उपन्यास हो, शोध हो, समालोचना हो तथा काव्यक यावन्तो शाखा हो-सभ क्षेत्रमे कीर्त्तिमान स्थापित कयलनि। काव्येक क्षेत्रकेँ लिय' तँ मधुप, सुमन आ यात्री समसामयिक थिकाह। बस, चारि-पाँच वर्षक जेठाइ-छोटाइ। एही अवधिक आनो अनेक छथि-किरण, भुवन, ईशानाथ झा, आरसी प्रसाद सिंह, तन्त्रनाथ झा, जीवनाथ झा, उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन' प्रभृति। सभ कविश्रेष्ठ, सभ प्रतिभापुंज। तँ की ताहिमे मधुप 'एकमेव' छथि? -नहि। तँ की ई 'अनेकमे एक' छथि? -नहि-नहि। तखन की छथि? से जनबा लेल छन भरि ले' हिनका सुमन आ यात्रीक संग बैसाक' देखि लेल जाय।

तीनू एके हिमालयसँ निःसृत नदी थिकाह-संस्कृत हिमालयसँ कलकल-छलछल करैत अविराम बहैत निर्मल निर्झरिणी। मुदा धरतीपर अबिते बाट फुटका लैत छथि। सुमन संस्कृत-महाकविसँ प्रतिस्पर्धा कर' लगैत छथि, विराट प्रतिभाक अद्भुत दृष्टान्त प्रस्तुत करैत छथि। यात्री 'वाग्मतीक कछेड़' सँ विदा भ' 'हिमगिरिक उत्संग' धरि पहुँचि सभ ठामक साहित्य-पिपासुकेँ 'दीदिक इनारक पानि' पियाक' पूर्ण तृप्त क' दैत छथि। मधुप एक दिस माटिकेँ 'कसिक' धयनहुँ रहैत छथि तँ दोसर दिस कल्पनाकाशमे उन्मुक्त विचरणो करैत

छथि। ई बुचनीक करुण वाणियो बनैत छथि आ राधाक विरहकेँ मार्मिक अभिव्यक्तियो दैत छथि। ततबे नहि, मैथिलीकाव्यकेँ ड्योढ़ीटाटक भीतर रह' बाली स्त्रीगण समाज आ खोत-पथार, कलम-गाछीमे टहल' वला हरबाह-चरबाह-बगबारक जीहपर चढ़ा दैत छथि। सुमनक काव्य प्रबुद्ध समाजक मानस-श्रृंगार बनल तँ यात्रीक काव्यविषय सर्वहारा वर्गक हाहाकार-अंगार बनल। सर्वहारा, अर्थात् पीड़ित वर्गक छटपटी तथा ओहि वर्गमे फुटैत जागरण-किरण यात्री-काव्यक मुख्य विषय रहलनि अछि। किन्तु, हुनक काव्यक अध्येता छनि प्रबुद्ध वर्ग, ओ वर्ग नहि जकरा अपन काव्यक पात्र बनौलनि। एकर विपरीत, मधुपक काव्यक एक विषय यद्यपि सर्वहाराक पीड़ांकन तँ छनि, मुदा ओकर विद्रोहक स्पष्ट उद्घोषणा नहि, तथापि हिनक गीत प्रचार बेसी ओही वर्गमे भेलनि।

यात्रीक ई स्वप्न छलनि-

हमर वीणा-ध्वनि कने पहुँचैत जँ, सटल पाँजर बोनिहारक कानमे

सफल होइत तखन ई स्वर-साधना, चिर उपेक्षित जनक गौरव-गानमे

किन्तु 'चिर उपेक्षित' आ 'सटल पाँजर बोनिहारक कान' धरि यात्रीक 'वीणध्वनि' मानि लिय' जे पहुँचियो गेलनि, मुदा ओकर ठोरकेँ नहि छुबि सकलनि। यात्रीक काव्यपंक्ति ओकर कंठमे नहि बसल जकरा हितक हेतु ओ रचल गेल छल। एहन सटल पाँजर बोनिहारक कान धरि मधुपेक वीणध्वनि सुनाइ पड़लैक, हिनके गीत ओकर हृदयक तारकेँ झनझना देलकैक, हिनके पाँती ओकर कंठसँ फुटि ठोरपर नाच' लगलैक, यद्यपि विषय हिनक गीतक मुख्यत: ओकरे उद्धारक टा नहि छल।

मधुप जे लोकभासपर, अथवा कहू जे सिनेमाक लोकप्रिय गीतसभक तर्जपर मैथिली गीत रचलनि, ताहि लेल हिनक खिधांसो कयल गेलनि। एकरा दोयम कोटिक कविकर्म कहल गेल। मधुप तकरा अङेजलनि आ ताहि पथसँ विरत नहि भेलाह। अपन कवित्वक सम्मानच्युतिक अवहेलना सहितो मैथिलीकेँ लोकप्रिय बनयबाक महत् उद्देश्यसँ ई एहि दिस प्रवृत्त भेल छलाह। हिनक आदर्श विद्यापति छलथिन। विद्यापति जेना अपन मैथिली गीतसँ आपामर मैथिल समाजकेँ जोड़लनि, तहिना ईहो चाहैत छलाह। मुदा हिनक समय तँ

विद्यापतियुगीन छलनि नहि। समयक धारा जाहि दिस बहैत छलैक, हिन्दी तेना जड़िया गेल छलैक, ताहिमे मैथिलीकेँ सकल साधारण जनता सँ जोड़ब भारी कठिन काज छलैक। मधुप एहि चुनौतीकेँ अपन हाथमे लेलनि।

मधुपक समयमे आबि मैथिली कविता वर्गीय भ' गेल छल, तकर कारण छल लोकरुचिक साहित्यक अभाव, लोकसँ कविताक पार्थक्य। हिनक समसामयिक कोनो प्रमुख कवि एहि तथ्यपर ध्यान नहि देलनि, तेँ हुनकालोकनिक कविता समाजक व्यापक वर्गकेँ स्वीकार्य नहि भेलैक। ओलोकनि लोकप्रियताक दौड़मे पिछड़ि जाइत रहलाह।

कविवर सीताराम झा लोकक शब्दकेँ तँ ग्रहण कयलनि, लोकक समस्याकेँ तँ लेलनि, किन्तु लोकक लय ओ नहि ल' सकलाह। ओ गीत नहि लिखैत छलाह, कविता रचैत छलाह। कविता केहनो सरल होयत, कतबो रुचिकर होयत, गीत जकाँ लोकक ठोरपर नचबाक ओकरामे क्षमता नहि-ओहन लोकगीत जकाँ, जाहिमे मानवक हास-परिहास हो, उल्लास-विलास हो, श्रृंगार-विराग हो, आसक्ति-विरक्ति हो। कविवर अपन काव्यक छौंकी सँ समाजकेँ छौकियौलनि। ओहि युगक लोक ओहन छौंकी देखने नहि छलैक, तेँ कने उत्सुकतावश, कने अनुभव पयबा ले', कने चोट चिखबा ले' अपनापर ओकरा चल' देलक, जकर प्रहारसँ ओ कने छिलमिलयबो कयल, कने सुगबुगयबो कयल, कने इसइसयबो कयल। मुदा, छड़ी तँ आखिर छड़िए थिक, गुलाबछड़ी नहि। अपनापर व्यंग्य, उपहास लोक कतेक काल सुनि सकैत छल? चोट ओकरा कतेक काल धरि नीक लागि सकैत छलैक?

मधुप कविवरक काजकेँ तँ ग्रहण कयलनि, किन्तु विधान बदलि देलनि। ई लोकगीत बनब' लगलाह, जे लगले लोकप्रिय भ' जाइक आ लोकक जिह्वापर नाच' लगैक। ई तँ शिल्पगत परिवर्तन भेल। भावगत परिवर्तन सेहो ई कयलनि। ई मैथिल समाजपर प्रत्यक्षत: व्यंग्य नहि कसलनि, ओकर उपहास नहि कयलनि, ओकरा दुत्कारि नहि देलनि-ई तँ ओकरे रसमे अपनाकेँ बहा लेलनि। ओकरा श्रृंगार पद चहिऐक तँ श्रृंगारे पद लेअओ, ओकरा दैनिक व्यवहारक पद चाहिऐक तँ सैह लेअओ ओकरा भोलेदानीक नचारी आ कामरुगीत चाहिऐक,

तँ सेहो लेअओ। पहिने ओ हिनक शब्दकेँ तँ ग्रहण करओ, हिनक लयकेँ तँ अपनाबओ, अपन भाषाकेँ तँ अङेजओ–हिन्दीसँ विरत तँ भ' जाओ। बात ई बादमे बुझा देथिन, उचित मार्गपर ई पछाति ल' अनथिन। एही भावनासँ मधुप लोकगीत लिखलनि आ अपन समकालीन प्रमुख कविमे कनेमने मोहन, किन्तु पुष्कल रूपमे यैह लिखलनि।

एहि अभियानमे ई सफल रहलाह। मैथिलीकेँ जे लोकप्रियता पूर्वमे विद्यापति गीतक माध्यमे प्राप्त भेल छलैक, से फेर एक बेर दोहरा गेलैक, आ एहि बेर ओकर माध्यम बनल मधुपक गीत, लोकप्रिय भासपर रचल गेल गीत।

साहित्यिक गीतमे अधिक हिनक आत्मपरक छनि, जाहिमे करुणाक निर्झरिणी प्रवाहित भेल अछि। मधुप करुणरस–सिद्ध कवि कहबैत छथि। करुणा हृदयपर सोझसोझ चोट करैछ आ ओकर असरि स्थायी रहैछ। मधुपक करुणा देखावटी करुणा नहि थिक, अपितु घोर संघर्षसँ अद्भूत सघन करुणा थिक, जकर कवित्वमे कविक व्यक्तित्व समाहित भ' गेल अछि।

हिनक मुक्तक काव्यक विषयवस्तु बहुत व्यापक अछि। तत्कालीन आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक परिस्थितिक चित्रण, राष्ट्रीय भावनाक जागरण, प्रकृति वर्णन, उद्बोधन आदि हिनक मुक्तक काव्यक वर्ण्यविषय रहल अछि। ई सर्वाधिक महत्वपूर्ण काज ई कयलनि जे समाजक दृष्टिमे हेय बुझल जायवला वस्तुसभकेँ काव्यक परिधिमे आनि लेलनि। एहिसँ दू लाभ भेल। पहिल ई जे काव्यक परिधि–विस्तार भेल। एहिमे ओहू विषयसभक वर्णन होब' लागल जे पूर्वक कविक वर्णनसीमासँ बाहर छल। दोसर लाभ ई भेल जे समाजक दलित–पीड़ित–उपेक्षितवर्गमे आशाक संचार भेल, ओकरो लोकनिमे आत्मविश्वास आबि गेल, ओहोसभ अपनाकेँ समाजक महत्वपूर्ण अंग बूझ' लागल, समाजमे शोषक वर्गक वर्चस्विता क्रमशः शिथिल भेल। लोक आ कविक दृष्टिमे परिवर्तन भेल–जकरापर क्यो ध्यान नहि दैत छल, ताहू सभपर जनताक ध्यान केन्द्रित होब' लागल। उपेक्षित वर्गक प्रति संवेदना, देशक संकटपूर्ण घड़ीमे जनताकेँ कर्तव्य–पथपर आरूढ़ होयबाक उत्प्रेरणा, धार्मिक भावक उद्भावना तथा प्रकृतिक कोरमे बैसि कल्पनाक क्रीड़ा करबाक कामना हिनक मुक्तक काव्यक लक्ष्य थिक।

हिनक कथाकाव्यक विषयवस्तु सामाजिक असन्तुलनसँ सम्बद्ध अछि। पाठकक मनपर एकर प्रभाव बहुत व्यापक रूपमे पड़ैत छैक। एकर पात्र मिथिलाक ग्रामीण परिवेशसँ अबैत अछि। ओकर समस्या व्यक्तिगत होइतो सर्वजनीन अछि। आचार्य सुमनक ई उक्ति समीचीन अछि जे ''कथानक अछि तँ मिथिलाक पृष्ठभूमिमे घटित, परंच देशक कोनो भाग एहि सब घटनासँ अवंच नहि। प्रत्येक प्रान्तमे सुकनाक दायाद–भाइ भेटताह। सर्वत्र बुचनीक सखी–बहिनपाक सौन्दर्य गरीबीसँ दागल भेटत। एखनहुँ कोसीक कछेड़सँ नीक दशा दामोदर कातक दौनिवाहक कहाँ भेल अछि? जँ शशिकान्तक युवत्व मैथिल वैवाहिक प्रथामे क्रान्ति अनैछ तँ की ओहिसँ मराठी–बंगाली युवककेँ प्रेरणा प्राप्त करबामे कनेको बाधा होयतनि?'' घसल अठन्नी हिनक सर्वाधिक विख्यात कथाकाव्य थिक। एहिमे भुटकुन बाबू आ बुचनीक कथोपकथन दुनू वर्गक बीचक दूरीकेँ, एक वर्गक दोसर वर्गक प्रति दुर्भावनाकेँ उजागर करैत अछि। बुचनीक वाणीमे कातरता छैक, विवशताजन्य निराशा छैक, किन्तु एक अज्ञात दृढ़ता सेहो छैक जे भुटकुन बाबूक अहंकार–अत्याचारक समक्ष टुटि भनहि गेल अछि, मुदा झुकल अछि नहि। पात्रोचित भाषा कथोपकथनक प्राण अछि। दुनू वर्गक चरित्र दुनूक उक्तिएसँ उद्भासित होइत अछि। किन्तु, दलितवर्गक नैराश्यपूर्ण जीवनक दायित्व कवि ओकर 'घसल अदृष्ट'केँ दैत छथि, मानवकृत अत्याचारकेँ नहि। तकरा हिनक संस्कार वा सीमा कहब।

'राधा–विरह' महाकाव्य मधुपक काव्यसाधनाक चरम परिणति थिक। एहिमे आलंकारिक कविक सम्पूर्ण सामर्थ्य देखबामे अबैछ। सकल साधारण पाठक लेल कवि एकर रचना नहि कयलनि। ओकरा लेल तँ लोकप्रिय गीत लिखलनि, सहस्रावधि मुक्तक रचलनि, मार्मिक कथाकाव्य सिरजलनि। राधा–विरह तँ ई अपन पाण्डित्य–प्रदर्शनक हेतु, कविनिपुणताक मानदण्ड स्थापित करबाक हेतु, स्वान्तःसुखाय तथा विद्वज्जनप्रमोदाय मैथिली साहित्यकेँ उपहृत कयलनि। एकर पदसभ कविहृदयसँ अधिक कविमस्तिष्कसँ उपजल बुझि पड़ैत अछि।

प्रत्येक श्रेष्ठ रचनाकार अपन शैली विकसित क' लैत छथि। मधुप सेहो कयलनि। किन्तु हिनकामे ई चमत्कार छनि जे सरलसँ सरल आ जटिल सँ

जटिल दुनू प्रकारक पंक्ति ई समान दक्षताक संग सिरजलनि। सरल एहन जे निरक्षर गमारोक ठोरपर बसि जाय, जटिल एहन जे महापण्डितोकेँ घाम चुआ देअय। एकहु कवितामे एहि दुहू शैलीक प्रयोग भेल अछि कथाकाव्य सभमे। मास-वर्णनमे जटिल शब्दक जाल अछि तँ कथामे सरल उक्तिक प्रवाह अछि।

मधुपक महत्त्व एहू ल' क' अछि जे ई केवल काव्येसरस्वतीक एकान्त उपासक रहलाह। गद्य दिस कनडेरियो नहि तकलनि। एते धरि जे चिट्ठीपत्री पर्यन्त पद्यमे लिखैत रहलाह। अद्यावधि बाइस गोट पोथी प्रकाशित छनि– सभ पद्यक विभिन्न शाखाक। गीतकाव्य, मुक्तक, कथाकाव्य, महाकाव्य, संस्मरण, प्रशस्तिकाव्य, एक पोथी अनुवादोक। अप्रकाशितो कृतिक संख्या थोड़ नहि छनि, सभ टा काव्ये।

लेखनसँ अतिरिक्तो दू क्षेत्रमे हिनक महत्त्व रेखांकित करबाक योग्य अछि। मैथिली प्रचार-प्रसारमे कविगोष्ठी आ कविसम्मेलनक अतुलनीय योगदान रहल। ताहिमे ई सभसँ आगाँ रहलाह। हिनक समकालीन आचार्य सुमनक शब्दमे–''मधुपजी बहेड़ा-मैथिली पीठक संस्थापक छलाहे, अपितु व्यापक रूपेँ कविगोष्ठीक पुरोधा रूपमे परिचित भेलाह। जतेक मंचपर ई कविता पाठ कयने होयताह ततेक कोनो दोसर कवि नहि। ई स्वीकार करय पड़त जे मैथिलीक प्रचार-प्रसारमे जहिना कविगोष्ठीकेँ सर्वाधिक अवदान छैक, तहिना कविगोष्ठीकेँ लोकप्रिय बनयबामे मधुपजीक अनुपम योगदान रहलनि अछि।... वस्तुतः ओहि नव-पुरातनक संक्रान्तिकालमे मधुपक गुंजनक एक विशेषता छल। ओ जहिना प्रमदवनक राजसी फुलबाड़ीकेँ गुंजित करैत छलाह तहिना वन-बाध ओ गामक बाड़ी-झाड़ी सब ठाम ध्वनित करैत अयलाह।''

दोसर, हिनक कवि-व्यक्तित्वक महत्त्व एहू तथ्यसँ सिद्ध अछि जे हिनक स्नेह-प्रोत्साहनक खाद-पानि पाबि अनेक प्रतिभा-तरु लहलहा उठल, साहित्य-पुष्प भकरार भेल, फुला गेल। मणिपद्म की कहैत छथि, से सुनू–

अन्तरमे जे हूक उठल आ पसरल हाहाकार।
एकर मर्म एखनहिँ कहि दै छी, सुनि मधुपक गुंजार॥

रामचरित्र पाण्डेय 'अणु'क ई उद्गार देखू–''की पुछलहुँ, लिखैत छी? हँसू नै, मैथिलीक तुकबन्दी करैत छी। मधुपक ठोँठिऐब थिक। बलजोरी

लिखबैत छथि। हमरे टा नहि, राधाकृष्णझा 'बहेड़', कृष्णनन्दन लालदास तथा गोपालचन्द्र मिश्र सबसँ लिखबैत छथिन। हिनका होइ छनि जे कखन मैथिली साहित्यक भण्डारकेँ भरि दी। जकरामे ई कनेको साहित्यिक प्रवृत्ति देखलथिन की खीचिक' मैथिली क्षेत्रमे ल' अयलाह। हमरो हिन्दीसँ मैथिलीमे बलजोरी ल' एलाह। मुदा ई कृतज्ञता जीवन पर्यन्त नहि बिसरबनि।''

तहिना, रामकृष्ण झा 'किसुन' तथा चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' सेहो हिनक प्रोत्साहनकेँ मातृभाषाक सेवाक प्रेरणा मानने छथि। एतबे नहि, हिनकासँ प्रत्यक्ष-परोक्ष रूपेँ प्रोत्साहित-प्रेरित शत-शत साहित्यसेवी मातृभाषाक शृंगार क' रहल छथि।

एहि मधुप द्वारा संचित मधु मैथिलीप्रेमी साहित्यरसिक लोकनिकेँ सभ दिन लोभयतनि। क्यो स्वाद लेल जीहपर लेताह तँ क्यो औषधमे मिलाक' चटताह। जे क्यो मैथिलीक अहित चाहताह, हिन्दीक बोली कहि एकर उपहास करताह, तनिका हिनक काव्य डंक मारतनि। हिनक गुंजन ककर कानकेँ नहि झंकृत कयलक? युग-युग धरि करैत रहत। नेनासँ ल' क' बूढ़ धरिकेँ, अपढ़सँ विद्वान धरिकेँ हिनक कविताक चाट बनल रहत। से जाधरि बनल रहत, ताधरि मधुपक महत्त्व रहबे करत। हमरा तँ होइत अछि, से चाट बनले रहत लगातार।

■

मधुपक महत्त्व

रमण कुमार सिंह

मधुपजीक काव्य-दृष्टि आ काव्य-परिवेश अपन बहुत रास सीमाक अछैतो बहुत व्यापक छलनि। ओ मूलतः गीतकार छलाह आ जीवन-भरि पद्ये लिखलनि-खाहे आत्मपरक रचना हो अथवा कोनो मित्र केँ लिखल पत्र।

हुनक गीतिकाव्य नहि मात्र विषय-वैविध्यक लेल बल्कि काव्य-सौष्ठवक लेल सेहो प्रसिद्ध भेलनि। ओ एहन-एहन मर्मग्राही गीतक रचना कयलनि जे समाजक सभ वर्गक कंठ मे बसि गेल आ लोकगीतक दर्जा पौलक। मैथिल कोकिल विद्यापतिक बाद मात्र मधुपजी एकटा एहन रचनाकार भेलाह जिनक गीत जनकंठ मे बसि गेल। तेँ हिनका 'अभिनव विद्यापति' सेहो कहल गेल। मधुपजी केँ गीतक लेल अपार लोकप्रियता भेटलनि, मुदा वैह हुनका लेल अनेक आलोचको तैयार कयलकनि। मधुपजीक रचना काल मे मिथिला मे हिन्दीक सिनेमाक गीत खूब प्रचलन मे छल। तकरे प्रतिरोध मे मधुपजी हिन्दी सिनेमाक गीत पैरोडी रचलनि जे मिथिलाक सामान्यजन मे खूब प्रचलित भेल आ हुनका अपार लोकप्रियता भेटलनि। हिनक गीत मे शृंगारिकताक अतिरेकक कारणेँ किछु विद्वान केँ अश्लीलता बुझना गेलनि आ हुनक आलोचनाक कयल गेल। हिन्दी सिनेमाक गीतक भास पर लिखल गीत भनहि हिनका लोकप्रियता दिऔलकनि, मुदा हिनक रचना-दृष्टि मे प्रतिरोधक तेहन कोनो स्वर नहि गूँजि सकल जे हिनक समकालीन अनेक कविक कवितामे भेटैत अछि। मुदा जे हो, हुनक मातृभाषाक प्रति प्रतिबद्धता आ अनन्य प्रेम केँ नकारल नहि जा सकैछ।

हालाँकि मधुपजीक गीत बहुधा भक्तिपरक आ शृंगारिक रचना थिक, मुदा ओ समाज मे पसरल बाल विवाह, बृद्ध विवाह, बहु विवाह, भार-दौर आ

भोज-भात मे प्रदर्शनक विरोधो मे गीत लिखलनि। 'टटका जिलेबी' मे ओ लिखने छथि-जे हजारक भार साँठथि बेचि बच्चा पुत्र केँ, ओ जनिक गहनाग्रहेँ भरना मे खेत पथार हो, भूषणेँ युवती रिझाबक हेतु ओ हत्यार हो, आइ इ टटका जिलेबी तैं जनक उपहार हो।

एहिना फिल्मी गीतक पैरोडी लिखबाक उद्देश्य स्पष्ट करैत ओ स्वयं लिखैत छथि-

"फिल्मीभास लहरिमे भासल हरि।
हरि! मैथिल तरुण समाज
गीतोपम पावन विद्यापति गीतो तजि
रहला अछि आज
तेँ धुनि माथ, तहू धुनि मे निज
भाषा हेतु करी हम गान
देखि 'चौंकि चुप्पे' न चौंकि चुप्पे
क्यो होथु सरस विद्वान।"

डेढ़ हजार सँ बेसी विविध गीतक रचना कयनिहार मधुपजीक मुख्य स्वर परंपरागत भक्ति ओ शृंगारक छनि। हालाँकि सामाजिक वैषम्य केँ चित्रित करैत गीतक संख्या सेहो कम नहि अछि, मुदा ई गीत सभ समाज केँ कोनो परिवर्तनकामी चेतना दिस ल' नहि जाइत अछि आ रूढ़ि परंपराक कोनो खाम्ह केँ तोड़ि नहि पबैत अछि।

हुनक भक्ति गीतक अध्ययन कयला पश्चात ई ज्ञात होइत अछि जे ओ विद्यापतिए जकाँ पंचदेवोपासक, विशुद्ध स्मार्त मैथिल छलाह, हुनक गीतिकाव्यक विशेषता यैह अछि जे ओ मात्र फिल्मी धुन पर गीत लिखि केँ अपना आ मैथिलीकेँ लोकप्रियता नहि दिऔलनि बल्कि मैथिली गीतक परंपरागत स्वतंत्र भास जेना-सोहर, समदाउनि, लगनी, उदासी आदि पर सेहो गीतक रचना कयलनि। हुनक गीतकार-व्यक्तित्वक विषय मे रमानाथ झाक कहब छनि-"मधुपजी केँ गीत रचना मे प्रकृष्टता प्राप्त छनि, किन्तु हिनक गीतक लोकप्रियता भाव-भाषाक सरलता आ स्वाभाविकता पर आधारित नहि अछि, लोकप्रियताक कारण थिक ओकर संगीतात्मक एवं चित्रात्मक होएब।"

मुदा एहि सँ विपरीत मत अछि मैथिलीक इतिहास लेखक दुर्गानाथ झा 'श्रीश'क, हुनक मन्तव्य छनि, ''शिल्पक क्षेत्र मे मधुपजी लोकगीत काव्यक सरल भाषा शैलीक अतिरिक्त चमत्कारपूर्ण आलांकारिक भाषा शैलीक सेहो प्रयोग कयल जाहि मे मुख्यतः चमत्कारपूर्ण अनुप्रास आ यमकक पांडित्यपूर्ण शब्द विन्यासक छटा दिस कविक विशेष ध्यान अछि। किन्तु मधुपक सर्वश्रेष्ठ रचना ओएह रचना थिक जे सरल सहज भाषा मे लिखल गेल अछि।'' मणिपद्मक मान्यता छनि जे मधुपजीक गीतक धुन जे अरबधि क' माँगल-चाँगल होइ, किन्तु गीतक बिम्ब रचना मौलिक अछि। प्रेमशंकर सिंह कवि चूड़ामणि केँ नवगीतकारक आदि गुरु मानैत कहैत छथि जे आधुनिक तर्ज पर लिखल मधुपजीक गीत विद्यापतिक उपरांत सर्वाधिक लोकरंजन कयलक। कुलानन्द मिश्र हिनक गीतकार व्यक्तित्व केँ कवि व्यक्तित्व सँ श्रेष्ठ मानैत कहैत छथि जे जँ हुनक गीत रचना सब लोकप्रिय नहि भेल रहितनि तँ हुनक कवि व्यक्तित्वो एतेक आदरणीय किंवा व्यापक नहि भेल रहितनि। एतबा तँ निश्चये कहल जा सकैछ जे मधुपजी अपन गीतसभ मे समसामयिकताक मूल्यवत्ता केँ निरूपित करैत विभिन्न समस्याक ओहि मे अंकन कयलनि आ एहि तरहेँ गीतक भावभूमिक केँ प्रशस्त कयलनि। मैथिली लोकगीत केँ हिनक ई मौलिक देन थिक। हँ, ई फराक तथ्य अछि जे हिनक गीत मनोरंजनप्रिय विलासी मैथिलजन आ निरीह लोकक भक्ति भावनाकेँ परिपुष्ट कयलक, मुदा कोनो नवीन चेतना अथवा यथास्थितिक विरुद्ध कोनो प्रतिकार लेल तैयार नहि क' सकल।

गीतकारक अलावा मधुपजीक सृजन कर्म मुक्तक, कथाकाव्य, प्रबन्ध काव्य, खंड काव्य आदि मे पसरल अछि। देशप्रेमक भाव हिनक अनेक मुक्तक मे उजागर भेल अछि। कथा काव्यक तेँ ई महत्त्वपूर्ण हस्ताक्षर छलाह। तत्कालीन ज्वलंत समस्या केँ ल'क' जेहन करुण कथाक ताना-बाना ई बुनलनि से मर्म पर सोझे-सोझ चोट करैत अछि। एहि सभ सँ फराक हिनक जे एकटा आर महत्त्वपूर्ण विशेषता रहलनि से ई जे समाज द्वारा जे नितांत-निकृष्ट आ हेय वस्तु सभ बूझल जाइत छल यथा-छुतहर, पानक पीक, सारा परक तुलसी इत्यादि सेहो सभ कविताक वर्ण्य विषय भ' सकैछ से ताबत मैथिली मे केओ

सोचियो नहि सकैत छल, मुदा मधुपजी ताहि सभ केँ कविताक विषय बना अपन सूक्ष्म काव्य-दृष्टिक परिचय दैत छथि।

निकृष्ट वस्तु केँ देखबाक यैह दृष्टि आगाँ हिनका सँ 'घसल अठन्नी' सन कथाकाव्य लिखबा लेलक। 'घसल अठन्नीक' महत्त्व आ लोकप्रियता मैथिली साहित्य मे निर्विवाद अछि। सुरेन्द्र झा 'सुमन' एहि प्रसंगेँ लिखने छथि जे ''घसल अठन्नी मे एक बोनिहारिनक करुण कथा अत्यंत मर्मस्पर्शी अछि। जेठक दुरंत दुपहरिया जकाँ सम्पूर्ण कथानक ज्वालामय अछि। श्रम पर पूंजीक जे अन्याय होइ तकर साक्षी घसल अठन्नी केँ बनाय कवि कथा-कुशलता एवं काव्य-निपुणताक विलक्षण प्रयोग कयने छथि।''

मधुपजीक कथाकाव्यक मादे भीमनाथ झा लिखैत छथि, ''हिनक कथाकाव्यक विषय-वस्तु सामाजिक असंतुलन सँ सम्बद्ध रहैछ। पाठकक मन पर एकर प्रभाव बहुत व्यापक रूपमे पड़ैत छैक। एकर पात्र मिथिलाक ग्रामीण परिवेश सँ अबैत अछि। ओकर समस्या व्यक्तिगत होइतो सार्वजनीन अछि।''

मधुपजीक समकालीनक कवि लोकनि आ हिनक रचनाकालक परिवेशगत स्थिति जखन अध्ययन कयल जाइछ, तँ ई अवस्से बुझना जाइछ जे मधुपक साहित्य स्पष्टतः सामाजिक विषमता केँ रेखांकित तँ करैत अछि मुदा ओकरा प्रति कोनो आक्रोश आ प्रतिरोधक चेतना नहि जगबैत अछि। एकटा समीक्षकक मत अछि जे 'वास्तविकता तँ ई अछि जे समस्त मधुप साहित्य एहि विशिष्ट युगक प्रति कोनो सावधान प्रतिक्रिया नहि देखबैछ। मात्र सामंती समाजक संबंधगत विद्रूप केँ अनेक कथा-आधारक संग करुणा सँ विगलित आ सहानुभूति सँ तीतल भाषा मे एहि रचना सभ मे राखल गेल अछि।' मुदा केदार कानन एहि सँ अलग मंतव्य दैत कहैत छथि, ''दोसराक दुख सँ उत्पन्न करुणाक भावनाक अभिव्यक्ति हिनक काव्य मे बहुत भेल अछि। यैह करुणाक भावना सामाजिक क्षेत्र मे मानवतावादी विचार केँ जन्म दैत अछि।'' प्रमुख आलोचक मोहन भारद्वाज एकर कारण स्पष्ट करैत कहैत छथि, ''असल मे मधुपजी अतिशय भावुक लोक छथि। काव्यसर्जन ओ आग्रहहीन भ'क' करैत छथि। कोनो निश्चित सिद्धांत अथवा विचारक प्रति हुनका ततेक अनुरक्ति नहि छनि जे आग्रही भ' जाथि।''

कोनो टा लेखक लेल सभ सँ महत्त्वपूर्ण होइत छै रचना दृष्टि, मुदा तेहन कोनो दूरगामी परिवर्तनशील रचनादृष्टि मधुपजीक साहित्यक अवगाहन कयला पश्चात नहि अभरैत अछि। हुनक कोनो स्पष्ट आ निश्चित विचारधारा नहि छलनि तेँ आम जनताक दुख-सुख केँ बुझितो ओ ओकरा प्रति अपन पक्षधरता केँ मजबूती सँ स्थापित नहि क' सकलाह। मात्र पाठकक मोन मे करुणा उपजायब आ ओकर मनोरंजन करब आजुक साहित्यक अभीष्ट नहि अछि ने तत्कालीन समाज मे छल। पाठकक मोनक बात केँ रचनात्मक आयाम प्रदान करब आ ओकरा मे रूढ़िवादिता आ विद्रूपताक विरुद्ध संघर्षशील चेतनाक प्रसार करब जरूरी अछि। हिनक समकालीन भवनाथ झा कहलनि जे 'बाजि गेल रणडंक' तँ यात्रीजी आह्वान कयलनि–'उठह कवि तोँ दहक ललकारा'। एहिना किरणजी सामाजिक रूढ़िग्रस्तता केँ अपन लेखनी सँ छिन्न-भिन्न करैत रहला, मुदा मधुपजी ओहि काल मे भक्ति आ शृंगारक चासनी मे पाठक केँ 'अपूर्व रसगुल्ला' आ 'टटका जिलेबी' खुअबैत रहलाह।

मधुपजी संस्कृतक विद्वान रहितो सदिखन अपन रचनाकर्म मातृभाषा मैथिलीमे कयलनि, ई कम महत्त्वपूर्ण बात नहि थिक। मैथिली केँ मिथिलाक जन-जन केर भाषा बनाब' लेल ओ हल्लुक सँ हल्लुक रचना सेहो कयलनि, ई हुनक साहस केर परिचायक थिक। काव्य-सामर्थ्यक दृष्टिएँ ई अपन समकालीन कवि मे ककरो सँ न्यून नहि रहथि। ई फराक बात जे अपन भावुक व्यक्तित्व और प्रकृतिक कारणेँ अपना काव्य केँ ओ विचारात्मक, सृजनात्मक आ प्रतिरोधात्मक यात्रीजी आ किरणजी जकाँ नहि बना सकलाह मुदा ताहि सँ हिनक महत्त्व समाप्त नहि भ' जाइत अछि। मैथिली कविता यात्रा मे ओ एक महत्त्वपूर्ण पड़ाव तँ अबस्से छथि।

■

तारानन्द वियोगी

आइ हम सब मैथिली साहित्यक एकटा एहन मोड़ पर अपना केँ ठाढ़ पाबि रहल छी, जे सभ कथू केँ, प्रत्येक विवेचनीय वस्तु केँ, वस्तुनिष्ठ तरीका सँ देखबाक आ विचार करबाक प्रवृत्ति अपना मे देख' चाहै छी। आ, चाहै छी जे हमर पूर्वज लोकनि जँ एहि निमित्त किछु विधेय तत्त्व छोड़ि गेलाह अछि तँ तकरा जोगाएल जाय, ओहि परम्परा केँ विकसित आ प्रज्जवलित कएल जाय।

कहब आवश्यक नहि जे मैथिलीक जाहि तरहेँ विकास भेल अछि, ताहि मे एहन तत्त्व भेटब असंभव जँ नहि तँ दुर्लभ तँ अवश्य अछि। मुदा, हम सभ एहन प्रयासमे छी आ सब कथू के एकटा कोनो प्रारम्भ होइ छै, से संभव जे आइ धरि जँ एहन कोनो सामूहिक आयोजन नहि भेल होइक तँ कदाचित आइएक तिथि मे एकरा प्रारंभ होयबाक होइ। तँ, एहि दृष्टिकोण सँ हम सब समाज केँ, साहित्य केँ अपन पूर्वज धरि केँ देखबाक अभ्यास बनब' चाहै छी।

एहि हिसाब सँ जँ मधुपजीकेँ देखल जाइन, तँ मधुपजीक बड़ पैघ महत्त्व-एक विशेष सन्दर्भ मे-हमरा सभक लेल अछि। रमानाथ बाबू बहुत स्पष्ट रूप सँ एकटा बात लिखलखिन जे मैथिलीक जन्म, संस्कृत केँ कात क' क', विद्रोह क' क' भेल छल। एक बात। दोसर, जे ब्राह्मणेतर वर्गक द्वारा भेल छल। जे पंडित छलाह, अभिजात छलाह, जे उच्च कुल-मूलक लोक छलाह से मैथिल लोक नहि छलाह। मैथिलीक विरोधी लोक छलाह। हिनका सभकेँ बारि क' हिनका सभक विरोध क' क' मैथिलीक जन्म भेल छल। तँ, जन्महि सँ जे क्रान्तिकारी भाषा छल आ ओ भाषा विकासक विभिन्न सोपान केँ पार करैत जाहि ठाम पहुँचल। मोन राखल जाय जे मिथिलाक समाज बहुत आत्मविस्मृत प्रकारक समाज थिक। तखन मोन पाड़ी ओ समय जखन मधुपजी सर्वाधिक सक्रिय छलखिन। भारतक स्वतन्त्रताक बाद, जखन कि बाहर-बाहर तँ सब किछु बदलि गेल छलै, लेकिन भीतर सँ किछु बदलल-सन नहि लगैत

छल। आधुनिक युगक सूत्रपात के केलनि, ताहि सम्बन्ध मे किरणजी मधुपजी लोकनिक जे दल छलनि, तिनकर मान्यता छलनि जे आधुनिक युगक सूत्रपात केनिहार ग्रियर्सन छलाह जे बाहर सँ आबि क' हमरा लोकनिक आँखि खोललनि जे अहाँ लोकनिक केहन ई विशिष्ट भाषा अछि, की एकर सौन्दर्य अछि आ की एकर महत्त्व अछि। तँ अस्तु, एहि सभ घटनाक्रमक बाद जे एकटा बहुत ऊर्जावान पीढ़ी, समाजक समक्ष आएल छल तँ ताहि मे सँ मधुपजी एकटा लोक छलाह। ओ सब एकटा अभियान चलेलनि जे लोक केँ जगाएल जाय, आत्मविस्मृत समाज मे स्मृति पैदा कएल जाय–ई साहित्यक सबसँ प्रमुख प्रयोजन थिक। से हमरा लगैए जे मधुपजी केँ जखन हम सब स्मरण करी तँ हुनकर महत्त्व केँ सब सँ पहिने एहि अर्थें रेखांकित करी। साहित्यक प्रयोजन एहि रूपमे ओ व्याख्यायित केलखिन आ अपन जीवन सँ, अपन रचना सँ आ सौंसे क्रियाशीलता सँ ओ साबित केलखिन जे साहित्य अन्ततः एक आत्मविस्मृत समाज मे स्मृति जगेबाक उद्यम थिक। तकरा लेल औजार बनेलखिन ओ अपन गीत केँ।

हम सब जनै छी जे मिथिलाक समाज एक 'बन्द समाज' रहल अछि, ओहि युगमे तँ निश्चित रूप सँ, आ जखन आइ उत्तर आधुनिकता के हम सब बात करै छी तँ देखिये रहल छी जे आधुनिकताक प्रथमो चरण मिथिलामे एखन धरि पूरा नहि भेल अछि। तते पछुआएल हम सब अपन विचार मे आ जीवन-शैलीमे, अपन अलोकतांत्रिक स्वभाव धरिमे रहल छी। हम एकटा उदाहरण दै छी। मधुपजीक ओ गीत प्रायः सब गोटे सुनने हएब–हम जेबै कुसेसर भोर, रंगि क' ठोर, पहिरि क' कारा, झमकाय झमाझम झारा–कने एकर अर्थबोध पर अपने गौर करियौ। स्त्रीक ई राग, ई उल्लास, दुनिञा देखबाक आ स्वयं केँ देखेबाक ई अस्मिता-बोध- एहि सब पर कने गौर करियौ। की मिथिलाक बन्द समाज मे सम्भ्रान्त स्त्रीक लेल एतबा स्पेस समाज छोड़बा लेल तैयार छलै? कोनो स्त्री अपन सेहन्ताक सम्बन्ध मे एहि तरहेँ सोचय आ तकरा अभिव्यक्त करय–ई एकटा बेजुबान कौम मे जुबान भरबाक बराबर काज छलैक। एहि तरहक गीत सब मधुपजी लिखै छलाह।

ध्यान दी जे एहि गीत मे मेला देखबाक लेल कुसेसर जेबाक प्रसंग थिक।

कुसेसर एक मेला-स्थल थिक। एहि कालखंड सँ पहिने किरणजी एक उपन्यास लिखने छलाह–चन्द्रग्रहण-जाहि मे एकटा विचार ओ प्रकट केने छलाह जे स्त्रीगण केँ मेला देख' जेबाक चाही कि नहि जेबाक चाही। तात्पर्य जे जतय औचित्यक प्रश्न होइक तँ निश्चित रूप सँ एक सुदृढ़ सामाजिक परिप्रेक्ष्य मे ताहि पर विचारबाक चाही मुदा जहाँ धरि स्त्री-जीवनक उल्लास, उमंग, आ रागक खोज करबाक प्रश्न छैक तँ ताहि मे कवि केँ कृपण नहि हेबाक चाही। कोनो कवि केँ एते दकियानूस नहि हेबाक चाही जे स्त्रीक जीवन मे जे सुख-दुख छै, पीड़ा आ व्यथा छै, तकरा हम नैतिकताक आधार ल'क', साहित्य मे अभिव्यक्त हेबा सँ रोकिऐक। एतए सँ मधुपजी अपन यात्रा शुरू केने छलाह।

मुदा हम सब देखै छी जे अन्ततः मधुपजी कतय पहुँचलाह? आत्मविस्मृत समाज केँ जगेबाक उद्यम सँ जे अपन यात्रा शुरू केने छलाह, तिनकर समापन कतय भेलनि? नवजागरणक लक्ष्य ल'क' जे मैथिली साहित्य अपन यात्रा शुरू केने छल, से अन्ततः किछु पंडित लोकनिक द्वारा मैथिलीक दुनिञा केँ अपना पॉकेट मे सकपंज क' लेबा मे आबि क' भेल। मधुपजी देवता लोकनिक स्तुति मे, साधु भाषा मे अपन पश्चात्ताप व्यक्त करैत यात्राक समापन केलनि। हमरा दुख अवश्य होइए जे मधुपजी केँ ओ समाज आ ओ सुविधा नहि भेटि सकलनि जे जेना-जे-किछु ओ चाहै छलाह से क' पाबितथि। तखन तँ, यात्रीजीक एक हिन्दी कविताक पांती छनि जे 'जो नहीं हो सके पूर्णकाम, मैं करता हूँ उनको प्रणाम'–से मधुपजी केँ तँ अवश्ये हम अपन प्रणाम निवेदित करबनि।

एकटा एहन सांस्कृतिक युद्ध, जकर योद्धा लड़ब शुरू तँ केने छलाह एक निश्चित उद्देश्यक संग, मुदा जे पूर्णकाम नहि भ' सकलाह, से छलाह मधुप जी। एक आत्मविस्मृत समाजक स्मृति केँ जगेबाक उद्यम सँ हुनक गीतक आयोजन शुरू भेल छल। आइ हम सब कतय पहुँचल छी। विद्यापति-पर्वक नाच-गान मे लाखक लाख खर्च करै छी। दारू पीबि-पीबि क' दर्शक लोकनि 'मजा लूटए' आबै छथि। मारि-दंगा होइत अछि। आयोजक केँ पुलिस बजाब' पड़ैत छनि। से एतय मैथिलीक सांस्कृतिक आयोजन किएक पहुँचल, तकर खोज हेबाक चाही। दोसर, मधुप जी-सन एक रचनाकार जाहि ठाम सँ अपन रचनाशीलता शुरू केने छलाह, बीच मे जँ गतिरोध एलै, तँ तकर कारण आ

निदानक खोज क' क' हमरा लोकनि कैँ ओहि अभियान कैँ, ताहि ठाम सँ आगू बढ़ेबाक उद्यम करबाक चाही। हमरा बुझने वस्तुनिष्ठताक संग सोचब, मधुपजीक सन्दर्भ मे, यैह हएत।

मोहन भारद्वाज

एखन मधुप के महत्व पर दू टा आलेख हम सभ सुनलहुँ। ओहि मे एकटा बात महत्वपूर्ण ई अछि जे मधुपजी गद्य नहि लिखलनि केवल पद्य लिखलनि। रमानाथ झाक प्रसंग मे सेहो कहल गेल छल जे ओ केवल गद्य लिखलनि पद्य नहि लिखलनि। एहि स्थिति के हम आजुक संदर्भ मे देख' चाहैत छी। 1906 ई. मे जनमल बहुत साहित्यकार मे सँ एहि दू गोटे के जे हम सभ चुनलहुँ अछि, जे महत्वपूर्ण छथि, ताहि मे हुनक सभक एहि एकनिष्ठताक, लेखन के एकनिष्ठताक की देन छनि, और जे देन छनि हुनकर महत्त्वपूर्ण हेबा मे एकरो महत्त्व छैक तँ हमर आजुक साहित्यकार एहि दिशा मे कतेक अग्रसर छथि? ओ सभ बहुविधावादी भ' रहल छथि। यैह टा एकटा जिज्ञासा, एकटा विचार विन्दु हमरा दिमाग मे आयल अछि।

अमरनाथ

आइ मैथिली साहित्यक स्थिति अव्यवस्थित अछि। जे लेखक कथा लिखैत छथि, कथाक समीक्षा सेहो वैह लिखैत छथि। समय एला पर कविता सेहो लिखैत छथि। चर्चरी-लेखन मे लेखक लोकनि व्यस्त भ' गेल छथि। मधुपजी सँ जखन हम इन्टरव्यू लैत रही, 1976 ई० मे, ओ स्पष्ट रूप मे कहने रहथि जे हमरा मैथिलीक भविष्यक प्रति किछु सन्देह उत्पन्न भ' रहल अछि। कारण, लोक सब बहुविधावादी भ' रहल छथि। विश्वनाथक जे इन्टरव्यू छनि, ओहि मे ओ छपल छै।

हम तँ कहब जे रमानाथ बाबू हेबा लेल वा मधुपजी हेबा लेल साधनाक प्रयोजन होइ छै। तपस्याक प्रयोजन होइ छै। फरमाइशी लेखन सँ ई संभव नहि अछि।

देवशंकर नवीन

बहुविधावादी हेबाक मतलब ई कदापि नहि जे जे लोकनि बहुविधावादी छथि ओहि मे सँ क्यो रमानाथ झा भ' जाथि अथवा, मधुप भ' जाथि। ई बहुत असंभव गप नहि छै। बहुविधावादी भेला सँ लेखन मे कोनो कमजोरी आबि जाय, से नहि होइ छै। दृष्टान्त छथि यात्रीजी, राजकमल चौधरी आदि। तुलनात्मक दृष्टिञे देखबै तँ ई तुलना हुनकर अपने रचना सभ मे भ' सकैए, आनक रचना सँ नहि। तेँ, बहुविधावादी भेला सँ मैथिली साहित्यक क्षति भ' रहल हो, से हमरा कतहु सँ नहि बुझाइत अछि।

कोनो कवि अपना समयक ऐतिहासिक सन्दर्भ कैँ कोना देखि पाबैत छथि, तकर हम कनेक चर्चा करब। जाहि समय मे मधुपजी छलाह, दू-चारि बरख के अन्तर पर भुवनजी भेलाह, यात्रीजी भेलाह, सुमन जी भेलाह। जाहि समय मे भुवनजी लिखि रहल छथि–'बाजि उठल रणडंक'। यात्रीजी लिखैत छथि–उठह कवि तों दहक ललकारा'। ताहि समय मे मधुपजी की लिखलनि? हुनका प्रति सम्पूर्ण आदर रखैत हम मोन पाड़' चाहब– मधुपजी एकटा थाकल सिपाही जकाँ 'सविषाद हास मे चन्द्रमा ओ घसल अठन्नी बाजि उठल' लिखलनि। से, मधुप जीक विषय क्रान्तिकारी रहलाक बावजूद यथास्थिति कैँ सूचित करैत अछि। ई अलग बात छियै जे ओही आसपास मे 'मेघ पड़ै छै बुन्न झड़ै छै' सेहो लिखल जाइ छै। आ, 'सरस भरल ई सावन-भादो' सेहो लिखल जाइ छलै। आ, 'जय जय भैरवि ससुर भयाउनि' सेहो लिखल जाइ छलै। लेकिन, ई मधुप जीक प्रति श्रद्धाक संग स्मरण करबाक बात थिक जे ताहि सभ सँ आगू छलाह मुदा जाहि समय मे तंत्रनाथ झा लिखै छलाह–'शार्दूल की पावथि त्रास जम्बूकक' ओही समय मे मधुपजी के रचनाक पात्र एतेक थाकल-हाल होइ छलै–ई अवश्य विचारबाक बात थिक।

एखन स्त्री-विमर्श पर, सौंसे संसारक साहित्य मे खूब गप भ' रहल अछि। मुदा, 1940-50 ई०क आसपास मधुपजी जे गीत सब लिखलनि–जकर चर्चा एखन तारानन्द वियोगी केलनि–स्त्रीक विषय मे जे दृश्य पटल सँ बाहर, भविष्यक गर्भ सँ बिम्ब-प्रतीक ताकि क' जे मधुप जी लिखलनि, ओ अपन समाज कैँ एकटा प्रेरणा सेहो दै छथि जे हम एहन समाज चाहि रहल छी। ताहि क्रममे जतय धरि मधुपजी केलनि से महत्वपूर्ण अछि।

तखन, बात बहुविधावादी हेबाक छै। एखन मैथिली साहित्य मे बहुतो प्रतिभाशाली लेखकक जुटान छै। लगातार सक्रिय रहि क' यदि ई लोकनि रचनाशील रहलाह तँ हम आश्वस्त छी जे एक्के व्यक्ति एहन अवश्ये भ' सकैत छथि जे एक दिस जँ गद्य मे रमानाथ बाबूक तुल्य होथि तँ दोसर दिस काव्य मे मधुपजीक तुल्य।

प्रमोद कुमार झा

एखन चर्चा भेल जे की कोनो लेखक केँ एकटा विधा मे अपन लेखन केँ सीमित रखबाक चाही? हमरा लगैत अछि जे मैथिलीक सन्दर्भ मे, जाहि काल मे मधुप जी लिखै छलाह, तँ मधुपजी कि किरण जी अपना लेल किछु कमिटमेन्ट रखलनि, एक खास टास्क भेटल-सन अनुभव केलनि, जकरा हुनका पूरा करक छलनि। मैथिलीक स्थिति एहन छलैए जाहि मे सामग्रीक कमी रहै।

कोनो रचनाकार जखन रचना करैए तँ की हैसियत ओकर रहतै भविष्यक परिदृश्य मे, तकर कोनो आकलन ओकरा लग नहि होइत छैक। मधुपजी जखन लिखै छल हेताह, प्रायः कोनो अनुमान नहि रहल हेतनि जे 50 साल बाद हमर रचना पर एहन संगोष्ठी हएत। रचनाकार तँ मात्र रचना करैत अछि, ओकर की मूल्य हेतै, कोन स्थान भेटतै–ई तँ निर्भर करै छै ओकर क्रिएटिभिटी पर। से हम कहब जे आनो भारतीय भाषा–साहित्य मे अनेको एहन पैघ लेखक सब छथि जे एक्के संग अनेक विधा मे लिखै छथि–कवितो लिखै छथि, कहानियो लिखै छथि– आ ओ सब मे सफल होइ छथि। मुदा एखन तत्काल तँ एकर कोनो निर्धारण नहि भ' सकै छै। एकर एसेसमेन्ट तँ आब' बला समय मे भ' सकतै। जेना, अंग्रेजी साहित्य मे, टी.एस. इलियट बेसी बढ़िञा कवि छलाह कि बेसी बढ़िञा आलोचक छलाह– एहि पर पूरा दुनिञा मे दू गोल भ' जाएत। मैथ्यू ऑर्नाल्ड बहुत बढ़िञा कवि छलाह, बहुत बढ़िञा आलोचको छलाह। तँ, ई परम्परा बहुत चलल छै, चलैत रहतै। ईहो कहल जाइ छै जे बढ़िञा आलोचक बन' लेल बढ़िञा कवि भेनाइ सेहो जरूरी छै।

एतए एक रोचक बात ई लागि रहल अछि जे जँ विभेद भ' रहल अछि तँ एकर माने जे चर्चा सफल अछि। मैथिलीमे एहन चर्चा भ' रहल अछि, यैह बहुत रोचक छै।

अशोक

हरेक रचनाकार, हरेक कवि के, समाज केँ देखनिहार आ जगौनिहार लोक के अपना समय मे एक 'खास टास्क' होइ छै। प्रमोद कुमार झा एहि 'खास टास्क' के बात क' रहल छलाह। हुनका अलावा मोहन भारद्वाज जी के जे बात छलनि–बहुविधाक एकविधा, एकनिष्ठता आदि–ई 'खास टास्क' के सन्दर्भ मे देखबाक बेगरता छै। रमानाथ झा के अपन खास टास्क छलनि, जकरा ओ अपना समय मे शक्य भरि पूरा केलनि। मधुपजी के खास टास्क छलनि, जकर चर्चा तारानन्द वियोगी केलनि, आर लोकक' रहल छी। एखन, आजुक साहित्यकारकेँ की खास टास्क छनि, हमरा लोकनि केँ से देखबाक चाही आ तकर सन्दर्भ ल'क' बात करबाक चाही।

गौरीनाथ

हमरा लगैए जे विधा के बात उठाक' एहि समुच्चा बहस के दिशा केँ बदलि देबाक प्रयास कएल गेल अछि। बात अहाँ कतए सँ कहै छी, से महत्त्वपूर्ण नहि छै। महत्त्वपूर्ण छै जे बात अहाँ की कहै छी। एतेक नीक विमर्श केँ एना भटकेबाक प्रयास नहि करबाक चाही। विधा महत्त्वपूर्ण नहि होइ छै। जाहि सँ हमर बात जनता धरि ठीक–ठीक सम्प्रेषित भ' सकय, सैह विधा हमरा लेल नीक। ताहि हिसाब सँ एखन गद्य सब सँ ऊपर अछि, ओकर महत्त्व बढ़लैए। से अलग बात छै। कविता जे लिखल जा रहल अछि, तकरो हम सब बिसरि नहि रहल छी, ओझल नहि क' रहल छी। तेँ, ई नहि हेबाक चाही जे कोनो लेखक कोन विधा मे लिखैए। महत्त्वपूर्ण ई छै जे बात हम की कहि रहल छी।

आजुक जे चैलेंज छै समाजमे, हमरा बुझने से बड़ पैघ चैलेंज छै। आइ हम सब एहन मोड़ पर पहुँचि गेल छी जतए हमरा सब केँ जड़ि सँ काटि देबाक प्रयत्न भ' रहल अछि जतए किसान आ मजदूरक बात साहित्य सँ कात कएल जा रहलैए, विस्मृतिक गर्भमे धकेलल जा रहल अछि। हमरा सबकेँ एहि पर सोचबाक चाही जे हमरा सभक जे जड़ि अछि–किसान, मजदूर– तकर बात साहित्य मे कोना एतै।

एहि सन्दर्भ मे मधुपजीक साहित्य पर बात करी तँ हुनकर काव्य मे जाहि समाजक चित्र आ बिम्ब उभरै छै, ओ उपेक्षित वर्ग नहि थिक, मात्र क्षण भरिक

लेल उपेक्षित हेबाक आभास दै छै। जेना 'घसल अठन्नी' मे एकटा आभास-मात्र होइ छै जे कतहु शोषितो वर्ग छै-ओकर समस्या ओहि मे उठि नहि पबै छै। ओकरा भीतरक आक्रोश कतहु नहि उभरै छै। ओकर स्थितिक लेल के जिम्मेवार छै, तकरा प्रति कोनो विद्रोहात्मक रूख नहि छै। एहि सभक एकटा आभास मात्र ओहि ठाम देखाइ छै। तेँ, हमरा सब केँ कोशिश करबाक चाही जे जे चीज परिदृश्य सँ ओझल रहि गेल छै, तकरा ताकि क' निकाली। एना हेबाक की कारण छै, ओ किए नहि आबि सकलैए, की कवि मात्र मनोरंजन के लेल कविता लिखै छलाह? की हुनका सामने कोनो सामाजिक चुनौती नहि छलनि? हम सब देखी जे हरिमोहन झा आ यात्रीक साहित्य मे जे समाज, जाहि तरहेँ आएल अछि से मधुप जी मे किए नहि आबि सकल? एहि सब सन्दर्भ मे हुनका परखि क' हुनक स्थान-निर्धारण करबाक चाही। जँ कोनो काजक चीज नहि भेटैए हुनका मे, तँ ठीक छै, स्मरण हुनका हम करबनि मुदा आगूक रस्ता हुनका सँ हमरा नहि भेटि सकैत अछि- से धरि निश्चित क' लेबाक चाही।

मंजर सुलेमान

रमानाथ बाबू, मधुपजी, हरिमोहन बाबू आ यात्रीजी- एहि सब गोटेक जे रचना-संसार छनि, ओहि मे मिथिलाक मूल समस्याक बात अपना-अपना हिसाब सँ आएल अछि। दृष्टिकोणक अन्तर भ' सकैत अछि। से तँ हेबाको चाही।

एखन हमरा एकटा लेख लिखबाक अछि उर्दू मे मैथिली के की असरात छै उर्दू पर, ताहि विषय मे। ओहि क्रम मे हम देखलहुँ अनेको कविता, जाहि मे ई बात भेटै छै। जेना, 'भात भेल दुर्लभ भारत मे, सपना धानक ढेर। मडुआ मिसरिक भाव बिकाइछ, अल्हुआ खाथि कुबेर।' एकरे अन्त मे छै-'सब सँ बुड़बक अन्न खेसारी, सेहो रुपैये सेर।' मतलब कहबाक ई जे मैथिली केँ देखला पर एहन नहि लागै छै जे समस्या-सँ कि शब्द सँ ई अछोप बनल हो।

रमानाथ बाबू आ मधुपजी जे किछु लिखलनि, ओहि मे, ओहि कालक समाजक जे समस्या रहै, ओहि समयक जे पीड़ा रहै, तकरा अपना ढंग सँ व्यक्त केलखिन। ओहि क्रम मे सब सँ अधिक यात्रीजी ओहि पीड़ा केँ अपन रचना

मे समाहित केलनि। मधुपजी सेहो अपना दृष्टिकोण सँ एहि पीड़ा केँ अभिव्यक्ति देने छथि। एहि पीड़ाक अभिव्यक्ति मे रमानाथ बाबूक कने कम योगदान छनि, मुदा मधुपजी केँ तँ कमजोर नहि मानल जा सकैए।

पंकज पराशर

कविता अहाँकेँ अनकॉन्ससली कखन प्रभावित करैए? ई नहि जे मनोरंजनक लेल पढ़लहुँ आ ओकरा बिसरि गेलिऐ? अवचेतनक तल पर कखन प्रभावित करैए? कखन अहाँ ओकरा मोन पाड़ै छियै आ अपना पीड़ा केँ घटल अनुभव करै छी?

कविता जे अहाँ पढ़ै छी, तँ ओ अहाँ केँ कखन मोन पड़ैए? हम सोचैत रही जे मधुप जी हमरा कखन मोन पड़ै छथि। कखनो बहुत दुखी रहै छी तँ 'कोई उम्मीदवर नजर नहीं आती, कोई सूरत नजर नहीं आती। आगे आती थी हाले दिल पे हंसी, अब किसी बात पे नहीं आती' मोन पड़ैत अछि। जाहि कारपोरेट कल्चर मे हम नोकरी करै छी, जाहि कल्चर मे एखन हम जीबि रहल छी ओहि ठाम ग़ालिब मोन पड़ै छथि। हम देखै छी जे लोक अपन दुख केँ बेर-बेर कहे छै, अहाँ केँ लागत जे ई आदमी जान खा रहल अछि, जकरा चालू भाषा मे 'चिपकू' कहल जाइ छै, मोन पाड़ियौ जे कालिदास कहने छलाह-'धूम ज्योतिः सलिलमरुतां सन्निपातः क्व मेघः'- ओहि ठाम धूम' ज्योति, सलिल आ मरुत सँ बनल मेघ केँ यक्ष बेर-बेर अपन बात कहि रहलैए। जेना तुलसीदास कहै छथिन-'आरत के चित रहे न चेतू, बार-बार कहे आपन हेतू।'-लेकिन दुखक गप ई अछि जे मधुप जीक जतबा हम अवगाहन केलहुँ, ओ हमरा कखनहु नहि मोन पड़ै छथि।

किए नहि मोन पड़ै छथि, एहि ठाम अहाँकेँ प्रासंगिकताक प्रश्न पर विचार कर' पड़त। आइ हुनक प्रासंगिकता की छनि? सोचै छी तँ हुनकर कविता सब सँ हमरा एकर उत्तर नहि भेटैए जे जखन ऑस्तोविच के घटना भ' गेल छलै तँ बर्त्तोल्त ब्रेख्त कहने छलाह जे कविता लिखब आब अश्लील कर्म बुझाइत अछि। एखन, बगदाद के जे हालति अछि, बगदाद केँ ल'क' कहने छलाहे,

बहुत पहिने, हिन्दीक कवि आलोक धन्वा जे 'ढूँढ़ो बगदाद को/ कहाँ है/ भारत में वह/ हरे आसमानों वाला शहर/बगदाद/तुम बगदाद को ढूँढ़ सकते हो?/तुम तो रेत में उतना भी/पैदल नहीं चल सकते/जितना ऊँट का बच्चा चलता है।' –अथवा, एखन जेना अहाँ देखै छियै अरुन्धती राय–'गॉड ऑफ स्मॉल थिंग्स' लिखलनि, उपन्यास। मुदा आब ओ उपन्यास नहि लिखि रहलीह–ए। ओ आब लिखि रहलीह–ए–'अलजेबरा आफ इनफिनिट जस्टिस'। ओ आब लिखि रहलीह–ए लेख, आब ओ लिखि रहलीहए– 'द एन्ड ऑफ इमेजिनेशन'– कल्पनाक अन्त। इवान क्लीमा अंग्रेजीक उपन्यासकार छथि, हुनका नोबेल प्राइज भेटल छनि, ओ कहलनि जे आब हमरा सूचना दिय' सब गोटे–हम आब फिक्शन नहि लिख' चाहै छी, फिक्शन बहुत लिखलहुँ, हमरा लगैए जे सब व्यर्थ केलहुँ। तँ, एहि क्षण मे, मधुपजीक कविता जे हमरा नहि मोन पड़ैए, मधुपजी मे की तत्त्व एहन रहनि जे 47 के विभाजन भेलै– आर कतेको पैच–पैच घटना भेलै–आपातकाल लागलै– जँ अहाँ केँ देश आ काल नहि झकझोड़ैए, जखन अहाँ एक वैश्विक परिघटनाक बीच जीबि रहल छी, से अहाँ केँ कनिञो प्रेरित नहि करैए, तँ अहाँक की प्रासंगिकता अछि?

प्रभाकर झा

आजुक विमर्शक क्रममे हम ई एक बात अनुभव केलहुँ–ए जे कविता आ अखबार मे जे अन्तर छै, ओकरा हम सब बिसरि रहल छी। यदि मधुपजीक कविता मे मिथिलाक समस्याक स्रोत हमरा नहि भेटैए तँ ई कोनो कविताक कमी नहि छियै। कारण, कविता मे समस्याक स्रोत भेटय–ई कविताक कोनो शर्त वा परिभाषा नहि थिक। जँ एहन कोनो शर्त हो तँ से हमरा ज्ञात नहि अछि। अथवा, मधुपजीक कविता मे हमरा 1947क विभाजनक पीड़ा नहि भेटैए, 1976 के इमरजेन्सी नहि भेटैए–अरे, ई चीज तँ अहाँ केँ न्यूजपेपर मे भेटत। एहि लेल 'इंडियन नेशन' देखबाक चाही। 'टाइम्स ऑफ इंडिया' के फाइल मे ओ भेटत। कविता मे भेटय ओ अथवा कविता सँ हम आशा करी जे ओतय हमरा ओ भेटत–से जरूरी नहि छै। हमर कहबाक माने ई नहि जे कविता मे ओ नहि आबि सकय, कविताक विषय ओ भ' सकैए। लेकिन कविता ओहि सँ किछु आन चीज छियै।

साहित्य, राजनीतिक साहित्य सेहो, किछु आन विषय छियै। बीसम शताब्दी मे जे सब सँ प्रमुख राजनीतिक लेखक सब भेलाह–ए ताहि मे ब्रेख्त सेहो अबैत छथि। ब्रेख्त के नाटक मे सामाजिक स्थिति केँ प्रतिनिधित्व हमरा भेटैए। लेकिन ओकरा, हमरा सबकेँ समाजशास्त्र बूझि क' नहि देखबाक चाही। ओ साहित्यक जे अपन विशिष्टि छै तकरा सँ भरपूर अछि। भाषाक जे विशिष्ट प्रयोग साहित्य छियै, ओकर डिनायल, ओकर निगेशन ओहि ठाम भेटि सकैत अछि। आ ई राजनीतिक आलोचना सेहो नहि छियै।

राजनीतिक आलोचना मे एकटा ई अवश्य होइ छै जे साहित्य केँ एकटा राजनीतिक परिप्रेक्ष्य मे देखल जाइ छै। मुदा, एहि लेल सब सँ पहिने आवश्यक छै जे साहित्यक अपन विशिष्ट जे होइ छै, तकर हम पूर्णत: आदर करी। एहि ठाम हमरा मोन पड़ैए काशीनाथ सिंहक संस्मरण धूमिल पर–एक दिन धूमिल एकटा कविता लिखि क' काशीनाथ लग एलाह। दुनूक मित्रता सब गोटे जनिते हेबै। काशीनाथ कहलखिन जे 'एक बात मैं तुमसे कहना चाहता हूँ कि कविता और अखबार के न्यूज में अन्तर है। न्यूज से कविता बन सकती है, लेकिन न्यूज कविता नहीं है।' ई जे अन्तर छै, ट्रान्सफॉर्मेशन छै, ई जे भाषाक प्रकार्य छै– तकरा तँ ध्यान मे राखैए पड़त।

हम सब जखन मधुपजी सँ प्रेरणा लेबनि जे हुनकर भाषाक जे अपन वैशिष्ट्य छनि ओ जीवनक बहुतो रास सन्दर्भ केँ कविता मे उतारि देलखिनए। एहि सन्दर्भ सब केँ, निरीक्षण सब केँ, ओ कविता मे ट्रान्सफार्म केलनि–ए। काव्य अथवा साहित्य अथवा उपन्यास आ अखबार अथवा समाजशास्त्र के पोथी एकर जे विभेद छैक, तकरा हमरा सब केँ समाप्त नहि करबाक चाही।

टोनी मारिशन के बहुत प्रसिद्ध नॉबेल छनि – 'बिलवेड'। ओ जखन निकलल रहै, ओकरा अवार्डो भेटलै, ओहि समय मे हम कॉर्नेल यूनिवर्सिटी मे एकटा कॉन्फ्रेन्स मे रही। ओतय हमरा सबकेँ राति मे काकटेल मे–एकटा हमर मित्र छथि जे अपने यू.एस. मे नीक नावेलिस्ट छथि, स्थापित, ओहो रहथि–ओ हमरा कहलनि–'प्रभाकर, देर इज वन थिंग।' हमरा सब केँ बहुत खुशी रहय जे टोनी मारिशन केँ भेटल रहै– तँ ओ कहलनि जे 'इट इज ए गुड नॉवेल, बट देअर इज वन थिंग। आइ डॉन्ट वान्ट टू रीड ए नॉवेल टू लर्न

एबाउट स्लेवरी।' तँ सैह। स्लेवरी पर जँ जानकारी चाही तँ बहुत रास किताब छै। एक सँ एक सुविचारित, सुनियोजित प्रकाशन सब। ओ पढ़ि सकै छी। स्लेव नैरेटिव्स छै, से पढ़ि सकै छी, मुदा उपन्यास किए पढ़ब? टोनी मारिशन के महानता 'बिलवेड' मे एहि बात केँ ल'क' नहि छै जे ओ स्लेवरी पर लिखल गेल अछि। ओहि मे ओ अपन किछु विशिष्ट अनुभव सब केँ कोन तरहेँ ओ रिप्रजेन्ट केलखिन, कोन हुनकर नैरेटिव मेथड छनि, ओ ओहि इतिहास केँ ओहि घटना केँ कोन प्रकारेँ रिप्रजेन्ट केलनि-ए, हुनकर भाषाक वैशिष्ट्य–ताहि लेल हमरा सभक भीतर आदर हेबाक चाही, ने कि मात्र एहि दुआरे जे ओ स्लेवरीक बारे मे लिखल गेल अछि।

से, हमरा अनुभव भेल जे एहि संगोष्ठी मे जे किछु विचार राखल गेल अछि, से वास्तव मे कोनो राजनीतिक आलोचना नहि थिक अपितु साहित्यक सतही राजनीतिकरण थिक, तेँ हम एतेक बात कहब जरूरी बुझलहुँ। धन्यवाद।

अशोक

न्यूज आ पोएट्री, कविता आ समाचार–आ, एहि दुनूक अन्तर्सम्बन्ध पर रोचक बात उठल अछि। हमरा एकटा बात सुनल अछि। एजरा पाउन्ड कतहु कहने छथिन जे कविता एकटा एहन समाचार थिक जे कहियो पुरान नहि होइ छै। तँ, एहू तरहेँ एहि अन्तर्सम्बन्ध केँ देखल गेलैए, देखल जा सकैए।

दोसर दिस, कविता आ भाषाक संवेदनशीलताक प्रश्न। एम्हर संवेदना केँ अभिव्यक्त कर' बला कविताक भाषा तँ ओम्हर समाचार, समाचारक भाषा। हमरा नीक लागत जँ ई गप आर आगू बढ़य, एहि पर विचार होअय।

अग्निपुष्प

हमरा मोन पड़ैए एकटा उपन्यास–'रोमियो जूलियट और अंधेरा'। राजकमल प्रकाशन ओकरा हिन्दी मे प्रकाशित केने अछि। यहूदी आ गैर-यहूदीक बीचक प्रेम-सम्बन्ध जे विकसित भ' गेल छै, तकर ओ कथा थिक। यहूदी युवती अन्हार कमरा मे जे पीड़ा झेलि रहल अछि, तानाशाह शासनक उपद्रव सँ जनमल पीड़ा-ताहि विषय पर ई उपन्यास छै। बहुत मार्मिक उपन्यास। जतबे रचनाक श्रेष्ठताक कसौटी पर ओ सफल अछि ततबे तत्कालीन समाज केँ

समाचार पत्र जकाँ ओ अभिव्यक्त क' रहल अछि। तेँ, समाज केँ एहि तरहेँ विभेद नहि करबाक चाही जे ओ साहित्य देखैए कि अखबार देखैए। धरती हरियर अछि, जल-सागर एहि ठाम छै, यैह कविता भ' जाइ छै– सुजलां सुफलां मलयजशीतलाम्। अखबारक जकरा भाषा कहल जाइ छै, से मार्मिकता एने वैह कविता भ' जाइ छै।

समस्त दक्षिण अमेरिका के जे साहित्य छै, से ओहि ठामक जनताक भयंकर शोषणक कथा कहै छै। हम मोन पाड़ै छी पाब्लो नेरुदा केँ ब्रेख्त केँ। डॉ० प्रभाकर झा जे एखन कहलनि–की ई हमरा मान्य हेबाक चाही जे नेरुदा वा ब्रेख्त के राजनीतिक चिन्तन केँ, हुनकर युद्ध केँ, हुनकर साहित्य सँ बाहर क'क' शुद्ध साहित्यक मानदंड पर, हुनका पर विचार कएल जाय? देखबाक चाही जे धूमिल अपना केँ कोन रूपमे अभिव्यक्त करैत छथि। निश्चित रूप सँ ओ अपन समय केँ अभिव्यक्त क' रहल छथि। तेँ समय के संग चलबाक बात जे पंकज पराशर उठेने छलाहें, हम कह' चाहब जे से केनहि पर कोनो रचना कालजयी भ' सकैत अछि। आइ जँ हमरा कालिदास मोन पड़ैत छथि, विद्यापति मोन पड़ैत छथि तँ ध्यान देबाक चाही जे अपन कोन गुणक बल पर ओ हमरा प्रभावित केने छथि। बालविवाह वा बेमेल विवाह जँ हम देखै छी आइयो तँ निश्चित रूप सँ हमरा विद्यापति मोन पड़ैत छथि। साहित्य जे अपन कालजयी स्वरूप ग्रहण करैए से एही रूप मे। तेँ, साहित्य केँ अखबार सँ, समाजशास्त्र सँ अलग भ'क' मात्र सौन्दर्यक परिप्रेक्ष्य मे नहि देखल जेबाक चाही। आजुक साहित्य एहि सब चीज सँ अविच्छिन्न रूप मे जुड़ल अछि। साहित्य केँ समाज सँ काटि क' हम आगू नहि बढ़ सकै छी।

प्रगतिशील साहित्य अपन संघर्षशील जनताक, युद्ध लड़ैत जनताक कथा कहैत अछि। विश्व साहित्य मे एकर अपन विशाल परम्परा छै, जतय समाज सँ निरपेक्ष भ'क' साहित्य केँ नहि देखल जा सकैत अछि। मात्र सौन्दर्य-दृष्टिक आधार पर ओकर मूल्यांकन करब अनुचित हएत। साहित्यक जे अपन विशिष्टता छै, ताहि सँ सेहो ओ भरपूर अछि, मुदा तकर कने कम परवाह करितो ओ समाजक संघर्षरत जीवनक कथा कहब केँ सर्वोपरि मानैत अछि।

की अहाँ पाब्लो नेरुदा केँ कहि सकै छियनि जे ओ कवि नहि छथि? ओ अखबार लिखलथि– से नहि कहि सकै छी। जतबे ओ श्रेष्ठ कवि छथि ततबे राजनीतिक सामाजिक चिन्तक छथि। तेँ ई विभेद नहि पैदा कएल जाय, से हमर आग्रह।

मधुपजीक प्रासंगिकता पर हम सब चर्चा करै छलहुँए। एहि पर आर विस्तार सँ आगू गप हएत। मुदा हम मोहन भारद्वाज जी केँ कह' चाहबनि जे विधाक डोरी मे हमरा सब केँ नहि बान्हू भाइ। जखन कविता काज नहि करैए तखन आलोचना लिख' लागै छी, अखबारो मे लिखि क' अपन कथ्य केँ विस्तार दै छी। जरूरी भेला पर नाटक सेहो लिखि लै छी। अहाँ आलोचक छी तँ मूल्यांकन करू, जाहि योग्य हो सैह मानू, मुदा विधा मे नहि बान्हू। जिम्मेवार लेखन केँ अहाँ विधा मे कोना बान्हि सकै छी। हमरा किछु कहक अछि, जे विधा हमर बात केँ संग दियय, सैह तखन हमर विधा हएत। एहि पर अहां कोनो बन्हेज, कोनो शर्त्त नहि लगाउ।

प्रभाकर झा

एजरा पाउन्ड के एक कथन केँ अशोक जी कोट देने छलाह। हम तकरा सम्बन्ध मे किछु बात पुनः स्पष्ट कर' चाहै छी। पाउन्ड के कथन छनि–'पोएट्री इज ऐ न्यूज दैट स्टेज न्यूज'। ओहि मे ओ जे दू टा 'न्यूज' केँ यूज करै छथिन, से एक्के सेन्स मे नहि। पाउन्ड ओतय वैह बात कहि रहलाह–ए जे रशन फार्मलिस्ट कहै छलाह जे कविता भाषा मे ग्रथित एकटा नवीन सृजन होइ छै। ओ कोनो घटना केँ ल'क' तँ हेबे करतै! मुदा, ओ घटना जे छियै, से कविता नहि छियै। ओकर बाद के जे चीज छै, जे भाषा मे सृजित भेल छै, ओ भेलै कविता।

लैटिन अमेरिकन साहित्यक गप अनिपुष्प जी उठौलनि। लैटिन अमेरिकन लेखक लोकनि, जाहि मे सँ सब सँ प्रसिद्ध, भारत मे, पाब्लो नेरुदा भेलाह, अपना ओतक समाज, ओकर जीवनक बारे मे लेखन केलनि। ओ सब बहुतो रास समस्या सभक बारे मे सेहो लिखि रहल छथि। लेकिन, ओ ओहि

जीवन केँ ट्रान्सफार्म क' रहल छथि, घटना सँ उपन्यास बना रहल छथि, भाषा–रूप मे नवीन सृजन क' रहल छथि। ई ट्रान्सफार्मेशन जे काज छियै, ओ प्रतिनिधित्व के काज छियै, जे काज भाषाक व्याप्ति मे भ' रहल छै। यैह भेल 'साहित्यक रचना'। ओही पर हमरा सब केँ दृष्टि देबाक चाही।

साहित्य आ समाज मे सम्बन्ध होइ छै, से निश्चित। ई सम्बन्ध अपरिहार्यो अछि। मुदा, साहित्य समाज–ई दुनू एक्के वस्तु तँ नहि थिक। साहित्य आ समाचार (घटना) मे सम्बन्ध छै निश्चित, मुदा ओहि दुनूक एक्के आइडेन्टिटी नहि छै। सम्बन्ध मात्र छै, सैह भ' सकै छै। एहि अन्तर केँ तँ हमरा सब केँ ध्यान मे राखैए पड़त। ई समाज सँ साहित्य केँ काटब नहि थिक। ई, साहित्यिक कार्य केँ, अपन खास विशिष्टि मे, देखब थिक।

मिखाइल बाख्तीन के बड़ पुरान कहल छनि जे द सोशियलिटी ऑफ लिटरेचर इज इनहेरेन्ट इन इट्स वेरिड फॉर्म–भाषा के सब लेवेल पर, जे ओकर फॉर्मल आर्गेनाइजेशन छै, ओकर जे कन्सट्रक्शन छै, ताहि मे हम सब कोनो कृति के सामाजिक दृष्टिकोण पबैत छी, ने कि एहि बात सँ जे कोन टॉपिक पर क्यो लिखि रहल अछि। जेना, किसान पर, किसानक ग्राम्य जीवन पर लाल बिहारी डे लिखने छथि, गोपाल सामंत सेहो लिखने छथि, तखन प्रेमचन्द आ फणीश्वर नाथ रेणु लिखने छथि। एहि सब केँ यदि हम संग–संग देखी तँ पाएब जे थीम आ ट्रीटमेन्ट मे जे अन्तर छै से तँ छैके। ई चीज, ओहि वर्गक समाज आ संस्कृतिक बारे मे हमरा ओतेक बात नहि बताओत जतेक एहि पुस्तक सभक जे इन्टरनल ऑर्गेनाइजेशन छै, से बताओत।

हमरा यैह स्पष्ट करबाक छल जे ई साहित्य केँ समाज सँ काटब नहि थिक, एहि दुनूक जे सम्बन्ध भाषा मे निरूपित होइ छै तकरा गंभीरता सँ देखब हमरा सभक कर्त्तव्य थिक।

पन्ना झा

हमरा सब केँ देखबाक चाही जे मधुपजी कोन समाजक छला, कोन समयक छला आ हुनकर अभिरुचि की छलनि। आवश्यक नहि छै प्रत्येक

रचनाकार हमर समाजशास्त्रीय शर्त्त कें पूरा करबे करताह। एहि संगोष्ठी मे बहुतो रास देशी-विदेशी लेखक-विचारक लोकनिक चर्चा भेल अछि। मुदा हम कहब जे ककरो तुलना ककरो सँ नहि कएल जा सकै छै। सभक अपन-अपन अभिरूचि आ सीमा होइ छनि। मधुपजी कें सेहो ताही परिप्रेक्ष्य मे देखल जेबाक चाही।

शंकर कुमार झा

पंकज पराशर जी कहने छलाह जे मधुपजी कखनहु हुनका मोन नहि पड़ैत छथिन। हम जेना कि बूझि सकलहुँ, हुनकर तात्पर्य छलनि जे आजुक सन्दर्भ मे मधुपजीक कोनो प्रासंगिकता नहि छनि। आइ कारपोरेट कल्चर के युग थिक। समाज टूटि रहलैए। संयुक्त परिवार विखंडित भ' रहल छै। ग्लोबलाइजेशनक कारण हरेक व्यक्ति आत्म-विस्थापन के शिकार भ' रहल अछि। ई स्थिति कतेक भयानक अछि!

मधुपजीक कतेको एहन कविता सब छनि जाहि मे ओ अपना नैराश्य, अपन टुटन के बड़ मार्मिक वर्णन केने छथि। जेना हुनकर कविता छनि 'झखड़ल गाछी', तकरा देखबाक चाही। एहन बहुतो वस्तु छनि हुनकर, आत्मपरक, जे आजुक मनुष्यक पीड़ा आ ओकर एलियनेशन कें बहुत मार्मिक ढंग सँ अभिव्यक्त करैए। जीवनक जटिलता, मूल्यक टूटब- एहि सब विषय पर ओ लिखने छथि। तें हमरा जनैत, मधुपजी आइयो प्रासंगिक छथि। आइ जखन कि निराशा बढ़ि रहलैए, सब चीज टुटि रहलैए- हमरा तँ लगैत अछि जे आइ ओ आरो बेसी प्रासंगिक छथि।

■

मायानन्द मिश्र

हम धन्यवाद दै छी प्रतिमान कें, जे आजुक ई रोचक संगोष्ठी आयोजित केलक। ई संस्था चेतना जगाबक काज केलक। घूर मे आगि देलक जे ओ पजरल आ ओ धधरा हम सब एखन तापि रहल छी। एहि मे किछु योगदान भारतीय भाषा संस्थान, मैसूरक सेहो अछि। हुनको धन्यवाद।

एहि सत्र मे हमरा लोकनि मूल विषय पर तँ विचार करबे केलहुँ, किछु विषयान्तरो भेल। जेना, साहित्य आ समाज। साहित्य मे रहैत छैक शाश्वत मूल्यबोध। ई साहित्यिक प्राण थिक, आत्मा थिक। साहित्य वैह कालजयी भ' सकैत अछि जाहि मे शाश्वत मूल्यबोध विद्यमान हो आ युगचेतना सेहो विद्यमान हो। वाल्मीकि आ तुलसीक रामायण मे अन्तर यैह अछि जे शाश्वत मूल्यबोध दुनू मे अछि मुदा युगचेतना कें अन्तर अछि। देश, काल आ पात्र-तकर मुख्य घटक थिक।

जहाँ धरि मधुपजीक बात अछि, हम देखैत छी जे ई शाश्वत मूल्यबोध आ युगचेतना, दुनूक समन्वय हुनका साहित्य मे भेल छनि। 1905-06 ई० भारतक इतिहास मे राष्ट्रीयताक उत्थानक काल छल। एही अवधि मे मैथिली पत्रकारिताक आरंभ सेहो भेल। एहि वर्ष, 1906 मे हिनका लोकनिक-रमानाथ बाबू, कविचूड़ामणि मधुप आ किरण जीक जन्म भेलनि। राष्ट्रीय स्वाधीनता आ मैथिलीक प्रति जागरूकता, ई सब वस्तु एहि तीनू गोटे मे एलनि अछि। राष्ट्रीय चेतना मधुपजीक 'तांडव' मे देखबा मे अबैत अछि, ताही ठाम 'घसल अठन्नी' मे आजुक युगचेतना देखबा मे अबैत अछि। आ कहल गेल अछि 'भारवेरर्थगौरवम्' से, हमरा साहित्यक भारवि मधुपजी छथि। एक दिस जँ जनभाषा मे ओ 'झनकाय झमाझम झारा' लिखलनि तँ दोसर दिस हुनक 'राधा-विरह' सनक रचना अछि, जाहि मे भारवि-सनक अर्थ गौरव अछि। ओ विशिष्टता अछि, जाहि सँ हुनक बहुआयामी कविव्यक्तित्व प्रकाशित होइत अछि। हुनक रचनाक कोनो-ने-कोनो रूप मे प्रासंगिकता आइ अछि आ हरेक युग मे रहत।

■

शताब्दी पुरुषकेँ नमन

देवशंकर नवीन

आधुनिक भारतीय साहित्यक आलोचनाक जे रूप आइ अछि, से शुद्ध रूपसँ बीसम शताब्दीक देन थिक, कनेक बेसी तटस्थ होइ, तँ कहब जे स्वातंत्र्योत्तर कालक देन थिक। स्वाधीनता पूर्वक भारतीय साहित्यमे आलोचनात्मक लेखन निर्माणक प्रक्रियामे छल। संस्कृत साहित्यक लक्षण-ग्रंथ आलोचना नइ थिक, ओ आलोचनात्मक उपस्कर थिक, ओहो उपस्कर आजुक समयमे परिवर्त्तनक अपेक्षा रखैत अछि। प्राचीन विद्वान सब समकालीन कृति सभक व्याख्या नहि करैत छलाह, निर्णय दैत छलाह, अथवा अपन निर्णय, सूत्र, सूक्ति आदि केँ स्पष्ट करबा लेल उदाहरण दैत छलाह। जेँ कि, समस्त भारतीय भाषा साहित्यक इएह दशा छल तेँ मैथिली लेल ई कोनो लाजक विषय नहि थिक जे आलोचना साहित्यक विकासक धारा पछुआएल अछि।

मैथिलीमे आलोचनात्मक लेख, पोथी, शोध-प्रबंध विपुल संख्यामे लिखल जाइत अछि। बहुत रास चीज प्रकाशितो होइत अछि, तथापि कहल जाइत अछि, जे मैथिली आलोचनाक दशा ठीक नहि अछि। सत्ते कहल जाइत अछि। प्रो. रमानाथ झा द्वारा लिखल 'मैथिली नाटक' आ विद्यापति सँ संबंधित सभटा आलोचनात्मक लेख जे किओ पढ़ने छथि, से कहि सकैत छथि, जे भारत देशक आनो साहित्य मे आलोचनाक दशा ठीक नहि अछि। स्वातंत्र्योत्तर कालमे हिन्दी आलोचना सत्ते थोड़ेक मजगुत भेल अछि, मुदा आन भाषा सभमे एखनहुँ उपरे-झापड़ चलैत अछि। मैथिलीमे तँ एखनहु बेसी काल छात्रोपयोगिए लेख लिखल जाइत अछि।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल कहैत छथि–प्रत्येक देशक साहित्य ओतुक्का जनताक चित्तवृत्तिक संचित प्रतिबिंब होइत अछि। आचार्य नलिन विलोचन शर्मा कहैत छथि– आलोचना कोनो रचनाक शेषांश होइत अछि। फणीश्वरनाथ रेणु कहैत छथि–नीक साहित्य मनुष्य केँ सामाजिक आ समाजकेँ मानवीय बनबैत अछि। –आचार्य रमानाथ झा कहैत छथि–जनताक रुचिकेँ परिष्कृत, व्यवस्थित, सन्तुलित अथवा विवेकशील बनएबाक निमित्त, बनौने रहबाक निमित्त कोनहु वस्तु किंवा रचनाक ठीक-ठीक परीक्षण ओ मूल्यांकन कएनिहार कुशल समीक्षकक होएब मानव समाजक सत्प्रवृत्तिक सुरक्षाक हेतु आवश्यके नहि, अनिवार्य सेहो अछि (समीक्षावृत्ति/विविध प्रबंध/1970)। ...कने अखियासि क' देखी त' आचार्य शुक्ल, नलिन विलोचन शर्मा आ रेणु-तीनू विद्वानक उक्ति आचार्य रमानाथ झाक वक्तव्यमे समाहित अछि, आ तकर पूर्णतया पालन ओ अपन समीक्षा-वृत्ति मे कएने छथि।

'काव्यशास्त्र विनोदेन कालो गच्छति धीमताम्' सन सूक्तिक तर्ज पर सोची तँ वाद-विवादक परम्परा सँ उद्भूत हिन्दी आलोचनाक विकास-प्रक्रिया एकदम सहज आ सुव्यवस्थित रूपेँ चलल। मैथिलीक आत्ममुग्ध विद्वानकेँ ने तँ कहिओ अइ सद्कर्मक स्पृहा भेल होएतनि, ने ईमानदारी आ तटस्थता रहल हेतनि आ ने से सुविधा भेटलनि। ई वाद-विवाद चलितए पत्रिकामे, तकर धार क्षीण आ सीमाबद्ध रहल। ज्ञानपिपासु, प्रश्नाकुल आ गतिशील परम्पराक केन्द्र रहितहु, बीसम शताब्दीक बढ़ैत डेगमे स्वाधीनताक समय धरि किछु रचनाकार रूढ़िमे जकड़ल रहलाह आ गतिमान धाराक प्रणेता रचनाकारक उपहास करैत रहलाह, ओही प्राचीन परम्परासँ सीताराम झा, किरण, मधुप, तंत्रनाथ झा, हरिमोहन झा सन रचनाकार साहित्यकेँ नवगति, नव दिशा दैत रहलाह। यात्री, राजकमल, किसुन, ललितक प्रयासें तीक्ष्य गतिएँ मैथिली साहित्य अधुनातन भेल। अइ रूढ़िग्रस्त आ गतिशील-दुनू धाराक अनुयायीवर्ग तँ बढ़ल, मुदा रमानाथ झाक देखाओल बाट पर जाएब किनकहुँ सँ संभव नहि भेलनि, हिनकर अनुकरणमे किनकहु रुचि नहि भेलनि।

मिथिला मिहिरमे अगस्त, सितंबर 1971मे तीन किस्तमे प्रकाशित निबंध 'विद्यापतिक कीर्त्तिलताक प्रसंग'मे आचार्य रमानाथ झा जाहि तरहें अपन समीक्षा

दृष्टिक परिचय देने छथि, से ओहि समय धरि कोनो भारतीय भाषा-साहित्यक आलोचनामे विकसित नहि भेल छल। अइ निबंधक आलोचनात्मक उपस्कर इतिहास-दृष्टि आ समाजशास्त्रीय विवेक रहल अछि। विद्यापतिक रचना-कौशल, रचनाक कालसापेक्ष आ समाजसापेक्ष विवरण, आ रचनाकारक अन्तर्द्वन्द्वकेँ रमानाथ झा जाहि तल्लीनता आ सूक्ष्मतासँ रेखांकित कएने छथि, ताहिमे कतहु कोनो फांक नहि देखाइ पड़ैत अछि, जाहि ठाम बिलमि कए किछु आन बात सोचल जाए। रचना आ रचनाकारक प्रति एतेक तटस्थ सम्मान रखैत जहिआ मैथिली आलोचनाक मानदंड स्थापित भ' जाएत, तहिआ मैथिली भाषा साहित्यकेँ कोनहु साहित्य अकादेमी आ संविधानक आठम अनुसूचीक प्रयोजन नहि रहि जेतैक।

कैक बरखक शोध आ विचार-विमर्शक आधार पर विद्वान लोकनि अइ निष्कर्ष पर पहुँचलाह जे प्रारंभिक हिन्दी, आलोचनामे वाद-विवादक विशिष योगदान अछि। सन 1876 मे 'पृथ्वीराजरासो'क अस्तित्व पर उठल विवाद सँ हिन्दीमे मौखिक आ लिखित वाद-विवाद शुरूह भेल, पहिल मौलिक हिन्दी उपन्यास, 'चन्द्रकान्ता सन्तति'क घटना क्रमक संभावना... आदि पर विचा करैत, महावीर प्रसाद द्विवेदीक समय मे 'भाषाक अनस्थिरता' पर बहस भेल 'देव' आ 'बिहारी' मे के बेसी महत्वपूर्ण, ताहि पर विचार भेल, 'हिन्दी नवरत्न शीर्षक संकलनमे कबीर नहि छलाह, बहस भेल, परिमार्जन भेल। मुद वाद-विवादक ओ परम्परा हिन्दीमे आब उखाड़-पछाड़क राजनीति आत्मस्थापन, आत्मप्रचार आ प्रचार दल तैयार करबाक तिकड़ममे लागल अछि आनहु भारतीय भाषाक स्थिति ताहिसँ भिन्न नहि अछि। संपूर्ण भारतक कल साहित्य आ संस्कृतिक कार्यकर्त्ता लोकनिक अधैर्य पराकाष्ठा पर छनि। अ जनमतक आधार पर श्रेष्ठ नहि होअ' चाहै छथि, ओ प्रचार-बल आ अन्य शक्तिक आधार पर महत्वपूर्ण होअ' चाहै छथि।

महान विचारक आ लोकप्रिय राजा अकबरक उक्ति छनि-जे कारीग अपन हुनरमे प्रतिष्ठा प्राप्त करैत छथि, तिनका पर ईश्वरक कृपा होइत अछि हुनकर आदर करब, ईश्वरक भक्ति करब थिक। संभवतः अपन अही धारणा आधार पर हुनरमंत लोक सभकेँ ओ विशेष आदर-सम्मान, पद-प्रतिष्ठा दे

हेताह। नवरत्नक चयन सेहो अही आधार पर रहल होएत। मुदा आइ कालिह रत्न भ' कहाँ पबैत अछि। हुनरमंत होएबासँ पूर्वहि लोक उताहुल भ' जाइत अछि। 'हुनर'क शीर्ष धरि पहुँचैसँ पहिनहि अपन प्रतिभा, 'हुनर'केँ भजएबामे लगब' लगैत अछि। मैथिली भाषा साहित्यमे ई अकाज आन भाषासँ थोड़ेक पहिने आ थोड़ेक बेसी दृष्टिहीनतासँ भेल अछि, भ' रहल अछि।

व्यावहारिक स्तर पर 'वाद-विवाद' पदबन्धक दुनू अर्थ होइत अछि-धनात्मको, आ ऋणात्मको। मिथिलामे वाद-विवाद खूब होइत अछि, मुदा धनात्मक नहि। कारण, धनात्मक हेबा लेल वादी-संवादीकेँ तर्क देब' पड़ैत छैक, तर्क देब' लेल पढ़' पड़तैक, शोध कर' पड़तैक। मैथिल विद्वानकेँ से पसिन नइं छनि। 'मैथिली नाटक' शीर्षकमे रमानाथ झाक स्थापना छनि जे 'किरतनियाँ नाटक'क प्रचारसँ मैथिलीमे अभिनयक कोनो पुरान प्रथा प्रमाणित नहि होइत अछि। हुनकर कहब छनि जे 'मिथिलामे ने रंगमंच छल, ने नाटकक अभिनय परम्परा छल, ने नाटकक अभिनय होइत छल, ने अभिनयकेँ दृष्टि मे राखि नाटकक रचना भेल।' अपन स्थापनाकेँ पुष्ट करबाक लेल ओ जतेक तर्क देने छथि, तकरा ध्वस्त करबा लेल प्रतिपक्षमे आइ धरि केओ नइं ठाढ़ भेलाह। ओहो नइं, जिनकर पसारल अफवाहकेँ ओ स्वाहा कएलनि। डॉ. जयकान्त मिश्र, आ डॉ. सुभद्र झा कोनो सार्थक तर्क नइं द' सकलखिन्ह। रमानाथ झाक कहब छनि जे जाहि वर्णरत्नाकरमे चतुःषष्ठि कलामे स्त्रीक वेष बनएबाक चर्चा अछि, ताहूमे अभिनयक चर्चा नहि अछि। द्यूतसँ ल'क' श्मशान धरि विस्तृत विवरण अछि, मुदा नाटकक कतहु चर्चा नहि। 'स्पष्ट प्रतीत होइत अछि जे नाटक ओ नाटकक भेद तथा ओकर साधन ओ उपकरण प्रभृति वस्तुक मार्मिक ज्ञाता भैओकेँ कविशेखर जे नाटकक अभिनयक वर्णन नहि कएल तकर एकमात्र कारण इएह, जे ई वस्तु ताहि दिन मिथिलामे नहि छल, एकर परम्पराक एतए अभाव छल।'

'कीर्तनियाँ नाटक'क एकटा फूसि जयकान्त मिश्र फेकि देलनि, लोक झालि बजा रहलाह अछि। रमानाथ झा तँ जतए अनुमान कएलनि अछि, ततहु अपन तर्क पर्याप्त सुव्यवस्थित रूपमे देने छथि। जे लोकनि रमानाथ झाक निन्दा करैत छथि हुनका सोचबाक चाही ज़े ओ जे काज नहि केलनि अथवा अधलाह

केलनि–से विचारणीय नहि थिक। बहुराष्ट्रीय कम्पनीक वर्तमान व्यापारिक समयमे कसाइखाना चलौनिहार व्यक्तिकेँ नमाज पढ़बाक, रेलवे टिकट अथवा शेयर ब्रोकरीमे लीन व्यक्तिकेँ जनवादी कविता लिखबाक अधिकार भ' गेल छैक। व्यक्तिक प्रतिभा, वैयक्तिक विवशता आ वैयक्तिक सपना अलग–अलग चीज थिक।

रमानाथ झा जे नहि केलनि, से हम सब करी। जे अधलाह केलनि से हम सब नइं करी। जे नीक केलनि ताहिसँ हम प्रेरणा ली। रमानाथ झा ओएह कएलनि, जे ओ करए चाहैत छलाह, क' सकैत छलाह। हुनकर करतब हुनकर वैयक्तिक आयास छलनि। हुनकर बात लोक मानबे करथि से आवश्यक नहि, तकर ओ कहियो जिद्दो नहि कएलनि।

मैथिली आलोचनामे हुनकर बाद प्राध्यापकीय आलोचनाक अतिरिक्त मायानन्द मिश्र, रामानुग्रह झा, कुलानन्द मिश्र, मोहन भारद्वाज, रमानन्द रमण, तारानन्द वियोगी आ नव पीढ़ीक आओर कतोक लोक अपन सक्रिय भूमिकाक संग लागल रहलाह आ लागल छथि। आलोचनाक दशा–दिशा फरिछा रहल अछि। मुदा ई सत्य जे रमानाथ झाक बाद बहुतो दिन धरि मैथिली आलोचना दिशाहारा भेल रहल।

विद्यापतिक साहित्य पर रमानाथ झा बड़ लिखलनि। गंभीरतापूर्वक लिखलनि। अंग्रेजी आ मैथिलीक सब लेखकेँ मिलाकए पढ़ी तँ कतोक ठाम हजारी प्रसाद द्विवेदीक लेखन जकाँ पुनरावृत्ति आ कतरब्योंतक जोग भेटत। मुदा ई सत्य स्वीकारक थिक जे विद्यापतिपरक रमानाथ झाक देल विमर्श, आलोचकीय निर्देश थिक।

हमरा जनैत, एखन इहो सोचब हमरा लोकनिक दायित्व थिक जे इतिहास, परम्परा अथवा पूर्वजकेँ स्मरण करबाक पद्धति हमरालोकनि सोची। हम अपन पूर्वजकेँ कथी लेल स्मरण करी– हुनकर कएल नीक काजसँ प्रेरणा ली, अथवा ओ जे नइं केलनि, अधलाह केलनि–समयक दबावमे, इमानदारीक अभावमे, अथवा आन कोनो विवशतामे ताहि लेल हुनका गरियबियनि–ई विचार हमरा लोकनिकेँ कर'क चाही।

मानल, जे विद्यापति पदावलीमे कृष्ण आ राधाक प्रतीक रूपमे शिवसिंह आ लखिमाकेँ चिन्हित कएलनि अछि, आ विद्यापतिक छीछा लेदर कएलनि अछि। मुदा हम तकरे स्मरण किएक करी?

कीर्तिलता आ कीर्तिपताकाक जाहि तरहेँ सामाजिक आ ऐतिहासिक व्याख्या देलनि अछि, तकरा किएक नइं देखी।

पढ़ने–लिखने मनुष्यमे आइ–काल्हि ज्ञान आ विवेकसँ बेसी चातुरी अबैत अछि, से मैथिलियहुमे आएल अछि। ओ, ओ नहि बजैत छथि, जे ओ अनुभव करैत छथि, ओ ओ बजैत छथि जे चातुरीक प्रेरणासँ ओ प्राप्त करैत छथि।

मैथिल बेसी काल लोक कब्जसँ परेशान रहैत छथि। सत्य बजबाक इच्छा नइं होन छनि, फूसि बजबाक साहस नइं छनि। दुनू दशामे कब्जक रोगी भेल रहैत छथि। पढ़ल–लिखल लोकक श्रवणशक्ति आ स्मरण–शक्ति चातुरीक आचर तर झांपल रहैत अछि। सूनब आ स्मरण करब ओकर मूल धर्म नहि रहि जाइत अछि।

पाठ अथवा इतिहासक आख्यान प्रस्तुत करबाक तरीका मनुष्यक अपन अपन होइत अछि। आइ काल्हि 1857 पर खूब बहस भ' रहल अछि। मुदा ओ नीक, की बेजाय–से ओ अपनहि तय करैत अछि, तेँ आनहु घटना एहिसँ फराक नहि।

हमरालोकनिकेँ अपन उपलब्धि पर गौरवान्वित होबए, आ अपन रचनाकारक सम्मान करए नइं अबैए, जेना बंगला, मलयालम आ असमिया.. अथवा आन भाषा साहित्यक लोककेँ अबै छै। आलोचकक जीवनमे बड़–बड़ समस्या होइ छै। ओकरा एकहि संगे तटस्थ, क्रूर आ संवेदनशील होबए पड़ैत छैक–पाश्चात्य आलोचनाकेँ देखी तँ ई संवेदनशीलता भेटत।

आचार्य रमानाथ झा अपन समस्त स्थापनाक उत्थान अपन समकालीन अथवा पूर्ववर्ती विद्वानक स्थापना सँ क' कए ओकर व्याख्या इतिहास, भूगोल एवं समाजशास्त्रक साक्ष्य आधार पर पर्याप्त तर्कक संग केलनि अछि, आ तखन पूर्वक स्थापनाक फांककेँ देखार करैत नव स्थापना देलनि अछि। इहो सत्य, जे अइ क्रममे कोनो विद्वानक सम्मान, गरिमा, अथवा योगदानक अभेला नइं केलनि

अछि। समस्त स्थापना आ शोधक निष्पत्ति स-तर्क अछि। अइ बातक मलाल प्रत्येक मैथिली भाषी आ मैथिलीप्रेमीकेँ होइत हेतनि जे एहेन विद्वान आ विवेकशील समीक्षक मैथिलीकेँ दोसर नहि भेटलैक। मलाल अहू बातकं हेतनि जे मैथिली पत्रकारिता येन-केन प्रकारेण सय वर्खसँ तँ चलिए रहल अछि, तथापि साहित्यपरक वाद-संवादक श्रृंखला ओहिमे अंकुरित नहि भेल। आगूओ आबिकए जखन रमानाथ झा अपन समकालीन आ अग्रज विद्वान लोकनिक स्थापना आ मान्यताक खंडन शुरुह कएलनि, वाद-संवादक परम्परा तखनहुँ शुरुह नहि भेल। चन्दा झा, हरप्रसाद शास्त्री, बाबूराम सक्सेना, ग्रियर्सन, शिवप्रसाद सिंह, विमानबिहारी मजुमदार, सुभद्र झा, जयकान्त मिश्र... सभक मान्यता आ स्थापनाक पर्याप्त सम्मानसँ तर्कपूर्ण खंडन करैत अपन स्थापना देलनि अछि।

'कीर्तिलता'क भाषा, ऐतिहासिकता, सामाजिकता, जौनपुरक ऐतिहासिकता, इब्राहिम शाहक शासनकाल, शिवसिंहक शासनकाल, विद्यापतिक प्रौढ़ता आ भाषा-ज्ञान इत्यादि पर विचार करैत विस्मयकर आ चमत्कारी तर्कक संग वस्तुस्थिति प्रस्तुत भेल अछि। अइ आलेखमे वादी आ विवादी-दुनूक भूमिका एसगरे रमानाथ झा निवाहने छथि। अपन एक तरहक तर्कपूर्ण स्थापना द' देलाक बाद, प्रतिपक्षमे अपनहिसँ प्रश्न ठाढ़ कएने छथि आ पछाति स्वयं ओकर जवाब देने छथि।

'चन्दवरदायी' आ 'पृथ्वीराजरासो' पर हिन्दीमे एखन धरि विवाद चलि रहल अछि। मैथिलीकेँ हिन्दीक उपभाषा कहनिहार ढोलिया लोकनिक हाथमे कहइए लए सही, मुदा एखनहुँ सबसँ प्रमाणिक दुइएटा पोथी छैक-'कीर्तिलता' आ 'कीर्तिपताका'। अही आधार पर ओ लोकनि 'वीरगाथा काल' अथवा 'चारण काल'क झालि बजा रहल छथि। आचार्य रमानाथ झा अहू पोथी पर विवाद उत्पन्न क' देलनि, एकर भाषा, ऐतिहासिकता आ समाजिकताक आधार पर स्थापना देलनि जे-ई खेलौड़मे लिखल गेल अगंभीर आ अनैतिहासिक पोथी थिक, अथवा कोनो दोसर विद्यापति द्वारा लिखल गेल कीर्तन थिक।... ई स्थिति पढ़ैत-पढ़ैत मैथिलीक लोक चौंकि उठैत छथि। हिन्दीक लोक सेहो कम नहि

चौंकताह, कारण, हुनका लोकनिक माया-नोर एखनहुँ नइँ फाटल छनि, एखनहुँ विद्यापतिक घुट्ठी छोड़' मे कठिनाइ होइत छनि। शिवनन्दन ठाकुर, वीरेन्द्र श्रीवास्तव, शिवप्रसाद सिंह-ई तीन गोटए मुख्य रूपसँ विद्यापतिक कृति संसारक विवेचना कएलनि, एकर अलावा हरप्रसाद शास्त्री, बाबूराम सक्सेना, विमानबिहारी मजुमदार, उमेश मिश्र, सुभद्र झा आदि लोकनि जतए-ततए भूमिका, संपादकीय आ फुटकर निबंधमे अपन मत प्रतिपादित कएलनि। मुदा कतहु कोनो शोध आ तर्कक आधार नहि देखाइत अछि। इहो तर्क अंतमे रमानाथ झा दैत छथि-'ई असंगत नहि जे शिवसिंहक पराजय भेला पर जखन मिथिला देशक उच्छेद संभावित छलैक मिथिलाक नेता लोकनि, विद्यापतिक सहकर्मा लोकनि, हुनका धएने होथि, मनौने होथि, जे अहाँ अपन काव्यकलाक एक गोट कौशल पुनः देखाउ, इब्राहिम शाह काव्यक रसिक छथि, हुनका अपन प्रतिभासँ तोषित करू।' आ आचार्य रमानाथ झाक अनुमान छनि जे अइ निवेदन पर मर्मान्तिक वेदनाकेँ सहैत महाकवि विद्यापति कीर्तिलताक रचना बेमनसँ कएने हेताह। इब्राहिम शाहक विजय आ शिवसिंहक पराजयसँ मिथिलाक तत्कालीन राजनीतिज्ञ लोकनिक मनोदशा एहेन भेल हेतनि, विजित देश पर विजयीक दिशसँ संभावित अत्याचारक अनुमान क' कए ओ लोकनि महाकविसँ एहेन निवेदन कएने हेताह, आ महाकवि जनहित ओ समाजहितक भावनासँ द्रवित भ' कए आन्तरिक वेदना, विषाद आ हताशाक अछइत समस्त उत्तर भारतमे प्रचारित भाषामे इब्राहिम शाहक स्तुतिमे अइ कृतिक रचना कएने हेताह-से सहज कल्पनीय भ' सकैत अछि, अकल्पनीय नइं। कीर्तिसिंहक गुणगान सेहो अइ पोथीमे परोक्ष रूपेँ इब्राहिम शाहेक गुणगान थिक। अन्यथा, एना कोना होइतए जे शिव सिंहक बालसखा हुनकर प्रतीपक्षी कीर्तिसिंहक गुणगान करितथि!

आचार्य रमानाथ झा अपन विस्तृत व्याख्या देलाक बाद, अनुमान करैत छथि जे जँ शिवसिंहक पतन फागुन-चैत 1406 ई० मे भेल, तँ निश्चये कीर्तिलताक रचना ओही बर्ख वर्षा ऋतुसँ पूर्व भेल होएत। आब हिन्दीक हड़पन समुदायक की हेतनि जे वीरगाथाकालक सीमा सन् 1375मे समाप्त करैत छथि, आ कीर्तिपताका, कीर्तिलता आ विद्यापति पदावलीकेँ अपन आदिकालीन

साहित्य मानैत छथि? आन्दोलन तँ तखन मचत जखन हिन्दीक लोककेँ बूझल हेतनि जे 'कीर्तिलता' केँ शिवसिंहक राजपंडित विद्यापतिक कृति मानबामे रमानाथ झाकेँ संदेह छनि, मुदा ओ कहैत छथि जे जं मानिओ लेल जाए जे ई हुनके कृति थिक तँ से थिक हुनकर जीवनक अंधकारमय निराशाक रचना.. इब्राहिम शाहक स्तुति...। कीर्तिलताकेँ तत्कालीन घटना-चक्र अथवा जातीय जीवन-चित्र नहि बुझबाक थिक।

'प्राचीन मैथिली साहित्यक रूपरेखा'मे आचार्य रमानाथ झा मैथिली साहित्यक अनुसंधित्सु लोक लेल ततबा विषद् आ तर्कपूर्ण व्याख्या देने छथि जे ओकर खंडन कोनहु आन भाषाक विद्वान हेतु असंभव छनि। सरहपादक दोहा 'सिद्धिरत्थु मइ पढ़मे पढ़िअउ'केँ व्याख्या दैत ओ जाहि तरहेँ मैथिली संपदा साबित कएने छथि, संसारक कोनो विद्वान ओकर खंडन नहि क' सकैत छथि।

आइ काल्हि मैथिलीयहुमे दलित लेखनक बखरा लगाओल जा रहल अछि, मुदा अइ पदबन्धक गरिमाकेँ बुझबाक प्रयास कम, आ राजनीति बेसी कएल जा रहल अछि। जँ कोनो दलित जाति द्वारा लिखल रचना दलित साहित्य थिक, भारतीय साहित्यक आदिकाव्य दलित साहित्य थिक, आ बिल्लेसुर बकरिहा अथवा चतुरी चमार सन कृति दलित साहित्य नइं थिक-आइ कोनो जातिक, कोनो आर्थिक क्षमताक अथवा कोनो विचारधाराक लोक कने गतिशील भावनासँ लेखनी उठबैत अछि, तँ ओ अपनाकेँ कबीरक शिष्य कहेबामे गौरव अनुभव करैत छथि, मुदा कबीरकेँ, रैदासकेँ दलितक बखरामे राखि किछु राजनीतिज्ञ लोकनि प्रमाणित करए चाहै छथि जें कि निराला, प्रेमचंद, किरण, यात्री, राजकमल, ललित आदि दलित वंशमे नइं जनमलाह, हुनका दलित साहित्य लिखबाक अधिकार नइं छनि। साहित्यमे अइ वर्गवादक कोन व्याख्या हो, कहब असाध्य अछि!... अही संगे आइ काल्हि किछु आन्हर लोक मैथिलीकेँ ब्राह्मण आ कर्ण कायस्थक भाषा कहैत छथि। रमानाथ झा लिखित 'प्राचीन मैथिली साहित्यक रूपरेखा' मे अइ तरहक समस्त भ्रांतिक स-तर्क खंडन कएल गेल अछि। वस्तुतः वैदिक परम्परा आ संस्कृतक प्रतिपक्षी बौद्ध धर्मावलम्बी अथवा सहजपन्थी सिद्ध लोकनिमे ब्राह्मणक संख्या नगण्य

छल, ओ स्पष्ट केने छथि जे 'मिथिला-जनभाषाक साहित्यक आरंभ मुख्यतः ब्राह्मणेतर व्यक्तिक द्वारहि भेल अछि। ब्राह्मण लोकनि ब्राह्मणत्वक गौरवसँ संस्कृतेतर भाषामे रचना ताहि दिन प्रायः नहिए करैत छलाह।... अवहट्ट रूपमे एहि भाषाक जे कोनो रचना उपलब्ध अछि से सब मुख्यतः ....लोक साहित्य थिक जकर रचना प्रायः 'डाक गोआर अथवा भुसुक राउत सदृश ब्राह्मणेतर जातिक थिक।'

हिन्दी नवजागरणक अग्रदूत भारतेन्दु हरिश्चन्द्रक उक्ति 'निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति कौ मूल' जहिया घोषित भेल ताहिसँ पूर्वहि मैथिलीक श्रेष्ठ रचनाकार, आ मैथिली साहित्यक 'आधुनिक काल'क उन्नायक कवीश्वर चन्दा झा अइ दिशामे अपन उदार धारणाक उदाहरण द' चुकल छलाह। ध्यातव्य थिक जे कवीश्वर चन्दा झा मातृभाषा मैथिली, आ राष्ट्रभाषा हिन्दी-दुनूमे लेखन कार्य करैत छलाह। मुदा मैथिल लोकनिक उदारता जखन घेघ बनि तुलाए लागल, तखन आचार्य रमानाथ झा भाषाक मूल्य पर मैथिलजनकेँ ललकारब, अर्थात् भाषा-साहित्यक सहयोग सँ मनुष्यकेँ सामाजिक, आ समाजकेँ मानवीय बनाएब शुरूह कएलनि, लगभग सफल भेलाह, आजुक साहित्यिक अराजकता आन लोकक देन थिक।

रमानाथ झाक देहावसानक पैंतीस वर्ष बाद हुनक शताब्दी वर्ष मनाओल जा रहल अछि। मैथिलजनक स्वभाव उत्सवधर्मी होइत अछि। विद्यापतिक बर्खीक नाम पर कते की भ' रहल अछि सब गोटए परिचित छी। हमरा जनैत रमानाथ झा सन विराट फलकवला विद्वान आलोचक केँ श्रद्धांजलि देबाक उत्कृष्टतम बाट हैत-हुनक आलोचना कर्म, इतिहास-दृष्टि, लेखन-दर्शन, आ सामाजिक सरोकारकेँ विस्तार देब।

पाठकीय प्रतिक्रिया, वाद-संवाद, पोथीक-भूमिका, संपादकीय वक्तव्य, प्राक्कथन, पोथी-समीक्षा, अध्यापकीय प्रवचन आदि जँ वस्तुनिष्ठ हो, तं आलोचना साहित्यक विकासमे तकर महत्वपूर्ण योगदान होइत अछि। मैथिलीमे ई सब विलम्बसँ चलनिमे आएल, मुदा अइ भाषाक आलोचनाक जड़ता नहि टूटल, मूल कारण जे उक्त समस्त कर्म अधिकांशतः निरर्थके रहल। ई सब

किछु मैथिलीमे दूर्वाक्षत, राजनीतिक वक्तव्य, कार्यालयीय प्रमाण पत्र, मठाधीशक अभयदान अथवा संन्यासी-पुजेगरीक विभूत जकां बंटाएल। रचनाक अवगाहनक आधार पर मैथिलीमे बेसी काल कलम नहि उठाओल गेल। प्रो. रमानाथ झाक प्रवेश लगभग 23 बर्खक अवस्थामे 'मैथिल ओ मैथिली' निबंधक संग मैथिली गद्य मे भेल। अनेक पोथीक सम्पादन, भूमिका लेखन, अनुवाद, आलोचनात्मक निबंध लेखन अबाध गतिएँ कएलनि। संस्कृत आ अंग्रेजीक प्रकाण्ड विद्वान हएबाक कारणें प्राच्य-पाश्चात्य अनुसंधानक ओर-छोर देखल छलनि, आ मातृभाषाक प्रति अनुराग छलनि। ...तेँ प्राय: अपन चिंतनक आधारभूमि लोकजीवन आ लोकमानस बनौलनि-मिथिलामे 'लोक-वेद' पदबंधक उपयोग आ ध्वन्यार्थ विदित अछि, हिन्दीमे आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी 'लोक' आ 'वेद'क अलग-लग धाराकेँ समन्वित क' कए अपन स्थापना देबाक चेष्टा कएलनि अछि-मैथिलीमे आचार्य रमानाथ झाक कएल काज आ काजक प्रक्रियाकेँ देखि अबिचंक लागि सकैत अछि-लोकजीवन आ लौकिक परम्पराक प्रति अतुलित अनुराग आ वैदिक पद्धतिक गंभीर ज्ञानक अद्‌भुत सामंजस्य हिनका ओतए देखाइत अछि। मैथिली भाषा-साहित्य मे हिनकर कएल काजक गुणवत्ताकेँ तुलनात्मक दृष्टिएँ देखी तँ हिन्दीक भारतेन्दु, महावीर प्रसाद द्विवेदी, रामचन्द्र शुक्ल, हजारी प्रसाद द्विवेदी- चारू गोट एक ऐतिहासिक काजक कोलाज देखाइत अछि।... एहि उक्ति केँ 'छोट मुँह पैघ बात' नहि मानबाक चाही। आन भाषा-साहित्य जकाँ मैथिली आलोचनाक क्रमिक विकास नहि भेल। गनल-गूथल पूर्वजक लेखन कार्यमे अंकुरित मैथिली आलोचनाक स्रोतकेँ एसगर रमानाथ झा समस्त भारतीय भाषाक आलोचनाक समक्ष ठाढ़ तँ क' देलनि, मुदा ओकर विकास आगू भ' नहि सकल। मैथिली कथा, कविता, उपन्यासक क्षेत्रमे झटकि क' एतेक नमहर डेग यात्री आ राजकमलक प्रयासेँ राखल गेल छल। यात्री, राजकमलकेँ तँ तैयो किरण, मधुप, तंत्रनाथ, हरिमोहनक बनाएल वातावरण, आ किसुन, ललित, मायानन्द, धीरेन्द्र, सोमदेवक सहयोग भेटल रहनि। मुदा रमानाथझाकेँ तँ किछु नहि, ने आगू, ने पाछू- ल' द' कए चन्दा झा, सुभद्र झा आ कांचीनाथ झा 'किरण' द्वारा तैयार कएल गेल किछु आधारभूमि, मुदा से काज महत्वपूर्ण छल।

साहित्यिक मूल्यांकनक क्रममे आइ कालिह हमरा देशक लोक साम्प्रदायिक भ' गेल छथि। ओ अपन रचनाकारकेँ मनुष्य नहि रह' देब' चाहैत छथि। की तँ देवता बनाकए माथ पर रखता, अथवा लतमारा बनाकए पैर तर। वास्तविक रूपमे नहि रह' देताह। मैथिलीक आलोचककेँ आचार्य रमानाथ झा ई प्रेरणा देने छथि, किओ चाहथि, तँ हुनकर विद्यापतिपरक लेख देखि बूझि सकैत छथि। आलोच्य रचना आ रचनाकारक तथा ओहि पर पूर्वक व्याख्याकारक खंडन जतबे सम्मानसँ करैत छथि, मंडनों ओतबे संतुलनसँ। मुकुट अथवा लतमारा बनेबाक उद्यम ओतए नइं देखाइत अछि। हमरा जनैत रमानाथ झा मैथिलीक लेल गत शताब्दीक शताब्दी पुरुष छलाह, अइ शताब्दी समारोहक अवसर पर हमरा लोकनिकेँ हुनकर आलोचना दृष्टिकेँ विकसित करबाक उद्यम करक चाही। जाहि समयमे जतेक ऊँचाई मैथिली आलोचनाकेँ ओ देलनि, भारतक आन कोनो साहित्यक आलोचना, एतेक ऊँचाई पर नहि छल... राजकमल चौधरी सन श्रेष्ठ रचनाकार समेत आओर कतोक लोकक पोथीक भूमिका लेखन आ संपादन ओ सेहो कएलनि, मुदा ताहि पर आओरो विद्वान लोकनि विषद चर्चा करताह। आचार्य रमानाथ झाक स्मृतिकेँ प्रणाम करैत उर्दूक एकटा शेर मोन पड़ैत अछि-हजारों साल नरगिस अपनी बेनूरी पे रोती है, बड़ी मुश्किल से होता है चमन में दीदावर पैदा।

■

रमानाथ झा आ मैथिली आलोचना

तारानन्द वियोगी

सभ गोटे जनैत छी जे मैथिली भाषा-साहित्यक सन्दर्भ मे, आ मिथिला-सम्बन्धित अन्यान्य संदर्भ मे सेहो, आधुनिकताक उदय बीसम शताब्दीक शुरू मे आबि क' भेल। आ, ईहो बात सभ गोटे जनैत छी जे पूर्ण आधुनिकता जकरा कहल जाए, से एखनहु घटित हेबाक अपन अभिक्रमे मे अछि। आ तें, पछिला सय बरखक भीतर मिथिला केँ ल'क' जे कोनो चिन्तन-मनन-लेखन कएल गेल अछि वा स्वयं मैथिली साहित्य सृजित भेल अछि, से सभ समन्वित रूप सँ आधुनिकतेक विविध रूप-प्ररूप कल्प-प्रकल्प थिक।

भारतीय भाषा-साहित्य सभक परिप्रेक्ष्य मे 'आधुनिकता'क की अर्थ अछि? अंगरेज जाति जकाँ अपन मातृभाषा केँ पवित्र मानब आ अपन समस्त भाव-विचारक माध्यम बनाएब-से एक बिन्दु। दोसर जे अपन मातृभूमिक स्वत्व-रक्षाक लेल, ओकर सर्वविध उन्नति आ विकासक लेल जीवन अर्पित क' सकबाक भावना राखब-आधुनिकता थिक। कहब आवश्यक नहि जे अपन मातृभूमि आ मातृभाषाक विकास लेल उद्यमशील हएब-ई एक एहन विरल आ दुर्लभ गुण थिक जे बीसम शताब्दी-पूर्वक परम्परित मैथिल बुद्धिजीवी समाज मे ताकनहु नहि भेटि सकैत छल। विद्यापति-सन शलाको-पुरुष जँ कतहु क्यो भेटैत छथि तँ मोन राखबाक चाही जे हुनकहु रमानाथ बाबू 'कैक अर्थ मे आधुनिक' कहने छथिन।[2]

मिथिला-समाज आ मैथिली भाषाक सन्दर्भ मे आधुनिकताक प्रतिष्ठापक महापुरुष लोकनि मे आचार्य रमानाथ झा गण्यमान छथि, जनिकर जन्म-शताब्दी-समारोह मे हम सभ एतए एकत्र भेल छी। अपन सुप्रसिद्ध कविता 'सारस्वत सरमे हे मराल' मे यात्री रमानाथ झा केँ 'साहित्यक उद्यानपाल' कहलखिन, से निस्सन्देह सहस्र बर्ख धरि चतरल-पसरल मैथिली साहित्यक 'योग' आ 'क्षेम' दुनूकेँ वहन क' सकबाक हुनक क्षमता केँ देखैत आ तकर अभिनन्दन करैत। हुनक 'महाप्राज्ञता'क संगहि 'चिर-अतंद्रता'क जे गुण-गान ओहि कविता मे कएल गेल अछि आ जाही कारणेँ ओ 'प्रथितसिद्ध' आ 'पूर्णकाम' भ' सकलाह-से ओहि व्यक्तित्वक उपस्थिति आ कर्तृत्व निश्चये आधुनिक मैथिली साहित्यक एक दुर्लभ अध्याय थिक। रमानाथ झा केँ जँ हम आधुनिक कथेतर गद्य-लेखन-परम्पराक, जकरा अन्तर्गत शोध, आलोचना, निबन्ध आदि-आदि कतेको वस्तु अन्तर्भुक्त अछि, पिता मानैत छियनि, तँ हमर अनुमान अछि जे क्यो हमर बात सँ असहमत भने होथु, एकरा नकारि नहि सकैत छथि।

मैथिली-संसारमे रमानाथ झाक जे उल्लेखनीय महत्व छनि, से किनकहु सँ छपित नहि छनि। तकर एक नीक आकलन काल्हि मोहन भारद्वाज अपन लेख मे प्रस्तुत केलनि।[3] तखन तं मानैए पड़त जे रमानाथ झा छलाह मूलतः एक विचारक। विचारक दुनिया मे मति-विमति, सहमति-असहमति सहज संभाव्य होइत अछि आ से लोकतांत्रिक साहित्यक स्वास्थ्य-रक्षा आ विकासक लेल आवश्यको अछि।

देखबाक थिक जे रमानाथ झाक महाप्राज्ञ व्यक्तित्वक जे विशेषता हठात् हमरा लोकनिक लेल श्लाध्य आ प्रेय भ' उठैत अछि, से थिक-हुनक वैदुष्यक विलक्षणता, अध्ययनक गहनता आ प्रस्तुतिक निजता। मोहन भारद्वाज हुनका मे विषयक स्पष्ट अवधारणा आ प्रस्तुतिक निर्लोप रूपक जे वैशिष्ट्‌ पबैत छथि, से आइएक नहि, भविष्योक आलोचक लेल मानदंड मानल जाएत।

आलोचना-कर्मक हुनक रचना-प्रक्रिया बहुत निस्सन आ सर्वांगपूर्ण होइत छलनि। मिथिला-मैथिल-मैथिलीक नाम पर एक खाली सन स्लेट हुनका भेटल

छलनि। पृष्ठभूमि मे पाथेय-रूप मे संकेत थोड़े भने भेटल होअओ, निष्पत्ति धरि कोनो सुस्पष्ट नहि छलनि। अपन मातृभूमि आ मातृभाषाक अभ्युन्नति आ विकासक प्रबल अभीप्सा टा मार्गदर्शक छलनि। एहन 'प्रथम पुरुष' जँ महान प्रतिभाशाली होथि तँ अपन मातृभाषाक उद्धार धरि क' जाइत छथि। एम्हर, हुनकर रचना-प्रक्रिया केँ अकानी तँ पबैत छी जे शार्टकट तकबाक विवशता, जकरा कारणें लोक 'बामा हाथें लिखबा' लेल बाध्य होइछ, हुनका नहि कहियो रहलनि। असीम धैर्यक संग ओ तमाम ज्ञात-अज्ञात स्रोत मे सँ अपन विषय-वस्तु लेल आधार-सामग्रीक निर्णय आ चयन करथि। अत्यन्त अतन्द्र भ'क' ओकर अध्ययन, मनन आ विश्लेषण करथि। तखन जा क' ओहि आधार-सामग्रीक उपयोग कोना हो तकर तकनीक तय करथि। एवम्क्रमें ओ तकर अनुप्रयोग करैत अपन आलोचना-कर्म मे लगैत छलाह आ सदिखन एक निष्कर्ष धरि, एक निष्पत्ति धरि पहुँचैत छलाह। मैथिली आलोचनाक रचना-प्रक्रियाक ई प्रतिमान थिक।

आलोचना केँ ल'क' रमानाथ झाक जे मान्यता छनि, तकरा जनबाक लेल हमरा लोकनि केँ हुनक तीन गोट निबन्ध उपलब्ध अछि, जे 'विविध प्रबन्ध' (1970) मे संकलित अछि। ओहि महक एक निबन्ध 'समीक्षा-वृत्ति' मे ओ एहि रूपें परिभाषा ठाढ़ करैत छथि-'समीक्षा ओ साधु तात्त्विक प्रक्रिया थिक जाहि मे लोक कोनहु दर्शनीय वस्तु केँ देखबाक इच्छा करए, देखए ओ देखि केँ ओहि मे जे द्रष्टव्य होइक तकरा दोसरा केँ देखएबाक इच्छा करए, देखाबए।'[4] एहि ठाम देखबाक थिक जे समीक्षाक लेल ओ दुनू स्तर पर — देखबाक तथा देखेबाक—जागरूक हेबाक शर्त्त रखैत छथि आ से इच्छा सँ ल'क' क्रिया धरिक रूपान्तरणक सम्पूर्ण प्रक्रियाक संग। समीक्षा वा आलोचना केँ केहन हेबाक चाही, ताहि मादे ओ अपन निकष एहि रूप मे निर्धारित करैत छथि-'ओ (समीक्षक) जे कहैत छथि से स्पष्ट अछि, शुद्ध अछि, प्रभावशाली अछि, युक्तियुक्त अछि ओ समीक्षाक शैली सँ भिन्न नहि अछि।'[5]

एहि पाँचोटा गुण—स्पष्टता, शुद्धता, प्रभावशालिता, युक्तियुक्तता आ विहित शैलीबद्धता—सँ युक्त आलोचनाक प्रयोजनीयता की थिक, ताहि मादे ओ कहैत छथि-'जनताक रुचि केँ परिष्कृत, व्यवस्थित, सन्तुलित अथवा विवेकशील

बनएबाक निमित्त, बनओने रहबाक निमित्त, कोनहु वस्तु किंवा रचनाक ठीक-ठीक परीक्षण ओ मूल्यांकन कएनिहार कुशल समीक्षकक होएब मानव-समाजक सत्प्रवृत्तिक सुरक्षाक हेतु आवश्यके नहि, अनिवार्य सेहो अछि।'[6] एहि ठाम देखबाक थिक जे समीक्षाक प्रयोजन केँ ओ 'यशसे' वा 'अर्थकृते' सँ दूर ल' जा क' 'शिवेतरक्षतये' मात्रक लगमे ठाढ़ करैत छथि आ सैह टा नहि अपितु तकरो सुस्पष्ट पक्ष-निर्धारण करैत एकरा 'जनताक रुचिक परिष्कार' सँ जोड़ैत छथि। ई रमानाथ झाक आधुनिकता थिकनि। ओना तथ्य ईहो जे हुनक एहि आधुनिकताक सीमा सेहो बड़ स्पष्ट छनि। से मुदा, भिन्न बात।

एक समालोचकक कर्त्तव्य आ दायित्व, जकर ओ भरि जीवन पालन केलनि, वास्तव मे कतेक कठिन होइत छैक, ताहि मादे ओ कहैत छथि– 'ई (समालोचना) एक गोट अत्यन्त दुर्वह कर्म थिक ओ एहि हेतु जे योग्यता, जे प्रतिभा, जे व्युत्पत्ति ओ जे पाण्डित्य अपेक्षित छैक तकरा दृष्टि मे राखि तखनहि एहि दुर्वह कर्म केँ अपनाओल जाए।... अधलाह किंवा भ्रान्त समालोचना सँ रुचि भ्रष्ट भए जएबाक भय अछि। एहन समालोचना सँ नीक थिक जे समालोचना नहिए हो, कारण तखन तँ पाठक जनताक अपने रुचि ओकर रसग्राहकता मे सहायक होएतैक।'[7] अपन एहि निबन्ध मे ओ आलोचना-लेखनक अधिकार-अनधिकार केँ चिन्हित करैत ईहो कहैत छथि जे मात्र रचनाक अनुशीलन क' लेने सँ कोनो लेखक केँ आलोचना-कर्मक अधिकार प्राप्त नहि भ' जाइत छनि अपितु एहि लेल प्राच्य अथवा पाश्चात्य समालोचना-शास्त्रक विधिवत अध्ययन आवश्यक अछि।

स्वयं रमानाथ झा केँ प्राच्य तथा पाश्चात्य दुनू समालोचना-शास्त्र मे गँहीर अभिज्ञता प्राप्त छलनि। हुनक आलोचना-कर्म साक्षी अछि जे समीक्षण-क्रम मे जतए हुनका जे रुचलनि वा उपयुक्त लगलनि, दुनू शास्त्रक उपयोग कसौटीक रूप मे केलनि अछि। तखन, ई धरि निश्चय जे साहित्य केँ अथवा साहित्यकार केँ 'देखबाक' जे हुनकर केन्द्रीय दृष्टिकोण रहनि, तकर नियामक पाश्चात्य समालोचना-शास्त्रे छल। एकरो हुनक आधुनिकताक एक अभिलक्षण मानबाक चाही। अर्थात् अंग्रेज जाति जकाँ अपन भाषा आ भूमि केँ पवित्र मानब आ तकर विकासक उद्यम करब। अपन निबन्ध 'समालोचना' मे जे ओ

कहलनि जे 'समालोचनाक लक्ष्य भए गेल अछि कविक व्यक्तित्वक स्फुटीकरण जकर माध्यम हुनक काव्य भेल'[8], तकरा हुनक एक उक्ति-मात्र नहि अपितु हुनक केन्द्रीय आलोचना-दृष्टि क'क' बुझबाक चाही।

सभ गोटे जनैत छी जे रमानाथ झाक सभसँ विराट योगदान विद्यापति-सम्बन्धित अध्ययन थिकनि। एसकर विद्यापति पर जतेक जे लेखन विविध भाषा मे भेलनि, से पाँच सय सँ बेसी मुद्रित पृष्ठ मे अटान ल' सकैत अछि। हुनक ई समस्त लेखन घोषित रूप सँ विद्यापतिक कवि-व्यक्तित्वक स्फुटीकरणक वास्ते थिकनि। एहि लेल ओ विद्यापतिक देश, काल, समाज, वंश, कुल-मूल, समाज, राजनीति, धर्म, संस्कृति, आदि-आदि कतेको वस्तुस्थितिक पद्धतिबद्ध आ आधिकारिक अध्ययन प्रस्तुत केलनि। तहिना, प्राचीन आ मध्यकालक अन्यान्य कतेको ज्ञात-अज्ञात-अल्पज्ञात कवि-लोकनिक ओ उद्धार केलनि, से कहल जाइत अछि।

रमानाथ झाक समीक्षात्मक लेखन विशाल तँ अछिए, ओकर अनेक कोटिक्रम, अनेक विषय तथा अनेक प्ररूप सेहो छैक। एहि सभकेँ एक सूत्र मे जोड़बला जँ किछु अछि तँ से हुनक समीक्षाक विहित शैली तथा प्रविधि मात्र थिक, जकर सदति रक्षाक ओ प्रबल आग्रही छलाह! हुनक कुल्लम लेखन केँ मूलतः दू कोटि मे विभाजित कएल जा सकैए। प्रथम तँ इतिहास आ इतिवृत्तिमूलक जकर अन्तर्गत पंजी सम्बन्धित हुनक लेखन, तन्त्रादि शास्त्रपरक हुनक विवेचन आदि आएल। हुनक लेखनक दोसर कोटि थिक-साहित्यमूलक लेखन।

ई एक तथ्य थिक जे रमानाथ झाक दृष्टि अन्ततः अतीतमुखी दृष्टि छलनि। जाहि मिथिलाक अभ्युन्नतिक हेतु ओ उद्यमशील छलाह, से अतीतक मिथिला छल, जकरा ओ अपन 'ज्ञानलोक', 'विद्या-वैभव', 'आचार-चारुता' तथा 'विचारक वैशद्य'क कारण महत्त्वपूर्ण मानैत छलाह। ताहि मिथिलाक पुनरुत्थानक लक्ष्य छलनि हुनका लग, आ तेँ हुनक अधिकांश लेखन-ऊर्जा अतीतक उत्खनन मे अभिव्यक्त भेल। ओहि युगक आत्म-विस्मृत बुद्धिजीवी-समाजक जागरण लेल ई महत्वपूर्णो कतेक छल, कहब आवश्यक

नहि। तेँ हुनक अधिकाधिक आलोचनात्मक लेखन प्राचीन साहित्य पर केन्द्रित भेटैत अछि। नवीनो साहित्यक जे अंश परम्परित स्वर-शैली मे लिखल जा रहल छलैक, सैह हुनका रुचिक अनुकूल रहनि आ ताहि पर ओ लिखलनि। नवीन साहित्यान्दोलनक प्रभाव मे जे नव-नव स्वर-संधान मैथिली मे उभरि रहल छलैक, प्रसंगात् ओ ओहू पर लिखलनि। ओना ई बात भिन्न जे एहि प्रकारक हुनक लेखन मात्रा मे अत्यल्प तथा प्रकृति मे असहमति मूलक अछि।

साहित्यमूलक हुनक आलोचनात्मक लेखन मूलतः तीन प्रकारक अछि। पहिल तँ पुस्तक-रूप मे, जकर एकमात्र उदाहरण 'विद्यापति' थिक, जे ओ साहित्य अकादेमीक लेल लिखलनि। दोसर, निबन्ध रूप मे, जे हुनक 'प्रबन्ध संग्रह', 'निबन्ध-माला' तथा 'विविध प्रबन्ध' मे संकलित छनि तथा किछु आर असंकलित छनि। हुनक आलोचनात्मक लेखनक तेसर रूप भूमिका-शैली मे लिखित अछि, जाहि मे सँ किछु तँ ओ अपना द्वारा लिखित वा संपादित पुस्तकक भूमिका-स्वरूप लिखलनि, आर किछु आन-आन लेखकक पोथी सभक भूमिकाक रूप मे लिखलनि। कहब आवश्यक नहि जे ई तमाम लेखन हुनक आलोचकीय मानदंडक अनुरूप तँ लिखले गेल अछि, हुनका सँ अपेक्षित गंभीरताक मांग सेहो पूरा करैत अछि।

जेना कि हम पहिनहि कहलहुँ, रमानाथ झाक आलोचनात्मक लेखनक अनेक कोटिक्रम, अनेक विषय तँ अछिए, अनेक प्ररूप सेहो अछि। ताहि सभ पर अलग-अलग विचार कएल जाय आ तकर महत्त्व आंकल जाय, तकर अवकाश एतए नहि अछि। हुनक लेखन तथ्य आ तर्क सँ ततेक परिपूर्ण अछि जे कतेको बेर ओकर मूल्य-निर्धारण हेतु मूल आधार-सामग्री धरि जेबाक जरूरति होइत अछि। हुनक यथातथ्य मूल्यांकनक एखन धरि चेष्टा नहि भेल अछि तँ तकर कारण थिक जे हुनकर गरिमामय भव्य-भाव्य व्यक्तित्व आ प्रसिद्धि आतंक उत्पन्न करैत छैक, आ तेँ लोक हुनका निकट भिड़बाक साहस नहि करैत अछि, से एक बात। दोसर जे हुनक भाषा आ शैलीक स्थापत्य जादुई रूप सँ ततेक ऊँच आ मजगूत छैक जे साधारण लोक ओहि मे जँ प्रवेश करए तँ अपन अभिमत केँ आलोचनात्मक बनौने राखि पाएब कठिन क' दैत छैक। तेँ, हम सभ देखै छी जे हुनका पर जँ काज कएलो गेल अछि तँ हुनक गरिमामय

व्यक्तित्व सँ अभिभूत भैए क', अपन आलोचकीय प्रतिभा केँ हुनका मे पूर्णतः निमज्जित कइए क'।[9]

ई समारोह, रमानाथ झाक विपुल आलोचना-साहित्यक अवगाहनक हमरा अवसर देलक ताहि लेल हम आयोजक लोकनिक कृतज्ञ छी। एहि ठाम हम, हुनकर आलोचना-साहित्यक प्रवृत्ति पर, हम जेना पेने छी, अपन किछु मंतव्य राखब।

सभ क्यो जनैत छी जे मैथिली आलोचनाक क्षेत्र मे रमानाथ झा प्रमाण-पुरुषक रूप मे सर्व-स्वीकृत छथि। आलोचनाक सम्पूर्ण परिदृश्य पर हुनकर छाया जेना टहलैत-बुलैत आएल अछि। किनको जँ ऊँचाई नपबाक हो तँ हुनके सन्दर्भ सँ बात शुरू होइत अछि, वैपरीत्य जँ नपबाक हो तँ हुनके सन्दर्भ सँ बात खत्म होइत अछि। एकरा अहाँ हुनकर वैशिष्ट्य कहू वा हुनकर सृजनक निजता। नीचां हम सात टा प्रमुख बिन्दु अंकित करै छी, जकरा अन्तर्गत रमानाथ झाक आलोचना-साहित्यक प्रवृत्ति केँ, निजता केँ चीन्हल-बूझल जा सकैत अछि–

(1) वस्तुक स्तर पर प्राचीनताक पक्षपाती
(2) तथ्यक स्तर पर अनुसन्धानात्मक
(3) भाषाक स्तर पर संश्लिष्ट
(4) शैलीक स्तर पर आत्मानुभूतिपरक
(5) निर्वचनक स्तर पर सूत्रात्मक-टीकात्मक
(6) अर्थबोधक स्तर पर पूर्वबोधापेक्षी
(7) लक्ष्यक स्तर पर स्वर्णिम मिथिलाक पुनरुत्थान-कामी

एहि मे सँ एकाध बिन्दु पर थोड़े विस्तार सँ गप हो तँ स्थिति स्पष्ट भ' सकैत अछि।

हमरालोकनि देखैत छी जे रमानाथ झाक सम्पूर्ण आलोचनात्मक लेखन अतीतक स्वर्णिम मिथिलाक गौरव-गान सँ ओतप्रोत अछि। तकरे वैशिष्ट्यक आरेखन तथा उत्तरोत्तर विकासक अभिक्रम ताकब हुनकर इष्ट थिकनि। ओ स्वयं कहैत छथि– 'वर्त्तमान संकटक स्थितिमे हमरा लोकनि सबहुकाँ मिथिलाक

ई प्राचीन उत्कर्ष स्मरण करबाक थिक, मनन करबाक थिक, अनुसरण करबाक थिक।[10] रमानाथ झा मानैत छलाह जे 'अपन अतीतक उत्कर्ष ख्यापित कइए क' समाजक भावी कर्णधार लोकनिक हृदयमे नव-स्फूर्त्ति संचार कएल जा सकैत अछि। हुनक एतेक धरि दाबा छलनि जे भारतीय संस्कृतिक चरम उत्कर्ष, अमरत्वक सोपान अध्यात्म-विद्याक बीजारोपण एतहि मिथिला मे भेल।'[11] कहब आवश्यक नहि जे रमानाथ झाक एहि तरहेँ सोचब आ तदनुरूप उद्यमशील हएब हुनक अभिजात व्यक्तित्व आ राजाश्रयक अनिवार्य परिणाम-स्वरूप छल।

भारतीय स्वतंत्रता आ दरभंगा-राजक अवसानक बाद, मिथिलामे, बुद्धिजीवी युवा चिन्तकक एक एहनो पीढ़ी सामने आएल जे बदलल परिस्थिति मे, एहि तरहें सोचल जाएब मिथिलाक भविष्य लेल हितकर नहि मानैत छलाह। हुनका लोकनिक मतानुसार अभिजात कुल-मूलक मुट्ठी भरि लोक आ राज-परिवारक उत्कर्ष केँ मिथिलाक उत्कर्ष मानव अनुचित थिक। स्पष्ट अछि जे ओ लोकनि मिथिलाक दशा-दिशाक चिन्तन-मनन आम जनताक पक्षपाती भ'क' करबाक आग्रही छलाह। एहि आग्रहक स्वर हमरा लोकनि काञ्चीनाथ झा 'किरण'क लेखन मे सुनि सकैत छी।

परस्पर वैचारिक घात-प्रतिघात सँ अक्सरहाँ प्रगतिकामी विचारक विकासक संभावना बनैत छैक। से मुदा एहि ठाम नहि भेल। हमरालोकनि देखैत छी जे रमानाथ झा एहि कोटिक आग्रही लोकनि केँ 'खल' आ 'मूसल'क कोटि प्रदान क' देलखिन। हमरा लोकनि पाबैत छी जे प्राचीनताक प्रति हुनक पक्षपात उत्तरोत्तर बढ़िते चल गेल आ कतेको ठाम तँ हुनका एक एहन पुरातात्त्विक नायकक रूप मे देखल जा सकैत अछि जकरा लेल वर्त्तमान वा भविष्यक कोनो मतलब नहि रहि गेल छैक।

समकालीन साहित्य केँ देखबाक हुनक दृष्टिकोण स्वाभाविके अछि जे प्राचीनताक प्रति हुनक एहि पक्षपातक कारण भयानक रूप सँ प्रभावित भेल। साहित्य केँ सतत प्रवाहक रूप मे देखबाक ओ आग्रही छलाह। कतेको विषय पर हुनक प्रबल आग्रह देखि क' कै बेर आश्चर्य भ' सकैत अछि जे टी.एस.

इलियट केँ मानदंड माननिहार रमानाथ झा प्राचीनताक गुहा मे कोना एहि तरहेँ सीमित रहि सकलाह आ समकालीन युग-सत्य केँ स्वीकार करबाक साहस आ उदारता किएक नहि अपना सकलाह। अपन एक निबंध मे ओ समकालीन साहित्य केँ परखबाक अपन कसौटीक मादे लिखैत छथि-

'आदिकाव्य सँ लए अद्यपर्यन्तक जे कोनो रचना उपलब्ध अछि ताहि समष्टि मे आजुक रचना सन्निविष्ट भए ओकर अंग भए जाएत ओ तखन पूर्वापरक साधर्म्य ओ वैधर्म्यक परिशीलन सँ ओकर वास्तविक महत्त्व निर्धारित भए सकत, ओकर समुचित स्थान निर्णीत भए सकत। एहि रूपेँ पूर्वापरक समन्वय आवश्यक। पूर्व जँ पर सँ रूपान्तरित होइत अछि तँ पर सेहो पूर्व सँ अनुशासित होइत अछि तथा एहि परस्पर सम्बन्धक अभाव मे साहित्यक मार्ग प्रशस्त नहि अपितु अवरुद्ध भए जाएत।'[12] कहब आवश्यक नहि जे एहि आग्रहक रक्षाक अर्थ अनन्त काल धरि मैथिली साहित्यक 'प्रतिज्ञापाण्डवीकरण' आ 'कविता कुसुमांजलीकरण' करब मात्र हएत। आ, वैह रमानाथ झा जखन दोसर ठाम, आन-आन भरतीय साहित्य सभक तुलना मे मैथिली साहित्य केँ विकसित करबाक योजना रखैत छथि, तँ एक विचित्र अन्तर्विरोध सँ भरल देखल जा सकैत छथि।

विद्यापतिक सम्बन्ध मे ओ प्रभूत लेखन केलनि। तकरा सभ केँ पढ़ि क' परम्परित मैथिल ब्राह्मण-समाजक सम्बन्ध मे बहुत ज्ञानार्जन भ' सकैत अछि। से ओ अपनो गछैत छथि। एक ठाम बहुत सन्तोषपूर्वक ओ कहैत छथि जे 'विद्यापतिकालीन मैथिल ब्राह्मण समाजक प्रामाणिक (जकरा आइ काल्हि वैज्ञानिक कहबैक ताहि रीति सँ) अध्ययन कएने संसार मे हमहि टा छी, दोसर ककरो प्रवृत्तिओ नहि देखैत छिऐक।[13] से, हुनक एहि विशाल मैथिली लेखन केँ देखैत कतेको बेर हमरा लागल अछि जे एक साधारण व्यक्ति ई सभ पढ़ि क' यैह निष्कर्ष निकालत जे जाहि विशिष्ट जाति-गोत्र, कुल-मूल मे विद्यापति जन्म लेने छलाह, जाहि विशिष्ट नैष्ठिक नेमधारी लोकनिक हुनका संगति भेटलनि, जाहि पुण्य धराधाम पर ओ अवतरित भेल रहथि, जाहि पुण्यात्मा राजाक हुनका शरण प्राप्त रहनि, जाहि महिमाशाली देवी-देवतागणक ओ उपासक छलाह, आदि-आदि जतेको अभिजात-कुलक परम्परित दिव्य आलोक

सँ ओ सिक्त भेल छलाह, हुनका तँ विशिष्ट अतिविशिष्ट हेबाके छलनि। ई निष्कर्ष निकालब कतेक भयानक हएत, से अनुमान कएल जा सकैत अछि। मुदा, साधारण लोक से निष्कर्ष बहार करबे करत, कारण हुनक मैथिली लेखनक यैह रूझान छनि। हँ, साहित्य अकादेमीक लेल अंग्रेजी मे लिखैत अवश्य ओ अपना केँ संतुलित रखबाक प्रयास केलनि। एहि सँ हुनक एक आर अन्तर्विरोध सामने अबैत अछि। हुनका दृष्टि मे, मैथिली भाषा मे रचना करबाक अर्थ सनातन मैथिल ब्राह्मण-धर्मक रक्षा रहल हेतनि आ सैह आशा ओ रचनाकार-वर्ग सँ करैत छल हेताह, से प्रकट होइत अछि।

विद्यापति लोकधर्मी प्रकृतिक व्यक्ति छलाह आ परम्परित पण्डित-समाजक दिव्य आलोकक जादू केँ तोड़ि क', उल्लंघन क' क' आगू बढ़ि सकलाह आ तेँ विशिष्ट छथि, तेँ आजुक भारतीय साहित्यक परिप्रेक्ष्य मे प्रासंगिक छथि, ई रुझान रमानाथ झाक मैथिली लेखनक नहि छनि। तेँ आइयो, हुनका द्वारा एतेक काज सम्पादित भेलाक उपरान्तो, विद्यापतिक पुनर्मूल्यांकनक बेगरता छै, से हमरा लगैत अछि।

मिथिलाक परम्परित पण्डित-समाज मे विद्यापतिक प्रति केहन प्रबल विद्वेष रहैक, तकर अनुमान एक एही बात सँ कएल जा सकैए जे विद्यापतिक प्रारंभिक अनुसंधित्सु लोकनि जखन हुनक ग्रन्थ सभक खोज करए लागलाह तँ आइ हमरा लोकनि हुनक जतेक ग्रन्थ देखै छी, ताहि मे सँ एक्कोटा कोनो, मिथिला मे नहि पाओल जा सकल। ग्रन्थकार विद्यापति जँ बचाओल जा सकलाह तँ मिथिला सँ बाहरे। मिथिला मे बचि सकल हुनक गीत तँ से स्त्रिगणक प्रसादेँ आ शूद्रलोकनिक प्रसादेँ, जे ओकरा नाच मे प्रस्तुत करै जाइ छलाह। बिल्कुल सत्य थिक जे ई गीत सभ कोरस मे गाओल जाइत छल। कोनो अवसर-विशेष पर स्त्रिगण एसकर गौती किए आ नाच मे एसकर गाओल कोना जाएत? ई एक तथ्य थिक जे बीसम शतीक पूर्वार्द्ध मे पचगछिया घरानाक विख्यात गायक माँगनि खबास प्रथम-प्रथम विद्यापति-गीत केँ एसकर गेबा योग्य भास मे निबद्ध केलनि आ अखिल भारतीय स्तर धरि पर जा क' एकरा मंच पर प्रस्तुत केलनि। स्त्रिगणक समूह-स्वर-भास सँ अतिरिक्त एकल गेय विद्यापति-गीतक आइ जे कोनो भास सुनबा मे अबैत अछि, से मांगनि खबासक अवदान थिकनि।[14]

रमानाथ झाक जीवन-काल मे विद्यापति-गीतक एकल प्रस्तुति चलन मे आबि गेल छल। से बेस लोकप्रियो भ' रहल छल। आ से आधुनिकताक अनुकूलो छल। आ से एकर देशव्यापी प्रचारोक अनुकूल छल। रमानाथ झा जखन विद्यापति-गीत कें एकल रूप सँ गाएल जेबाक विरोध (मात्र असहमति नहि) करैत छथि[15] तँ तकर कारण प्राचीनताक प्रति प्रबल पक्षपाते टा देखि पड़ैत अछि। एक एहन पक्षपात, जे आधुनिकताक विरुद्ध तँ जाइते हो, अपन सांस्कृतिक सौरभ कें देश-विदेश मे पसरब धरिक विरूद्ध जाइत हो। दोसर एक खटकै बला बात ई लगैत अछि जे नटुआ सभक समूह-स्वर मे ओ विद्यापति-गीत कतेको बेर सुनने छलाह जकर कि ओ चर्च केलनि अछि, आ से नटुआक गीत समाज मे प्रचलित आ लोकप्रियो छल जे आब लुप्त भ' गेल, तकरा बचाओल जेबाक चिन्ता हुनका नहि भेलनि तकरा बदला देवघरक पुरुष पंडित-मंडलीक मुहे सुनल समूह-संगीत कें ओ विद्यापति-संगीतक उच्चतम आदर्श घोषित केलनि आ तकरा बचेबाक अपील केलनि। सभ क्यो अवगत छी जे परंपरागत रूप सँ ब्राह्मण-पुरुष-मंडलीक द्वारा विद्यापति-गीत समूह-स्वर मे गाएब प्रचलन मे नहि छल। देवघरक ओ दृष्टान्त अपवाद-स्वरूप छल, जेहो कि संभवतः आब लुप्त भ' गेल हएत। तात्पर्य जे प्रमाण ओ अपन अभिरुचि कें मानैत छथि जनताक अभिरुचि कें नहि। फल अछि जे हुनकर लेखन मे अक्सरहाँ हमरालोकनि प्राचीनताक क्षरणक कारण हुनका सीदित-पीड़ित होइत देखैत रहै छियनि, से चाहे परंपरागत धार्मिक आस्थाक क्षरणक प्रसंग मे हो वा कि प्राचीन होरी-गीतक लुप्त भ' जेबाक कारण।

तखन हमरालोकनि ईहो देखैत छी जे वस्तुक स्तर पर भने ओ प्राचीनताक पक्षपाती आ ताहि कारणेँ यथास्थितिवादी होथु, मुदा वस्तु धरि पहुँचबाक जे हुनक प्रविधि छनि, से धरि अत्यन्त निस्सन आ सटीक छनि। हुनक श्रमसाध्य अनुसन्धान-प्रक्रियाक मादे किछु बात हम पहिनहि कहि गेल छी। तकरा दोहराएब निरर्थक। तात्पर्य एतबे जे आधार-सामग्रीक चयन, तथ्यक अन्वेषण सँ ल'क' तकर संयोजनक तरीका हुनकर एकदम तर्कसंगत होइत छलनि। तखन तँ कहि गेलाह अछि ई० एच० कार जे इतिहास-लेखन मे तथ्यक अंश दसे प्रतिशत मात्र होइत छैक, शेष नब्बे प्रतिशत तँ भेल करैत छैक इतिहासकार द्वारा

कएल जाइबला व्याख्या आ ओकर मंशा जे अपन ओहि लेखन द्वारा अन्ततः ओ प्रमाणित की कर' चाहैत अछि।[16] से, रमानाथ झाक प्रसंग मे हमरालोकनि देखैत छी जे तथ्यक व्याख्या सँ ल'क' निष्कर्ष धरि मे ओ अपन अभिरुचि कें अन्तिम प्रमाण मानि लैत छथि। एही कारण सँ हमरालोकनि देखैत छी जे हुनकर सम्पूर्ण आलोचनात्मक लेखन आत्मानुभूतिपरक शैली मे लिखल गेल अछि। हुनक लेखनक सभ सँ प्रबल अन्तर्विरोध एकरा कहल जा सकैत अछि, यद्यपि कि अपन आत्म-स्वीकृति मे एकरा गछैयो लेल ओ तैयार भेटैत छथि-'निष्कर्ष हमर अपन थिक ओ यदि केओ हमरा विचार सँ सहमत नहि होथि तँ तकरा ओ हमर अपन विचार मानि लेथि।'[17]

यद्यपि रमानाथ झा आलोचना-लेखन मे रुचिक महत्त्व कें कतहु-कतहु स्वीकार करितो अधिक ठाम अस्वीकारे केलनि अछि, मुदा हुनक सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक समीक्षा-दृष्टिक जे ई फांक अछि, तकरा कतेको ठाम जगजियार देखल जा सकैत अछि। हुनकर विरोधी लोकनि जे हुनक विरोध करैत छथिन से वस्तुतः एही फांकक विरोध थिक।

दोसर दिस हमरा लोकनि देखैत छी जे अपन आलोचनात्मक लेखनक लेल जाहि भाषाक ओ प्रयोग केलनि, से सर्वाधिक प्रभावशाली साबित भेल। हुनक निबन्ध सभ कें आ पाठ-आधारित हुनक टिप्पणी सभ कें देखी तँ दुनूक भाषा मे थोड़े अन्तर जरूर देखाइ दैत अछि, मुदा अन्ततः दुनू अपन प्रकृति मे समान अछि। हुनक भाषाक सभ सँ पैघ गुण छियनि-संश्लिष्टता, जे कि हुनक व्यक्तित्वे सँ उतरि क' अन्ततः भाषा मे निबद्ध भेल अछि। ई संश्लिष्टता तथ्य आ तर्कक प्राबल्य सँ अद्भूत अछि। एकर प्रकृति अनुशासनात्मक सेहो अछि, कारण पहिनहि जेना कि चर्चा क' आएल छी, आलोचनात्मक लेखन कें ओकर विहित भाषा-शैली सँ भिन्न भाषा मे निबद्ध करबा मे हुनका भारी आपत्ति रहनि। ध्यान रखबाक थिक जे ओतहु, जतए ओ आलोचनाक शैली नियमन करैत छथि, हुनक तात्पर्य आलोचनाक भाषा आ रूप सँ, सैह, होइत छनि।

रमानाथ झाक भाषा मे हमरालोकनि बेस ताजगी आ सर्जनात्मकता देखैत छी। प्राचीनताक प्रति हुनक प्रबल पक्षपात कें देखैत एहि तरहक स्पन्दनशील

भाषा लिखि पाएब एक असंभव सन बात लगैत अछि, मुदा जे कि पूरा-पूरी सत्य थिक। हम सभ देखि सकैत छी जे आइयो जे प्राचीनताक पक्षपाती लोकनि मैथिलीक संसार मे छथि से ओ कविता लिखथि तैयो गद्य लिखथि तैयो, केहन सड़ल मुरदा-सन प्राणहीन-स्पन्दन-हीन-सर्जनात्मकता-रहित भाषा लिखैत छथि। सुप्रसिद्ध तथ्य थिक जे भाषा मात्र भाषा नहि, ओ प्रयोक्ताक व्यक्तित्वक आइना होइत अछि। कतबो होशियारी सँ भाषा मे फूसि बाजल जाय, ओ अहाँक पाखंडक लुतरी लाड़िये देत। से, रमानाथ झाक जीवन्त भाषा केँ देखैत छी तँ लगैत अछि जे विचारधाराक स्तर पर हमरालोकनि सँ भने ओ कतबो दूर रहथु, बैमान धरि ओ निश्चये नहि छलाह। प्राचीनताक प्रबल पक्षपात मे जे हुनकर परिणति भेलनि, से अन्ततः हुनक मौलिक अन्वेषणक भित्ति पर टिकल छलनि आ वैह हुनका ओ आत्म-दीप्ति प्रदान केलकनि, जकरा बदौलत युग-धर्म आ लोकतंत्र-सनक नियामक शक्तिक विरोध करितो ओ अपन विचार-निष्ठा केँ बचौने राखि सकलाह। आइ अथवा आबैबला युग मे ओ कतेक प्रासंगिक रहताह, से अवश्ये एहि सँ भिन्न एक प्रश्न थिक।

रमानाथ झाक भाषाक ई जादू, जे कि ओकर जीवन्तताक कारण-स्वरूप छल, तते प्रबल भेल जे आगू यैह प्रतिमान बनल रहल। विचार आ निष्पत्ति मे भने क्यो हुनका सँ कतबो विपरीत भ' जाथु, भाषा धरि मे हुनके अनुगामी बनल रहलाह।

निर्वचनक स्तर पर हुनका आलोचना मे जँ हम सूत्रात्मक आ टीकात्मक प्रवृत्ति पबैत छी तँ तकरा परंपरागत सूत्र आ टीका सँ थोड़ेक फराक क' क' बूझल जेबाक चाही। व्यावहारिक आलोचना मे ओ पाठ-आधारित विश्लेषण केँ प्रतिष्ठित केलनि। एहू मे हुनक आदर्श भेलखिन अंग्रेजी कवि-आलोचक टी.एस. इलियट, जिनका ओ आदरपूर्वक 'इलियट साहेब'क संबोधन दैत छथि। एक ठाम अपन मानदंड स्पष्ट करैत ओ लिखैत छथि-'एलियट साहेबक मतें समालोचनाकर्म मे दुइएटा कार्य छैक-एक तँ टीका ओ व्याख्या द्वारा साहित्यिक कृतिक आशय केँ स्फुट करब, ओ दोसर, ओहि स्फुटीकरण सँ ओहि कृतिगत प्राशस्त्य केँ ख्यापित कए ध्यान केँ अनावश्यक ओ आनुषंगिक विषय सँ हटाए

आवश्यक ओ मुख्य विषय दिशि आकृष्ट करब जाहि सँ पाठकक रुचिक सम्यक्तया परिष्कार भए सकए।'[18] कहब आवश्यक नहि जे एहि रीतिक टीका परंपरागत संस्कृत टीका सँ भिन्न अछि, कारण एहि मे ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य केँ समेटब एक प्रधान चेष्टाक रूप मे रहैत अछि, जकर अभाव हमरालोकनि संस्कृतक टीका मे देखैत छी आ जकरा स्वयं रमानाथ झा संस्कृत समीक्षा-कर्मक एक कमी आ सीमाक रूप मे चिह्नित करैत छथि।[19] दोसर जे अपन निबन्धादि मे ओ रचना वा रचनाकार पर अपन पूरा बात कहि गेलाक बाद जाहि निष्कर्ष पर पहुँचैत छथि से बहुधा सूत्रात्मक प्रकृतिक होइत अछि, कारण ओकर उत्तर-व्याख्याक सेहो प्रयोजन बनल रहैत छैक।

पहिनहि कहि आएल छी जे रमानाथ झा बहुत उच्च कोटिक प्रतिभाशाली व्यक्ति छलाह। बहुत जतन सँ आ बहुतो श्रम लगा क' ओ आधार-सामग्री सभक अन्वेषण-चयन-विश्लेषण केलनि। यथाशक्ति सौंसे जीवन ओ उद्यमशील रहलाह। तखन, मानए पड़त जे हुनकर व्यक्तित्व आ तेँ हुनकर लेखन अनेक-अनेक सीमा सभ सँ आबद्ध छलनि, जे कतहु तँ हुनक पक्षपातक रूप मे तँ कतहु हुनक अन्तर्विरोधक रूप मे प्रकट होइत अछि। ताहि मे सँ अपन किछु सीमा केँ अपन आत्मस्वीकृति मे ओ विनम्रतापूर्वक गछबो केलनि। हुनक एहन किछु प्रमुख सीमा सभ पर एक दृष्टि देल जाय तँ आबै बला जुग लेल हुनक प्रासंगिकता अप्रासंगिकताक किछु संकेत भेटि सकैत अछि।

हुनका-सन पैघ व्यक्तित्वक लेल जे कि मैथिलीमे आधुनिकताक प्रतिष्ठापक पुरुष मे सँ एक छलाह, के लेल आवश्यक छल जे ओ भविष्यक प्रति स्वप्न द्रष्टा होइतथि। आबै बला जुग मे जखन कि मिथिलाक लोक साक्षर-शिक्षित हएत, कमाएत-खाएत, अपन अधिकार आ कर्त्तव्यक प्रति जागरूक हएत, बाहरी भाषा-संस्कृतिक घात-प्रतिघातक सामना करत, तखन मैथिली साहित्य आ मिथिलाक संस्कृतिक की 'मॉडल' हएत, तकर कोनो विधिवत आयोजन हुनका लग नहि रहनि, जे कि प्रविधि-विशेषज्ञ हेबाक नातें हुनका सँ आरो बेसी आशा कएल जा सकैत छल। ई हुनक सभ सँ पैघ सीमा रहनि।

दोसर जे इलियट आदि पाश्चात्य आधुनिक विचारकक मानदंड कें स्वीकारि क' ओ मिथिलाक गौरवशाली अतीतक उत्खनन केलनि, हुनकर कएल काज मैथिलीक अग्रतर विकासक लेल आधारशिला थिक से सभ क्यो मानै छी। मुदा, ओ देश-काल-परिस्थिति हमरा लोकनि कें मोन रखबाक चाही जखन इलियट अपन विचार प्रस्तुत केने छलाह। आधुनिक युगक संक्रमण-काल मे, जखन कि साहित्य तँ आधुनिक आ नवीन भ' रहल छल, मुदा समीक्षक लोकनि ओकरा नवीन तरहेँ बुझबाक उदारता नहि देखा रहल छलाह, इलियट आ हुनक रचनाकार-संवर्ग, वर्त्तमान कें आलोचित करबाक दृष्टिकोण सँ अपन विचार कें सिद्धान्तीकृत केने छलाह। ठीक-थिक जे जे मानदंड हमरा वर्त्तमान कें बुझबाक लेल बनल अछि तकरा द्वारा हम अतीतो कें बूझि सकैत छी। मुदा, इलियट के संसर्ग पाबियो क' रमानाथ झा आश्चर्यजनक रूप सँ वर्त्तमान, युगसत्य आ तकर चुनौतीक प्रति विरक्त आ विरुद्ध बनल रहलाह, से हुनकर सुस्पष्ट सीमा छलनि।

हम सभ जनैत छी जे समीक्षाक प्रयोजन ओ जनताक 'सत्प्रवृत्ति'क रक्षाक लेल माननलनि। तहिना, साहित्यकार लोकनि सँ ओ सदैव ई आशा केलनि जे ओ लोकनि एहन साहित्य लिखथु जे जनता मे 'सत्प्रवृत्ति'क जागरण मे सहायक हो। बात ई बहुत उत्तम छल, से के नहि मानत? मुदा, हमरालोकनि चकित होइत छी जखन एहि सत्प्रवृत्तिक हुनक लघु सीमा कें देखैत छी। ओ स्पष्ट लिखलनि जे सत्प्रवृत्तिक अर्थ धार्मिक आ नैतिक उत्कर्ष सँ अछि। कहब आवश्यक नहि जे एहि 'नैतिक' शब्द कें हम कतबो अतिव्याप्तिपूर्ण बना ली, तैयो समकालीन जीवन-संघर्षक तमाम ताना-बाना कें एहि नैतिकताक सीमा मे समेटि पाएब असंभव अछि। रमानाथ झाक प्रशस्ति मे अनेक तथ्य राखितो रामानुग्रह झा अपन निबन्ध मे हुनकर एहि सीमा कें एहि रूपेँ अंकित केलनि अछि-''नव साहित्यक नवीन जीवन-दृष्टि, उपेक्षित मानवीय धरातलक स्वीकृति, मानवताक परिधिक विस्तार, युग-यथार्थक ग्रहण-शीलता, संघर्षशील संकल्प, जीवन्त परम्पराक नव उपस्थापन, नव संवेदनाक अनुरूप नवीन शिल्प-शैलीक प्रयोजन, नवीन बिम्ब आ प्रतीकक भाव-संयोजन आदि आचार्यश्रीक शास्त्रीय रुचि कें प्रभावित नहि कयलक, नहि क' सकल।'

तहिना, 'जनताक रुचिक परिष्कार' कें तँ ओ आलोचनाक लक्ष्य अवश्य घोषित केलनि मुदा जनताक परिधि हुनकर ततेक लघु, तते क्षीणकाय छल जे एहि मे मात्र सुशिक्षित ब्राह्मण-पंडित-परिवारे टा अँटि सकैत छल। एही कारण सँ हमरालोकनि हुनक लेखन मे पूर्वबोधापेक्षी प्रवृत्ति देखैत छी। जकरा पूर्वहि सँ साहित्यक बोध प्राप्त नहि रहतैक, से मात्र हुनका नमन टा क' सकैत अछि, हुनका सँ लाभान्वित नहि भ' सकैछ। तहिना, जनताक रुचिक परिष्कार जँ ओ चाहबो केलाह त' ताहि लेल अपन रुचि कें स्वतः प्रमाण मानि लेलनि, जखन कि हुनका सन लोक सँ जनताक रुचिक अवगतिक आ तकरा प्रमाण मानबाक अपेक्षा कएल जा सकैत छल।

एही प्रकारक एक भिन्न प्रसंग मैथिली भाषा-रूपक मानकीकरण सँ सम्बन्धित हुनक मान्यता कें ल'क' अछि। हम सभ जनैत छी जे रमानाथ झा गहन अन्वेषण सँ प्राप्त एहि तथ्य कें उदारतापूर्वक स्वीकार केलनि जे मैथिली साहित्यक आदिकालीन उद्‌भव मूलतः आ प्रमुखतः ब्राह्मणेतर शूद्रादि वर्गक उद्यमक प्रसादेँ भेल। ओ ईहो मानैत छथि जे मैथिली साहित्यक विकास संस्कृतक विरोध मे भेल अछि। मुदा, आधुनिक युग मे आबि क' जखन एहि भाषा रूपक मानकीकरणक प्रश्न उठल तँ ने केवल ओ संस्कृत-शैलीक आग्रही बनल रहलाह अपितु आभिजात्य कुल-मूलक लोक द्वारा प्रयुक्त मैथिलिए कें मानक मैथिलीक दरजा देलनि। जनताक कोनो अस्तित्व हुनका सोच मे नहि रहलनि, ओहि जनताक जे अपन आवश्यकतावश अपन उद्यमक बलें, विद्रोह क'क' एहि भाषा-साहित्यक विकास केने छल।

आजुक साहित्य आ आलोचना कें देखी तँ पबैत छी जे परिस्थिति पूराक पूरा बदलि गेल अछि। आब ने ओ चिन्ता आ ने ओ आग्रह केन्द्र मे रहि गेल अछि, जकरा तहिया सभ सँ पैघ मुद्दा कहि क' बूझल जाइत छल। जनता कें प्रमाण मानबाक प्रवृत्ति सर्वस्वीकृत नैतिकता जकाँ ग्रहण कएल गेल अछि। प्राचीनताक पक्षपातक सोच जे कि यथास्थितिवादक झंडाबरदार छल आ जकर पर्यवसान अन्ततः भाववाद मे आबि क' होइत छल, अप्रासंगिक भ' चुकल अछि। एकर पछाति जे परिस्थिति बनल अछि, ताहि प्रसंग मे मोहन भारद्वाज कहैत छथि-'साहित्य जेना-जेना अभिजात सँ जन दिस बढ़ैत गेल अछि

तेना-तेना मैथिली समीक्षा सेहो भाववादी सँ जनवादी होइत गेल अछि। गत शताब्दीक आठम नवम दशक धरि वस्तुवादी समीक्षा केँ एतेक साहित्य उपलब्ध छलैक जे ओ अपन विचार आ दृष्टिकोण केँ तथ्य आ तर्क सँ संवलित क' सकय। तकरा बाद तँ स्थिति क्रमशः प्रभावकारियो होइत गेल अछि।'[21]

एहि स्थिति केँ प्रभावकारी बनेबा मे जे उपकरण सर्वाधिक महत्वपूर्ण भेल अछि, से थिक आलोचक लोकनिक समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण। वस्तुवादी इतिहास-दृष्टि, से एम्हर बेस केन्द्रीयता प्राप्त केने अछि। वर्त्तमान समाज, वर्त्तमान संस्कृति आ साहित्य आब चिन्तनक केन्द्र मे अछि आ तकरे परखबाक हेतु इतिहास मे उतरल जाइत छैक। इतिहासो आब ओ नहि रहलैक, जे तहिया गरिमामय आसन पर विराजमान छल। जनताक जीवन, ओकर दशा-दिशा, ओकर परंपरा आ प्रयोग एहि वस्तुवादी इतिहास-दृष्टिक केन्द्र मे अछि।

हमरालोकनि अवगत छी जे रमानाथ झाक क्यो उत्तराधिकारी नहि भेलखिन। से हएब संभवो नहि छल। हुनक सतत शिष्योपशिष्य-परम्परा सेहो कोनो विकसित नहि भेलनि। तखन, एतबा अवश्य भेल जे हुनक साक्षात शिष्यत्व तथा मार्गदर्शन मे किछु मेधावी पुरुष किछु महत्त्वपूर्ण कार्य सम्पन्न क' सकलाह। एहन लोक मे सँ डॉ० जयधारी सिंह तथा डॉ० दुर्गानाथ झा 'श्रीश' आदि मुख्य छथि। डॉ० जयधारी सिंहक अनुसन्धान एक मानक कार्य छियनि। आगू चलि क' मैथिलीविषयक अनुसन्धानक जे दुर्दशा भेल से ककरो सँ नुकाएल नहि अछि। विश्वविद्यालय सभक मैथिली विभाग पछिला चारि दशक मे अनुसन्धानक क्षेत्र मे की महत्वपूर्ण अवदान द' सकल अछि, से जँ पूछल जाय तँ कोनो काजक उत्तर भेटब कठिन हएत। मिथिला-मैथिली विषयक आइ जँ कोनो महत्वपूर्ण अनुसंधान भैयो रहल अछि तँ से साहित्यक अनुशासन सँ बाहर जा क' भ' रहल अछि, इतिहास-समाजशास्त्र आदि अन्यान्य विषयक अनुसंधित्सु द्वारा कएल जाए रहल अछि आ मैथिली सँ इतर भाषा मे सम्पन्न भ' रहल अछि। हम निश्चिते, एकरा मिथिला-विषयक व्यापिक प्रसार क'क' बुझैत छी।

मैथिली मे आइ अनुसंधान आ आलोचना अलग-अलग क्षेत्रक रूप मे विकसित अछि। अनुसंधान-प्रकृतिक मैथिली लेखन, आइ जे सार्थक कोटिक भ' रहल अछि, तकर उदाहरणार्थ पं० गोविन्द झा (भाषाक क्षेत्र मे) डॉ० भीमनाथ झा तथा डॉ० रमानन्द झा 'रमण' (साहित्यक क्षेत्र मे)क काज केँ देखल जा सकैत अछि, यद्यपि कि हिनका लोकनिक सेहो अपन स्पष्ट सीमा छनि।

जनपक्षधर आलोचनाक अग्रणी पुरुषक रूप मे डॉ० काञ्चीनाथ झा 'किरण'क नाम लेल जाइत अछि। हुनक कएल काज ओहि अधिकांश सीमा सभक अतिक्रमणक बाट देखौलक, जाहि सँ हमरालोकनि रमानाथ झाक लेखन केँ आबद्ध पबैत छी। व्यावहारिक आलोचनाक सिद्धान्तीकरणक एक सबल प्रयास हमरालोकनि आगू कुलानन्द मिश्रक लेखन मे पबैत छी। भाषा आ शिल्पक स्तर पर मुदा ओ काञ्चीनाथ झा 'किरण'क प्रति नहि, अपितु रमानाथ झाक प्रति ग्रहणशील पाओल गेलाह। आइ, जँ जनपक्षधर आलोचनाक अनुकूल एक सबल आलोचना-भाषा सेहो विकसित अछि, तँ एकर एक पैघ श्रेय मोहन भारद्वाज केँ छनि, यद्यपि कि हुनकहु अपन गंभीर सीमा छनि जकरा किछु गोटे हुनकर 'चालाकी' क' क' बुझैत छथिन।

एम्हर, आलोचनाक लोकतांत्रिक स्वभाव बेस फड़िच्छ भ' क' सामने आएल अछि। आ से, विचार आ भाषा-दुनू स्तर पर। अप्रियो निष्कर्ष केँ स्वीकार करबाक साहस जँ आलोचक आ रचनाकार दुनू मे विकसित भेलनि अछि तँ तकर मूल कारण थिक-इतिहास-दृष्टिक उत्तरोत्तर विकास।

तखन, कमी जे आजुक आलोचना मे छैक, सेहो अपना जगह पर गंभीर अछि। रमानाथ झा जाहि तरहेँ आधार-सामग्रीक चयन, अन्वेषण, विश्लेषण प्रचुर श्रम आ अतन्द्रताक संग कएल करथि, आ ताहि कारण सँ हुनक रचना तथ्य आ तर्कक स्तर पर जतेक सबल भेल करनि, ताहि मे ह्रास भेल अछि, जखन कि हुनका लेल तहिया ई करब जते कठिन छलैक, आइ विभिन्न स्रोत उपलब्ध रहलाक कारण तते कठिन नहि रहि गेल अछि। दोसर, देश-विदेशक चिन्तन-विचारक प्रतिबिम्बन तँ आजुक आलोचना मे खूब भ' रहल अछि, मुदा

मिथिला-आधारित निष्पत्तिक अभाव देखार पड़ैत अछि। जेना मिथिलाक प्रति प्रतिबद्धता मे ह्रास भेल हो। आजुक भूमंडलीकरणक काल-परिस्थिति मे तँ एकर आरो बेसी बेगरता छैक।

सन्दर्भ सूची

1. तुलनीय : काञ्चीनाथ झा किरणक आलेख मै०सा० मे आधुनिकताक आरम्भ : सन्धान-2
2. रमानाथ झा : विद्यापति : साहित्य आकदेमी
3. मोहन भारद्वाज : रमानाथ झाक महत्त्व
4. रमानाथ झा : समीक्षावृत्ति : विविध प्रबन्ध
5. उपर्युक्त
6. उपर्युक्त
7. रमानाथ झा : समालोचना : विविध प्रबन्ध
8. उपर्युक्त
9. द्रष्टव्य –'सारस्वत सरमे हे मराल'–डॉ० अमरनाथ झा तथा डॉ० अमरेश पाठकक मोनोग्राफ 'रमानाथ झा'
10. रमानाथ झा : मिथिलाक उत्कर्ष : विविध प्रबन्ध
11. उपर्युक्त
12. रमानाथ झा : समालोचना : विविध प्रबन्ध
13. रमानाथ झा : विद्यापति-पर्व बिसपी, 1967 अध्यक्षीय भाषण
14. विशेष सन्दर्भ हेतु देखी–'मिथिला विभूति मांगनि' : डॉ० चण्डेश्वर झा
15. रमानाथ झा : विद्यापति-संगीत : मि.मि., 23.2.69
16. ई० एच० कार : ह्वाट इज हिस्ट्री
17. रमानाथ झा : भूमिका : विविध प्रबन्ध
18. रमानाथ झा : समालोचना : विविध प्रबन्ध
19. उपर्युक्त
20. रामानुग्रह झा : 'प्रो० रमानाथ झा' : आरंभ तथा मै० अका० पत्रिका : संयुक्तांक 05-06
21. मोहन भारद्वाज : मै० सा०मे० समीक्षाक स्थिति : मै० दर्शन : अप्रैल-जून 05

■

अमरनाथ

समीक्षाक अर्थ ई नहि होइ छै जे ताकि-ताकि क' एहन-एहन बिन्दु आनी जाहि सँ, जाहि व्यक्तिक समीक्षा कएल जा रहल छै, तकरा थूरल जाय। समीक्षा मूलतः नीर-क्षीर-विवेक थिक। तारानन्द वियोगीक आलेख मे एक ईहो शब्द 'परम्पराक पोषक' आएल अछि। हम वियोगीजी सँ प्रश्न करै छियनि ओ दस-बारह बेर बजलाहे जे रमानाथ बाबू परम्पराक पक्षपाती छलाह-ओ 'पक्षपाती' शब्द सँ की अर्थ बुझै छथि? रमानाथ बाबूक प्रसंग 'पक्षपाती' शब्दक प्रयोग करबा सँ पूर्व तथ्य आ तर्कक संयोजन करब आवश्यक अछि। रमानाथ बाबू केँ कतहु सँ क्यो पक्षपाती नहि कहि सकैत छनि। मैथिली मे हुनकर एतेक जे ख्याति छनि आ विराट व्यक्तित्व छनि, तकर एकेटा कारण छै-निर्भीकता।

महेन्द्र मलंगिया

देवशंकर नवीन जे एखन आलेख पढ़लनि अछि, ओहि पर हमरा घोर आपत्ति अछि। ई बात आब पूर्णतः स्पष्ट भ' गेल छै जे मिथिला मे नाट्यपरम्परा छलै आ वैह नाट्य परम्परा आइ धरि चलि एलैए। एकर नहि किछु तँ पचीस-तीस टा लेख अवश्य आएल हेतै। यदि ओहू लेख सब केँ हँटा देल जाय, आ वर्णरत्नाकर मे जे शब्द सब आएल छै ओकर सही अर्थ लगाएल जाय, तँ मैथिली नाटकक परम्परा स्थापित भ' जाइ छै। हम एहि ठाम 'वर्णरत्नाकर' मे जे शब्द एलैए तकर जे अर्थ लगाओल गेलैए, तकर बानगी देब' चाहब।

'वर्णरत्नाकर' मे आएल छै-'नेपथ्यक रचना।' एकर तँ अर्थ लगा देलखिन जे नेपथ्यक निर्माण कएल गेल, रचल गेल। 'मोसिक संयोजन' केर अर्थ लगाएल गेलैए-'मोसि घोरल गेल।' मोसि घोरल गेल, नहि हेतै। ओहि समय मे जे नाट्य परम्परा छलै, कोन पात्र कहाँ के छै, कोन भागक छै-तकर अनुसार मोसि सँ ओकर श्रृंगार कएल जाइ छलै। 'वस्तु के जाति'-एहि ठाम 'जाति' मे प्रश्नचिह्न लागल छै। 'अनुसंधेय' लिखल छै। 'वस्तु के जाति' के

मतलब छै जे जखन नाटक शुरू होइ छलै तँ जतेक देवता छथि, ओहि मे सँ किछु के पूजा कएल जाइ छलै। तकर नियम छलै। जेना ब्रह्मा के पूजा हेतै तँ श्वेत वस्त्र पहिरि क' हेतै। अवधारणा छलै जे पूर्वरंग मे जे कलाकार सभ अबै छै, से भिन्न-भिन्न रंगक वस्त्र पहिरि क' एतै। आब, स्थिति ई छै जे पूजा तँ हँटि गेलै मुदा गीत मे ओ एखनो आबि रहल छै। पाँच टा - छव टा ओहि देव सभक गीत गाओल जाइ छै। तँ, हम कहब जे एकर 'वर्णरत्नाकर' के शब्द सभक यदि सही अर्थ लगाओल जाय तँ मिथिलाक नाट्यपरम्परा स्वतः स्थापित भ' जाइ छै।

देवशंकर नवीन ईहो कहने छलखिन जे डॉ० जयकान्त मिश्र फूसि के विवाद केलनि। गलत बात छै। ओ फूसि के विवाद नहि छलै। रमानाथ बाबू लिखलखिनहें, 'प्रतिगीत'। 'प्रतिगीत' मे ओ कहै छथिन, जेना जटा-जटिन के गीत, जे खेल मे गाओल जाइ छै। लेकिन, 'चमरा के खतबा मे छपर-छुपर पनियाँ, ओहि मे नहाबे सुन्नर बभने हो राम; धोतियो ने खीचै छै जनउओ ने मंजै छै, रचि-रचि तिलक लगाबे हो राम'– एहि मे प्रतिगीत कहाँ छै जे ओ जटाजटिन के खाता मे ध' देलखिन। वस्तुतः ओ रहै बिरहा, जे एक लोकनाट्य रहै। बिरहा लोकनाट्य मे ई बात छै जे एकटा गबै–धोबिन गबै तँ धोबिया ओकर जवाब दै। धोबिया गबै तँ धोबिन ओकर जवाब दै। ई लोकनाट्य रहै। जेना एकटा उदाहरण लेल जाय, एखन जे होइ छै–

मोट मोट लिटिया पकबिहें धोबिनियाँ
लोइ लाबय जाइ धोबिघाट
तीन चीज मत भूलिहें धोबिनियाँ
टिकिया, तमाकू आगि

ताहि पर धोबिनियाँ कहै छै–

कोना क' लेबै हम टिकिया तमाकू
कोना क' लेबै हम आगि
कोना क' लेबै हम सुन्दर लड़िकबा
कोना एबै हम धोबि-घाट

तँ धोबिया जवाब दै छै–

बाम हाथ लीहें टिकिया तमाकू
दहिन हाथ लिहें गोइठा-आगि
काँख तर लीहें सुन्दर लड़िकबा
चमकैत अबिहें धोबि-घाट

ई लोकनाट्य छै। आ एहि लोकनाट्य मे ज्योतिरीश्वर 'प्रतिगीत' कहि क' देने छथिन। तँ ई हमरालोकनिक परम्परा मे पूर्णतः विद्यमान छल। बाद मे, बिरहा मे अश्लील शब्द सब बढ़ि गेलै, ओ गारि-गरौज बनि गेल– तेँ ई आगू हमरा सभक परम्परा सँ लुप्त भ' गेल। फ्रेजर ई बात कहने छथिन आ लुप्त हेबाक कारणो यैह बतौने छथिन।

रमानाथ बाबूक संग एक समस्या ई छनि जे लोकनाट्य वा नाटकक परम्पराक विरोध मे जखन तर्क दै छथिन तँ कहै छथिन जे हम ई चीज अपना आँखि सँ देखने छी। जेना ओ कहै छथिन जे कलाकारक एहि गिरोह मे तेरह आदमी रहै छलै। तेरह आदमी सँ कोन नाटक हेतै? ई उचित तर्क नहि भेल। हम एकटा उदाहरण देब। स्टानी स्लावस्की 'शकुन्तला' नाटक केने रहथि। ओहि नाटक मे 37टा पात्र छै। आ ओ साते टा पात्र ल'क' ओहि नाटक केँ मंचित केलखिन। ओ केना भेलै?

हम तँ कहब जे तेरह आदमी तँ बहुत भ' गेलै। एखनो एहन-एहन गिरोह छै जाहि मे आठ टा दस टा कलाकार छै आ तीन घंटा के ओ सब नाटक क' लै छै।

दोसर बात छै–वाचिक अभिनय। ओ एकरो अपन एक तर्क बनौने छथिन। मुदा, कोनो जरूरी नही छै जे वाचिक अभिनय शुरू सँ अन्त धरि, एक रंग, रहबै करै। कतहु-कतहु रहतै, माइमो सँ काज होइ छै। जेना निरंजन गोस्वामी के एखन एकटा माइम-थियेटर छनि, कतेको देश मे जा क' ओ प्रदर्शन क' चुकलाहें, ओहि मे कत्तहु वाचिक अभिनय नहि छै आ पात्र की कह' जा रहल छै, से स्पष्ट भ' जाइ छै।

जँ लोकनाट्य-परम्परा मिथिला मे नहि रहै तँ कोन कारण छल जे 'धूर्तसमागम' लिखल गेल? ओ ओही परम्पराक अवशेष छियै। एखन देवशंकर नवीन कहलखिनहें जे डायलाग संस्कृत मे रहै छलै, संस्कृत के श्लोक अनपढ़ आदमी कोना बाजत! हम एकटा उदाहरण देब' चाहब। हमरे टीम मे पूनम ढकाल नाम के लड़की छै, जकरा कत्तहु सँ मैथिली नहि आबै छै। लेकिन, ओ मैथिली मे नाटक करै छै, लास्ट इयर ओकरा राष्ट्रीय पुरस्कार भेटल रहै-मैथिली मे। एही ठामक मिश्रीलाल, नेबति दास आदि लोक उदाहरण छथि जे पढ़ल-लिखल नहि होइतो धारा-प्रवाह संस्कृत बजै छथि।

हम स्पष्ट रूप सँ कह' चाहब जे रमानाथ बाबूक ई स्थापना सही नहि छलनि। मिथिला मे लोक नाट्यक परम्परा विद्यमान छलै आ वैह आगू चलि क' विकसित भेल। ओकर परीक्षण के आवश्यकता छै।

ईहो एकटा भ्रम पसारि देलखिनहें जे ई हमरा आँखिक देखल अछि। जखन लोकनाट्य के हम सर्वेक्षण करैत रही तँ डॉ० रामदेव झा कहलनि जे 'कार्तिक नाच' हमरा आँखिक देखल अछि, जयकान्तो बाबू कहलखिन-मुदा जखन हम परीक्षण केलहुँ तँ कत्तहु किछु नै। ओ मैथिली मे नहि होइ छै। पहिने होइ छलै। आब नहि होइ छै। एहि तरहक प्रवृत्ति घातक अछि। एहि सँ बिना बूझल, बिना समझल चीज सभक समावेश भ' जाइ छै। ओकर जावत तक परीक्षण नहि करबै तावत तक अहाँ कोनो निष्कर्ष पर कोना पहुँचि सकै छी?

आइ, आब तँ ई विवादक विषये नहि अछि। ई चीज निर्विवाद भ' गेलैए जे मिथिला मे नाट्य-परम्परा छलै, एहि ठाम सँ काठमाण्डू गेलै आ आन ठाम गेलै। ओत' जे गेलै तँ अंकीया नाट कहि क', एतए किर्त्तनियाँ नाटक कहि क' होइत रहलै, ओत' काठमाण्डू मे एकरा भाषा-नाटक कहल गेलै।

पंकज पराशर

वियोगी जीक आलेख मे बेर-बेर 'परंपरा' शब्द आएल अछि। एहि पर हम दू शब्द कह' चाहब। एहि ठाम देख' पड़त जे संस्कृत मे लोकायत के जे परंपरा छै-चार्वाक के-से देखबै जे सनातन धर्म ओकरा मिज्झर करैत-करैत पचा जाइ छै, जेना बौद्ध धर्मक संग भेलै। जेना ओ कहलनि जे मैथिलीक

विकसित हएब संस्कृत के विरोध मे छल। तहिना, म०म० पं० रामावतार शर्मा कहने रहथिन, परम्परा केँ ल'क' जे चूँकि साहित्य स्वभावे सँ प्रगतिशील होइए, मनुक्ख के पक्ष मे ठाढ़ होइए। तँ, मनुक्ख के पक्ष मे ठाढ़ होइबला जे प्रगतिशील परम्परा छै, तकर हम सब बात करी आ ओहि सँ इतर जे परम्परा अछि जे मनुक्ख केँ लोकतांत्रिक व्यवस्था देबाक विरोधी अछि, जे कि कोनो तरहक बराबरी केँ नहि बर्दाश्त कर' बला परम्परा अछि-तकरा कात करी।

तहिना, 'विचारधारा'क बात अछि। हमरा मोन पड़ैए जे स्वयं मार्क्स ई बात कहने छलाह जे 'थैंक गॉड, आइ.एम. नॉट मार्क्सिस्ट।' तँ मतलब जे विचारक जे एकटा कोनो धारा छै, ताहि मे हम बहल चलल जा रहल छी-तँ सेहो नहि हेबाक चाही।

हमरा सबकेँ देखबाक चाही जे एहि तरहक जे परम्परा अछि-प्रगतिशील परम्परा-वियोगी जी ताही दिस हमर सभक ध्यान आकृष्ट करै छलाहें। इलियट अपन लेख मे ई बात कहने छथि जे कोनो व्यक्ति अपन व्यक्तिगत प्रतिभाक बल पर कोना एक नवीन परम्पराक निर्माण क' लैत अछि, जे परम्परा कि पहिने नहि छल। हिन्दी मे एकर एकर सटीक उदाहरण मुक्तिबोध छथि। रमानाथ बाबूक सन्दर्भ मे देखी तँ बेर-बेर घुरि क' एहि बात पर आब' पड़ैए जे ओ कोन परम्परा छल, जकर प्रशस्ति मे, जकरा विकास लेल ओ अपन 'इनडिविजुअल टैलेंट' केँ समर्पित क' देलनि! दोसर बात, 'परम्परा'क बहुत गंहीर जुड़ाव 'मूल्य'क संग होइ छै। जेहन मूल्य तेहन परम्परा। वा, जेहन परम्परा, तेहन मूल्य। प्रश्न छै जे अहाँक लेल कोन तरहक मूल्य महत्त्व राखैए, कोन नहि राखैए!

झुटट्‌हे आलोचनासँ ई आशा कएल जाइ छै जे ओ निष्पक्ष होअय। हम जतबा एखन धरि देखने छी, ताहि आधार पर कहि सकै छी जे दुनियाँक कोनो आलोचना निष्पक्ष नहि अछि। अहाँ निष्पक्ष कोना भ' सकै छी? अहाँक कोनो परम्परा हएत, कोनो मूल्य हएत- तकरा पक्ष मे तँ अहाँ ठाढ़ हेबे करबै। ओकरा दृष्टिकोण सँ तँ अहाँ देखबे करबै। रमानाथ बाबू जाहि परम्परा सँ, जाहि मूल्य सँ जुड़ल छलाह, तकर पक्ष मे रहथि, तँ कोन आश्चर्य?

रमानाथ बाबू कैं जे अँग्रेजी साहित्यक ज्ञान छलनि, तकरो ध्यान मे राखल जाय। गालिब कहने छथिन जे काबा मेरे आगे क्लीसा मेरे पीछे।' रमानाथ बाबू कैं पढ़ैत ई काबा-कलीसाबला मामला हमरा बेर-बेर लागलए जे जखन ओ अंग्रेजी साहित्य मे जाइ छलाह तँ वेस्टर्न क्रिटिसिज्म के जे नव-नव शब्दावली रहनि, ओ सब हुनका आकर्षित करैत रहनि। ओहि शब्दावली कैं मैथिली मे अनूदित क'क' ओकरा अपन टूल्स बना क' ओ आलोचना संभव कर' चाहै छलाह। मुदा से संभव नहि भेल किएक तँ जखन-जखन ओ लिख' चाहै छलाह-कान्ससली तँ चाहै छलाह जे प्रगतिशील स्थापना कैं अपना आलोचना मे अभिव्यक्त करी लेकिन, हुनकर जे कंडीशनिंग रहनि से अनकॉन्ससली बेर-बेर हुनका पुरनका 'स्वर्णिम मिथिला' दिस घिचैत रहनि। 'परम्परा' कैं एही सन्दर्भ मे देखल जेबाक चाही। जॉक देरिदा कैं एहि ठाम हम मोन पाड़बनि। ओ कहने छथि जे कतबो शब्दावली अहाँ सीखि लियौ, कतबो कतहु-कतहु सँ बहुतो बात टिपि लियौ, संकट मे अपन मातृभाषे मोन पड़ै छै। ई 'मातृभाषा' की थिक? रमानाथ बाबूक स्थिति छलनि जे जखन-जखन ओ अपनाकैं संकट मे पड़ल अनुभव करै छलाह, तँ अपन प्राचीन संस्कारे हुनका मोन पड़ै छलनि, ओ बेर-बेर सीदित भ'क' ओही दिस घुरि जाइ छलाह। छुच्छे शब्दावली सँ की होब' बला अछि।

उमाकान्त

डॉ० देवशंकर नवीन जे 'कीर्त्तिलता'क प्रसंग लिखने छथि-से, हुनका ई बूझल रहबाक चाहै छलनि जे रमानाथ बाबूक रहिते डॉ० कान्चीनाथ झा 'किरण' हुनक मतक खण्डन क' चुकल छलाह, आ ई स्वीकार क' लेल गेल छल जे 'कीर्त्तिलता' विद्यापतिक रचना छियनि। एकर समर्थन म०म० उमेश मिश्र सेहो केने छथि। ताहि संग-संग सुमनजी सेहो लिखने छथि। हिन्दी मे डा० अग्रवाल से लिखने छथि। साहित्यक दुनिया मे जे बात आब पूर्णतः मान्य भ' गेल अछि, तकरा फेर सँ विवाद मे नहि अनबाक चाही।

जहाँधरि रमानाथ बाबूक महत्त्वक बात अछि, जाहि परिस्थिति आ परिवेश मे ओ मैथिली आलोचना कैं एक स्वरूप देलनि, आब कतबो विकास भ' जाउ मुदा एकर मूल मे रमानाथे बाबू छथि।

तारानन्द वियोगी अपन आलेख मे गीतक प्रसंग विचार व्यक्त केलनि अछि। हुनका हम कहि देब' चाहै छियनि जे विद्यापति-गीतक प्रसंग रमानाथ बाबू जे किछु लिखने छथि, तकरा हमहूँ सर्वथा समर्थन नहि करैत छी। 'घोर विरोधी' नहि छी, लेकिन विरोधी छी। एहि बिन्दु पर जे विद्यापति-गीत ब्राह्मणेतर जाति वा कोनो निम्न जाति भने गबैत हो, लेकिन बटगमनी, उचिती, मिनती, सब जाति गबैत छल, ब्राह्मणोक ललना लोकनि गबैत छलीह, तेँ ओ ब्राह्मणोक परिवार मे सुरक्षित छल, जेना अन्य जातिक परिवार मे सुरक्षित छल।

वीरेन्द्र झा

परम्परा खाद थिक, खाद्य नहि। रमानाथ बाबू पर कहल गेल जे ओ आभिजात्य संस्कारक छलाह हमहूँ एहि बात सँ सहमत छी। मुदा हम कह' चाहब जे ई हुनक दोख नहि छलनि। ओ जाहि समाज सँ आएल छलाह, तकर संस्कार रहब स्वाभाविक। अपने कैं बूझल हएत जे काञ्चीनाथ झा 'किरण'क पिता जाहि जाति सँ अबैत छलाह, अपन विवाहक कारण जाति सँ बहिष्कृत क' देल गेल छलाह। एही समाज सँ रमानाथ बाबू सेहो आएल छलाह। ओ हुनका संस्कार मे छलनि, तकरा ताही परिप्रेक्ष्य मे देखबाक चाही। कहियो 'हरिजन' शब्द नीक अर्थ मे व्यवहृत भेल छल, आइ गारि बनि गेल अछि।

हेतुकर झा

संचालक अशोकजीक आग्रह छनि जे हम परम्पराक सम्बन्ध मे किछु बात अपनेक समक्ष राखी। एहि शब्दक इस्तेमाल ततेक व्यापक भेलैए, एहि प्रसंग कतेक की बात अपनेक समक्ष राखी, जे एखन उपस्थित विषयक अनुकूल हो। से बड़ा कठिन लगैए।

स्वतंत्रताक बाद जखन एहि विषय पर विचार होअए लागल जे भारतीय समाज कैं केना बदली, एकर विकास केना होअए, तँ ओहि समयक एक बहुत पैघ चिन्तक छलाह -डी०पी० मुखर्जी, डी०पी०-डी०पी० लोक कहै छलनि। ओ कहलखिन जे एक्केटा मूलमंत्र अछि जे परंपराक अध्ययन करू। परम्परा कैं बदलबोक वास्ते परम्परेक अध्ययन कर' पड़त। बिना परम्पराक अध्ययन केने नहि भ' सकत।

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर बहुत चिन्तक भेलाह, जिनकर मान्यता रहलनि जे जाहि-जाहि देश मे ग्रामीण समाज बहुत विशाल छै, ओहि ठाम परम्परा स्थिर रहलैए। 1970 के दशक मे, फ्रांस के मानवशास्त्री ई बात फड़िछा देलनि जे ग्रामीण समाज तते जाग्रत समाज रहलै जे हरेक परम्परा केँ ओ प्रवर्तित करैत रहलै।

हजारी प्रसाद द्विवेदी जी के चर्चा आएल। हजारी प्र० द्विवेदी केँ शान्तिनिकेतन मे रहबाक सौभाग्य भेटल छलनि। गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर सँ बहुत निकटस्थ छलाह। एक बेर एकटा विधवा कन्याक विवाहक प्रसंग उठलै। गुरुदेव हुनका कहलखिन जे शास्त्र की कहैए? ओ कहलखिन जे नहि, शास्त्र एकर अनुमति नहि दैए। तँ, गुरुदेव हुनका कहलखिन जे शास्त्र मे जाहि परम्परा केँ अहाँ मानि रहल छी, ओ परम्परा अनुमति नहि दैए। अहाँ दोसर परम्परा मे सेहो ताकू। दोसर दिन जखन ओ ताकि क' गेलाह तँ कहलखिन जे हँ, दोसर परम्परा अछि! तँ कहलखिन जे की दोसर परम्पराक आचार्य हमरा लेल कम पूजनीय छथि?

प्रश्न अछि जे एखन के सन्दर्भ मे हमर कोन परम्परा अछि जे हमरा वास्ते श्रेयस्कर अछि? हरेक परम्पराक आचार्य पूजनीय छथि। जाहि समय मे जाहि आचार्यक अनुकरण कयल गेल, ओहि समय मे ओ उचित मानल गेल। आइ जाहि बातक आवश्यकता अछि, ताहि मे जाहि आचार्यक परम्परा हमरा सपोर्ट क' रहल अछि, हम ओही परम्परा केँ मानब।

प्रश्न अछि जे मनुष्य के जे समाज छै, बिना परम्परा के कोनो समाज जीवित नहि रहि सकै छै। पूरा संस्कृति परम्परा पर आधारित छै। अहाँ जे बजै छी, ओहि भाषा मे कोनो शब्दक जे अर्थ छै, शब्द आ अर्थक बीच जे सम्बन्ध छै, से सम्बन्ध परम्परे सँ सिद्ध होइ छै। आ ओकरे चलते अहाँ अपन भाषाक उपयोग क' सकै छी। मैथिलीक सेहो अपन परम्परा छै। बहुत विशाल परम्परा छै। ओहि परम्परा भीतर मे फेर अनन्त परम्परा छै।

लोकायतक बात कहल गेल। विद्वान लोकनिक मत छनि जे लोकायत, वैदिक सभ्यता सँ पूर्वक परम्परा थिक। आ ओ लोकायत चलैत रहल। तेसर

शताब्दी ई० पू० मे जखन महिलालोकनि केँ आ उच्च जाति सँ अतिरिक्त वर्ग केँ वैदिक परम्परा सँ अलग क' देल गेलनि तँ हुनका लोकनिक समक्ष लोकायत परम्परा रहलनि। तेँ, ई जे बात उठाओल गेल जे मिथिला मे स्त्रीगणक बीच मे विद्यापति-गीत रहल। ठीक बात छै। मुदा, तकर क्रेडिट ब्राह्मण लोकनि केँ नहि छनि। किएक तँ ब्राह्मणो लोकनिक स्त्रीगणक परम्परा लोकायत परम्परा रहलनि, तांत्रिक परम्परा रहलनि। तांत्रिक परम्परा लोकायत परम्परा के पार्ट रहलैए। महिला लोकनि लोकायत परम्परा सँ प्रभावित रहलीह-ए। तेँ अरिपनक ज्ञान खाली मैथिल ललना केँ रहलनि, मैथिल युवक लोकनि केँ, पुरुष-वर्ग केँ नहि रहलनि। आब जखन मिथिला पेन्टिंग बाजार मे चलि गेलैए, तेँ पुरुष-वर्ग सब सेहो ओहि मे जाय लगलाह अछि। लेकिन कोनो पुरुषवर्ग केँ गोसाउनिक गीत के, पूजा के कोनो ज्ञान नहि छलनिहेँ। अरिपनक कोनो ज्ञान नहि छलनिहेँ। ई सब लोकायत परम्पराक प्रभाव छियै। तेँ, मैथिल ललनाक बीच विद्यापति-गीत प्रचलित रहलै तँ ताहि मे मैथिल ब्राह्मणक कोनो योगदान नहि छनि।

सब परम्परा हमरा सभक बीच चलल, रहैत आयल अछि। ओहि परम्पराक भीतर-भीतर परम्परा रहलैए।

रमानाथ बाबूक प्रसंग जे बात भ' रहल अछि— ओ जाहि परम्परा सँ प्रभावित छलाह, जे परम्परा केँ ओ तोड़' चाहै छलाह, जाहि परम्परा केँ ओ आगू बढ़ब' चाहै छलाह, एहि प्रसंग बहुत रास बात भेल अछि। मिला-जुला क' से बात सब बहुत उचित, बहुत सम्यक्, बहुत उदारवादी दृष्टि सँ भेल अछि। तेँ, हम बहुत प्रसन्न छी। धन्यवाद।

■

अध्यक्षक भाषण
(लिखित)

जयधारी सिंह

सबसँ पहिने हम मित्रवर श्री मोहन भारद्वाजजीक प्रति आभार प्रकट करैत छी जे फोन पर गप कए हमरा एतए एहि राष्ट्रीय संगोष्ठी मे उपस्थित होएबाक हेतु समुत्साहित कएलन्हि। श्री अशोकजी प्रतिमानक सचिवक रूप मे सर्वथा धन्यवादक पात्र छथि। विशेषतः एहि तृतीय सत्रक अध्यक्षताक भार दए हमरा अतिशय कृतार्थ कएल गेल।

आजुक विषय अछि ''स्व० रमानाथ झा आ मैथिली आलोचना''। गुरुदेव सङ्ग हमरा हुनक जीवनान्तहि मे सङ्ग भेल–1965 ई. सँ 1971 ई. मे, जाहि अवधि मे हम हुनक निर्देशन मे सिद्धसाहित्य पर शोधकार्यक क्रममे दड़िभङ्गाक आदि आवास पर जाए, आलेखक प्रत्येक अंश केँ देखाए-सुनाए दिअन्हि। हुनक सान्निध्यसँ विश्वविद्यालयीय लाभ जे भेटि सकल से औपचारिक-प्रशासकीय नियमाधीन छल, जे थीसिस लिखब सँ प्रारंभ कए, प्रकाशन, म.म. गोपीनाथ कविराजक सान्निध्य, दिल्लीक पुस्तक केन्द्र सँ सम्पर्क आदि जे काज भए सकल, से सभ आँखि मूनि हुनक आदेश-पालन सँ।

खेदक विषय ई भेल जे उक्त 5 वर्षक अवधि मे हुनक शरीर जर्जर होइत गेलन्हि। ताहू सँ अधिक ई जे ओ जीवन सँ उदास होइत गेलाह–सभ दिन पुस्तकालयक सेवनसँ ओ पढ़बाक तथा लिखबाक अभ्यासक प्रसादात् मैथिली साहित्यक श्रीवृद्धि करैत रहलाह, पश्चात् आबि हमर बूरक परिश्रमी शिष्यवर्गसँ काज कराए अनेक ग्रन्थक रचना करबए लगलाह। एहि क्रममे ओ हमरा सन असम्पर्कितहु लेखक सभक कृतिसभ दिशि साकांक्ष रहए लगलाह। संभव थिक, पाठ्य ग्रन्थ ''काव्यमीमांसा'' पर हुनक ध्यान गेल होन्हि। अस्तु, ताहि

पुस्तक केँ ओ संस्कृतहिक पोथी बूझि हमरा संस्कृतहिक सेवक बूझथि–अंगरेजीक तँ प्रश्ने नहि छल, गणितज्ञ बुझैत छलाह। सङ्ग–सङ्ग अध्यवसायी बुझैत छलाह। जेना कहल, स्वयं किछु लिखबाक सामर्थ्य घटैत जाइत छलन्हि, किन्तु मैथिली साहित्यक सर्वाङ्गीण विकास देखबाक स्पृहा अनवरत बनैत रहलन्हि– नव-नव कविता, कथा आदिक संकलन करैत रहलाह, भवप्रीतानन्द जी आदि महान वा महती रचयिता रचयित्रीक सङ्ग बढ़ैत गेलन्हि–सभ मिलाए प्रगतिकामी लेखकक सम्पर्क बढ़ैत गेलन्हि, साहित्यिक विकासक हेतु व्यग्र होअए लगलाह।

संभवतः ताहि प्रकारक परिस्थिति मे हुनका आलोचना-साहित्यक दरिद्रता दिशि ध्यान जाए लगलन्हि–मैथिली भाषा स्वतन्त्र अछि, मैथिलीक साहित्य स्वतन्त्र अछि, सङ्ग-सङ्ग मनोरम अछि–कारयित्री प्रतिभाक कमती नहिं अछि, किन्तु, ताहि अनुपात मे आलोचना-साहित्यक गति पछुआएल अछि। हमर 'काव्यमीमांसा' बृहद् ग्रन्थ होइतहुँ मैथिली आलोचना नहि मानल जाएत–अङरेजी मे सहस्र संख्यक आलोचना-ग्रन्थ अछि, हिन्दी मे प्रतिवर्ष महान् समालोचना-ग्रन्थ सभ प्रकाशित होइत अछि, किन्तु ताहि अनुपात मे मैथिली-समालोचना-ग्रन्थक अभाव अछि। संभवतः हमर गुरुदेव केँ मैथिली-क्षेत्र मे भावकक कमती दिशि ध्यान जाइत छलन्हि, भावयित्री प्रतिभाक अभाव सँ खिन्न रहैत छलाह–मैथिलीक स्वतन्त्र समालोचनो साहित्य हो, आलोच्य साहित्यक (कविता-कथादिक) भण्डार सँ मैथिली केँ विकासोन्मुख नहि मानल जाएत–जेना अङरेजी मे 'Critical' तथा 'Creative'क अद्भुत युग सभ (epochs) अबैत गेल, तेना हमर मैथिलीमे किएक नहि? आलोचना-कलासृष्टि सहगामी कर्म किएक नहि? एहि प्रकारक चिन्तनक वा चिन्ताक अभिव्यक्ति भेटल हमरा आचार्यक एहि वाक्य मे –''हम संसार सँ जाए रहल छी, रोग-जर्जर छी, मैथिली समालोचना-ग्रन्थ अहीं सँ लिखबबितहुँ'' एवमादि। अन्तिम अवस्थाक आशा-आकांक्षा-सूचक वाक्य सभ मन पड़ैत अछि। स्व० रमानाथ बाबू वयस-अनुभव सँ वृद्ध रहितहुँ मैथिलीक सर्वथा प्रगतिकामी छलाह। साहित्यक दूनू पक्ष बलवान् हो, आलोच्यकृतिक पक्ष तथा आलोचना-कृतिक पक्ष। अन्यथा, अर्द्धाङ्ग रोग थिक।

\+ \+ \+ \+

अस्तु। एमहर दू चारि वर्ष सँ बूझि पड़ैत अछि जे हठात् हुनक वचन सभ माथ पर सवार भए गेल अछि– आइ 35 वर्षक पश्चात्–हुनक आप्त व्यक्ति सभकेँ अनवरत हुनक कृति सभकेँ 'रचनावली'क रूपमे, एक ग्रन्थक रूपमे देखबाक प्रवृत्ति गत 35 वर्ष मे जे नहि छल, से आबि गेल अछि–ई वर्ष तँ सहजहिँ जन्मशताब्दी वर्ष छन्हि–सरिसबमे, मधुबनीमे, दड़िभंगामे तथा पटनामे मनाओल जाइत अछि–अनेक युवक सभ अपन प्रतिभा-अध्ययन केँ आलेख द्वारा प्रकटित करैत प्रातः स्मरणीय महान् आत्मा केँ पुनरवतरित देखबाक हेतु व्यग्र प्रतीत होइत छथि। एहन सन लगैत अछि जे गुरुदेव सपनामे पुनः पुनः एकेटा गप्प कहैत छथि–''मैथिलीक स्वतन्त्र समालोचना शास्त्र लिखू''।

एहि स्थितिमे हमरा प्रतिमान-पटनासँ अनेक पत्र द्वारा गुरुदेवक कृतित्व पर लिखबाक अनुरोध भेल। 'झुझुरकोना' खेलएबाक सामर्थ्य देहमे नहि रहल। तखन तँ अपनहिटाक भरोस, स्वकृत कार्यक भरोस, रामकृष्ण महाविद्यालयक अध्यापक रूपमे वा मैथिलीक अध्यक्ष रूप मे स्व० गुरुदेवक निबन्ध-प्रबन्धक तीन ग्रन्थ मङओने रहिऐक, ''प्रबन्ध संग्रह'', ''निबन्ध माला'' तथा ''विविध प्रबन्ध''। एहि तीनू मे अन्तिम पोथीक प्रकाशन करओलथिन्ह हुनक आत्मजे, तेसर बालक डा. नरनाथ झा – 1970 ई०क प्रकाशन अछि, 1971 ई० मे स्वर्गवासी भेलाह, तेँ बूझि पड़ैत अछि, अन्तिम इच्छा जानि, मुँहसँ सूनि स्वयं अङरेजीक प्राध्यापक नरनाथजी उद्यत भए पिताकेँ पुस्तकाकार देखाए देलथिन्ह। तेँ उक्त तीनू मे ''विविध प्रबन्ध'' हुनक अन्तिम इच्छा केँ प्रकट करैत अछि विशेषतः ओकर तीन प्रबन्ध ''समालोचना'', ''आलोचना-साहित्य'' तथा 'समीक्षा-वृत्ति''।

उक्त तीनू निबन्ध (प्रबन्ध) मे चमत्कार अछि राजशेखर-युगक भारतीय साहित्यक व्यापक अध्ययन पर आधारित दू शब्द ''कारयित्री प्रतिभा'' तथा ''भावयित्री प्रतिभा''। कारयित्री प्रतिभा रहैत छन्हि विभिन्न भाषाक कविवृन्द मे आओर भावयित्री प्रतिभा रहैत छन्हि पाँतीक शब्दार्थक भावक मे। किन्तु, ध्वनिवादी युग छल, रसध्वनि उत्तम काव्यक आत्मतत्त्व मानल गेल आओर एहिँ रसक अभिव्यक्ति सँ जे मूल कविए जकाँ भावविभोर भए जाइत छथि, हृदय नाचए लगैत छन्हि, सएह भेलाह 'भावक', काव्यक श्रोता वा दर्शक।

हिन्दी अनुवादक गण ओहि भावक केँ उत्तम समालोचक कहने छथि। आचार्य रमानाथ बाबू ई मानैत छथि। किन्तु, समालोचना-दृष्टि मे परिवर्त्तन आएल गेल आओर विदेशमे समालोचनाक दू मानदण्ड क्रमशः आएल गेल–आभिजात्यवादी तथा स्वच्छन्दतावादी।

एहि दूनू वर्गक आलोचक प्रतिनिधि मे वाद-विवाद ततेक बढ़ए लागल जे समस्त विश्व मे आलोचना-दृष्टि-भेद आबि गेल आ प्रत्येक आलोचक केँ सार्वजनिक स्थल मे एहि प्रकारक वाद-प्रतिवादमे मन लागए लगलन्हि, एकक मतेँ पोप कवि नीक तँ दोसराक मतेँ कीट्स नीक- एक 'नव-शास्त्री नीक' तँ दोसर 'सौन्दर्यवादी' नीक एवमादि कहए लगलाह संभव थिक, इलियट महोदय अनेक अङरेजीक आलोचक केँ लन्दनक वाटिकामे एहिरूपक वाद-प्रतिवाद मे व्यर्थ डूबल देखि कहने छथि–

"We perceive that criticism far from being a simple and orderly field of beneficient activity, from which impostors can be readily ejected, is no better than a Sunday Park of contending and contentious orators, who have not even arrived at the articulation their differences"–Three Essays of T.S. Eliot pp. [29].

टी.एस् इलियटक अनुभव तथा रचनाक परिशुद्ध परिचय रहन्हि तथा भारतीय भावक (critic)क आदर्शमे तत्त्वाभिनिवेशी भावकक चयन कएल। किन्तु, गुरुदेवकेँ मैथिलीक छिद्रान्वेशी दोषाविष्करण-कर्मलीन आलोचक लोकनि अवहेलित-उपेक्षित सन कए देलथिन्ह, दोसर नव-नव कविवृन्द मत्सर आलोचक सँ हिय-हरु भए जाइत छलाह, कविगोष्ठीक परम्परा मे नीक कविक कृति-विश्लेषण कम होइत गेल, तेँ यत्र-तत्र उदासी भेटैत अछि। एहि उदासीक क्षणमे हुनका अमेरिकाक 'न्यू क्रिटिसिज्म' पर अवश्य ध्यान गेलन्हि। किन्तु, नव-नव पद्धति पर जखन ध्यान गेलन्हि, तखन स्वयं लेख लिखबाक सामर्थ्य नहि रहलन्हि। ई काज ओ अवश्य कएल जे हमरा सन शिष्य केँ पाश्चात्य दृष्टि-परिवर्त्तनक संकेत देल–

''आब विलायतहु मे समालोचनाक रूप बदलि गेल अछि'', अपि च ''समालोचना आब ओतहु एक 'शास्त्र' भए गेल अछि, एक 'साइन्स' बुझल जाए लागल अछि तथा ओकर एक गोट अपन शैली भेल जाए रहल छैक।''

''विविध प्रबन्ध''–पृ. छह

एहि सन्दर्भ सँ ई स्पष्ट अछि जे इलियट महोदयक मत सँ भिन्न अमेरिकाक 'न्यू क्रिटिसिज्म'क विकासक प्रसङ्ग हुनका बुझल छलन्हि। किन्तु, हमर ई धारणा अछि जे रिचर्ड्स महोदयक ''प्रिंसिपुल्स'' हुनका पढ़ल नहि। ओ महोदय मनोविज्ञानक विशेषज्ञ भए कविक मानसिकता दिशि मूड़ि गेल छलाह, ततबे नहि 'सेण्ट्रल नर्वस सिस्टम'क व्याख्या द्वारा काव्यार्थ ग्रहण-प्रक्रियाक विशदन मे अतिशय घुरिआएल छलाह। किन्तु, विदेश मे पुनः एफ.आर. लीविस सन निष्पक्षो तँ आलोचक भेटैत छथि।

अन्त मे हम पुनः ई कहब जे हमरालोकनि सँ गुरुदेव केँ आशा छलन्हि जे नव-पुरान कवि लोकनिक रचनाक तात्त्विक अध्ययन कए भाव भाषाशैली तथा सम्प्रेषण सामर्थ्य दिशि ध्यान दए तेहन समालोचना-ग्रन्थ निर्मित हो जाहिमे मैथिली काव्यधाराक अन्तस्तत्त्व, कथासाहित्यक वस्तुवाद आदिक विवेचन कए नव-नव मूल्यक नव नव कसौटी बनए, नव नव सम्प्रेषणक साधनक सुधि लैत गतिशील कवि-ऊर्जाक सङ्ग ताहि गति सँ समालोचना आगाँ बढ़ए-तेहन ग्रन्थ (सिद्धान्त ग्रन्थ) लिखब श्रम-सापेक्ष अछि। प्रायोगिक आलोचना एखन धरि व्याख्याता लोकनि करैत आएल छथि-फुटकर सिद्धान्त-सूचको रचना कम नहि भेल अछि, किन्तु गुरुदेव स्वतन्त्र मैथिली भाषाक, स्वतन्त्र मैथिली साहित्य-संस्कृतिक आधार पर स्वतंत्र समालोचना शास्त्र वा व्यवस्थित समालोचना-विज्ञान देखए चाहैत छलाह, जाहिमे कलाकृतिक सूक्ष्मतम विश्लेषणक माध्यम सँ ओह कृतिक ''सत्यं शिवं सुन्दरं''क अनुगमन-शक्ति भरल रहत- जेना परमात्मा तटस्थ साक्षी भाव सँ निर्णय दैत छथि, तहिना स्वस्थ समालोचक देथु-गुरुदेव हमरा लोकनि केँ सएह प्रेरणा दए चलगेलाह-सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, सर्वेसन्तु निरामयाः-सभ मैथिली सेवी एहिना सेवारत रहैत पुण्यात्मा सभक स्मरण करथु।

(मौखिक)

रमानाथ बाबूक संग एक बेर हमरा कलकत्ता जेबाक भेल। हमरा होइत छल जे ओ बड़ नीरस व्यक्ति छथि। ओ कहलनि-'औ जयधारी बाबू,

भवप्रीतानन्द जीक संगीत सुनै लेल चलू।' ओहि मे विभोर ओ भ' गेलाह आ हुनकर एकटा स्वतंत्र विधा छनि, साहित्यिक भक्तिगीतक विधा, जाहि मे कतेको वस्तु ओ लिखलनि आ कै ठाम छपलनि। आजुक विषय ई नहि अछि। हम पूर्ण साकांक्ष छी। जतेक गतिविधि हुनका प्रसंगे भेल, हुनक पक्ष-विपक्ष मे सब बजलाह। हम बहुत सावधान छी, गोलैसी सँ, एत' एबा सँ तीन दिन पहिने, एक व्यक्ति हमरा 'खुला पत्र' लिखलनि जे ई आयोजन जे सब क' रहल छथि, एहि मे, रमानाथ बाबू केँ मधुपजीक संग नहि राखल जाय। दुनू पर फराक-फराक आयोजन होइक। एत्ते मोटक हमरा ओ 'खुला पत्र' पहुँचल। मुदा, से पत्र हमरा नीक नहि लागल। किनकहु जँ आयोजक सँ मतान्तर छलनि तँ आपस मे गप्प क' लेबाक चाहै छलनि, ओहो तँ पटने मे रहैत छथि।

अस्तु। गोविन्द बाबू कहै छथि जे रमानाथ बाबूक कृतित्व केँ एकट्ठा करबा लेल हमरा सब केँ झिझिरकोना कर' पड़ैए। तंत्रनाथ बाबू के बेटा-बेटी मिलि क' समस्त कृतित्व केँ एकठाम संग्रह छपा देलकनि-तंत्रनाथ ग्रन्थावली। आ, रमानाथ बाबूक सबटा कृतिक रचनावली छपि जाय, से आइ धरि नहि भ' सकल। एते गोटा छी, सब हुनकर उत्तराधिकारिये छियनि। मुदा एहि ठाम हमरा भावुकताबला गप्प भ' जाइए। हुनकर जेठ बालक जे रहथिन मणि बाबू, हुनकर जन्म 14 सितंबर 1928 केँ भेल रहनि आ ओही दिन हमरो जन्म। मणिनाथ झाक समवयस्क हम।

ई दुर्बोध विषय छै जे कोनो व्यक्ति बुझै कोना छै जे हम आब मरब। ओ जखन बुझ' लगलखिन, हमरा हुनकर किछु अन्तरंग अध्ययन भेल। हम देखलहुँ जे ओ जीवन सँ निराश भ' गेल छलाह। हमरा एकान्त मे, दू-तीन सन्दर्भ मे ओ कहलनि जे 'औ जयधारी बाबू, हम तँ नहि रहब। मुदा आगाँ के करतै?' तात्पर्य जे हमर गेलाक बाद मैथिलीक काज के करतै? दू टा काज ओ हमरा कहलनि जे अहीं बुते हयत। एकटा, अहाँ तंत्रक ज्ञाता छी, महाविद्या सभक परिचित छी। तँ अहाँ सौंसे मिथिलांचलक लोक सभक, गोसाउनि जिनका-जिनका छथिन, से गोसाउनि के विवरण अहाँ एकट्ठा करू, सौंसे मिथिलांचलक। सौंसे मिथिलांचलक जँ करै छी तँ सबकेँ बुझले हएत जे तथाकथित सोतिक घरमे ज्वालामुखी छथिन। ब्राह्मणक घरमे अनेक देवता छथिन।

कतेको देवता सब छथिन। से ओ कहलनि जे 'महाविद्या-महाविद्या' जे करै छी, से ताहि काली-तारा आदि 10 महाविद्या मे कतय कुल-देवता छथिन?

दोसर बात ओ कहलनि जे अहाँ जे 'काव्य-मीमांसा' लिखलहुँ, से तँ साहित्यदर्पण आदिक अनुवाद अछि। संस्कृत काव्यशास्त्रक अनुसार अछि, से हुनक अर्थ रहनि। हम कहलियनि जे आनर्स आ एम.ए. मे एतबे साठि नंबरक छै, तकरा उपर्युक्त ओ पुस्तक लिखलहुँ अछि। ओ कहलनि जे 'ई तँ भेल। मुदा, 'मैथिली काव्यशास्त्र' अहाँ नहि लिखलहुँ।' बार रे बाप, हमरा तँ डरें घाम चल' लागल।

एक बेर हम हुनका पुछलियनि जे एककलमा अंग्रेजी अहाँ कँ कोना होइए? एककलमा, मने कतहु करेक्सन नहि। लगातार ओकरा लिखैत जाइ छी आ ओकरा रिवाइज करबाक काज नहि पड़ैए, तेना लिखथिन। हम पुछलियनि जे एना कोना लिखै छियै? तँ ओ हमरा कहलनि जे 'आब उपाय?' माने जे सब दिन अहाँक विषय मैथमेटिक्स रहल तँ आब एना अँग्रेजी लिखल कोना हयत? यैह हुनकर बजबाक शैली रहनि। पुछबनि-'अपने हाथ सँ लिखलियैए?' तँ कहताह-'पयर सँ नहि लिखलियैए।'

हुनकर दिनचर्या बहुत व्यवस्थित रहनि। सात बजे समय बान्हल रहनि। प्रधानतया ओ लाइब्रेरी कँ आमरण महत्त्व देलखिन। ओहि ठाम एगारह बजे धरि ओ पढ़थि। चेन्ह लगा देथिन। पुर्जी द' देथिन। आ ओ पोथी सब आनि लेथि। आ, सात बजे सँ ओ लिख' लागथि। छव टा कलम रहनि हुनका-कोनो हरियर रंग के, लाल रंग के, कारी रंग के। एहि विषय सब कँ जें हम कह' लागब तँ बहुत हयत। हम भाग्यवान तँ अवश्य भेलहुँ जे हुनकर सान्निध्य भेल। मुदा, जीवनान्त मे हमरा सान्निध्य भेल। ताधरि हुनका थ्रॉम्बासिस एटैक भ' गेल छलनि। बहुत दुखित छलाह। आ ओ बुझितो छलखिन जे हम आब नहि रहब। तीन-चारि टा अवसर पर लोक कँ कहलखिन जे हम आब नहि रहब। तखन, अगुता क' मरबा सँ एक बर्ख पहिने, 1970 ई० मे, ओ पारिवारिक स्थिति के कोलाहल मे छलाह जे बेटा हमर के छथि जे हमरा रखताह-तँ ओहि मे बेचारे नरनाथजी ओकर भार लेलखिन। से 1970 मे हुनकर किताब छपलनि-'विविध प्रबन्ध'। ओहि समय मे ओ बेर-बेर कहथि जे हम तँ आब जा रहलहुँए, आगाँ

के करतै? हुनक कहब रहनि जे अहाँ करियौ। से, हमहूँ तँ नहिञे केलियै। खेदपूर्वक अहाँ सभक समक्ष हम कहै छी जे हमरा सँ जे हुनका आशा-आकांक्षा रहनि, से हमहूँ नहि क' सकलहुँ। हुनका जे जीवनान्त मे निराशा भ' गेल रहनि से हमरो आब भ' गेल अछि जे हमहूँ आब नहि रहब।

एकटा आर विषय हम कहब। हम जखन प्रोफेसर आ डाक्टर भैयो गेलहुँ, तखनहु जतय-जतय ओ हमर चर्चा करथि तँ लिखथि-बाबू जयधारी सिंह, ओ ओहि परम्परा के छलाह। ओ डेनबी साहबक जबाना छल। डेनबी साहेब बाबू साहेब लोकनि कँ 'बाबूज़' कहथिन। हुनका समय मे हेड ऑफिस मे, प्रतिष्ठित पद-लाइब्रेरियन- पर रमानाथ बाबू छलाह। ओ हमरा बाबू साहेब बूझथि आ सैह कहथि। एहि दुआरे हमरा बड़ डांड भेल। की? ओ जे पौत्रक उपनयन केलनि, ओहि मे हमरा नहि किछु खाइ लेल देलनि जे बाबू साहेब कँ कोना खाइ लेल देबनि! माँस भेल रहै ओहि मे, चिड़ै के मांस, नकटा चिड़ै के-हमर बहुतो मैथिली बन्धु सभ ओहि मे रहथि, कृतकृत्य छथि, लिखियो देलखिन जे ओ बड़ आवेशी लोक रहथि। मुदा हमरा तँ प्रत्यक्ष डाँड़ भेल। हमर एक मित्र रहथि, मधुबनीक प्रोफेसर साहेब, ओ कहथि जे 'रमानाथ बाबू हमरा बड़ मानै छथि। भोरे कहथि जे औ फल्लाँ बाबू, चाह पीब।' आ हम तँ एहन अभागल जे हमरा कोना ओ से कहताह? तँ, ताहि परम्पराक लोक ओ रहथिन।

आलोचकक रूप मे रमानाथ बाबू अग्रगण्य छथि। ओ जे किछु लिखलनि चाहे टिप्पणी रूप मे, चाहे वृहत रूप मे, चाहे प्राध्यापकीय रूप मे, हमरा जनैत रिचर्ड्स के प्रैक्टिकल क्रिटिसिज्म केलनि ओ। ओ कहै छथिन जे कृति-विशेष पर केन्द्रित भ'क' आलोचना करबाक चाही। हमरालोकनि जतेक जे आगूक लोक सब छी-सब गोटे वैह, प्रैक्टिकल क्रिटिसिज्म करैत रहलहुँ अछि। मुदा, हमरा बूझि पड़ैत अछि जे उनटे भ' गेल। आ ओहि 'उनटे' मे हमहूँ संग देलहुँ। जीवनान्त मे कतहु बाजि ली, तें बजै छी जे छीप पर सँ शुरू भेलहुँ-बी.ए. -एम.ए. के पढ़ाई-आ जड़िये-प्राथमिक शिक्षा छुटि गेल। भाते छुटि गेल। भोज तँ हम बड़ केलहुँ, मुदा भात नहि परसलियै, से मतलब। अपना मिलाक' सब कँ कहै छी, क्षमा करब। प्रैक्टिकल क्रिटिसिज्मे सबटा भेल-विद्यापति पर,

गोविन्द दास पर–ई सब सबटा केलनि ओ। सिद्धान्त नहि ठाढ़ क' सकलाह। हमहूँ सब नहि क' सकलहुँ।

रमानाथ बाबू खाली इतिहासक काज केलनि। इतिहास मे ओ आजीवन रहलाह। 40 बर्ख पहिने, जखन ओ मुजफ्फरपुर मे विद्यार्थी रहथि, तहिये जे ओ इतिहासक ग्रन्थ लिखलनि–से पाण्डुलिपि की भ' गेलनि? श्रीशजी जखन अपन पुस्तक लिख' लगलाह तँ ओ नहि भेटलनि। हुनकर पाण्डुलिपि चोरा लेलखिन कोनो सज्जन। सेहो नाम हुनकर कोना हम कहू–आमि जानी तो आमि बोलबो ना। आ से पक्का चोर छला। पक्का चोर कोनो हालत मे नहि ने गछत! जखन ओ हुनकर लोप भ' गेलनि तँ अपन स्मरण सँ ओ ओकर योजना ठेकान केलनि। स्मरण सँ, ओहि 40 बर्ख पूर्वक लिखल तकर जे योजना ओ तैयार केलखिन, ताही मे ओ देने छलखिन जे ई त्रैभासिक नाटक आदि–आदि की छलै।

मैथिली नाटकक प्रसंग हमर ई बात मर्लेगियाजी कने सुनताह! एकटा पाँती ओ देने छथिन अन्त मे, मर' सँ किछु मास पहिने, जे हमरा ई अशुद्ध धारणा छल। हम वीर लाइब्रेरी नेपाल जे गेलहुँ तखन हमरा बोध भेल जे ओहि ठाम विराट मैथिली नाट्य साहित्य अछि।' ओहि नाटक सभक उपयोग ओ क' नहि सकलखिन।

■

आलेख

रमानाथ झा आ मैथिली भाषा

रामलोचन ठाकुर

अपन विभूतिक जयन्ती वा स्मृति दिवस मनाएब कोनो जातिक जीवंतता जागरूकताक परिचायक थिक। स्पष्ट अछि जे ई जयन्ती वा स्मृति–दिवस मना हमरालोकनि ओहि विभूतिक कोनो उपकार नहि करैत छी। उपकार करैत छी अपन। हुनका संग स्वयं कें जोड़ि गौरवान्वित होइत छी, हुनकर स्मृति–चारण द्वारा अपन कृतज्ञता बोधक परिचय दैत छी, हुनक कृतित्वक पुरावलोकन करैत प्रेरित प्रोत्साहित होइत छी आ आगामी प्रजन्म कें सेहो प्रेरित प्रोत्साहित करैत छी, ओकर ज्ञानवर्द्धन करैत छी। कहबाक प्रयोजन नहि जे इतिहास बोध वर्त्तमान कें चिन्हबा–जनबाक संगहि भविष्यक परिकल्पना लेल सेहो आवश्यक होइत अछि।

आचार्य प्रवर रमानाथ झा, कवि चूड़ामणि काशीकान्त मिश्र 'मधुप' ओ डा० काञ्चीनाथ झा 'किरण' हमर विभूति छथि। अपन–अपन क्षेत्रक दिक्पाल छथि। हिनकालोकनिक जन्मशती संगोष्ठीक आयोजन कए प्रतिमान सरिपहुँ प्रशंसनीय कार्य कएलक अछि। एहि मे सहभागिताक लेल हम ओकर आभारी छी।

ओना डा० रमानन्द झा 'रमण' एहि उपलक्ष मे प्रकाशित अपन पुस्तिका 'रमानाथ झा आ मिथिला भाषा' मे एहि आयोजन के पूर्वक कोनो एहने आयोजनक प्रतिक्रिया कहि संदेह प्रकट करैत छथि। ओ आर कहैत छथि–'ने रमानाथ झा व्यक्ति रूप मे परिचित आ ने हुनक साहित्य सर्वग्राह्य सहज सुलभ एहना स्थिति मे बेशी सम्भावना इएह जे कांचीनाथ झा 'किरण' एवं काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क लाट मे आ रोचसँ रमानाथ झाक नाम एहि आयोजन मे जोड़ा

गेल हो। तथापि एकटा बात सँ स्पष्ट अछि जे, जँ संविधानक आठम अनुसूची मे मैथिली सम्मिलित नहि भेल रहैत आ रमानाथ झा ग्रन्थावली प्रकाशित करबाक महत्त्वपूर्ण निर्णय भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर नहि करैत एवं ओकर संपादक मोहन भारद्वाज नहि भेल रहितथि तँ लाटहुमे रमानाथ झा जन्मशताब्दी आयोजनक सम्भावना सुदूर धरि दृष्टिगत नहि होइत।' एहि मे संदेह नहि जे मैथिलीक संवैधानिक स्वीकृति एहि आयोजन आ एहन कतिपय आयोजनक पृष्ठभूमि थिक आ तेँ एहि अवसर पर ई हमर कर्त्तव्य भ' जाइछ जे एहि स्वीकृतिक पाछां जनिका लोकनिक योगदान-अवदान रहलनिहें, हुनको लोकनिक श्रद्धास्मरण करी, नमन करी। मैथिली आन्दोलन सँ प्रत्यक्षरूपेँ जुड़ल रहबाक कारणेँ हमरा लेल ई विशेष प्रयोजनीय।

जहाँ धरि रमानाथ झाक बात अछि से ओ सृजनात्मक साहित्यकार नहि छला। ओ छलाह मातृभाषानुरागी विद्वान, विचारक, आलोचक। ओ बड़ बेसी लिखबो नहि कएलनि आ जेहो लिखलनि से सहज उपलब्ध नहि। (परंच ई अनुपलब्धताक समस्या रमानाथ झाए धरि सीमत नहि अछि।) स्वाभाविक छैक जे हुनक पाठकक संख्या थोड़ अछि, परिचितिक आयाम छोट अछि। ओनहुना सृजनात्मक साहित्यक पाठक बेसी होइछ आ तेँ एकर आ एकर रचनाकारक परिचितिक आयाम पैघ होइत छैक। बिसरबाक नहि थिक जे कोनो भाषा केँ भाषाक मान्यता-मर्यादा प्राप्त करबाक लेल ओहि मे कविता, कथा, उपन्यास, नाटक आदि सृजनात्मक साहित्यक होएब आवश्यके नहि अनिवार्य छैक। एकरा एहू रूपेँ कहि सकैत छी जे भाषाक अस्तित्वे सृजनात्मक साहित्य पर निर्भर छैक। आलोचनाक स्थान एकर पश्चाते अबैछ। सृजनात्मक साहित्यक अभाव मे आलोचनाक अस्तित्व असंभव। ई वास्तव सत्य थिक जकरा कोनो स्थिति मे अस्वीकारल नहि जा सकैछ। तथापि ई कहब जे रमानाथ झा मैथिली साहित्यानुरागी हेतु अपरिचित छथि, अनचिन्हार छथि-से सत्य नहि थिक, आ रमानाथ झा जे हेतु साहित्यक छलाह-साहित्ये हुनक परिचितक आधार अछि होएबाक चाही। व्यक्ति परिचिति विशेष महत्त्वक नहि। ओनहुना प्रायः देखल जाइछ जे व्यक्ति परिचिति सत्यक सन्धान मे, ओकर स्वीकृति मे सहायक थोड़, बाधक बेसी होइत रहल अछि। विचारणीय इहो जे रमानाथ झा ग्रंथावली

प्रकाशनक निर्णय की भारतीय भाषा संस्थान स्वतः लेलक वा तदर्थ प्रस्ताव देल गेल छलैक, प्रयास कएल गेल छलैक। मइ 2004क राष्ट्रीय सलाहकार समितिक निर्णय विद्यापति रचनावली प्रकाशनक किए आ केना गतालखाता मे पड़ि गेल।

आलोचना सृजनात्मक साहित्य नहि होइतहुँ साहित्यक एक महत्त्वपूर्ण विधा थिक आ कोनो भाषा साहित्यक विकास मे एकर भूमिका अहम् मानल जाइछ। कखनो-काल एहन होइत छैक जे साधारण पाठक साहित्यक सौन्दर्यबोध केँ समग्रता मे समाहित नहि क' पबैछ, ओकर निहितार्थ केँ नीक जकाँ नहि बुझि पबैछ अथवा कोनो विषय बाट ओकर दृष्टि-बोध सँ अलक्षित रहि जाइत छैक। एहना स्थिति मे आलोचना ओकर उचित विवेचन विश्लेषण क' काव्यमे पाठकीय बोध-विस्तार मे, ओकर आयामक विस्तार प्रसार मे सहायक होइत छैक आ साहित्यक प्रति पाठकीय आकर्षण-अनुराग केँ तीव्रतर करैत छैक जे प्रकारान्तर सँ सर्जनात्मक गतिशीलता प्रखरता केँ प्रेरित-प्रभावित करैत छैक। दुखद बात जे मैथिली आलोचना बड़ दुबर आ दोषावह अछि। तेँ आश्चर्य नहि जे जखन कखनो एहि विधाक चर्च होइत अछि रमानाथ झाक नाम सभ सँ पहिने लेल जाइत अछि आ सम्मानक संग लेल जाइत अछि।

रमानाथ झा सँ हमर कोनो संबंध नहि। कुल-मूल, पांजि-पानि – कतौ एक आरि खेत नहि। एक वा दू खेप दर्शन अबस्से भेल अछि मुदा सेहो ताहि समय जखन कि हम कवि वा लेखक नहि रही। स्वाभाविक छैक जे हुनक पक्ष वा विपक्ष मे लिखबाक आधार हुनक विचारेटा अछि जे हुनक रचनाक अध्ययन अवलोकन सँ स्पष्ट होइछ। अन्यथा भावक कोनो संभावना नहि। ओना, जेना कि कुमारिल भट्ट कहै छथि– दोष तकनिहार सभठाम दोषे तकैत फिरैत अछि आ ओतहु दोष ताकिए लैछ जाहिठाम कोनो दोष रहिते ने छैक। (श्लोक वार्तिकम) से एहन व्यक्ति केँ जँ हमरो आलेख मे कोनो दोष दृष्टिगत भइए जानि त' से भिन्न बात भेल। एहिठाम ई लिखबाक प्रयोजन एहि कारणे जे प्रायः देखल जाइछ जे आलोचक लोकनि जखन ककरो पक्षमे लिखए लगताह त' हुनक समस्त भूल-त्रुटि केँ अनदेखी करैत हुनका सर्वगुण सम्पन्न 'ईश्वरक' आसन पर आसीनक देताह आ जकर विपक्ष मे लिखताह तनिका दानवो सँ

अधम प्रमाणित करैत पाताल धसा देबा मे कोना कसरि नहि छोड़ताह। नीर-क्षीर विवेचन वला बात पोथी-धरि सीमित रहि गेल अछि। वस्तुनिष्ठ आलोचनाक अभाव मे सत्यक संधान पाएब सहज संभव रहि नहि गेल अछि। हमरालोकनि प्राय: बिसरि जाइत छी जे कोनो व्यक्ति मे ने- त' अगबे गुणे होइत छैक आने अगबे दुर्गुणे संभव। गुण-दोषक मात्राधिक्ये ककरो मान्य आ ककरो अमान्य बना सकैछ, प्रशंसनीय वा निन्दनीय बना सकैछ। आ मनुष्य त' अन्ततः मनुष्ये होइछ।

मैथिलीक संग विडम्बना रहलैक जे जाहि वर्गक लोक एकर साहित्यक सूत्रधारक रूप मे पाओल जाइछ पश्चात् ओही वर्गक लोक एकरा अस्वीकार क' देलक। जँ चर्यापद, दोहाकोष आ डाकार्नव मैथिलीक आदि ग्रंथ त' तकर रचयिता जे ब्राह्मणेतर वर्गक लोक छथि ताहि मे संदेहक अवकाश नहि। रमानाथ झा सेहो अपन 'प्राचीन मैथिली-साहित्यक रूपरेखा' मे एहि विषय पर आलोकपात कएने छथि। आ एहू अस्वीकृतिक पृष्ठभूमि निर्विवाद राजनैतिके छल। वस्तुतः राजसत्ता सभदिन मैथिलीक विरुद्ध रहल। त्रेतायुग मे जाहि राजनैतिक अभिसन्धिक कारणे जनक नन्दिनी जानकी मैथिली केँ दू-दू खेप बनवासक यातना भोगए पड़लनि वर्तमान युग मे ओही राजनैतिक अभिसन्धिक कारणे गृहनन्दिनी बना देल गेलीह। अन्यथा जे मैथिली विभिन्न भाषा-भाषी क्षेत्रक साहित्यकार केँ प्रेरित प्रोत्साहित कएलक, समस्त पूर्वांचलक साहित्यकारक भावाभिव्यक्ति माध्यम बनल से अपनहि भूमि पर कतौ लाछित-अपमानित हो इएह विषय-बातक बोध-व्यथा हमर मनीषी लोकनि केँ अपन भाषा-साहित्य संस्कृतिक अस्मिता-अस्तित्व रक्षार्थ, ओकर उन्नति-विकासार्थ उद्बुद्ध कएलक, प्रेरित-प्रोत्साहित कएलक जे भाषा-चेतनाक सन्दर्भ मे पुनर्जागरणक पृष्ठभूमि भेल। रमानाथ झा एही-पुनर्जागरणक एक मनीषी भेलाह।

रमानाथ झा मातृभाषानुरागी छलाह। ओ मैथिलीक अवनति अवहेलना सँ व्यथित-चिन्तित छलाह आ तेँ तकर निराकरण लेल सतत सचेष्ट रहलाह। कोनो रोगक निदान लेल, समस्याक समाधान लेल ओकर कारण ताकब

आवश्यक होइत छैक आ तत्कालीन मनीषी लोकनिक संग रमानाथ झा सेहो तकलनि। ई ताकब हुनकलोकनिक लेल असंभव नहि छल। सत्यश्रमाभ्यां सकलार्थ सिद्धिः। कहबाक प्रयोजन नहि जे एकर मूल मे छल दड़िभंगा राज जे मैथिली केँ घर-आङनक सीमा मे आबद्ध कए दलानधरि विजातीय भाषा हिन्दी केँ नोति अनने छल। मात्र नोतिए नहि अनने छल ओकर साज-श्रृंगार लेल, पूजा-अर्चना लेल अपन जातीय अस्मिता अस्तित्व केँ, संहति-सद्भाव केँ जलांजलि द' देने छल जकर परिणाम हमरा लोकनि आइयो भोगि रहल छी। लेखन शैलीक समस्याकेँ जड़ि सेहो इएह थिक। ने मिथिलाक्षर केँ छोड़ि देवनागरी अपनाओल जाइत ने ई समस्या होइत। एहि सन्दर्भ मे रमानाथ झा लिखैत छथि-राष्ट्रीय भावनाक स्रोत मे मैथिलीक स्थान जे अद्यपर्यन्त गौण अछि ताहि हेतु उत्तरदायी महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह। अपन राजमे ओ हिन्दी केँ स्थान देल, मैथिली केवल पारिवारिक, अधिक सँ अधिक सामाजिक, क्षेत्र मे सीमित रहि गेल। हुनक 'प्राइवेट ऑफिस' समेतक भाषा हिन्दी भए गेल। सबसँ पैघ जे आघात हुनका द्वारा मैथिलीकेँ भेल से ई जे दड़िभङ्गा मे ओ हिन्दीक प्रेस चलबाए मैथिलीकेँ देवनागरीमे छपबाओल, मिथिलाक्षर केँ आगाँ नहि कएल, ओकर काँटा नहि बनबाओल। तावत् पर्यन्त हिन्दीक प्रेस बम्बई काशी ओ पटनामे स्थापित भए गेल छल, दड़िभङ्गहुमे हिन्दीक छापाखाना भेलासँ मिथिलाक्षरक उपेक्षा होअए लागल। ओ मिथिलेश छलाह, हुनक प्रभाव तत्कालीन अंगरेज सरकारक ओहिठाम बड़ विशेष छल, ताहि दिनुक भारतक ई भू-भाग जे बंगाल कहबैत छल ओ जकर राजधानी कलकत्ता छलैक ताहिमे हुनक सदृश प्रभावशाली दोसर केओ व्यक्ति नहि छल। यदि ओ चाहितथि तँ मैथिली केँ एहि दिशुक राजकार्यक भाषा स्वीकार कराए लितथि, स्कूलमे मैथिलीक शिक्षा, मैथिलीक माध्यम सँ शिक्षाक प्रबन्ध कराए सकैत छलाह। अबेर भए गेल छलैक ताहिमे सन्देह नहि; परन्तु जे काज 1936-38 ई० मे महाराजाधिराज कामेश्वर सिंह कएल से ओ पचास पचपन वर्ष पूर्व 1880-81 ई० मे गद्दीनसीन भेलाक उत्तर कए सकैत छलाह ओ एहि पचास-पचपन वर्षमे मिथिलाक रूप बदलि गेल रहैत। मिथिलाक्षरकेँ तँ हुनक नीतिसँ से धक्का लगलैक जे ओ क्रमशः नीचा दिशि जाइत सम्प्रति विस्मृतिक गर्त्तमे चल गेल

अछि। (मैथिली गद्य-संग्रह (तृतीय भाग), नवीन संस्करण 1966 ई०) परंच जानि ने तत्कालीन विद्वतमंडली, जाहि मे रमानाथ झा सेहो छथि, मिथिलाक्षरक पुनः प्रचलन पर विशेष जोड़ किएक नहि देल जखन कि लेखन शैलीक भिन्नताक कारण सभ केओ देवनागरीक प्रयोग केँ मानैत छलाह। स्वाभाविक छैक जे ओतेक विचार-विमर्शक पश्चातो एहि विषय पर एकमत नहि भए सकल। रमानाथ झा महामहोपाध्याय उमेश मिश्रक लेखन शैलीक पक्षधर छलाह आ अपन साहित्य-पत्रक माध्यमे एहि शैलीक विकासनार्थ प्रचुर प्रयास कएल परंच भोलालाल दास ओ किरणजी सदृश आन्दोलनी व्यक्तित्व अपन पृथक मत पर अटल रहलाह। ओना पश्चात् चलि केँ रमानाथ झाक कट्टरता मे शिथिलता देखल जाइछ जखन कि ओ आंचलिकताक पक्ष मे उदारता देखबैत छथि।

जेना कि पहिनहि कहि आयल छी, रमानाथ झा सृजनात्मक साहित्यकार नहि छलाह, ओ छलाह निविष्ट विद्वान, चिन्तक, समीक्षक आ सर्वोपरि मातृभाषानुरागी। हुनक समस्त कार्य-व्यापार केँ एही पृष्ठभूमि मे देखल जएबाक चाही। हुनक अवधारणा उपस्थापना सँ असहमत भेल जा सकैछ परंच हुनक विद्वता वा मातृभाषा-प्रेम पर प्रश्नचिन्ह नहि लगाओल जा सकैछ। असहमति वा मतपार्थक्य चिन्तनक नव-आयाम दैत छैक आ साहित्य केँ समृद्ध करैत छैक। रमानाथ झा द्वारा विद्यापतिक राधाकृष्ण केँ महारानी लखिमा आ महाराज शिवसिंहक रूपमे विवेचित करब आ किरणजी द्वारा तकरा खंडन केँ सही दृष्टिेँ देखल जएबाक चाही। हमरा जनैत रमानाथ झाक एहि मत सँ बड़ थोड़ लोक सहमत होएत, किन्तु तकर ई अर्थ कथमपि नहि जे विद्यापतिक प्रति हुनक कोनो दुर्भावना छलनि किंवा विद्यापति केँ बुझवा मे ओ असमर्थ छलाह। सत्य त' ई अछि जे हिनक विद्यापतिक मोनोग्राफ स्वयं मे एक उदाहरण अछि।

रमानाथ झाक कार्यक्षेत्र व्यापक अछि जकरा एक गोट निबन्ध मे समेटि लेब सहज-संभव नहि। उद्धरणक आधार पर निबन्ध के दीर्घायित करबाक यौकृष्टता सेहो हमरा उचित नहि प्रतीत होइछ। मैथिलीक प्राचीनता के प्रमाणित करबाक लेल वाल्मीकि रामायणक – 'अवश्यमेव वक्तव्यं मानुषं वाक्यमर्थवत्' के ओ जाहि विद्वता विलक्षणताक संग व्याख्यायित विश्लेषित कएलनिहें से हुनके सन स्फीत दृष्टिक समीक्षक सँ संभव। तहिना सरहपादक पद–

सिद्धिरत्थु मइ पदमे पढ़िअउ।
मराऽ पिबन्ते बिसरअ एमरउ।।

केर व्याख्या लौकिक सांस्कृतिक पृष्ठभूमि मे करैत ओ एकरा मैथिलीक होएबाक सिद्ध करैत छथि। जैन-धर्म -ग्रंथक विवेचन सेहो एहि परिप्रेक्ष मे देखल जा सकैछ।

सरिसबक मैथिली साहित्य परिषदक अधिवेशन मे मैथिली आन्दोलन संबधी हुनक भाषणक आधार पर केओ हुनका आन्दोलन विरोधी भनहि कहि लेथु मुदा से ओ निर्विवाद छलाह नहि। से रहने ओ कलकत्ता केँ मैथिलक हेतु तीर्थस्थान नहि कहितथि। सत्यतः मैथिली आन्दोलनक केन्द्र कलकत्ताक अवदान केँ जाहि उदारताक संग रमानाथ बाबू स्वीकार कएने छथि से एक दृष्टान्त थिक। रमानाथ झाक कथन छलनि जे विभिन्न संस्था जखन विभिन्न क्षेत्र मे कार्य करत तैखन मैथिलीक बहुविध विकास संभव। सर्वाधिक प्रयोजन ओ साहित्य सृजन-प्रकाशन ओ तकर प्रचार-प्रसार केँ मानैत छलाह कारण मैथिलीक अस्तित्व मुख्यतः ओही पर निर्भर अछि।

एक समय छलैक जखन रमानाथ झा मैथिलीक समस्त क्रियाकलापक केन्द्रस्थ व्यक्तित्व छलाह। साहित्य अकादेमी मे मैथिलीक प्रतिनिधि त' छलाहे, शिक्षाक क्षेत्र मे मैथिलीक पाठ्यक्रमक नियमन-निर्धारण मे हुनके वर्चस्व छलनि। एहि अवधि मे हुनक कतेको कार्य-व्यापारक विरूद्ध प्रतिक्रिया भेल छल आ से सभटा निश्चिते निराधार नहि छल। परंच ई अवसर तकर खोद-बेदक नहि। जनिक जन्मशती उद्यापित होइछ तनिक कपालक्रियाक औचित्य भइयो ने सकैछ। हम पहिनहि कहि चुकल छी जे ओहो मनुष्ये छलाह आ प्रत्येक मनुष्य मे गुण दोष दुनू होइत छैक। प्रत्येक व्यक्तिक अपन सीमा होइत छैक आ तहिना एहि संगोष्ठीक वा एहि तरहक आनो संगोष्ठीक एक सीमा होइत छैक, होएबाक चाही। भाषा साहित्यक कल्याण-साधनाक उद्देश्ये आयोजित कोनो गोष्ठीक सार्थकता तैखन साधित भ सकैछ जखन कि ओकर अभिगम सकारात्मक हो।

■

मातृभाषानुरागी रमानाथ झा

विभूति आनन्द

हम जाहि कालखण्डमे मैथिलीभाषा ओ साहित्य दिस हुलकी मारब आरम्भ कएने रही, रमानाथ झा अशरीरी भ' चुकल छलाह। ई कचोट मुदा, पछाति हुनक विशाल लेखन-जगतमे भ्रमण कएलाक बाद मेटाइत सन चल गेल। मुदा तकर संगहि एकटा दोसर संकट आबि तुलाएल जे हुनक लेखन-जगतक कोन पक्षकेँ हुनक परिचितिक संग जोड़िक' देखल, आँकल जाए! आखिर रमानाथ झा की रहथि! निबंधक? भाषाशास्त्री? इतिहासकार? साधक? आलोचक? मातृभूमि ओ मातृभाषा-उद्धारक? ...हमर सोचक ई ओझरौट एक शब्दपर अँटकल आ से शब्द छल-संपादक। कारण, ओ एक संग बहुत किछु रहथि। तेँ एहि 'बहुत किछु'क लेल एहि 'संपादक' सन विलक्षण शब्दपर हम स्थिर भेल रही।

मुदा एक मिनट! एखन हम एत' अपनाकेँ टोक' चाहै छी। रमानाथ झा रहथि अंग्रेजीक विद्वान। संस्कृत, परम्परा सँ भेटल रहनि। घर-परिवारक भाषा रहनि मैथिली। मुदा ताधरि मैथिलीक भाषावला स्थिति नीक जकाँ फड़िच्छ नहि भेल रहै। स्वाध्याय सँ ओ अपन अंदर मातृभूमि ओ मातृभाषा सँ, ओकर अस्मिता सँ, ओकर क्षेत्रीय संस्कृति सँ जुड़ैत गेलाह। राज पुस्तकालयक ई स्वाध्याय हुनका आन कोनो दिशामे डेग उठएबा सँ रोकैत अंततः अपन मातृभाषाक चिन्तन-परिधिमे रोकि रखलक। तेँ ओ तन्मय भ'क' अपन मातृभाषाक प्रसंग विभिन्न ढंग सँ काज कएलनि। ओ काज कतहु-कतहु अदौ सँ चलि आबि रहल मान्यता केँ सेहो तोड़लक। जेना ओ कहै छथि जे मैथिलीक जन्म संस्कृत सँ नहि, प्राकृत सँ भेल अछि। ओ कहै छथि जे प्राकृतिक अपभ्रंश रूप अवहट्ट नाम सँ प्रसिद्ध भेल। मिथिलामे एकर जे रूप छल, तकरा आइ मिथिलाभाषा

अथवा मैथिली कहल जाइ अछि। प्रायः तेँ ओ अपन लेखनमे अधिकांश ठाम मैथिलीक लेल मिथिलाभाषा शब्दक प्रयोग कएलनि।

रमानाथ झाक जे पहिल लेखन प्राप्त होइ अछि, से अछि-मिथिला, अंक-1, 1924 इसबी मे छपल एक लेखसँ। शीर्षक अछि बिहारमे मिथिलाभाषाक स्थान। ई एक संयुक्त लेखन थिक, जकर लेखक छथि भुवनेश्वर झा ओ रमानाथ झा। ध्यातव्य जे पटना सँ प्रकाशित देश नामक समाचार-पत्रमे एकटा लेखमाला छपल रहै उपर्युक्त शीर्षक सँ। तकरे प्रतिवादमे रमानाथ झा मिथिला नामक पत्रिकामे उक्त आलेख प्रस्तुत कएने रहथि। एहि प्रसंग ओ लिखै छथि-एहि लेखमालाक प्रकाशित होएबाक कारण ई भेल जे गत अगस्त मासमे पटनामे मैथिल छात्रक संख्या विशेष बढ़ि गेल तथा एक समितिक स्थापना करब सबहिकेँ आवश्यक बुझना गेल। समितिक स्थापना भेला सन्ताँ येन-केनोपायेन मैथिलीकेँ पटना युनिवर्सिटीमे कलकत्ता युनिवर्सिटी जकाँ स्थान भेटए एकर यत्न करब ओकर एक मुख्य अंश बुझना गेल तथा जखन एकर यत्न होमए लागल तखन उल्लिखित लेखमालाक लेखक प्रभृतिक दिशसँ एकर घोर विरोध होमए लागल ओ एही प्रसंगमे जनताक चित्त कलुषित करबाक हेतु 'देश'मे उक्त लेख छपल।

आ एहि तरहेँ रमानाथ झाक मातृभाषानुराग मुखर भ' उठल। हुनक लेखनी एकरा एक मिशन जकाँ मानि आगू बढ़ि चलल, चलिते रहल। ओ उक्त निबंधमे एहि भावनाकेँ अथवा एना कही जे पूर्वाग्रहकेँ खण्डित कएलनि जे मैथिली हिन्दीक बोली मात्र थिक। तहिना एहू आशंकाकेँ निराधार साबित कएलनि जे मैथिलीकेँ स्वतंत्र अस्तित्वमे आबि गेला सँ राष्ट्रीय एकतापर खतरा उत्पन्न भ' जाएत। उक्त दुनू आशंका पर हुनक तर्कशक्ति भारी पड़ल। आ जेना कहलहुँ, हुनक ई मातृभाषानुरागवला मिशन आगू बढ़ैत गेल आ ओ लगातार एकर बाद मैथिली-विरोधी सभक तर्कपूर्ण उत्तर दैत अपन भाषाक साहित्यिक महत्त्वपर लिखैत रहलाह। एहि भाषा-क्षेत्रक राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक ओ ऐतिहासिक पक्षकेँ उजागर करैत आगूक पीढ़ीक लेल आधार-पथक निर्माण करैत रहलाह। मैथिलीक स्वतंत्र अस्तित्वक मादे ओ प्रमाण उपस्थित कएलनि

ओकर लिपिकेँ, तिरहुताकेँ। मिथिला भाषा ओ लिपि नामक अपन निबंधमे ओ तिरहुता, अथवा मिथिलाक्षरक उद्भव ओ विकासपर चर्चा कएलनि।

रमानाथ झाक मोनमे छलनि रसल-बसल अपन क्षेत्र, ओकर सुगंधि, आचार-विचार। संस्कार। ई सभ अक्षुण्ण रहि सकए तकर चिंता। आ से संभव छल एहि क्षेत्रक सर्वांगीण विकास सँ। ई विकास कोना होएत, त' सामाजिक एकता सँ। ई सामाजिक एकता संभव अछि भाषाक बले। इएह एहन भावनात्मक डोर थिक जे सभकेँ एक सूत्रमे गाँथिक' राखि सकै अछि। तेँ ओ सामाजिक एकताकेँ भाषाक संग जोड़बाक चिंता कएलनि। ओ राफ-साफ भाषामे, बेलागि भ'क' कहलनि जे पहिने धर्मक नाम पर समाजमे एकता अबै छल, मुदा आब ई काज भाषा करै अछि। एही एकताक आधारपर समाजकेँ सुसंगठित राखल जा सकै अछि। ओ कहलनि जे जाधरि हमरा सभमे भाषिक चेतना जाग्रत नहि होएत, ताधरि ने त' साहित्यक विकास संभव भ' सकत, आ ने समाज ओ सांस्कृतिक रक्षा।

एक मिनट पुन:! फेर अपनाकेँ रोक' चाहै छी। एहि ठाम एकटा तथ्य स्मरण आबि रहल अछि। ई त' स्वयंसिद्ध अछि जे रमानाथ झा विद्यापति-साहित्यक निष्णात विद्वान रहथि। ओहि पक्षक विशेष चर्चा नहि कर' चाहै छी। तथापि, विद्यापतिक महत्त्व-निरूपण करैत जे ओ लिखलनि तकर किछु अंश उठाक' एत' प्रस्तुत कर' चाहब। ओ लिखलनि-विद्यापतिक युगमे समाजक पुन: संघटनक जे क्रमबद्ध योजना बनि कार्यरूप मे परिणत कएल गेल..., ताहि संघटनक सबसँ महत्वपूर्ण, सबसँ विशेष स्थायी, सबसँ विशेष दूरदर्शितापूर्ण घटना छल लोकभाषाक महत्त्व स्थापित करब, लोकभाषाक स्वरूप निर्धारित करब, लोकभाषाक घर-घरमे प्रचार करब, ओहि लोकभाषाक जे आपामर जनता ताहि दिन बजैत छल, बुझैत छल, जाहि मे मिथिलादेशक वासी सकल नर ओ नारी, ब्राह्मणसँ अन्त्यज धरि, राजासँ रंक धरि, विद्वानसँ मूर्ख धरि समान रूपसँ आबद्ध भए सकैत छलाह, जाहि बलेँ समाजक सब वर्गमे एकत्त्व स्थापित भए सकैत छल, जकरा कारणेँ समस्त मिथिलावासी अपनाकेँ एक बूझि सकैत छलाह।

एहि तरहेँ ओ भाषा-शक्तिक तथा उपयोगिताक विस्तार सँ उल्लेख करैत जाहि निष्कर्ष पर पहुँचै छथि, से थिक-विद्यापति केवल मैथिलीक भाषा नहि, मैथिल राष्ट्रीयताक सेहो व्युत्पत्यर्थमे पिता थिकाह।

ई त' सर्वविदित अछि जे रमानाथ झा मैथिलीक लेल कोनो आन्दोलन नहि कएलनि, कोनो ज्ञापन ल'क' पटना-दिल्ली नहि गेलाह। ने कोनो जुलूसक आयोजन कएलनि, ने नारा लगएबाक इच्छा क' सड़कपर अएलाह। मुदा मैथिली आन्दोलनकेँ वैचारिकता प्रदान करबामे हुनक जोड़ नहि अछि। एहि प्रसंग सुनल एक घटना मोन पड़ै अछि। साहित्य अकादेमीमे जखन ओ मैथिली भाषाक प्रतिनिधि रहथि, ओही कालखण्डमे अकादेमी एकटा विचारगोष्ठी आयोजन कएने छल। एहि गोष्ठीमे एहने वक्ताकेँ बजाओल गेल रहनि, जनिक भाषा क्षेत्रहीन छल। अथवा एकरा एना कही जे जाहि-जाहि भाषाकेँ राजकीय मान्यता प्राप्त नहि छलै। अगस्त 1969 मे आयोजित उक्त विचार-गोष्ठीमे रमानाथ झा एकटा आलेख प्रस्तुत कएने रहथि, आ जकर शीर्षक रहै-द प्रॉब्लम ऑफ मैथिली। ओहि आलेखमे प्रस्तुत तथ्य ओ तर्क सँ विद्वत् समुदाय अचंभित रहि गेल रहथि कहाँदन। रमानाथ झा उक्त आलेखमे अपन भाषाक दुर्दशापर जमिक' लिखलनि आ विमर्शक लेल बाट बनौलनि। कहाँदन एतेक विस्तार सँ, पुरजोर भाषा-सामर्थ्यक संग मैथिलीक समस्या राष्ट्रीय स्तरपर बिरले पहुँचल छल।

हमर कहबाक अभिप्राय ई जे अपन भाषाक प्रति रमानाथ झा ततेक सजग रहथि जे गामघर सँ ल'क' देशक राजधानी धरिमे दृढ़ताक संग ओकर समस्याकेँ रखलनि, समाधानक बाट देखौलनि।

'गामघर'क शब्द-प्रयोगपर फेर एकटा घटना स्मरण आबि गेल। मैथिली आन्दोलनक प्रसंग रमानाथ झाक मान्यता छलनि जे एकरा लेल सरकारक गोहारि करब निरर्थक, अतार्किक। एहि लेल आवश्यक छै अपन चाँकि, अपन कर्त्तव्यक ज्ञान। एहि प्रसंग मैथिली साहित्य परिषद्क सरिसव-पाहीमे जे अधिवेशन भेल छल, ओ स्पष्ट कहने रहथि- ...अनेक सभाक मंचपरसँ, लेख सबमे, वक्तव्यमे एमहर कतोक दिनसँ मैथिलक नेता लोकनि अपन अधिकारक हेतु उद्घोष करैत छथि, हमर भाषा बिहारक अपर राजभाषा हो, मैथिलीमे पोथी

छपाबए, लोक सेवा आयोगमे मैथिलीकेँ स्थान हो, मिथिला विश्वविद्यालयक स्थापना हो, मिथिलामे रेडियो स्टेशन बनए। एगारह-एगारह सूत्री माँग सभ ठाम पारित होइत अछि, सबमे अपन अधिकारक माँग। एहि प्रस्ताव सबहिक पाछाँमे जे मनोवृत्ति परिलक्षित होइत अछि से विचारि हम क्षुब्ध छी। सरिसव सन पवित्र भूमिमे ठाढ़ भए हम निस्संकोच कहि सकैत छी जे एहि रूपेँ अपन अधिकारक माँग करब हमरालोकनिक संस्कृतिक प्रतिकूल थिक। हमरालोकनिकेँ बुझबाक चाही जे प्रत्येक अधिकारक हेतु कतोक कर्त्तव्य छैक तथा हमर संस्कृतिमे अपन कर्त्तव्यक पालन विधेय कहल गेल अछि। अपन मिथिला देस, अपन समाज, अपन भाषा, अपन साहित्य, अपन लिपि-सबहिक प्रति हमरालोकनिकेँ किछु कर्त्तव्यो अछि। परन्तु जकर चर्चा कतहु नहि सुनैत छी। ...दू कोटि जनताक भाषा कहि मैथिलीक हेतु आन्दोलन चाहैत छी, मुदा दू कोटि जनताकेँ अपन भाषाक हेतु गौरव अनुभव करबाक कोनो अवसर दैत छिऐक? हमर आन्दोलनक पाछाँमे जनताक शक्ति चाही ओ से शक्ति यावत् नहि संचित होएत तावत् आन्दोलन चलि नहि सकत।

रमानाथ झाक उक्त भाषणमे व्यक्त विचार ओ मान्यता आइयो लगभग यथावत् अछि। हमरालोकनि भाषाक शक्ति सँ परिचित नहि भ' रहल छी, तेँ तीन तिरहुतिया तेरह पाकक मनोवृत्ति लेने दिन काटि रहल छी। एहि अस्त्रक माध्यमे एकताक प्रयास नहि क' सकल छी। हमरालोकनि एखनो ओहिना जाति ओ धर्मक बीच फाँक-फाँक भेल छी, भाषाक चिंता करैत ताहि लेल आन्दोलनक गप करै छी, मुदा भीतरमे अपन व्यक्तिगत लाभ ओ सुविधा सँ ग्रस्त रहै छी। भाषा लेल निर्मल भ' क' काज करब कहाँ पार लगै अछि। आइयो धरि भाषा-आन्दोलन सुचिंतित ओ सुविचारित नहि भ' सकल। ई आन्दोलन त' पुआरक आगि थिक, लगले धुधुआएल, लगले छाउर। तेँ आइयो, यद्यपि हमरा सभ बहुत किछु प्राप्त क' लेलहुँ जेना-तेना, रमानाथ झाक मानसकेँ पढ़बाक, गुनबाक तथा ताहि प्रसंग डेग उठएबाक प्रासंगिकता बरकरार अछि, साफ-स्पष्ट अछि।

जेना कि पूर्वहि उल्लेख क' चुकल छी जे रमानाथ झा मैथिली भाषाक उत्पत्ति प्राकृत सँ मानै छथि। तेँ ई मूलतः देसिल वयना अर्थात् देसी भाषा थिक।

एहि भाषामे साहित्यक आरम्भ तहियै सँ भेल, जहिया ई भाषा लिखित रूपमे नहि आएल छल। ब्राह्मणलोकनिक भाषा छलनि संस्कृत, आ तेँ ओ लोकनि मैथिलीमे लेखन कर'वलाकेँ बड़ हेय बुझै छलाह। हुनका सभपर व्यंग्य कएल जाइ छलनि। एकर हाल-हाल धरिक उदाहरण उपलब्ध अछि। एम्हर, आम जनता निरक्षर रहै छल। तेँ ई कहि सकै छी जे मैथिली-साहित्यक जन्म प्रथमतः अर्थात् एकरा ऐना सेहो कहि सकै छी जे मैथिली साहित्यक आरंभ मौखिक स्तरपर भेल। से ई गप-सपक भाषा, दैनिक क्रिया-कलापक भाषा, कोना साहित्यक भाषा बनल, ताहि सभ मादे रमानाथ झा अनेक निबंधमे अपन विचार व्यक्त कएने छथि। एहि अनेक मे सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण अछि प्रथम श्यामनन्दन सहाय व्याख्यानमालाक रूपमे देल गेल लिखित भाषण। पछाति ई प्रबंध संग्रहमे प्राचीन मैथिली साहित्यक रूपरेखा शीर्षक सँ निबंध-रूपमे संकलित भेल। रमानाथ झा एहिमे लिखलनि अछि जे मैथिलीक प्राचीन साहित्य लोक-साहित्य थिक। एकर रचनाकार ब्राह्मण अथवा संस्कृतक पंडित नहि छथि। ई अवदान सामान्य लोकक थिक। एहि बातकेँ स्वयं रमानाथ झाक शब्दावली मे जँ कही त' कहि सकै छी जे मैथिली साहित्यक आद्य रचनाकार डाक गोआर आ भुसुक राउत सनक लोक रहए। लोक-साहित्यक भाषा लोक-जीवन सँ आएल छल, तेँ आमलोकक बीच ओ खूब लोकप्रिय भेल। मुदा दुखद पक्ष एकर ई अछि जे आइ धरि मैथिलीक एहि अमूल्य धरोहरिक संकलन समुचित ढंगे नहि भ' सकल। जे किछु भेबो कएल, तकर संपादन ठीक सँ नहि भेल। एखनो ढेर रास लोक-साहित्य लोक-कण्ठमे रहि रहल अछि, तथा क्रमशः ओकरे संग विलुप्त सेहो भ' रहल अछि। एहि प्रकारक उदासीनताकेँ की कहल जाए। की ई मानि ली जे एखनो पण्डित-मानसिकता सँ हमर साहित्य पूरा-पूरी मुक्त नहि भ' सकल अछि?

रमानाथ झाक मातृभाषानुरागक विभिन्न रूपपर गप करैत सहसा हुनक संपादक-रूपपर ध्यान जाएब स्वाभाविक। एहि रूपमे हुनक उल्लेखनीय योगदान अछि- साहित्य-पत्र। एकर प्रकाशनक तैयारीक क्रममे हुनका मैथिली भाषाक लेखन-शैलीपर ध्यान गेलनि। तखन ओ मैथिली-वर्तनीक एक सर्वथा नब रूपक निरूपण कएलनि, आ ताही रूपमे साहित्य-पत्र छपल।

बादमे जाक' हुनक ई अभिलाषा विवादित भ' गेल। एखनो ओ वर्तनी अस्तित्वमे अछि, मुदा सर्वमान्य नहि अछि। एहि आरोपित वर्तनीक विरोध एहन भेल जे तकर जातीय ओ वर्गीय स्तरपर विरोध त' भेबे कएल, आ से ततेक दुखद नहि रहल, सभसँ पैघ एकर कुपरिणाम ई सोझा आएल जे मैथिलीक पेट सँ अनेक उपभाषा जन्म ल' अपन फराक अस्तित्वक बोध करब' लागल। रमानाथबाबूकेँ पछाति एहि नब रूपकेँ स्वीकार' पड़लनि। मुदा ताहि पर विमर्श दोसर आलेखमे। एखन आगू ई कह' चाहै छी जे रमानाथ झा एकर शैली ओ वर्तनीक अतिरिक्त पद्य ओ गद्यक स्वरूपपर सेहो जमिक' गप कएलनि। पद्यक प्रसंग अलंकार-सागर पोथीमे तथा गद्यक प्रसंग गद्य संग्रहक भूमिकामे। तहिना व्याकरण प्रवेशिका एवं मिथिला-भाषा-प्रकाशमे मैथिलीक व्याकरणक संग रचनोपर प्रकाश देलनि अछि। संस्कृत काव्यशास्त्रक मान्यताक अनुसार शब्दालंकार, अर्थालंकार आदिक विश्लेषण, मैथिली पद्यक उदाहरण सहित, छात्रेक लेल नहि, सामान्य पाठकक लेल सेहो उपयोगी अछि। हँ, मैथिलीक साहित्यिक गद्यक स्वरूप एवं उत्कृष्ट रूपपर गद्य संग्रहक भूमिकाक अपेक्षा मैथिली गद्यक प्रसंगमे जतेक विशद ओ गंभीर विवेचन कएलनि अछि, ओ हुनक दूर-दृष्टि-चिंतनक विरल उदाहरण अछि। एहि निबंधमे ओ मुख्यत: तीन बिन्दुपर विचार कएलनि अछि-पहिल, मैथिलीक साहित्यिक गद्यक इतिहास, दोसर, लेखन-शैलीक इतिहास तथा तेसर, उत्कृष्ट गद्यक मानकपर।

रमानाथ झाक अनुसारेँ मैथिलीक पहिल गद्य-ग्रंथ थिक ज्योतिरीश्वरक वर्णरत्नाकार। तकर बाद पूरा खाली। एकेबेर चन्दा झा, जकर उदाहरण अछि विद्यापतिक पुरुष परीक्षाक अनुवाद। एहि प्रसंग रमानाथ झा लिखै छथि जे चन्दा झा जखन मैथिली लिखथि तखन संस्कृतक जेना ओ अनुक्षण अनुवाद करैत रहथि, एहन सन क्रम लगैत अछि जे भावक उदय होइन्हि हुनका संस्कृतमे, जकरा ओ मैथिलीक रूपमे लिखथि। आशय ई जे चन्दा झाक ब्याजेँ ओ संस्कृत-पण्डितपर प्रहार करैत कहै छथि जे तत्कालीन मैथिलीमे मौलिकताक अभाव छल। ओ पंडितक गछाड़मे छल। हुनकालोकनिकेँ एही तरहक मैथिली-रूपपर सौन्दर्य देखाइ छलनि। ओ एकर उदाहरण दैत

लिखलनि-विशुद्ध मैथिलीकेँ पण्डित लोकनि ग्राम्य कहथि। बाप ओ बेटा ई दूटा जे मैथिलीक प्राय: सबसँ अधिक प्रचलित शब्द थिक तकर प्रयोग मैथिली साहित्यमे पहिले पहिल कहिया भेल ई अनुसन्धेय अछि, परन्तु पण्डितलोकनि एखनहुँ धरि प्राय: पिता-पुत्र सएह लिखताह, बाप ओ बेटाकेँ ग्राम्य कहि दूषित करताह। मैथिली, जहिना पद्य तहिना गद्यो, एहू वर्तमान युगक आदि अवस्थामे वर्गीय रहल, पण्डिताम छल।

मुदा बादमे स्थितिमे किछु अन्तर आएल। टोल पाठशाला ओ संस्कृत विद्यालयक अपेक्षा जखन अंग्रेजी शिक्षाक प्रसार-प्रचार भेल, लोक ओहि दिस उन्मुख भेल। लेखनमे भाषिक ओ कथ्यक स्तरपर प्रभाव पड़ल। एहि प्रभावक उत्कृष्ट उदाहरण थिकाह हरिमोहन झा। रमानाथ झा लिखलनि-अंगरेजीक विद्वान लोकनि मैथिलीमे तँ एमहर आबि 1920 ई० क बाद लिखए लगलाह अछि ओ एहि रूपक पहिल ग्रन्थ हरिमोहन बाबूक 'कन्यादान' थिक। तखन यदि मैथिलीक गद्य पछुआए गेल तँ आश्चर्य कोन!

एहि तरहेँ मैथिली गद्यक विकास-यात्राक विश्लेषण करैत रमानाथ झा ओकर लिखबाक रीतिपर विचार करै छथि। एहि प्रसंग बेस त्वंचाहंच भेल, एखनो कमोबेस भैये रहल अछि। एत' एकर विस्तारमे जएबाक औचित्य नहि लगै अछि। हँ, रमानाथ झा दैनिक व्यवहारक भाषा ओ साहित्यिक भाषापर सेहो विचार कएलनि अछि, ताहि प्रसंग विमर्श जरूरी। हुनका विचारे दैनिक व्यवहारक भाषासँ साहित्यिक भाषा भिन्न होइ अछि। साहित्यिक गद्यमे दैनिक व्यवहारक भाषाक स्वच्छता, सरलता तथा स्पष्टता त' रहिते छै, एकरा अतिरिक्त ओहिमे आह्लादक तत्त्व सेहो रहै छै, जे ओकरा साहित्यिक मर्यादा दै अछि। हुनका अनुसारेँ साहित्यिक गद्यकेँ मर्यादा देनिहार छओटा गुण अछि- सरलता, स्पष्टता, स्वच्छता, प्रभावोत्पादकता, शिष्टता तथा लयात्मकता। एहि सभपर ओ फराक-फराक गप कएलनि अछि, आ से विस्तार सँ कएलनि अछि, मुदा तकर सांगोपांग विवेचन एत' हमर आलेखक उद्देश्य नहि अछि। संक्षेपमे मुदा एतबा जरूर कहल जा सकैछ जे रमानाथ झाक उक्त विचार वा मान्यता सारगर्भित अछि। आ तेँ एहिपर फराक सँ विमर्श करब आवश्यक, कारण वर्त्तमान समयमे स्थिति बहुत भयावह भ' चुकल अछि। दैनिक व्यवहारक भाषा ओ साहित्यिक

भाषाक बीच एहन प्रदूषण आबि गेल अछि, जे मैथिलीक स्वरूप दिशाहीन भ' गेल सन लगै अछि। भाषा आम जनता सँ कटल जा रहल अछि। ओ जे बजै अछि, से पढ़ै नहि अछि, आ जे पढ़ै अछि, तकरा किछुओ प्रतिशत व्यक्तिक मुँह सँ सुनै नहि अछि। ई एक अहम मुद्दा थिक, जाहिपर फराक सँ विस्तारपूर्वक विमर्श करब हमर सभक अहम् कर्त्तव्य।

ई त' भेल मैथिलीक साहित्य एवं साहित्य सँ इतर ओकर स्वरूप, ओकर समस्या तथा तकर समाधानक प्रसंग रमानाथ झाक विचार ओ चिन्तन। मुदा मैथिली भाषा ओ साहित्य सँ सम्बद्ध हुनक समस्त चिंतनक अवलोकन कएलाक बाद, बात एतहि नहि खतम भ' जाइ अछि। व्यवहारक स्तरपर हुनक लेखनक भाषापर सेहो ध्यान देब जरूरी। भाषाक मानक रूपपर विचार करब अवश्य नीक गप मानल जाएत, मुदा तकर बादे ओकर प्रयोगपर सेहो तहिना सजग होब' पड़त। रमानाथ झा मैथिलीक साहित्यिक गद्यक जे मापदण्ड देलनि, लेखन-शैलीक जे स्वरूप निर्धारित कएलनि, तकर नीक उदाहरण हुनक समस्त लेखन थिक। एक पाँतीमे कही त' कहि सकै छी जे रमानाथ झा मैथिलीक आदर्श गद्यकार छथि। आ जकर उदाहरण एही आलेखमे यत्र-तत्र आएल उद्धरणमे अछि।

मुदा अंतिम एक मिनट! रमानाथ झाक मान्यताक व्यावहारिक ओ सैद्धांतिक पक्षक कमोबेस पक्षधर रहितो मोनमे बेर-बेर हुनक लेखनक प्रति एकटा आग्रह सुगबुगाइत रहै अछि, जे रमानाथ झाक भाषा जँ संस्कृत शब्दावली ओ संस्कार सँ पिण्ड छोड़ाए आमजीवनक आम-भाषाक आर-आर लग जाइत, अथवा गेल रहैत (जकर ओ स्वयं लिखित विरोध कएलनि अछि) त' बोधक स्तरपर ओ आर बेसी व्यापक होइत, सोच आ व्यवहारक दूरीकेँ मेटबैत! मुदा, ई से कोनो तेहन गप नहि थिक, बस एकटा आग्रह मात्र। मुदा इएह आग्रह जँ विमर्शक कोनो नब बाट खोल' चाहए, त' हम की क' सकै छी। हम किछु नहि करब। विरोध त' कथमपि नहि। हमरा लेल त' रमानाथ झा मिथिलाक संस्कृति सँ परिचितिक लेल अक्षर-माध्यमकेँ चुनलनि, भाषाक भूमिकाकेँ स्पष्ट कएलनि, सएह पाथेय थिक। ताहीपर एतेक गुमान आ स्वाभिमान।

■

अशोक

रमानाथ झा पर केन्द्रित चर्चा-पहिल सत्र मे आलोचना आ दोसर सत्र मे भाषा पर बहुत विस्तार सँ बात भेल अछि। बहुत रास विचार आ तथ्य सामने आएल अछि। आब प्रश्न अछि जे जाहि बात कँ रमानाथ झा रखलनि से आइ धरि कते आगू बढ़ल अछि, कते विकास भेल अछि ओकर, अथवा ओ विचार ओही ठामक ओही ठाम पड़ल अछि, पहिने सँ आरो बेसी ओझरा गेल अछि। अथवा, एखन धरि नहि सोझराएल अछि। ई जे पचास-साठि बर्खक बिचला समय अछि-एहि समय मे हम सब रमानाथ झा सँ कते आगू बढ़लहुँ अछि आ कि ओही ठाम अटकल छी! ई केवल भावनाक बात नहि छै जे ओ ओत्ते पुरान छलाह आ हम एत्ते नव छी! तँ, जरूर एते मैथिली साहित्य, मैथिली गद्य बढ़लैए-किर्त्तनिञा नाच आ नाटक के विमर्श, लेखन-शैलीक विमर्श, विद्यापति-विमर्श आदि-आदि। विभूति आनन्द कहलनि अछि जे हमरा लोकनि आरो दलदल मे पड़ि गेलहुँए।

भाषा आ संस्कृति! संस्कृति आ भाषा!! कखनहु-कखनहु हमरा लगैत अछि जे ई संस्कृति हमरा सभक पयरक जंजीर भ' गेल अछि की? की थिक ई संस्कृति? सांस्कृतिक राष्ट्रवाद तक के बात काल्हि भेलै।

तँ हमरा लगैए जे मूल बात जे हमरा सभक विमर्शक आब रहि गेल अछि, आब हमरा सब कँ ओही बात पर केन्द्रित हेबाक चाही। जे कोनो काज रमानाथ झा केलनि, ओहि सँ आगू हम सब ओहि काज कँ कते बढ़ेलहुँ-ए? बढ़ेलहुँए कि नहि बढ़ेलहुँ-ए! एहि पर विचार हेबाक चाही। तारानन्द वियोगी कहलनि जे आलोचना बढ़ल अछि! के इन्कार करत जे आलोचना बढ़ल नहि अछि? जँ हम कही जे रमानाथ झा सँ आगू आलोचना नहि बढ़ल अछि- तँ तकरा साबित क' पाएब कठिन छै।

लेकिन, एही संगें एक ई बात अबैए जे जते गंभीरतापूर्वक, जतेक तथ्यानुसंधानक संग, जते ऐतिहासिक दृष्टि सँ रमानाथ झा शोध आ अनुसंधान केलनि, तकर अभाव भेल जा रहल अछि! चाहे विश्वविद्यालय के पी-एच०डी० के बात हो, एहि पर बातो उठल, चाहे आन शोध, हालत खराब भेलैए। ई की भ' गेलै? किए एना भेलै? भाषाक आन्दोलन कें सैद्धान्तिक आधार देलनि रमानाथ झा, ओकर बाद के छथि जे सैद्धान्तिक आधार देलनि अछि भाषा-आन्दोलन कें? किए भाषा-आन्दोलन मे एते बिखराव भ' गेलै? किए ई पुआरक धधरा भ'क' रहि गेलै? कोनो भाषा आन्दोलन कें, चाहे ओ तमिल होइ, तेलुगु होइ, वा विश्वक कोनो आन भाषा-आन्दोलन होइ-हम सब देखै छी जे ओहि ठामक बुद्धिजीवी लोकनि ओकरा एक सैद्धान्तिक आधार दै छथिन एहू ठाम रमानाथ झा देने छथि। मुदा आगाँ?

से हम चाहब जे आगाँक विमर्श कें हम सब एहि बिन्दु सब पर केन्द्रित करी।

मोहन भारद्वाज

दुनू जे आलेख प्रस्तुत भेल, ओहि मे मोटामोटी दू टा बिन्दु पर विचार भेल- मैथिली भाषा पर आ मैथिलीक साहित्यिक भाषा पर।

मैथिली भाषाक सम्बन्धमे जे रमानाथ झाक काज कएल छनि, ओ प्रायः हुनके समयटा मे नहि, आइयो मापदण्ड अछि। प्रश्न ईहो अछि जे रमानाथ झाक समकालीन जे प्रमुख लेखक सब छलाह, जेना यात्रीजी, हरिमोहन झा-ई सब गोटे भाषा पर काफी लिखलनि अछि, भाषाक प्रति जे हुनका सभक धारणा आ विचार छनि, से हमरा सब कें उपलब्ध अछि। ई किए भेल? भारत जखन परतंत्र छल, विद्यापतिक गीतक भाषा-विवाद सँ जखन हमर अस्तित्व पर आक्रमण भ' रहल छल, तखन ओहि समय जे हमर चिन्तक आ लेखक लोकनि छलाह, से मिथिला आ मैथिली कें अपन लेखनक मुख्य विषय बनौलनि। रमानाथ झा ओही कालक देन छथि। हिनक लेखनमे मैथिलीभाषा आ ओकर विभिन्न स्वरूप आ महत्त्व पर जे विचार भेल अछि, से हमरा बुझने, दोसर केओ ओते विचार नहि केने छथि।

स्वतंत्रता सँ पूर्व जे हमर अस्तित्वक संकट छल-से चाहे बंगलाभाषी वा हिन्दीभाषी सँ हो-जखन भाषाधार राज्य बनि गेलै, हम सब बहुत प्रयास केलहुँ-मुदा मिथिला राज्य नहि बनि सकल। किन्तु, हमर जे चिन्तक आ साहित्यकार छथि, ओ आन-आन सब काज मे लपटा गेलाह, आन-आन बिन्दु कें अपन लेखनक विषय बनौलनि, भाषा आ बहुत हद धरि मिथिला सेहो, हुनका चिन्तन मे कमैत गेलनि। मिथिला आ मैथिली कमजोर पड़ैत गेल क्रमशः, साहित्य मजगूत होइत गेल। एना किए भेल? स्वतंत्रताक बाद मैथिली साहित्य पर जोर पड़ल, ओकर साहित्यिक रूप-कथा, कविता, उपन्यास, नाटक-आगू बढ़ैत गेल। मुदा, ई साहित्यकार लोकनि मैथिली कें आ मिथिला कें पाछू छोड़ि देलनि। आजुक लेखक लोकनि कें एहि दृष्टिकोण सँ विचार करब आवश्यक अछि।

एखनो हमर अस्तित्व संकट मे अछि। हमर अस्मिता, हमर सत्ता संकट मे अछि। हमरा ओ महत्ता आ गरिमा नहि भेटि रहल अछि। से, जाधरि हम सब एहि दिस ध्यान नहि देबै ताधरि मैथिली साहित्य की? मिथिला नहि रहत तँ मैथिली की?

मैथिली आ मिथिला कें ध्यान मे राखि क' जखन साहित्यकार लोकनि काज करताह तँ ई बात हुनका ध्यान मे एतनि जे कविता-कथा लिखब जतबे महत्वपूर्ण छै ततबे विज्ञान, भूगोल, इतिहासक पोथी लिखब, मैथिली मे, सेहो आवश्यक छै।

ई बात सही छै जे रमानाथ झा एहि दिशा मे कोनो प्रयास नहि केलनि। प्रायः हरिमोहन झा टा के किछु दार्शनिक लेख मैथिली मे छनि। आजुक समय मे, मैथिली केवल साहित्यक भाषा बनि क' रहि गेल अछि, ई ज्ञानक भाषा नहि बनल अछि। जाधरि ई ज्ञानक भाषा नहि बनत, जाहि पर रमानाथ झा सेहो जोर देने छथि, ताधरि हमर अस्तित्व संकट मे रहत। ई बात हमरा सबं कें बुझबाक चाही।

दोसर बिन्दु जे एखन उठाओल गेल अछि- मैथिलीक पाठ्य पुस्तकक भाषाक सम्बन्ध मे। एहि पर हमरा मात्र एकटा बात कहबाक अछि। रमानाथ

झा पाठ्य पुस्तकक निर्माण केलनि। मुदा, मैट्रिक सँ नीचाँ ओ नहिए जकाँ गेलाह। ततय सँ ऊपरे-उच्च शिक्षा दिस ओ गेलाह। तकरे संकलन, संपादन, भाषा-निर्धारण ओ केलनि। जे आइ 'बालपोथी' पढ़ैए, ओहि बच्चाक बारे मे अहाँ कल्पना करू। जे अपन खानदानक पहिल बच्चा अछि, जे स्कूल जा रहल अछि, की ओहि बच्चाक उपयुक्त ओकर भाषा छै? स्कूल गेनिहार पहिल-पहिल बच्चाक मैथिली भाषा?

उच्च शिक्षाक लेल भाषा की हो, वर्त्तनी की हो – एहि सब पर हम सब खूब गप करै छी। लेकिन, भाषाक मूलाधार जतय छै, ओहि पर हम सब एखन धरि गप नहि क' रहल छी।

बच्चा क्लास सँ ल'क' मैट्रिक तकक जे सिलेबस तैयार होइ छै, ताहि काल मे बड़का-बड़का प्रोफेसर सब रहै छथि! किछु एहनो लोक रहै छथि जे साहित्यकारो छथि। हमरा विचार मे, एहन लोक जे पी.जी. के पढ़बै छथि, हुनका वशक ई बात नहि छनि जे बच्चा कोना क' सोचैए, कोना कहने ओ बुझते? एहि लेल आवश्यक छै जे ओहि क्लास मे जे शिक्षक सब पढ़बै छथि, हुनका लोकनि केँ पाठ्यक्रम निर्धारणक भार देल जाय। ओ ई समस्या नीक जकाँ बुझथिन। हुनका एकर अनुभव नीक जकाँ होइ छनि। ई नहि भ' रहल अछि। जड़ि मे हम सब नहि जा रहल छी। भाषा पर जखन हम सब विचार करै छी-भ' सकैए जे रमानाथ झा एहि सब पर विस्तारसँ गप नहि केने होथि, मुदा संकेत मे ओ बहुत बात कहने छथिन। ओहि सँ प्रेरणा ल'क' आजुक जे स्थिति अछि बाल-शिक्षण के, एहि पर हमरा सब केँ विचार करक चाही– से हमर अनुभव कहैए।

बासुकीनाथ झा

रमानाथ झाक एक पुस्तिका प्रकाशित छनि–'मैथिलीक वर्त्तमान समस्या'। ओहि मे ओ अपना समय मे विद्यमान मैथिलीक चारि गोट प्रमुख समस्याक सम्बन्ध मे लिखने छथि। हमरा सबकेँ ओहि पुस्तिका केँ देखबाक चाही आ विचार करबाक चाही जे ओहि समस्या सभक कते समाधार हम सब क' सकलहुँ आ की ओ समस्या सब ओहिनाक ओहिना वर्त्तमान अछि।

एकटा आरो बात हम एहि ठाम राखब। एक समय मे, जखन हम महाविद्यालयक प्राचार्य रही, एक बेर तुलसी जयन्तीक आयोजन केने रही। ओहि मे कैक गोट विद्वान वक्ता बजाओल गेल रहथि। ओहि वक्ता मे सँ एक गोटे अपन भाषण मे कहलखिन जे तुलसीदास अपन 'रामचरित-मानस' मे सामाजिक न्याय के कोनो चर्चा नहि केलनि अछि, तेँ ओ कृति आइ सन्दर्भविहीन अछि, अप्रासंगिक अछि। से हम कहब जे जँ एहि तरहेँ हम सब देखबै तँ आइ 2006 मे, आजुक सन्दर्भ मे रमानाथ झा केँ देखब, हुनका संग अन्याय करब थिक। आइयो मैथिली आलोचनाक प्रतिमान वैह छथि। किताबक संख्या भने क्यो बढ़ा लेथु तैयो, सब गोटे मिलियो क' हुनका सँ चारि डेग पाछाँ छी।

उषा किरण खान

आलोचना के जे व्यापक विस्तार आ आवश्यकता छै, तकरा रमानाथ झाक तर्ज पर करबा मे कोनो हर्ज नहि छै। आब मामला जे ई बात आलोचक लोकनि बेसी स्पष्ट रूप सँ बूझि सकैत छथि जे की केला सँ हर्ज छै वा नहि छै। हम तँ मात्र लेखक छी, ततबे धरि अपना केँ सीमित मानै छी। एहि सँ आगूक काज जे रमानाथ झा केलखिन आ प्राचीन कालक, मध्य कालक तथ्य हमरा सभक आगू बेकछा क' रखलखिन, तहिना जँ एहू शताब्दीक काज कर' मे हमर आलोचक लोकनि सक्षम होथि, तँ हुनका लेल एखने सँ अग्रिम साधुवाद!

फूलचन्द्र मिश्र 'रमण'

मैथिली साहित्य परिषदक अधिवेशन मुजफ्फरपुर मे 1936 ई० मे भेल छल। ओही ठाम सँ चलला पर बाटहि मे रमानाथ बाबू एहि धारणा मे एलाह जे मैथिलीक मानक स्वरूपक निर्धारण करब परम आवश्यक अछि। आ ओ 'साहित्यपत्र' पत्रिका आरंभ केलनि। एकर अर्थ अछि जे ओहि दिन मे मैथिलीक अपन शब्द, सब साहित्यकार लग छलनि, जे गाम-घरक लोक लग एखनहु बाँचल छै। ओ तहिया साहित्यकार आ विद्वानो लग छलनि, तेँ ओ लोकनि 'मानक' स्वरूपक कल्पना केने छलाह।

आइ ई स्थिति अछि जे रेडियो, अखबार, टी.वी.क गाम-गाम पसरि गेलाक कारण हिन्दीक वाक्य केँ मैथिलीकरण क'क' साहित्यकार लोकनि रचना क' रहल छथि। आब तँ समस्या अछि भाषाक अपन शब्दक। अंग्रेजीक शब्द आबि रहल अछि। अहाँ 'मानक' रूप पर पुनर्विचार की करब? आब तँ सब गोटे लग समस्या अछि जे मैथिलीक अपन शब्द सब केँ बचाओल कोना जाय? आन-आन भाषाक मैथिलीकरण नहि क'क' अपन भाषा मे लेखन होअय से आवश्यक छै।

प्रभाकर झा

कालिह हम कहने रही जे ऐतिहासिक भूमिका केँ बुझै लेल हमरा सबकेँ सांस्कृतिक राष्ट्रवाद केँ बूझ' पड़त। ओ ओहि युगक एकटा लीडिंग फिगर छथि, जाहि मे, अपना सभक क्षेत्र मे, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद पर प्राथमिक विमर्श आरम्भ भेल रहै। आ, ओकर जे हम सब सैद्धांतिक विवेचन करी तँ बहुत रास बात सभ जे असन्दर्भित रूप मे सुनलहुँ अछि, तकरा सभक मर्म केँ हम सब बूझि सकबैक।

आजुक प्रथम सत्र मे तारानन्द वियोगीजीक बेस परिश्रम-कयल आलेख छलनि-ए, जाहि मे प्राय: मुख्य प्वाइन्ट ई रहनि जे रमानाथ बाबूक सम्पूर्ण रचना अतीत-केन्द्रित छनि वा अतीतक पक्षपाती छनि। एहि लेल हमरा सबकेँ ई बूझब आवश्यक अछि जे कल्चरल नेशनलिज्म (सांस्कृतिक राष्ट्रवाद) ओ चाहे हजारी प्रसाद द्विवेदी के होइनि, अथवा रवीन्द्रनाथ टैगोर के, ओ अपन प्रेरणा अतीते सँ लैत छै। सांस्कृतिक राष्ट्रवाद केँ पहिल आर्टिकुलेशने सैह छै- ओ केवल बंकिमचन्द्र नहि, रवीन्द्रनाथ मे सेहो ओही अतीत सँ प्रेरणा लेल गेल छै। किएक तँ, बीसम-शताब्दीपूर्वक मिथिलाक जे स्थिति रहै, ताहि मे तँ प्रेरणा-ग्रहण करबाक लेल किछु वस्तु नहि छल। तँ यदि हमरा सब केँ, अपन समाज केँ आगू ल' जेबाक अछि तँ से प्रेरणा कतय सँ भेटतै, तकर सिंबल ताकल जाइ छै। ओकर सिंबल एतय विद्यापति भेलाह। उन्नैसम शताब्दी के बाद जे एहि क्षेत्रक नामो जँ 'तिरहुत'क बदला मे 'मिथिला' भेल तँ ओकर मुख्य बिन्दु जे रहल अछि से विद्यापति। विद्यापति-गीतक विवाद सँ आरंभ भेल।

एखन धरि मैथिली साहित्यक सेन्ट्रल फिगर विद्यापति छथि। विद्यापति के नाम पर हमरा सबकेँ आठम अनुसूची मे स्थान भेटल अछि, ने कि कोनो आन लेखकक नाम पर! मैथिलीक अस्मिता जे अछि से विद्यापति अछि। तेँ रमानाथ बाबू जँ विद्यापति केँ अपन आलोचना मे विमर्शक केन्द्र बिन्दु बनौलनि, तँ से स्वाभाविक; कोनो आन लेखक केँ नहि बनाओल जा सकै छै। बीसम शताब्दी मे कोनो आन लेखक छथिहो नहि, जिनका पर केन्द्रित भ' क' एकटा क्रिटिकल डिस्कोर्स अहाँ शुरू क' सकी। किछु लेखकक हम बड़ आदर करै छियनि, मुदा ई बात मान' पड़त जे हमरासभक कोनो लेखक, कोनो एकटा नव सांस्कृतिक विमर्शक उद्‌घाटन नहि केलनि। हमरासभक बेसी लेखक डेरिवेटिव्स रहलाह अछि। तखन तँ हमर विद्यापति, प्राचीन लेखक छथि, मध्यकालीन छथि, हुनका पर केन्द्रित जकर ककरहु रचना हेतै, ओ अतीत-केन्द्रित तँ हेबे करतै। प्रश्न से नहि छै। प्रश्न छै जे ओहि अतीत केँ लेखक कोन दृष्टिऐ देखलक अछि। कोनो जे मॉडर्न क्रिटिक केँ अहाँ देखब- ओ रोलाँ बार्थ होथि फ्रेंच मे, जे आलोचनाक नव स्कूल आरंभ केलनि-ए; वा स्पेनिश मे पुर्तेगादे गोसिद होथि वा ओना मोनो वा होजे- जे कोनो लोक भेलाह अछि-अपन भाषाक सेन्ट्रल फीगर सँ काज शुरू केलनि। से, अपना आप केँ डिफाइन कर' लेल जरूरी छै। तहिना, होजे मराबॉल जे कि स्पेन मे, रमानाथ बाबूक समकालीन रहथि, हुनकर सम्पूर्ण आलोचनात्मक लेखन-ओ स्पेन मे बीसम शताब्दीक सबसँ पैघ आलोचक भेलाह अछि-हुनक सम्पूर्ण आलोचना सबेन्तीस पर केन्द्रित छनि। मुदा, प्रश्न छै जे जहिना रोलाँ बार्थ के आलोचनात्मक दृष्टि आधुनिक काल के छनि, तहिना रमानाथ बाबू के विद्यापति पर जे लेखन छनि, तकर दृष्टि आधुनिक छै। विद्यापति पर हुनका सँ पहिने लिखल गेल छै। ओ दिनेशचन्द्र सेन, आनन्द कुमार स्वामी वा रमेशचन्द्र दत्त आदि बंगाली रहथु वा मिथिला मे शिवनन्दन ठाकुर, उमेश मिश्र, डा० जनार्दन मिश्र आदि होथु- तकर बादो नगेन्द्र नाथ गुप्त, विमान बिहारी मजुदार, हर प्रसाद शास्त्री आदि लिखने रहथि-मुदा रमानाथ बाबूक दृष्टि हिनका सब सँ मात्र अलगे टा नहि, सरोकार के मामला मे सेहो भिन्न छनि। देखबाक चाही जे हुनक एम्फेसिस कोन कोन बात पर छनि। हुनकर एम्फेसिस छनि जे विद्यापति कोन तरहेँ मैथिल समान केँ पुनर्गठित करबाक गप क' रहल छलाह। अपन जे प्रोजेक्ट ओ डिफाइन केने छथिन, ततय ई बात छै। 'पुरुषपरीक्षा' के

की स्थान छनि, विद्यापति काज मे! ई जे दृष्टिकोण सब छै से आधुनिकीकरण के विभिन्न आस्पेक्ट सब छियनि। एहि पर बहस भ' सकैए जे विद्यापति केँ जे रमानाथ बाबू 'स्टेट्समैन' कहै छथिन, से एकटा अतिकथन थिक!

जखन रमानाथ बाबू विद्यापतिक पदावली सँ कनिञो कम महत्त्व 'पुरुषपरीक्षा' केँ नहि दै छथिन, तखन प्रश्न उठै छै जे किएक? एही आधुनिक दृष्टि दुआरे। तेँ, ओहि आलोचना केँ अतीत केन्द्रित बुझनाइ– आ ओकरा प्राचीनताक पक्षपाती कहनाइ–बहुत सतही पढ़नाइ थिक। आलोचना मे ई नहि छै जे ओ विषय की थिक, मुख्य ई छै जे ओकर पर्सपेक्टिव की छै। ओकर मोड ऑफ रीडिंग की छै? ओ कोन पाठ के कोन आस्पेक्ट केँ इंफेसाइज करै छै आ कोन आस्पेक्ट केँ ओ रिलेटिवली डिसरिबार्ड करै छै।

दोसर, हम ई कहब जे एकटा जनसाधारण भाषा, जनसाधारण रुचि के एतय बेस चर्चा भेल अछि। हमरा शंका अछि जे ई हिन्दी पत्रकारिताक प्रभाव थिक। एकटा खास तरहक हिन्दी पत्रकारिताक। किएक तँ एकटा साहित्यिक आलोचक केँ रिस्पॉनसिबिलिटी, ओकर फंक्शन, रुचिक परिष्कार छिये। आलोचनाक फंक्शन बेसिकली पब्लिक स्फीयर मे डिस्कशन इनिसिएट करब। से जखन हम सब करै छी तँ ओहि डिस्कोर्स मे आलोचकक काज जनसाधारणक रुचि केँ रिफ्लेक्ट करब नहि थिक, ओकर परिष्कार करब थिक। जनसाधारण केँ शिक्षित करब उद्देश्य थिक ने कि जनसाधारण केँ मापदंड मानि क' चलब। जनसाधारण केँ दृष्टि मे रखबाक छै मुदा से जनसाधारणक रूचि केँ कन्फर्म करक लेल नहि।

तहिना, हमरा सभक लेल ई बात बूझब बहुत महत्वपूर्ण अछि जे जनसाधारणक भाषा तँ शास्त्रक भाषा नहि भ' सकैए। आलोचनाशास्त्र तँ जनसाधारणक भाषामे नहि लिखल जा सकैए। ई कोन तरहक लोकप्रियतावाद भेलै? हमरा सभक तँ एतबे प्रयास रहबाक चाही जे ओ ओतबे परिष्कृत भ' जाय जे ओहि मे आलोचनो लिखल जा सकैक। जनसाधारण केँ हम सब ओहि तरहें उपर उठा सकी। जनसाधारण के भाषा मे उपर उठा सकी। लेकिन, जनसाधारण के भाषा मे लिखब–आ सेहो एहि क्षेत्र मे, ई हमरा सभ कतय जा रहल छी? हम एकरा गंभीर चिन्तन नहि मानै छी। ई एक तरहक लोकप्रियतावाद थिक।

हमरा सबकेँ ई नहि बिसरबाक चाही जे भाषा के हरदम दू टा आयाम होइ छै–एकटा होइ छै एक्सप्रेसिव– जनसाधारणक भाषा मे गीत लिखल जा सकैए लेकिन जनसाधारण के भाषा मे कुमारिल पर टीका नहि लिखल जा सकैए। आ दोसर-कॉग्नेटिव। कॉग्नेटिव डाइमेन्शन जनसाधारण के भाषा मे नहि रहै छै। तँ, कॉग्नेटिव डाइमेन्शन, जा धरि विकसित नहि होइ छै, चिन्तन के भाषा ओ नहि बनि जाइए, ताधरि ओहि मे आलोचना लिखब सोचलो कोना जा सकैए!

हीरेन्द्र कुमार झा

भाषा होइ छै परिवर्त्तनशील आ साहित्य स्थिर। साहित्य अपना समयक भाषा केँ एक स्थिर स्वरूप मे परिवर्त्तन क' दैत अछि। पहिने, जतेक देसी शब्द प्रचलन मे छल, से सब आब नहि अछि। नव नव शब्द आबि गेल अछि। ई सब शब्द अंग्रेजी आ अन्य-अन्य भाषाक अछि। ई सब शब्द लोकक जीवन मे अछि, समाज मे अछि तेँ साहित्य मे अबैत अछि। नवीन शब्दक प्रवेश कोनो भाषाक लेल भ्रष्ट हएब नहि थिक। आब जँ क्यो जिद पकड़थि जे ठेठ देसिल शब्द सब ल'क' ओ साहित्य लिखताह, तँ लिखथु, मुदा हुनकर बात पाठक केँ सम्प्रेषित भ' सकतै की नहि, सेहो तँ सोचताह! प्रसिद्ध शब्द छै–'मोबाइल'। महिसबारो जनैए। एहि शब्दक बदला जँ 'तन्तुविहीन दूरभाष' वा किछु एहने, लिखल जाय तँ से केहन लागत?

हमरा तारानन्द वियोगीजीक आलेखक बहुत बात जँचल। ओ ठीक विश्लेषण केने छथि। हमरा लागल जे हँ, आजुक आलोचक केँ एही तरहें विश्लेषण करबाक चाही। मुदा, वियोगीजी सँ हम एकटा समझौता करब अपन दृष्टिकोण लेल जे भाइ, अहाँ देश-काल केँ नहि बिसरि जइयौ। पचास बर्ख पहिने बहुतो परिस्थिति दोसर तरहक रहै। एकटा हम उदाहरण देब' चाहब। आइ सँ सत्तरि साल पहिनेक बनल एकटा हम पाथरक मूर्त्ति देखै छिये दरभंगा मे– सरस्वतीजी– ओहि मूर्त्ति मे सरस्वती जीक माथ पर आंचर छनि। आइ, एहि सभागार मे जे माननीय महिला लोकनि बैसल छथि, हुनका माथ पर आंचर नहि छनि तेँ आइ जे सरस्वती जीक मूर्त्ति बनैए, ओहू मे माथ पर आंचर नहि रहै छनि। स्वाभाविक छै। कला समाज सँ प्रेरणा ग्रहण करैए, जेना साहित्य। आइ सँ पचास बर्खक बाद अहाँ देखब जे जीन्स पहिरने सरस्वती जी भेटतीह। कोनो

आश्चर्यजक बात नहि। हम रही कि नहि, एहि शब्द केँ अहाँ स्मरण रखबै जे जीन्स पहिरने भेटतीह। ओहू काल मे धूप-अगरबत्ती चढ़तनि, परहेज नहि हेतै लोक केँ। किएक तँ जे चीज प्रवाहित होइ छै ओकरा जँ रोकि क' रखबै तँ गन्ध कर' लगतै।

वीरेन्द्र झा

दोसर भाषा सँ शब्द लेबा मे आपत्ति नहि छै। मुदा, हेबाक ई चाही जे ओहि शब्द केँ अपन भाषाक अनुकूल बनाक' ग्रहण करी। पहिने कन्ट्रोल के गहूम अबै। ओकरा लोक कहै- कन्ट्रोलिया गहूम। यैह दोसर भाषाक शब्द केँ अपन भाषाक प्रकृतिक अनुकूल बनाएब थिक।

रमानाथ बाबूक दुर्भाग्य रहनि जे अपने एते काज केलनि मुदा शिष्य जे मुड़लनि से सब भस्मासुर सिद्ध भेलनि। सिलेबस मे पहिनहि नाम द' दै छलखिन आ किताब बाद मे लिखल जाइ, जेना-तेना प्रकाशित करायल जाय। शिष्य भेलखिन, डी०लिट० केलखिन-दू दशक सँ अधिक भेलै, पटना यूनिवर्सिटीक सिलेबस मे बाइस बर्ख सँ ओ पोथी छै-मैथिली साहित्यक प्रवृत्ति-मूलक इतिहास। आइ तक लिखल नहि गेलैए। एम०ए० मे, जे मोनोग्राफ छै साहित्य अकादमीक, सेहो लगा क' चलि गेल रहथिन। ओहि सम्बन्धमे अमरजी कहलखिन-एकटा ठोस व्यक्ति आ फोंक मूल्यांकन। जे कोनो जोगरक पोथी नहि, से एम०ए०क सिलेबस मे विराजमान। की यैह रमानाथ बाबूक परम्परा थिक?

हम त' गदगद छी जे मैथिली मे पहिल बेर एहन 'डिस्कोर्स' संभव भ' पाबि रहल अछि, जाहि मे मनभिन्नता आ मतभिन्नताक दूनू दू चीज बनि क' उभरि रहलैए। नहि तँ हमरा ओतए तँ लोक मतभिन्नता केँ मनभिन्नता बुझैत रहल अछि। काल्हि हम टी.एस. इलियटक लेख 'टेडिशन एण्ड इनडिविजुअल टैलेट' के प्रसंग उठेने रही। ताहि प्रसंग मे तारानन्द वियोगीक आलेख मे बेस सटीक चर्चा भेल अछि। हम ओना ई बात साफ क' दी जे हम विमर्श लेल, डिस्कोर्स लेल आयल छी-कोनो प्रश्न पूछय नहि आयल छी। हम कोनो रिव्यू कर' नहि आयल छी, अपन किछु बात अछि तकरा कहए आएल छी।

■

हेतुकर झा

1960क दशक मे, पॉल ब्राश सर्वे केलनि मिथिला के-आ हुनकर अनुसार ओहि समय मे, 16.5 मिलियन, करीब-करीब एक करोड़ बीस लाख, मैथिली भाषी छलाह। ओकर बाद 1980क दशकमे फेर सर्वे भेल। ताहि मे अनुमान लगाओल गेल जे नहि, मैथिली भाषीक संख्या करीब-करीब 23 मिलियन अछि। 1995-96 मे समस्त दुनिञाक वाचिक भाषा के, एहन भाषा जे 'पहिल बोली' छिऐ, तकर सर्वेक्षण भेलै। ओहि मे कहल गेलै जे मैथिली दुनिञाक चालीसम सब सँ पैघ, सब सँ बेसी बजनिहार भाषा मे थिक। ई स्थिति अछि हमर सभक भाषाक। लेकिन एहि संगे कनेक आर विचार कयल जाय।

जहिया पॉल ब्राश अपन अध्ययन केलनि, सर्वे केलनि, हुनकर कहब छलनि जे ई भाषा सब बजैए, मुदा भाषा-चेतना खाली आभिजात्य वर्ग मे छै। 1970क दशक मे एहि प्रश्न केँ ल'क' मिथिलाक ग्रामीण क्षेत्र मे हम सर्वे केलहुँ। हमरा भेटल जे बहुत रास गाम मे जे उच्च जाति-समूह सँ अतिरिक्त वर्गक लोग छथि, से कहलनि जे नहि, बजैत तँ छी हमहूँ, मुदा एकर नाम की छिऐ से हमरा नहि बूझल अछि।

1980क दशक के अन्त मे अमेरिकन मानवशास्त्री केरेलन ब्राउन, जनकपुर लगक क्षेत्र के सर्वे केलनि। हुनका सँ भेंट भेल तँ ओहो यैह बात कहलनि जे बजै तँ सब छथि मैथिली मुदा हुनका ई चेतना नहि छनि जे कोन भाषा बजै छथि।

तखन प्रश्न ई उठल जे भाषाक चेतना आभिजात्ये वर्ग धरि सीमित किए रहि गेलै ओहि सँ अतिरिक्त वर्ग धरि किए नहि गेलै! एहू प्रसंग हम किछु कह' चाहब। एहि क्रम मे दूटा बात हमरा समक्ष आयल। एकटा तँ आर्थिक। ऐतिहासिक काल सँ आर्थिक स्थिति एहन रहलै जे आभिजात्य वर्ग आ ओहि सँ अतिरिक्त वर्गक बीच मे एकटा विरोधाभास रहलै। आर्थिक जे संस्था सब छै, आर्थिक जे प्रैक्टिसे स रहलै, ओहि सन्दर्भ मे। दोसर बात हमरा बहुत

चौंकेलक। दोसर बात चौंकेलक जे मिथिला, मध्य युग के शुरूआत मे, मैथिल पंडित आ बंगाल के पंडित मिलि क' बुद्धिस्ट पंडित संगे शास्त्रार्थ करै छलाह– बौद्ध धर्मक खिलाफ। बौद्ध धर्म जखन समाप्त भ' गेलै तखन शास्त्रार्थ परंपरा मे ई लोकनि लागि गेलाह। आर तखन ओ परम्परा ततेक जोर पकड़लकै जे ज्ञान के हाइराकाइजेशन भ' गेलै मिथिला मे। बहुत देश मे भेलै मुदा मुख्य बात जे मिथिला मे भेलै। जाहि हाइरारकी मे सब सँ ऊपर मे नव्य न्याय रहल, आ नव्यन्यायक पंडित लोकनि अन्यान्य शास्त्रक पंडित केँ कहथिन जे शास्त्रेषु भ्रष्टाः कवयो भवन्ति। म०म० गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी स्पष्ट क' क' एहि पर लिखलखिन अछि। तँ ई कहबी छलै जे शास्त्र मे जे नहि ठठि पबैत छथि, जिनकर बुद्धि नहि चलै छनि, से साहित्य मे जाइ छथि। हमर गाम मे सब सँ पैघ पंडित छलाह–कविशेखर बदरीनाथ झा। हुनकर नाम आ कृति सँ सबगोटे परिचित छी। लेकिन गाम मे जखन चर्चा चलै तँ बूढ़–बुढ़ानुस कहै जे एह, छथि तँ ई बड़ पैघ विद्वान, लेकिन मार्कण्डेय बाबूक लग मे, म०म० बालकृष्ण मिश्रक लग मे, मुँह कहाँ खुजै छनि? ओ सब तँ कहै छथिन जे ई रजनी–सजनी करै छथि।

तँ जखन संस्कृत साहित्यक ओ लोकनि ई स्थिति केने रहथिन, तँ मैथिली साहित्यक की स्थिति छल हयत? चन्दा झा जे 'पुरुष परीक्षा'क अनुवाद केलनि जे 1888 ई० मे छपल, तकर भूमिका ओ हिन्दी मे लिखने छथि, मैथिली मे नहि लिखने छथि। आ, हिन्दी मे लिखि क' ओ आक्रोश व्यक्त केने छथि मिथिलाक बुद्धिजीवीक प्रति, जे ई लोकनि मैथिली केँ कहियो कोनो महत्त्व नहि देलखिन संस्कृतेटा केँ मात्र विद्या मानैत रहलाह।

ई क्रम चलल उन्नैसम शताब्दी आ ओकर बादो तक। मिथिलाक पहिल इतिहास, फारसी मे लिखल गेल। मैथिली मे नहि लिखल गेल। सोलहम शताब्दी मे मुल्ला तकिया लिखलनि। ओ पोथी हेरा गेल। दोसर पोथी लिखल गेल उर्दू मे – 'रियाजे–ए–तिरहुत' 1867 ई० मे। तेसर पुस्तक लिखल गेल उर्दू मे 'आईना–ए–तिरहुत' 1881 ई० मे। ओकर बाद, 1915 ई० मे 'मिथिला दर्पण' निकलल हिन्दी मे। 'मिथिला तत्त्व विमर्श' 1919 मे लिखल भ' चुकल छल, जे छपल बहुत बाद मे। से, मिथिलाक जे बुद्धिजीवी लोकनि छलाह, तिनका लेल मैथिलीमे लिखब डिग्निटी के विरुद्ध छल।

1837 ई० मे उर्दू केँ बिहारक भाषा बनाओल गेल, जकरा सर ऐशले एडेनक बहुत प्रयासेँ 1871–72 के करीब फेर हिन्दी केँ आनल गेल। एहि संघर्ष मे ईश्यू छल– हिन्दी बनाम उर्दू। 'बिहार बन्धु' जे पत्रिका ओहि समय मे निकलै छल, ओहि मे डिबेट चलि रहल छलै जे हिन्दी होएए कि उर्दू होएए। मैथिली एहि मे कतहु नहि छल। लक्ष्मीश्वर सिंह की करितथि? जखन ईश्यू–ए नहि छलैए ठाढ़ भेल तँ ओ की क' सकै छलाह? बहुत बाद मे, जे दस्तावेज रमानाथ बाबू केँ उपलब्ध नहि भ' सकल छलनि, से सब उपलब्ध भेलै। एहन एकटा दस्तावेज थिक चन्दा झाक दरखास्त। ओ दरखास्त देने छलखिन जे हमरा बसबाक वास्ते जमीन भेटय, हमरा घर बनेबाक वास्ते समान भेटय राज दरभंगा सँ, तँ से दरखास्त मैथिली मे देलखिन। ओ इन्टरटेन भेलनि। ओहि पर पास भेलनि आ सब चीज भेटलनि। तँ, मैथिली 'निकाल बाहर' कोना भेलै? एहना मे, क्यो जमीन्दार छल– ओकरा यदि गरियबियै, सबटा दोख ओकरे पर द' दियै– तँ ई प्रोग्रेसिव बात भेल, से बात नहि। देखियौ, जमीन्दारो मनुक्ख छियै, ओहो बात आगू उठा सकै छै। लक्ष्मीश्वर सिंह मिथिला मे पहिल व्यक्ति छलाह जे आधुनिकीकरण शुरू केलनि। प्रिन्टिंग प्रेस, मिथिला मे वैह स्थापित केलनि। चन्दा झा केँ वैह अनलनि। गंधवारि खतम भेलाक बाद चन्दा झा केँ कोनो जगह नहि छलनि, वैह अनलखिन। हुनके सँ फेर रामायण रचनाक बात शुरू भेलै। हँ, ई मिथिलाक्षरक जे बात अछि से बात अवश्य। लेकिन एहि प्रसंग मे हम एक–दूटा बात आर कहि दी। वस्तुतः मिथिलाक्षर मैथिली सँ बहुत पहिनहि हँटि गेल छल। 19म शताब्दी मे जतेक दस्तावेज लिखल जाइ छल, सब कैथी मे लिखल जाइ छल। मिथिलाक्षर खाली कर्मकाण्डक लिपि रहि गेल छल। तेँ, मिथिलाक्षर मैथिली सँ हँटि चुकल छल, हँटि रहल छल। जतेक दस्तावेज देखबै सबटा भेटत कैथी मे। सेकुलर फील्ड के जे कोनो बात लिखल गेल, गद्य लिखल गेल, से बेसी सँ बेसी कैथी मे आ कि देवनागरी मे, बहुत कम मिथिलाक्षर मे लिखल गेल। तेँ, 19म शताब्दीक अन्त अबैत–अबैत मिथिलाक्षर आ मैथिली, दुनू मे बहुत फर्क आबि चुकल छल। ओहि स्टेज मे मिथिलाक्षरक प्रसंग की पॉलिसी बनि सकैत छल, से अहाँ सोचि सकै छी। लेकिन मैथिली के डिग्निटी–मिथिलाक जे इतिहास चलि आबि रहल छल, ताहि मे मैथिलीक सम्मान बहुत कम छल।

आ दोसर छल–मिथिला सँ बाहरक समाज, बिहारक समाज। बिहारक अन्य-अन्य भागक संग मिथिलाक एकीकरण 15म शताब्दी मे भेल। ओहि सँ पहिने मिथिलाक स्वतंत्र अस्तित्व छल। करीब-करीब ऑटोनोमस। 15म-16म शताब्दी मे जे भेल एकीकरण से मात्र प्रशासनिक एकीकरण भेल। सांस्कृतिक एकीकरण नहि भ' सकल। तकर, सब सँ पैघ उदाहरण ई अछि जे बिहार पर जे इतिहास लिखल गेल, जे किछु बात लिखल गेल– ओहि सँ मिथिला केँ अलग कयल गेल। 1881 मे 'बिहारदर्पण' नामक पुस्तक लिखल गेल। पटना सँ प्रकाशित भेल, खड्गविलास प्रेस सँ। 24टा बिहारीक जीवनी ओहि मे देल गेलै, ओहि मे मात्र एकटा मैथिलक जीवनी छै, सेहो पहलवानक। देखबाक बात थिक जे मिथिला कहियो पहलवान लेल प्रसिद्ध नहि रहल। मिथिला जाहि लेल प्रसिद्ध ताहि मे सँ कोनो एक्को व्यक्तिक चर्चा नहि छै। मात्र एकटा जे पहलवान छलाह-शिवनन्दन झा सहरसा के, तिनकर जीवनी मात्र ओहि मे छनि। ओकर बाद शाद अजीमावादी के छनि–मिथिलाक ओहि मे कतहु चर्चा नहि छै। एकर अतिरिक्त, जखन मिथिलाक बुद्धिजीवी लोकनि मिथिलाक इतिहास लिख' लगलाह तँ ओ तिरहुतक इतिहास लिखलनि, बिहारक इतिहास नहि लिखलनि। 'रियाज-ए-तिरहुत' लिखल गेल। 'आईना-ए-तिरहुत' लिखल गेल। 'मिथिला दर्पण' लिखल गेल। बिहारक इतिहास नहि लिखल गेल। तँ, बुद्धिजीवी वर्ग पर ई फरक हाबी रहल। आ ई फरक निम्न स्तर तक रहल। कारण, गंगा सँ दक्षिणक भाग केँ मिथिलावासी सब अशुभ मानैत रहलखिन। एकटा हम उदाहरण दै छी। गंगाक दक्षिण भाग मे जे दुसाध जातिक लोक बसै छथि, हुनका बीच मे जे गाथा छनि, ओहि गाथा मे सल्हेस खलनायक छथिन आ चूहड़मल नायक छथिन। आ मिथिला मे जे गाथा अछि, ताहि मे सल्हेस राजा आ नायक थिकाह आ चूहड़मल खलनायक थिकाह। ओहू लेवल पर विरोध रहलै, से देखबाक थिक। तेँ हमरा लगैए जे 1909-10 के आसपास, भोजपुरक निवासी बुद्धिजीवी लोकनि यथा जयप्रकाश लाल आदि मैथिलीक विरोध 'मिथिला मिहिर' सँ शुरू केलखिन। विरोध ई जे मैथिली मे किए छपैए? तँ, बाहर के विरोध तँ छलैहे–आर लोक तँ बरदाश्त कर' लेल तैयार नहि छल, बाहरक लोक एकरा एकदम इनफीरियर बुझै छल– आ, अपना ओतक जे आभिजात्य वर्गक लोक छला, सेहो एकरा बुझै छलाह जे ई कोनो तेहन डिग्निटी बला चीज नहि छिऐ।

एहना स्थिति मे, 1930क जे दशक थिक, तकरा हम मानै छी जे मैथिली साहित्यक मर्यादा के ओहि समय मे उदय भ' रहल छल। हमरा मोन पड़ैए जे प्रो० स्व० दिवाकर झा आ स्व० पं० जयदेव बाबू एक बेर हमरा सभक बीच मे कहने रहथि, तखन हम पढ़िते रही, जे जखन ओ लोकनि पढ़ैत रहथि, ओही 1930क दशक मे, तँ अपना मे जे गप करथि मैथिलीमे तँ कोन मे सटि क' फुसफुसा क' गप करथि जे क्यो सुनि ने लिअय। ततेक दहशत होइन। आन सुनि लेत तँ की कहत! ये सब गँवार है, पिछड़ा है, इन सबको हँटाओ! एतेक जबर्दस्त दहशत छलैए जे हिनका सबकेँ हिम्मत नहि होइन जे खुल्लमखुल्ला मैथिली मे गप करताह! ई मैथिलीक स्थिति छल!!

हम एतेक बात भूमिका मे कहल। रमानाथ बाबूक जे पक्ष छनि, ताहि दिस ध्यान आकृष्ट करबाक लेल हम कहब जे एहन स्थिति मे रमानाथ बाबू अंग्रेजी साहित्य मे बहुत मर्यादित अंक ल'क'– हुनकर सहपाठी छलखिन करीम अहमद, अहमद फर्स्ट केने रहथि, ई सेकंड केने रहथि, से ओहि समय मे पटना युनिवर्सिटी सँ अंग्रेजी मे सेकंड केनाइ बहुत मर्यादाक बात छलै! अंग्रेजीक विद्वानक रूप मे ओ बहुत ख्यात भ' चुकल छलाह। तेहन लोक मैथिलीक व्यवसाय मे, स्वैच्छिक रूप सँ आबि क' जुड़ल ई अपना-आप मे बहुत महत्वपूर्ण छल आ हमरा लगैए जे एहि सँ मैथिलीक बहुत सम्मानवृद्धि भेलै। मैथिलीभाषी केँ एहि सँ बहुत हिम्मत बढ़लनि। ई विमर्श बहुत आगू बढ़लै।

दोसर बात, जे क्यो लोक एहन विपरीत समय मे मैथिली दिस एलाह, एहि मे कोनो काज केलनि, हुनका सबकेँ हम बहुत उच्च मानै छियनि। एहि मे रमानाथ झा सेहो एक छलाह। तेँ हम हुनकर चर्चा कयल।

प्रत्येक व्यक्तिक जे जीवन छै से सीमित छै। कतबो मेधावी आ श्रमनिष्ठ होअय, कतबो काज जे ओ करैए ताहि सँ हजारो गुना बेसी एहन काज छूटल रहि जाइ छै जे ओ नहि क' पबैए। तेँ ओ की नहि क' सकल, तकर चर्चा निरर्थक थिक। ओ की केलक, से महत्त्वपूर्ण अछि। केहन केलक, तकर बात हेबाक चाही। कारण, जँ ई विचार कर' लागब जे ओ की सब नहि क' सकल तँ पचासो टा बात उठत। जकर नाम लेब, तकरे बारे मे उठत! सबटा काज तँ सब क्यो क' नहि सकैए। रवीन्द्रनाथ टैगोर केँ लिय' तँ जतबा ओ केलनि, हजारो चीज एहन छै जे ओ नहि क' सकलाह।

आकलन ई हेबाक चाही जे जे ओ केलनि से केहन केलनि। आकलन भ' रहल छै। एहू संगोष्ठी मे बहुत नीक जकाँ आकलन भेलैए। ई काज आगाँ सेहो चलैत रहबाक चाही। हुनका समय सँ हम सब कतेक आगू बढ़लहुँ अछि, से तँ साहित्यसेवी आ साहित्यकर्मी लोकनि कहि सकैत छथि—एहि पर ओ लोकनि विचार करताह। हम, समाजशास्त्रक एक विद्यार्थीक रूप मे, यैह बुझै छी जे साहित्यक विकासक लेल शहर चाही। हमरा सब लग शहर कहाँ अछि? बंगला एतेक आगू बढ़ल तँ कारण छलै जे ओकरा उपलब्ध छल कलकत्ता। जाधरि शहर नहि भेटत, उपभोक्ताक एक विशाल समूह नहि भेटत, प्रिन्ट व्यवसाय आगू नहि बढ़तै, ताधरि अहाँ किताब छापिये क' की करबै? अहाँ केँ बाजारे नहि अछि कत्तहु। अहाँ कत्ते दिन करब?1895 ई० मे दरभंगा, जे मिथिलाक प्रधान शहर थिक, के हिन्दुस्तान मे 15म स्थान छलैए नगरक रूपमे। आइ बिहारो मे ओ 15म स्थान पर नहि अछि। हमरा सभक नगर के तँ यैह हाल अछि। जखन नगर नहि रहत त' साहित्यक पाठक नहि रहत। अहाँक पोथी किननिहार लोक नहि रहत। ई बात नहि छै जे भूमंडलीकरण भ' रहल छै तँ अहाँक मार्केट नहि होयत। मार्केट हेतै लेकिन ओ मार्केट आन भजा लेत। जे हाल एखन बिहार के छै। बिहार के अपन कोनो न्यूज पेपर नहि छै, जे छै से दिल्लीक थिक। तँ कोनो अखबारक एतय संपादक नहि छथिन, सब स्थानीय संपादक छथिन।

अन्तिम बात हम ई कहब जे जखन भाषा-चेतना बढ़िये नहि सकल, जनसाधारण मे जाइये नहि सकल, तखन जनसाधारणक बात ल'क' जे क्यो बजै छी, से निरर्थक बजै छी। जनसाधारणक बात अहाँ कोन आधार पर बजै छी? जनसाधारण तक पहिने भाषाक चेतना तँ ल' जाउ। भाषाक चेतना ल' जायब तखन ने पता चलत जे की बात अछि आ की नहि अछि! ओम्हर भाषा चेतना हुनका छनिहे नहि आ एम्हर अहाँ हुनकर बात कहि रहल छी! से हमरा तँ एहि मे तालमेलक अभाव लागि रहल अछि। ओना 'एन्थ्रोपॉलोजिकल सर्वे ऑफ इंडिया' सँ पूरा देशक जाति आ समुदायक के जे सर्वे भेलैए, करीब-करीब 4556 जाति कहल गेलैए। तकर 70% समुदाय द्विभाषी छै। एहना मे हम जँ द्विभाषी छी तँ एहि मे कोन समस्या अछि? हमरा मे अंग्रेजी वा आन

भाषाक शब्द आबि रहल अछि। जतेक शब्द आओत, जतेक केँ पचा सकब से बहुत नीक बात अछि। एहि मे हमरा किछु असंगत नहि लगैए।

एक सज्जन कहलनि जे डिक्शनरी मे हुनका मैथिलीक कोनो शब्द नहि भेटलनि! नहि भेटल हेतनि! शब्दकोश के निर्माण होइ छै जखन लगातार बैसल रहै छै 10-15टा विद्वान सब। लगातार ओहि पर काज होइत रहै छै तँ शब्दकोश के निर्माण होइ छै। एक गोटे बैसि क' एकट्ठा क' लेलहुँ, ओकरा निकालि लेलहुँ तँ ओहि मे कतेक शब्द भेटत? हम तँ कहब जे विद्वान लोकनि सब बैसै जाइ जाउ। 5-10 गोटे बैसि क' जमि क' एहि पर काज होअए। 'कल्याणी कोश'क जे द्वितीय संस्करण निकलत, ओहि मे 10 हजार शब्द जोड़ि देल जाय। लेकिन, से हएत कोना? एहि ठाम तँ खाली गप होइए, बढ़ै लेल कहाँ क्यो तैयार होइए? मुख्य बात तँ एही ठाम फँसि रहल छै।



आलेख

मधुप आ मैथिली गीत

नवीन चौधरी

सब सँ पहिने तँ हम ई अनुरोध समक्ष राख' चाहब जे आइ मैथिली गीत पर बहुत गंभीरता सँ विचार करबाक प्रयोजन अछि। कारण, मैथिली गीतक जे हमरा सभक संपदा अछि हमरा होइए जे विश्व मे बहुत कम जाति केँ एतेक संपन्न संपदा छै। मुदा, हमरालोकनि ओकरा गमा रहल छी। एहि संगोष्ठीक जे स्वरूप निर्धारित अछि, ताहि मे गप केँ शुरूए टा कएल जा सकैए, ओकरा पूर्णता धरि पहुँचेबाक लेल बहुतो प्रयासक आवश्यकता अछि।

एहन कोनो समाजक कल्पना हमरा सँ संभव नहि अछि जकरा गीत-संगीत नहि होइ। तेहन शुष्क लागत गीत-संगीत विहीन समाज जे ओकरा 'समाज' कहबा मे तारतम्य, ओकर सांस्कृतिक चेतना सन्देहास्पद। लोक साहित्य सँ अभिजात साहित्य धरि सभ ठाम गीत-संगीत केर वर्चस्व।

मैथिली मे जे शत-सहस्र गीत अछि तकर सम्यक वर्गीकरण विशेषज्ञ लोकनि करताह। अपन अत्यंत सीमित ज्ञान सँ मैथिली गीतक वर्गीकरण हम एना करैत छी :-

1. भक्ति : विनय, स्तुति, प्रार्थना, भजन, कीर्त्तन, महात्म्य वर्णन, देव-देवी केर चरित (लीला)
2. शृंगार : नख शिख वर्णन, मिलन, विरह, अभिसार, मान
3. शौर्य : वीर-वीरांगना सभक शौर्य
4. विविध : प्रकृति वर्णन (बारहमासा, चौमासा, उषा, संध्या) व्यवहार वा संस्कार (मूड़न, उपनयन, विवाह, द्विरागमन, मधुश्रावणी, बरसाति (वट-सावित्री) फागु, चैत, पावस

एहि अनन्त प्रवाह मे बेसी काल लोकगीत आ अभिजात गीत अनेरे मिझराइत रहल। कारण दुनू केर उद्देश्य-विधेय आ उपादान साझी छै।

शृंगार रस मे जयदेवक पूर्ववर्ती कवि लोकनि अपन-अपन नायक-नायिका गढ़ैत रहलाह। गीत गोविन्द मे जे राधावतरण भेल से सम्पूर्ण उत्तर भारतक साहित्य मे व्याप्त भए गेल। राधा भए गेलीह सर्वमान्य नायिका- रसेश्वरी-रासेश्वरी, पराप्रकृति, चिर विधुरा, चिद्‌विलासिनी। भक्ति आ शृंगारक कथे नहि, फागु, चैत, पावस सभ गीत मे।

विद्यापति राधा कृष्ण लीला प्रसंगक अनुपम गीत सभ लिखलनि। छओ सय साल धरि पूर्वोत्तर भारतक असंख्य कवि 'विद्यापति पद युगल सरोरूह निस्यन्दित मकरन्द पान मे मातल रहलाह।

भक्ति मे प्रमुखता रहल देवी वन्दना आ नचारी-महेशवाणी केर। तखन आर देव-देवी। मधुपजी प्रायः उपरोक्त सभ प्रकारक गीत लिखलनि।

एहि ठाम विचारणीय जे एहि सभ प्रकारक गीत लिखबाक क्रम मे मधुपजी एकर आयाम केँ कते विस्तार देलथिन। एते विस्तृत आयाम ओ देलनि जे एहि विस्तार सँ हमरालोकनि कतहु-कतहु असन्तुष्ट होइत छी। अर्थात् एते विस्तार देबाक प्रयोजन नहि छल। अर्थात् मधुपजी-सन एकटा महाकवि फिल्मी भास पर गीत किए लिखलनि! उत्तर ओ द' देने छथि- ई बात भिन्न जे हुनकर उत्तर केँ मोजर करबा लेल हम सभ तैयार नहि छी। ओ उत्तर देने छथि-'चौंकि चुप्पे' मे- तकरा पर हम सभ एक बेर फेर सँ कने विचार करी। ओ कहै छथि-

फिल्मी भास-लहरि मे मातल हरि! हरि! मैथिल तरुण समाज।
गीतोपम विद्यापति-गीतो तजि रहला अछि आज।
तेँ धुनि माथ तहू धुनि मे निज भाषा हेतु करी हम गान।।

एहि ठाम ध्यान देबाक थिक जे अंतिम पांती मे जे दू टा 'धुनि' शब्द एलैए, से मात्र अलंकारक लेल अलंकार नहि थिक। एहि मे जे व्यथा आ पीड़ा छै, तकरा देखल जाय-'तेँ धुनि माथ'-माथ धुनि क', दुखी भ'क' हम ई काज क' रहल छी कोनो प्रसन्नता आ उल्लासक संग नहि क' रहल छी। अपन काजक औचित्य मे एतबा ओ कहने छथि, मुदा हमरालोकनि एकरा मोजर करबा लेल तैयार नहि छी।

एहि प्रसंग मे ओ आगां कहै छथि–

कीर्त्तन, नाटक तथा रामलीलाक मंच पर औखन आबि।
गायक हिन्दी–गीत गबै छथि जनप्रिय सिनेमाक धुन भाबि।
तहू मासमे मैथिलीक तेँ गीत मधुप लीखल क' ध्यान।।

आब एहि सँ बेसी अपन दुख ओ आर की कहथिन? मुदा जँ हमरा लोकनि हुनकर औचित्य–कथन सँ सहमत नहि छी तँ विचार करी जे एकर पार्श्व मे आर कोन–कोन बिन्दु सभ छैक।

कतहु जँ ककरो कोनो सिंहासन भेटि जाइत छैक तँ ओहि भेटल सिंहासन केँ अपना मोने त्याग करबा लेल क्यो तैयार नहि होइए। इतिहास मे एहन दुइए चारि गोटे भेलाह, हिनका सभ केँ हमरालोकनि देवता कहैत छियनि आ हुनकर नाम जपैत रहै छियनि। ई बात साहित्यो मे होइ छै। अपन भेटल सिंहासन केँ त्यागि देबाक साहस बला एहि दुनियाँ मे भेटब कठिन। मधुपजी मैथिली साहित्य मे एकर एकमात्र अपवाद छथि जे माथ धुनि क' अप्रियो काज अपन –निज भाषा हेतु कयलनि। गीत चाहे कोबरक लेल हो, विध–व्यवहारक लेल वा बाबाधाम जेबाक कालक लेल–मधुपजी समस्त अवसरक गीत लिखि समाज केँ समर्पित केलनि। ई सभ काज ओ सिंहासन सँ उतरि क' कयलनि– अर्थात 'राधा विरह'– सन अद्‌भुत महाकाव्य–कृतिक ख्यातनामा महाकविक रूपमे प्रशस्त मानल जेबाक बाद ओ ई काज कयलनि। एकटा महाकवि मात्र अपन भाषा–प्रेमक कारण एना बाटें–घाटें, गाम–घर मे जा–जा क', लोकक आवश्यकता आ प्रयोजन केँ देखैत अपन गीतक रचना क' रहलाह अछि, से हमरा सभ केँ नहि बिसरबाक चाही।

मधुपजी आजीवन जेना प्रतियोगिता प्रतिस्पर्धा भावना सँ चालित रहलाह। फलाँ एना लिखलनि तेँ हम एना लिखब। फलाँ एना कहलनि तेँ हम ई लिखब। सभ सँ आश्चर्यजनक उदाहरण अछि ''परिचय शतक'' :

जागि निशि भरि
अपन परिचय दैक हेतुक
टिमटिमाइत ओकर ल'क' दीप
मोर धरि लिखि एक सय पद....

हुनक सभ रचना लेल कदाचित एहेने घटना सभ प्रेरक रहल। से हुनक गीत सभ लेल सेहो सत्य। ''फरमाइश नटुआ गायक केर ओ सभ अर्ज करथि दए तर्ज।'' नटुआ–गायकक अतिरिक्त आर लोक सभ फरमाइश करैत छल। किएक केओ फरमाइश करैत छल? आ मधुपजी ककरो फरमाइश सुनितहि किएक छलाह? ककरो फरमाइश पूरा करब ओ आवश्यक किएक बुझैत छलाह?

हमरा बूझि पड़ैत अछि जे आन कोनो महाकवि केँ लोक अपन एतेक लग मे नहि पबैत छल जे हुनका सँ कोनो फरमाइश कएल जा सकए। आन कोनो महाकवि जनताक एतेक निकट नहि छलाह तेँ लोकक मोन मे जे कोनो आकांक्षा रहै छलै– गीत–संगीत सँ सम्बन्धित से सोझे हुनका कहै छलनि। हुनका अपन श्रोता, अपन पाठक सँ प्रत्यक्ष सम्बन्ध छलनि। एकटा महाकविक लेल एहि तरहेँ अपन श्रोता–पाठक सँ प्रत्यक्ष सम्बन्ध रहब आ तकर रूचि पर एना गंभीरता सँ ध्यान देब– ई एकटा असाधारण बात छल।

हमरा मोन पड़ैए–'गाँधी' सिनेमा मे एकटा दृश्य छै जे एकटा कोनो बड़ गंभीर प्रसंग पर गप भ' रहलैए, बिच्चे मे गाँधीजी उठि जाइत छथि, धड़फड़ा क' कतहु जाइत छथि– कतय? तँ हुनकर बकरी के टांग टूटल छलनि, गेलाह, जल्दी सँ ओकर टांग मे पट्टी बान्हि देलखिन आ ओतय सँ घुरि क' अबै छथि आ फेर गंभीर राजनीतिक चिंतन कर' लगैत छथि। हमरा मधुप जीक ई काज सभ तेहने लगैए। छोटी–छोटी बात सभ पर ओ ओतबे ध्यान दै छलाह, जते 'राधा विरह' पर अथवा 'गंगा तरंगावली' पर। कोनो वस्तु केँ ओ ओछ क' क' नहि बुझै छलखिन। तेँ सभ वस्तु हुनका लेल महत्वपूर्ण छलनि। आ सभ सँ महत्त्वपूर्ण तँ ई छलनि जे ओ एसकरे मोपाशा आ बाल्जॉक हेबा सँ पैघ जनताक संग रहब, ओकरा संग ल'क' बढ़ब केँ मानै छलाह। स्वामी विवेकानन्द कहै छलाह जे लोक जँ शिक्षा लेबा लेल नहि अबैए तँ शिक्षे केँ लोक लग ल' चलू। मधुपजी सैह करै छलाह। लोक जे साहित्य लग नहि आबै छलाह तँ ओ साहित्य केँ लोक लग ल' गेलाह।

टी.एस. इलियट लिखने छथि :

"We say in a vague way, that Shakespeare or Dante or Lucretius is a poet who thinks, and that Swinlurne is a poet who does not think, even that Tennyson is a poet who does not think......"

इलियटक मंतव्य केर निकष पर मधुपजी केँ रखबा सँ पहिने किछु तथ्य पर विचार करब आवश्यक। एहि लेल हुनक रचना काल केँ तीन खण्ड मे बाँटि लैत छी। बाल्यकाल सँ 1950 धरि, 1950 सँ 1975 धरि आ सांध्य बेला।

अपूर्व रसगुल्ला (1941), टटका जलेबी (1945) पचमेर (1949), झांकार (1942), शतदल (1944) केर प्रकाशन आ ''परिचय शतक'', द्वादशीक अधिकांश कथाकाव्य आ किछु अविस्मरणीय गीतक रचना 1950 सँ पहिनहि भेल छल। ता धरिक रचना मे प्राय: सभ ठाम हुनक स्वत: स्फूर्त सृजन क्षमता अछि, अपन दृष्टिकोण अछि। अहाँ दृष्टिकोण सँ सहमत नहि होइ से भिन्न बात; जेना–

''सविषाद हास मे चन्द्रमाक
ओ घसल अठन्नी बाजि उठल
''हम कतए जाउ, अवलम्ब पाउ?
के शरण?
घसल जनिकर अदृष्ट।''

शोषण-दमन केर कथा काव्य केँ भाग्यवाद लग छोड़ि देलनि। अहाँ एहि सँ सहमत होइ से आवश्यक नहि। 1950 धरि हुनक गीत आ कविता मे सभ ठाम मिथिलाक माटि आ मिथिलाक लोक अछि।

तकर बाद हुनका संस्कृतक महान रचना सभ मन पड़लनि, काव्यशास्त्रक सुधि भेलनि। ''राधा विरह'' मे काव्य शास्त्रीय व्यायाम केलनि। ''राधा विरह'' केर किछु पंक्तिक अर्थानुसंधान विद्वान लेल सेहो कठिनाह, साधारण पाठकक तँ कथे नहि। संस्कृतक महान रचना सभक अनुवाद करए लगलाह। ओहू मे जेना प्रतियोगिता-प्रतिस्पर्धाक भावना सँ ग्रस्त छथि। जेना ''गीत गोविन्दक'' मंगलाचरण केर पहिल पंक्ति मे तीन-चारि टा 'म' आबि गेल :

''मेघैर्मेदुरम्मम्बरं वनभुवःश्यामास्तमालद्रुमै....

एकर अनुवाद मे मधुपजी 'न' अक्षरक पथार लगाओल– ''नीरद निकर नितान्त निविड़ नभ नयनो नहि सञ्चारी... स्वत: स्फूर्त सृजनक्षमता केर क्षतिपूर्ति अलंकार वा अन्य कोनो उपादान सँ संभव नहि। जे बुझलनि सांध्य- बेला मे।

विद्यापतिक 'हम परिनाम निरासा' सन भाव। शान्त रसक गीत, जकरा ओ आत्म गीत कहलनि। एहेन गीत सभक सूत्रपात भेल छल पहिनहि–

(1) ने मिझा सकय शत सहस जलधियो,
जकर अलौकिक ज्वाला
से मनक वेदन भ' नोरक कण
बनि जाइछ वर्णक माला....
(2) केओ न अप्पन भेल, कीर्ति न ककर गौलहुँ....

ओ गीत सभ जे मधुपजी केँ अमर गीतकार प्रमाणित करैत अछि तकर कोनो संकलन आइ धरि नहि देखल। कदाचित तकर कारण जे ओहि संकलन केर व्यावसायिक महत्त्व संदेहास्पद। हुनक एहि गर्वोक्ति सँ हम सहमत छी–

''जनिक एक महेशवाणी सुनि स्वयं तजि कए भवानी रूप धै उगनाक शंकर आबि बनला जनिक किंकर ताहि विद्यापति महाकवि केर मृदु गुञ्जार छी हम... तहिना हम हुनका सँ असहमत छी जखन ओ कहैत छथि :

''लिखि केँ दू चारिटा पद, कालिदास समान पा मद, भाव रसक न रीति जानथि, गाबि छायावाद फानथि, ताहि उपनामैक भूखल कविक शिष्टाचार छी हम.....

ओ स्वयं अपन नाम सँ बेसी उपनाम सँ परिचित छथि। छायावाद सँ ओहो प्रभावित छथि। 'झांकार' मे बेसी आ 'शतदल' मे किछु कविता पर छायावादक स्पष्ट प्रभाव अछि। हुनक किछु अत्यन्त सुमधुर गीत सभ पर छायावादक प्रभाव देखैत छी।

''चन्ना पिया पाबि संध्या किशोरी
बनलै आनन्दे विभोर, हे राम....
अखिया बिछौना बिछा कए तकै छै
संध्या सोहागिनि बाट, हे राम....

'परिचय शतक' पढ़ैत काल बेर बेर बच्चनजी केर 'मधुशाला' मन पड़ैत अछि। दूनू मे सभ पद गेय अछि। मधुपजी 'एक टूटल तार छी हम' आ बच्चनजी 'मधुशाला' शब्द सँ सभ पद केँ जोड़ैत छथि। दूनू ठामक पहिल पद सेहो किछु संकेत दैत अछि।

''भावुकता अंगूर लता से खीच कल्पना की हाला
कवि बनकर साकी आया है .... (मधुशाला)
पीबि अंगूरीय सन्मधु, चूसि वधुहुक ठोर सँ मधु
अंट संट बजैत पागल, प्रेम पथ मे पूर्ण लागल
क्षिप्त गन्धर्वक उपेक्षित जीर्ण पड़ल सितार छी हम...

(परिचय शतक)

दिनकरजीक एकटा आरंभिक कविता संकलन अछि 'हुंकार'। प्राय: ओही कालखंड मे मधुपजी केर कविता संकलन आएल झांकार।

मधुपजीक पहिल रचना छल एकटा गीत (भजन) ''.... लोअर प्राइमरी मे सिलेट पर लिखल'' भजो रे मन सुन्दर घनश्याम'' देखि गुरु नवादाक झट डाँटि ''अभी से कवि बनने की चाह'' कहल तैँ दबि गेल लिखक उमंग उठल छल जे नाना केँ देखि (निर्माण, जनवरी 1955)

मुदा 'कवि बनने की चाह' दबल नहि। ओ बढ़ैत रहल, लतरैत आ चतरैत रहल से ता धरि

''वायु वेगेँ चार आयुक यदपि ससरल जा रहल अछि।
कामना लतिका तदपि दिन राति लतरल जा रहल अछि।

हुनक किछु अनमोल गीत सभमे एकटा अछि भरदुतियाक गीत। भायक बाट तकैत सासुर बसैत एकटा बहिन :

''सुनिते साइकिल घंटी पाँखि बिनु अखिया
दौड़ि कए सड़क दिस कते बेर सखिया
सुरुज डुबैते मैया केर ताकि बटिया भेल मन 'मधुप' मलान हे...

आब इलियटक मंतव्य पर फेर सँ विचार करी। मैथिलीक कोन कोन कवि चिन्तन करैत छथि आ कोन कोन कवि चिन्तन नहि करैत छथि। लाल दास, सीताराम झा, बदरी नाथ झा आदिक संग एक अध्याय समाप्त भेल। नव अध्याय आरंभ भेल चारिटा उपनाम धारी कवि सँ : काशीकान्त मिश्र 'मधुप', कांचीनाथ झा 'किरण', सुरेन्द्र झा 'सुमन' आ बैद्यनाथ मिश्र 'यात्री'। सुमनजीक रचना सभकेँ एकसूत्रता दैत अछि भारतीय राष्ट्रीयता आ संस्कृति, 'किरण' आ

'यात्री' सुविधा विहीन वर्गक पक्षधर भेलाह। 'मधुपजीक' रचना मे कोनो एकसूत्रता नहि सूझैत अछि। तकर अर्थ भेल जे मधुपजी चिन्तन नहि करैत छलाह। तँ मधुपजीक की करैत छलाह? टी एस इलियट लिखने छथि–

"Shakespeare was occupied with the struggle – which alone constitutes life for a poet – to transmute his personal and private agonies into something rich and strange, something universal and impersonal.... it was his business to express the greatest emotional intensity of his time, based on whatever his time happened to think .... (1927)

मधुपजी सैह करैत छलाह। प्रमाण अछि :

(1) ''विधि जन्म मोर देले दुख भोग हेतुए की?
तम तँ देखैत भागै कीड़ा कुटुम्ब जागै.....
(2) सहि सकय कते नर दरद तकर हम माप बनैत रहै छी
अपने दारुण दुःख सँ सदिखन चुपचाप कनैत रहै छी....

बेर-बेर कचोट होइत अछि जे मधुपजीक उत्कृष्ट गीत सभक संकलन आइ धरि किएक नहि प्रकाशित भेल। ओ गीत सभ जाहि मे अछि the greatest emotional intensity of his time.

'परिचय शतक मे सेहो किछु एहेन पद अछि, जतए हुनक स्वत: स्फूर्त सृजन क्षमता अछि, जतए ओ अपन व्यथा-वेदन केँ विश्वव्यापी बना देलनि।

''कल्पनाक विमान पर चढ़ि, गगन कुसुमक हार केँ गढि
मस्त झूमथि देव सँ बढि, भाव मणि सँ काव्य केँ मढि
जे, तही कवि केर कोमल कञ्ज सन उपहार छी हम....
जाहि मे नव रस सुधा हो, ओ विपाञ्चिक लय मुधा हो
मुग्ध जे सुनि पुष्पवाला, देथि निज ठोरैक हाला
काव्य-कोविद सँ प्रशंसित से 'मधुप' झंकार छी हम......
देखि विपत्ति विखिन्न भूतल, मुक जे कवि कानि अनुपल
अश्रुकणक बनाय अक्षर, कलम सूइक हाथ सत्वर
गुणक सूत्रेँ हार गाँथथि सैह मालाकार छी हम....

मैथिली सभ सँ नीक भाषा अछि। एकर साहित्यमे कोनो वस्तुक अभाव नहि रहओ। गद्य लेखन सँ हुनका अरुचि छलनि। काव्यक कोनो विधा मे, कोनो छवि-छटा मे कोनो अभावक चर्चा सुनितहि हुनक कलमक मोसि अनेरे कागत पर अबैत छल, अश्रुकणक अक्षर बनैत छल।

जौं ओ काव्यशास्त्र बिसरल रहि जैतथि, जौं कोनो अभावक चर्चा सुनितहि हुनक कलम अनेरे चंचल नहि होइत, जौं ओ आशुकवित्वक प्रदर्शन लेल उताहुल नहि रहितथि तँ की होइत? ओ जेना लोकप्रिय भेलाह कदाचित तेना नहि होइतथि। किन्तु मैथिली काव्य मे किछु आर उत्कृष्ट रचना अवश्य अबैत। शत सहस जलधिसँ जकर अलौकिक ज्वाला मिझाएब संभव नहि मनक ओहन वेदना सभकें अभिव्यक्ति देबा लेल किछु आर गीतक रचना अवश्य होइत। ओना हुनक लिखल गीत सभक मधुमातल 'मणिपद्म' गाबि उठल छलाह :

''साधना रत मधुर गुंजन, पद परसि मकरंद सिरजन
गीत केर नव व्यंजना सँ नित नवल सौन्दर्य पूजन
सुनी बजइत बाँसुरी आ विरहिणी राधाक पायल.....
आर मधुकेर प्यास शाश्वत अधर धरि अकुलाएल आएल
मधुप केँ खन देखिते आभास हो मधुमास आएल....

से 'मधुप' नामोच्चारण होइतहि साँचे आबि जाइत अछि मधुमास।

■

मधुपजी आ हुनकर गीतक आग्रह

नारायणजी

हम अहाँ सभक समक्ष एखन मैथिलीक ओहि साहित्यकारक विषयमे किछु कहबा लेल आयल छी, जिनकर प्राय: सम्पूर्ण सृजन-क्षेत्र एकमात्र पद्य रहलनि, जे पद्य अपन वर्णन, विषय, स्वरूप आ ओहिमे निहित शाश्वत मूल्य लेल विद्वत्समाजमे बेस चर्चित रहल; ओहिसँ भिन्न आनो पद्य रहलनि, जे अपन कथ्य आ सहज आवेगमय अभिव्यक्तिक बल पर ओहि असंस्कृत समाजोक कंठमे बसि गेल, जे अपना समयमे एहिठामक श्रमक प्राय: सभ बाट पर गतिशील रहथि, जिनका सभ लेल आइयो हमरा सभ लग उचित स्थान नहि; मुदा जाहि उपेक्षित सभक जीवन आ हुनका सभमे उठैत भावनाक लहरिकें परेखि समानरूपसँ आदर देलनि, एहन चकित कर'वला व्यक्ति क्यो आन नहि, कविचूड़ामणि पं० काशीकान्त मिश्र 'मधुप' रहथि।

कविचूड़ामणि पं० काशीकान्त मिश्र 'मधुप' संस्कृतक विद्वान रहथि। मुदा हुनकर लेखन-क्षेत्र मैथिली रहलनि। से, एक दिस जत' हुनकर मैथिली भाषा आ साहित्यक प्रति अगाध प्रेमकें दर्शबैत अछि, ओतहि हुनकर विपुल काव्य-रचना एहि भाषा-साहित्यक प्रति हुनकर एकनिष्ठ समर्पण भावकें प्रकट करैत अछि।

मधुपजीक काव्य-रचनामे जत' विपुलता अछि, ओतहि विविधता थोड़ नहि अछि। ओहिमे रूप-भेद आ प्रकार-भेद त' अछिये, विषय आ विषयक ओहि मूल-प्रवाहक विविधता अछि, जे रचनाकें समसामयिक बनबैत अछि आ ओहिमे समय संग बदलल जीवनक विविध रंग-मनुष्यक मनोरम सुख आ ओकर घनेरो पीड़ा-केँ पर्याप्त आवेश संग उजागर करैत अछि। कदाचित् जे अपना समयक एहि भूखण्डक जातीय दृश्य थिक मधुपजीक रचनामे।

मधुपजीक रचनामे घटित घटना, ओकर उपस्थापन शैली आ चरम कथ्योक एतेक विविधता अछि जे अनेक प्रसंगमे सार्वकालिक आ सार्वभौमिक बनि जाइत अछि। एहन अनुगुंज हम एखनहुँ सुनि रहल छी, से कहब एखन अप्रासंगिक नहि अछि जे हुनकर कविता 'नवान्न' सँ 'घसल अठन्नी' नहि मात्र घटना आ विषय ल'क' भिन्न अछि, अपितु 'घसल अठन्नी' मे कविताक नायिकाक अवसादमय अन्तक बाद वर्णन–'सविषाद हासमे चन्द्रमाक। ओ घसल अठन्नी बाजि उठल। हम कतए जाउ / अवलम्ब पाउ / के शरण / घसल जिनकर अदृष्ट?' ई कवितांश कविताक नायिका बुचनी आ 'घसल अठन्नी' संग संसारक ओहि समस्त दीन-हीनक सम्बन्धमे नहि कहैत अछि, जे श्रमिक वर्गक अछि, सर्वाधिक जकर जीवन संकटमे अछि आ सर्वाधिक जकरा शरण आ सुरक्षाक आवश्यकता छैक?

मुदा मधुपजीक सम्बन्धमे कहल जाइत अछि जे ओ पारम्परिक रचना कयलनि। हुनकर रचनाक भाव, विषय ओ विधा धरि पारम्परिक अछि। ओ पारम्परिक भाव-भक्ति ओ श्रृंगारमे महाकाव्य आ गीत-काव्यक रचना कयलनि। जे सभ पारम्परिक विषय थिक आ पारम्परिक छंदमे अछि। हमरा जनैत मधुपजीक एहन कोनो सम्पूर्ण छवि नहि बनैत छनि। आँशिक जँ छनियो, त' से ऐतिहासिक दृष्टि थिकनि आ एहि लेल पृथक सँ इतिहास-विवेचनक आवश्यकता अछि। ओना, परम्परा कोनो नकारात्मक दृष्टि थिको नहि।

परम्पराक सम्बन्धमे कहल जाइत अछि जे ओ अपना नैरन्तर्य मे अपनासँ फूट भ' अपनामे गतिशील अछि, आप्लावित करैत अछि ओहि संसारकेँ, जे नहि छल, जहिया परम्पराक जन्म भेल छल। परम्परा ओहि सभ कथूकेँ जीवन-रसमे बोड़ैत अछि, जे ओकर वैभवपूर्ण अतीतमे छल, आ जे वर्तमान मे अछि, हमरा बुझाइत अछि जे परम्परा हमरा मुक्त नहि क' पबैत अछि, त' अपन महत्वसँ हमरा सचेत अवश्य करैत अछि। आवश्यक नहि अछि जे हमरा द्वारा कयल जाइत प्रत्येक श्रेष्ठ अथवा प्रिय कार्यक द्रष्टा होअय। संभव अछि जे ओ अछि आ ओ दृश्य नहि अछि, बोध लेल ओ मूलधारा थिक जे समयमे समय संग अन्यसँ भिन्न अपना रचनामे उत्खनित नहि सहज जातीय प्रवृति थिक। जेना मूल रामायण मे राम द्वारा लक्ष्मणकेँ जंगलक सरोवरमे पुरइनिक पातपर स्थिरसँ चलैत बगुलाकेँ देखि क' कहब जे एहिठामक बगुला पर्यन्त

कतेक निरामिष अछि? (से रामक अपन चिन्तन-परम्परा थिकनि)। आ बगुलाक ई बुझि हँसब, जे जँ हम स्थिरसँ नहि चलब, त' माछ पड़ा' नहि जायत? जे जीव जाहि काल, स्थिति आ देशमे रहैत अछि, सैह ओहि समयक जीवन-स्पन्दनक मर्म बुझैत अछि, शास्त्र आ स्मृति द्वारा अर्जित ज्ञानपर प्रहार आ देशज परम्पराक अभिव्यक्ति नहि थिक?

कविचूड़ामणि मधुपजीक रचना-परम्परा अपना देश-काल आ स्थितिक परम्परा थिक। तेँ हुनकर रचना-परम्परामे शास्त्रक ओहि अतीत परम्पराक वैभव अछि, जाहिमे छन्द, अलंकार आ रस अपन गरिमा आ सामर्थ्य संग अछि। मुदा हुनकर वैह परम्परा, जाहिमे हमर जयघोष अछि, जखन हमर कीर्तन आ बन्हन बनि जाइत अछि, तखन समय संग बहैत समाज आ साहित्य नियम-उपनियमकेँ तोड़ैत जे विकसित होइत गेल, ओहिमे शास्त्र-सम्मत आ लोक-सम्मत विचार धाराक समान सहयोग अछि। लोक-धारा, जकर विकास ओहि विश्वाससँ भेल अछि, जे ओहि समुदाय लेल अपन तर्क आ ज्ञानसँ अबूझ छल, ओहिमे भय आ कौतुकता छल, सामुदायिक आनन्द छल, लोकरुचिक धारा थिक, जाहिमे गीतक प्रमुख स्थान अछि।

गीत-परम्परा अत्यन्त प्राचीन परम्परा थिक। गीत-काव्यक आरम्भ वैदिक साहित्यसँ मानल जाइत अछि। वैदिक ऋचा सभ सस्वर गाओल जाइत छल। सामवेदमे सूक्ति सभक गयबाक विधान अछि। क्यो-क्यो त' गीत-काव्यकेँ आर्येतर सभ्यताक देन सेहो कहलनि अछि।

मैथिलक जीवन सभ दिनसँ अत्यन्त संगीतमय रहल अछि। एहिठामक जनजीवनमे विभिन्न अवसर आ संस्कार लेल गीत सभ अछि।

मैथिलीमे गीत-रचनाक आरम्भ सिद्ध लोकनिक गीतसँ मानल जाइत अछि। गीतक संग ओ लोकनि भिन्न-भिन्न रागक नाम सेहो लिखलनि अछि। महाराज नान्यदेव (1097-1133) देशी रागकेँ ओ रागिनीकेँ जनप्रिय बनओलनि। हुनकर 'सरस्वती हृदयालंकार हार' संगीतक अपूर्व ग्रंथ मानल जाइत अछि। एगारहम शताब्दीक क्षेमेन्द्र कविक 'दशावतार वर्णन'क भाषा-शैलीक समानता जयदेवक 'गीत-गोविन्द' मे ताकल जा' सकैत अछि।

जयदेवक 'गीतगोविन्द' मिथिलाक संगीतकेँ बेस प्रभावित कयलक। कविशेखराचार्य ज्योतिरीश्वर ठाकुर अपन ग्रंथ 'वर्ण रत्नाकर' मे अनेक वाद्ययंत्र तथा रागक नामोल्लेख कयलनि अछि। प्रमाणित करैत अछि जे एहिठामक लोक जीवनमे गीतक अत्यन्त महत्व छल। महाकवि विद्यापतिकेँ आदि गीतकार कहल जाइत छनि। प्रायः समस्त आधुनिक भारतीय भाषामे कविताक जन्म हुनके गीत-रचनासँ भेल अछि। बंगाल, असम ओ उड़ीसामे त' हुनका गीतक प्रभावमे एकटा काव्य-भाषा पर्यन्त जन्म भ' गेल। महाकवि विद्यापति जत' लोकगीतकेँ आधार बना' (भासक अर्थमे) किछु गीतक रचना कयलनि ओतहु किछु गीतकेँ ओ राग-निबद्ध ओ स्वयं कयल। आ से एतेक लोकपिय्र भेल, जे ई प्रवाह बीसम शताब्दीक उत्तरार्द्ध धरि चलल। यद्यपि महाकवि मनबोध एहि प्रवाहकेँ भंग अवश्य कयलनि मुदा विद्यापति द्वारा प्रवर्तित प्रवाह अविछिन्न चलैत रहल, आ कवीश्वर चन्दा झा तथा कविवर सीताराम झा धरि अपनाकेँ एहि प्रवाह सँ रोकि नहि सकलाह। गीतक एही परम्परामे गीतकार मधुपजीक उदय होइत अछि।

मधुपजी संस्कृत साहित्यक विद्वान, अध्येता तथा मर्मज्ञ छलाह, मुदा रचना मैथिलीमे कयलनि, से लोकरुचिक कारणेँ, ताहुमे गीत, जाहिमे लोकक हृदयक हर्ष आ विषाद अत्यन्त सहजतासँ व्यक्त होइत अछि। प्रेम, जे मधुपजीक रचनाक केन्द्रीय भाव थिक, से महाकवि विद्यापतिक परम्परामे विकसित होयबाक कारणेँ, जिनकर गीतमे प्रेम आ लोकरस अछि, जे जयदेवमे छनि, मधुपजी प्रचलित धारामे भाव, भाषा ओ विषयक दृष्टिसँ नवीनता छोड़लनि। से नवीनताक प्रति मधुपजीमे कतेक आग्रह रहनि, जे ओ विश्वमे घटित घटनाक प्रति साकांक्ष रहथि कतेक, तकर उदाहरण थिक जे 'झांकार'क 'कलमक अनुरोध' शीर्षक कवितामे, जाहिमे राष्ट्र-प्रेम आ उद्‌बोधनक स्वर प्रखर अछि, अंग्रेजीक प्रसिद्ध कवि मिल्टन (शेक्सपीयरक बाद सॉनेट विद्याकेँ नव रूप देनिहार) इटलीक आन्दोलनकारी लेखक मेजिनी तथा फ्रांसक राज्यक्रांतिक समयक दुनू क्रान्तिकारी लेखक रूसो तथा भोल्टायरक नामोल्लेख भेल अछि।

मुदा मधुपजी मूलतः गीतकार रहथि। एहि तथ्यकेँ आचार्य रमानाथ झासँ ल' डॉ० रमानन्द झा 'रमण' धरि प्रायः सभ आलोचक एक स्वरसँ स्वीकारलनि अछि। आ मधुपजी सेहो अपनाकेँ अभिव्यक्तिक सहज माध्यम अपन गीतकेँ

मानलनि अछि। मधुपजी राग-रागिनीएकेँ अपन कहलनि अछि, जे गीतक अनिवार्य अंग-उपांग तथा धारा थिक।

संस्कृतक विद्वान मधुपजी मैथिलीमे गीत लिखथि, से एहि काजक पंडित समाजमे निन्दा होअय, जे मधुपजी 'रजनी-सजनी'क गीत लिखैत छथि। ओहि दिनमे पंडित समाजमे शास्त्रार्थ होइत छल। शास्त्रार्थमे जे विजयी होइत छलाह, तिनका पारितोषिक भेटैत छलनि। जे काव्य-रचना करैत छलाह, से शास्त्रार्थ सँ डेराइत छलाह, तिनकर निन्दा होइत छलनि। मुदा मधुपजी पूर्ण समर्पित भ' मैथिलीमे गीत लिखथि। ओ दू प्रकारक गीत लिखथि, एकटा शास्त्रीय आ दोसर लौकिक। से जे लिखलनि, ओहिमे जे शास्त्रीय गीत अछि, आ ओहिमे जे यमक-अनुप्रासक बहुलता अछि, जे गीत सर्वजन बाधक नहि अछि, मधुपजी पंडित समाजमे अपन पाण्डित्यक दर्प-बोध करयबाक लेल लिखलनि। मैथिलीमे सेहो संस्कृतक छंद-अलंकार बहुल विविध गीतक रचना संभव छैक, से मैथिलीक भाषा-सामर्थ्यकेँ पंडित वर्गकेँ दर्शयबा' लेल मधुपजी शास्त्रीय गीतक रचना कयलनि। हुनका संस्कृत साहित्यक कतबाक गहन अध्ययन रहनि, संगहि शब्द-सम्पदा तथा शब्द-चमत्कार उत्पन्न करबाक कतबाक कौशल एवं संगीतक प्रति अनुराग तकर उदाहरण 'गीतगोविन्द'क मंगल श्लोकक हुनकर अनुवादमे देखल जा सकैत अछि :-

'मेघैर्मेदुरमम्बरं वनभुवः श्यामास्तमालद्रुमैः

नक्तं.... ' जे मूल श्लोक थिक। तकर मधुपजी संगीततत्व प्रधान अलंकार-युक्त कतबाक विलक्षण अनुवाद कयलनि अछि, द्रष्टव्य :-

नीरद-निकर नितान्त निविड़ नभ नयनो नहि संचारी।
बनथल बनल तमालक तरुसँ तोरे कय सन कारी।।
रातुक बेरुक ई गिरधारी।

मधुपजीक शास्त्रीय गीतक शास्त्रीय भाव सेहो अछि, जे भक्ति आ शृंगार थिक। से खाहे त' संस्कृत साहित्यक थिक खाहे विद्यापतिक। से मधुपजीक एहन गीत सभक रचनाक पाछू हुनकर उद्देश्य रहनि परम्परामे जिबैत पंडित वर्गकेँ अपन पाण्डित्यपूर्ण क्षमताक बोध करायब।

मुदा, मधुपजीकेँ कालजयी बनओलक ओ गीतसभ जे मधुपजी द्वारा रचित लौकिक गीत सभ थिक जे सभ अत्यन्त लोकप्रिय भेल अपना समयमे। ओ गीत सभ सहज-सरल भावना-प्रधान अछि, एतेक लोकप्रिय भेल, जे लोक कंठमे बसि गेल आ मधुपजीकेँ अपर विद्यापतिक मान्यता दिअओलक। एहन गीतसभमे एहिठामक जन जीवनक सामाजिक आचरण अछि, धार्मिक लोकाचार अछि, से एहन तत्कालीन तथा परिवेशगत अछि, जाहिमे मधुपजी सृजनरत रहथि। एहन गीत सभमें जे परिवेशगत भक्ति आ शृंगार अछि, ताहिमे कमरथुआ लोकनिक जँ मोनक उल्लास अछि, त' तरुण-तरुणी लोकनिक मनमे उठैत लहरि, तिनका सभक गाढ़ प्रेम आ आकर्षण अछि। एहन गीत सभ रचनाक दृष्टिसँ अत्यन्त सरल अछि। मुदा, एहन गीत सभमे मधुपजीक भाषा-प्रेम प्रकट भेल अछि। ओ भाषा, जाहिमे मधुपजी सृजनरत रहथि, जे एहि क्षेत्रक जनभाषा छल, मैथिली छल, आ जाहिपर हिन्दीक आक्रमण तीव्र भ' गेल छल।

मधुपजी देखलनि जे आब मंच पर हिन्दी गीत गाओल जाइत अछि, विद्यापतिक गीत नहि गाओल जाइत अछि। जँ एहिना चलैत रहत त' मैथिली मरि जायत। एहन चिन्तासँ व्यथित भ' मधुपजी एहन घटना विषय आ लय प्रधान सहज-सरल गीतक रचना कर' लगलाह, जे सभ लेल बोधगम्य होअय, तथा जाहिमे सभ लेल आकर्षण होअय। एहि लेल ओ ओहन उपेक्षित तथा तिरस्कृत जीवनकेँ अपना गीतमे स्थान देबए लगलाह, जकर जीवनक विवरण मधुपजीसँ पहिने आयल नहि छल। ओहि उपेक्षितक जीवन आयल मधुपजीक गीतमे, आ ओ सभ अपन बुझि अपना जीवनक अपना मुहसँ गीत गओलक, जकरा लेल, मधुपजी गीत-रचना कयने छलाह। एहि लेल ओ महाकवि विद्यापतिक भासकेँ अपनओलनि। ओ ओहि सभ पुरान मासकेँ यथासम्भव पुनर्जीवित सेहो कयल, जकर व्यवहार नहि भ' रहल छल अथवा अल्प व्यवहारमे आबि गेल छल। ओ एहि भाषाकेँ लोकप्रिय बनयबा लेल नवसँ नवलयमे गीतक रचना कयलनि। एहन गीत सभ विषय नहि लय-प्रधान अछि। एहि लेल ओ प्रचलित लोक गीतोक लयमे गीतक रचना कयलनि, जेना महाकवि विद्यापतिक 'मोरा रे अंगनमा चनन केर गछिया' अथवा 'सूतल छलहुँ हम वरबा रे गरबा मोती हार' सन गीत सभ अछि।

मधुपजीकेँ सम्पूर्ण रूपसँ अपना भाषाकेँ बचयबाक रहनि, तेँ अपना गीत सभकेँ सम्पूर्ण समुदायमे गयबाक लेल, ल' जयबाक लेल समुदायक विभिन्न इकाइकेँ ध्यानमे राखि गीतक विविध रूपमे रचना कयलनि। हुनकर लोकधुनक एहन गीतसभ समूहमे गाबय जाय बला गीत (CHORAL) अछि, एक व्यक्ति द्वारा गाबय जाय बला गीत (MONODIC) आ नाँचि-नाँचि गाबय जाय बला गीत (DORIAN) अछि। की नाँचि-नाँचि गाओल जायबला गीत मधुपजीक 'हम जेबै कुशेसर भोर....? गीत नहि थिक, जे अत्यन्त लोकप्रिय भेल?

एतेक करितहुँ मधुपजीकेँ बुझयलनि जे अपन एहि नव लयबद्ध गीतसभ द्वारा भाषा-प्रेममे आंशिक सफलता त' भेटि रहल अछि यथोचित नहि। कारण, मधुपजीक समयमे सिनेमाक प्रति लोकमे अद्भुत आकर्षण बढ़ल छल। लोक सिनेमा देखैत छल तथा सिनेमाक हिन्दीक गीत गबैत छल। सिनेमाक ओ हिन्दीक गीत सभ ओहन छल जे सिनेमाक दृश्यमे पात्रक अभिनीत आंगिक चेष्टासँ तथा नव लयक संयुक्त प्रयासँ दर्शक पर गम्भीर प्रभाव छोड़ैत छल, संगहि युवक-युवतीक जीवनकेँ गीतक बोल सेहो किछु अंशमे छुबैत छल। से मधुपजी, ओहन प्रभावशाली गीत सभसँ टाकड़ि रोपि अपन नव लयबद्ध गीत रचि नटुआ सभकेँ दैत रहथि, आ ओकरा सभक फिल्मी गीतक स्थान पर मनमे उपजल आवश्यकताकेँ पूर करैत रहथि। एहन काज क' मधुपजी सिनेमाक गीतक अन्हड़क विरुद्ध एकटा आर अन्हड़ उठओने रहथि। जे कंठ सिनेमाक गीत गबैत छल, से मधुपजीक गीत गाबय। जे कान सिनेमाक गीत सुनैत छल, से मधुपजीक गीत सूनय। ओहि समयमे मधुपजीक गीत धर्रोहिमे उठल डेग साबित छल। मुदा, मधुपजीकेँ एतबा सँ संतुष्टि नहि भेलनि। ओ एहि भाषाकेँ कंठ-कंठ सँ सुनबा लेल अन्तमे सिनेमाक गीतक भासकेँ सेहो उठा' लेलनि अपना गीत-रचना मे। एहन गीत सभमे मधुपजीक भाषा-प्रेम आर बेसी उजागर भेल अछि। से एहि भाषाक हुनकर शब्द-गढ़निक आग्रहमे देखल जा' सकैत अछि, जे सिनेमाक गीतक 'चश्मेबद्दू' सन फारसी शब्द लेल मधुपजी केहन

विलक्षण आँगिक चेष्टाक अर्थ-प्रधान शब्द 'चौंकि चुप्पे' गढ़लनि आ लोकप्रिय बनओलनि?

सिनेमा गीतक बिहाड़िमे मधुपजी मैथिलीमे गीत रचि जे एकटा आर बिहाड़ि उठओलनि, से की हमर विवेक नहि जगओलनि जे हमरा की करक चाही?

मधुपजी मैथिलीकेँ हिन्दीक बिहाड़िसँ नष्ट होयबासँ बचाब' चाहैत रहथि। आ से एखन कतेक प्रासंगिक थिक मधुपजीक जन्मशती वर्षक एहि महान आयोजन पर, चिन्ता करब, जखन हम सभ अपन रचनामे निधोखे भ' हिन्दीक शब्द, मोहाबिरा, क्रियापद आ वाक्य-रचना धरिकेँ अपना लैत छी?

मधुपजी नहि छथि, जे हिन्दीक प्रभावसँ मैथिलीकेँ बचाबक लेल आजन्म लड़ैत रहलाह। मधुपजीक जन्मशती वर्षमे मधुपजीक गीतक भाषा-आग्रहकेँ देखब आ ओहिसँ सीखब कतेक आवश्यक थिक, जे मैथिली भाषाकेँ बेसीसँ बेसी मौलिक बनओलनि।

जे-से। मधुपजी मैथिली गीतकेँ अत्यन्त प्रभावित कयलनि।

हम पहिने कहि आयल छी जे मधुपजी सिनेमा गीतक लय ग्रहण करितहुँ सिनेमा गीतक विरुद्ध गीत रचबाक स्वविवेक जगओलनि। आ तकरे परिणाम थिक जे डॉ० मार्कण्डेय प्रवासी, डॉ० बुद्धिनाथ मिश्र, डॉ० शान्ति सुमन गीतक प्रति समर्पित भ' नहि केवल मैथिलीमे अपितु हिन्दी मे सेहो, सम्पूर्ण भारतक गीतक मंच पर एकछत्र राज क' रहल छथि। मधुपजीक मैथिलीमे गीत-रचनाक प्रति स्वविवेक जगयबेक प्रतिफल थिक जे डॉ० गंगेश गुंजन समस्त मैथिली गीत साहित्यमे अत्यन्त अभिभूत कर'बला श्रेष्ठ आ एहि अमर गीतक रचना कयलनि-

हमरा नहि सोर करू/हमर बाट काटल अछि/गामक सीमान जकाँ / हमर मोन बाँटल अछि।

एकगोट परिजात अहाँक नाम/एकटा बबूर बोन हमर गाम

दुनू गोटेक बीच समय/निस्साँसँ मातल अछि। हमरा नहि सोर करू/हमर बाट काटल अछि।

मुदा, मधुपजी मैथिली गीतकेँ जे बेसीसँ बेसी लोकप्रिय बनाब' चाहैत छलाह, से ओहिमे सहज-सरल लोकजीवनक कम्पनकेँ देखाब' चाहैत छलाह, तथा नव लयक अत्यन्त आग्रही छलाह जे जन समुदाय तकरा तत्काल ग्रहण क' गुनगुनाय लागय। मधुपजीक एहि सपनाकेँ पूर कयलनि रवीन्द्र-महेन्द्रक जोड़ी आ हुनका सभक मंच पर गाओल-'हे रे यार दिलदार/यार कह रे भजार/यार चिन्हलें'-सदृश कतेको गीत सभ।

मधुपजीक कमनीय इच्छामे रहनि जे मैथिली गीतकेँ लय आ भाषाक बल पर एहि रूपेँ पहुँचायब, जाहि सँ ओहि पर पुरबा-पछबाक प्रभाव-सिनेमा तथा भोजपुरी गीत सभ- नहि पड़ि सकय, एहि लेल एहि क्षेत्रक लोकक मौलिक भावनाक अभिव्यक्ति रहय गीत सभमे। से काज थोड़-बहुत सफलतापूर्वक कयलनि अछि गीतकार चन्द्रमणि 'डाँडें पर घैला भसकि गेलै ना'-गीत सभसँ।

निष्कर्षतः कहल जा सकैत अछि जे मधुपजी मैथिली गीतकेँ गति आ दिशा दुनू देलनि। आइ आवश्यकता अछि मधुपजी सनक समर्पित गीतकारक जे एहि क्षेत्रक जनतामे भाषा-प्रेम जगाबथि आ एहि लेल मैथिली गीत एवं एहिठामक जनसमुदायक सांस्कृतिक रुचि आ मनोवांछित खगताकेँ धैर्यसँ अकानथि।

■

रवीन्द्रनाथ ठाकुर

गीत आ मधुप पर सैद्धान्तिक ढंग सँ हमरा लोकनि बहुत गप केलहुँ अछि। प्रकृति मे कोनो जे घटना घटित होइ छै से एकटा निश्चित कारण सँ होइ छै। मधुपक जन्म जे घटित भेल तकरो एकटा निश्चित कारण छलैए। तेँ, ओहि कारणक उपयुक्त परिवेश बनाइए क' मधुपकेँ बूझल जेबाक चाही। जकर माय गीतगाइन होइ, जकर मातामह कवि होथिन आ जकर जन्म मंगल दिन भेल होइ, ताहू मे कोजागराक दिन, जाहि राति चन्द्रमा अमृते टा बरिसबैत छथिन; से मधुपजीक जन्म कविये हेबाक लेल भेल छलनि, से हमरा लगैत अछि। आठे बर्खक अवस्थामे हुनका सँ एकटा गीत प्रस्फुटित भ' जाइ छनि। हुनकर माताक द्वारा संकलित ओ गीत छनि–'दिय' दर्शन हमरहु जगदम्ब। अहाँ माय सगरो संसारक। करू नहि आब विलम्ब/दिय' दर्शन हमरहु जगदम्ब।' देखल जाय जे एही चारिटा पाँती मे मधुपजीक सम्पूर्ण जीवन छनि। गाछ केँ बच्चे मे देखि क' लोक बुझि जाइ छै जे ई गाछ कतय जेतै! आगू कहै छथि जे 'पढ़ि–लिखि होशियार बनी हम, लीखी कविता–गीत/नाची, गाबी, खेली, कूदी/रहओ दोस्त सँ मीत।' एहि परिप्रेक्ष्य मे देखी तँ एही लेल हुनकर जन्मे भेल छलनि, से बुझाइए।

अपना मैथिलीमे शब्द अछि–'गीतनाद'। माने जे गीत केँ नादक प्रयोजन होइछै। ओकरा एक छन्द चाही। आ आठ बर्खक ओहि बालक केँ छन्दशास्त्रक की जानकारी? मुदा, कहल गेल छै जे 'विद्या वनिता वनलता येन गुणे कुलजात। जो बाको निकट से रहे, वाही मे लिपटात।'-से जाहि सँ जतेक ओ लग पड़ैत गेलाह, ताही पर पसरैत गेलाह, सैह हुनकर कविता–गीतक विषय होइत गेलनि।

जँ गीतकारक कोनो एहन पृष्ठभूमि रहलै जे ओ संगीत शास्त्रोक किछु अभ्यास क' सकल तँ ओकरा कोनो आन धुन, कोनो आन भास के प्रयोजन

नहि हेतै। बारंबार ई बात कहल जाइए जे मधुपजी पैरोडी लिखलनि। पैरोडी तँ थिकनि अमरजीक ओ गीत जे 'जय जय भैरवि ससुर भयाओनि'। एकरे पैरोडी कहल जेतै। मधुप तँ मात्र धुन लेलनि। एकटा सांचा लेलनि आ अपन जे तथ्य छलनि तकरा सफलतापूर्वक ओहि मे राखि देलनि। अहाँ सिनेमा–गीतक गप की करै छी? ताहू दिन मे महराज जे हुनका पुरस्कृत केने रहथिन से उर्दू–गीतक एक धुन छलनि। 'मेरे मौला बुला ले मदीने मुझे।' अर्थात् हुनका जे छन्दक प्रयोजन गीत मे पड़ै छलनि, तकर पूर्त्ति जहाँ–तहाँ सँ करै छलाह। एकरा अहाँ 'राइम प्रैक्टिसेस' कहि सकै छियै। आ जे गीत ओ महराज लग प्रस्तुत केने छेलाह–महराज रमेश्वर सिंह सँ हुनका 500 टाकाक पुरस्कार भेटि गेलनि। जाहि आर्थिक स्थिति मे ओ ताहि काल मे छलाह, ओ सोचने हेताह जे एहि गीत–विधा मे रमी किछु दिन। महादेव आ जगदम्बाक भक्ति शुरूहे सँ हुनका भीतर रहनि। ओ एक आस्थावान गीतकार भ'क' आगू बढ़लाह।

हुनकर गीत–संग्रह सभक नाम देखू–अपूर्व रसगुल्ला, टटका जलेबी आ पचमेर। मधुरक प्रति आसक्ति ल'क' चलब ई हुनक सामाजिक सौन्दर्यबोध केँ प्रकट करैए। सपन्दनशील हृदय छलनि हुनकर। मुदा, अहाँ देखबै जे जखन–जखन गीतकारक उदय भेलैए, तखन–तखन स्थापित साहित्यकार सभक हृदय दलमलित भ' जाइ छै। तखन एहन परिस्थिति बनाओल जाइ छै जे फुटा क' कहल जाइ छै–अहाँ भेलहुँ गीतकार, अहाँ केँ पैघ नहि मानब। मधुपजी सेहो एहि चपेट मे एलाह आ अपन सहकर्मी पंडित कविवर्ग सँ उपेक्षित भ'क' जनगीतक बाट पकड़लनि। तखन, मधुपजीक महानता एहि बात मे छनि जे जे जीवन ओ जीलाह तकर अनुभूति अहाँकेँ (अपन गीतक माध्यम सँ) देलनि।

बात ईहो कहल जाइ छै जे वैदुष्य के, पाण्डित्य के सरल अभिव्यक्ति भैये नहि सकै छै। से तँ अपन चयन पर निर्भर करै छै। कोनो मौसम मे जँ अहाँ ए०सी० क्लास मे जेबै तँ अहाँ केँ कंबल ओढ़ाइये क'ल' जायत। मधुपजी तँ ताहू मे जाक' देखलखिन। राधा–विरह–सन महाकाव्य लिखलनि। मुदा, लोकक कंठ मे निवास करब हुनकर पहिल पसन्द छलनि।

हम 1960क बाद मैथिली मंच पर एलहुँ। ताधरि मधुपजी अपन काज पूरा क' चुकल रहथि आ हमर काज तँ ओ बहुते सुलभ क' देने रहथि। गीतक महौल बनल छल। कैक मंच पर हम हुनका संग उपस्थित भेल छी। हम कह' चाहब जे अपना ओतक जे गीत अछि ताहि मे नाद तँ अवश्य अछि मुदा ताल नहि। आन प्रान्तक स्त्रीगणोक गीत सुनबै तँ ओहि मे ढोलक जरूर बाजत चाहे ताल मे बजौ वा बेताल मे। मुदा मिथिलामे प्रचलित समूह गीतमे ताल नहि होइत अछि। एही-कारण सँ ओ विलम्बित सेहो होइत अछि। मधुपजी ताहू क्षेत्रमे बहुत काज केलनि। विदाइ गीत, कोबर गीत आदि एहि प्रकारक प्रयोग छल। तेँ ओ खाली सिनेमेक गीत पर लिखलनि से बात नहि।

मधुपजी चाहे रहथु वा नहि रहथु। ओ जे ईंटा गाड़ि गेलाह ताहि पर जे महल बनत, ओ आठमहल बनौ, दसमहल बनौ, ओकरा ई स्वीकार कर' पड़तै जे हम ओही आधारशिला पर ठाढ़ छी।



मधुप आ हुनक काव्य

फूलचन्द्र मिश्र 'रमण'

कविचूड़ामणि काशीकान्त मिश्र 'मधुप' अपन जीवनक आरंभिक तीस वर्ष बोध-ग्रहण आ शिक्षा-प्राप्ति लेल ओहि समाज आ शैक्षिक संस्था सभमे व्यतीत कयलनि, जतय परंपरागत जीवन-पद्धति आ आचार-विचार केँ जीवनक आदर्श-रीति मानब अनिवार्य धर्म छल। यद्यपि ओहि पद्धतिक आस्था घटि रहल छलैक। रीति ऋणात्मक भय गेल छल। आ सामाजिक काजमे रुचि रखनिहार किछु नवीन विचारक मुखर व्यक्ति सामाजिक असंतोषकेँ संपुष्ट करैत भाग्य आ धर्मक बन्धनसँ आहत जन-समुदायमे किंचित् हलचल सन उत्पन्न कय रहल छल। तथापि कोनो नवीन मार्गदर्शक नीति आ नेतृत्वक अभावमे, संस्कृतिनिष्ठ बनल समाजक आग्रह सँ संस्कृत शिक्षाक ओएह परंपरागत परिपाटी प्रचलित रहल।

पछिला हजारवर्षमे मिथिलाक सर्वाधिक सौभाग्यशाली आ प्रभावकारी शब्द होयबाक श्रेय यदि दुइ गोट शब्दकेँ देल जाय तँ ओ होयत-भाग्य आ धर्म। जनसमुदायक भयादोहन करबाक लेल नियोजित ढंग सँ सामन्त सभ अपन आश्रयी पंडित-मंडलीक द्वारा दहि दुहु शब्दकेँ अपार महिमा सँ मंडित करबाय एहन भयाओन बना देलक जे शुद्ध-बुद्ध जनता भयभीत भय गेल आ देखादेखी भाग्य आ धर्मक दास बनि गेल। मिथिलाक जन-जीवनक दारुण कथा एतहिसँ आरंभ भय गेलैक-कूपमंडूकता, भाग्यवादिता, धर्मांधता आदि सँ आक्रान्त भय गेल।

भारतीय इतिहासक अनुसार सन् 1890क दशकमे शुरू भेल सुविचारित राष्ट्रीय आन्दोलनक बादहि पराधीन देशवासीमे राष्ट्रक अवधारणा बनब शुरू

भेल आ राष्ट्रीय एकताक भावना जाग्रत होअ लागल। ताहि सँ पूर्व भारतक राष्ट्र होयबाक बोध नहियेँ जकाँ छल। मिथिला मे गाँधीक चम्पारण सत्याग्रहक सफलताक बाद किसान-आन्दोलनक संग एहि धारणा आ भावनाक संवाद आयल। जकर भानं किछु वकील आ पढुआ सभ केँ भेलैक। मुदा कोनो मैथिल जमींदार राष्ट्रीय आन्दोलनक देखार सहभागी नहि बनल। संस्कृतक अध्येता ओ अध्यापक तँ सहजहि बाहरी दिन-दुनियासँ दूरे रहैत छलाह जे अंग्रेजी शिक्षा सँ जुड़ल विशिष्ट व्यक्तियो सभ आचारक संग विचारहुमे पंडिते बनल रहब सम्मानजनक बुझथि। फलतः सामूहिक रूपमे भारतक राष्ट्र होयबाक धारणा एतय बहुत पछाति बनब शुरू भेल, सेहो पहिने अंग्रेजी स्कूलक छात्रहि मे। यद्यपि कवीश्वर चन्दा झा अपन गीत काव्यक माध्यम सँ राष्ट्र बोधक सूचना दय देने छलाह।

सन् 1906 ई० सँ 1911 ई०क बीच उत्पन्न किछु प्रतिभावान् युवक एहन भेलाह जनिकामे कवित्वक बीज अंकुरित छलनि आ कवित्वक समीक्षणशक्ति निहित छलनि, जे अपन सारस्वत अवदान सँ मैथिली साहित्यकेँ समृद्ध करबाक लेल लेखनीबद्ध भेलाह, ताहि मे एकमेव मधुप छथि जे संपूर्णतः कवि बनल रहलाह।

मधुपक समक्ष मैथिली समाजमे दू कोटिक काव्यप्रेमी छल। एक, रस-विशेषमे रचल काव्यक शब्द-माधुर्य सँ प्रभावित होइत छल तँ दोसर, रस-विशेष मे रचल काव्यक अर्थाश्रित चमत्कार सँ आनंदित होइत छल। एक दिस जँ अर्थ धरि पहुँचबाक क्षमता सँ वंचित लेल काव्यक रसास्वादनक भूमिका शब्दालंकार प्रस्तुत करैत छल तँ दोसर दिस अर्थ बोधक क्षमता रखनिहार लेल काव्यक रसास्वादनक भूमिका अर्थालंकार प्रस्तुत करैत छल। मनोरंजनक साधन योग्य एहि दुहू अलंकारक किछु प्रभेदक विन्याससँ रस-विशेष काव्यक निर्माणमे मधुप अपन मेधाक अधिकाधिक उपयोग कयलनि। ई अधिकाधिक उपयोग आवश्यकता सँ बहुत बेशी भय गेल। कविक ई अलंकार-प्रेम कतहु भावक प्रस्फुटन मे तँ कतहु रसक प्रकाशनमे बाधा उत्पन्न कयलक तँ काव्यक सहजताक हनन सेहो कयलक। ई जनितहु मधुप आलंकारिक विवशताकेँ अंगीकार कय लेने छलाह। संभव अछि, हुनक मुक्तक सँ महाकाव्य धरि सायास ओ अनायास आयल ई असहजता-अपन संवर्गी

कविक बीच पंडित कविक रूपमे यशस्विताक संपोषणक माध्यम बनल हो। कारण, जे किछु कवि मित्रेक द्वारा मधुप अभिजात वर्गक बीच 'काड़ा-छाड़ा'क कविक रूपमे प्रचारित भेल छलाह।

दीक्षान्तक उपरान्त मधुप 1940 मे इंगलिश हाइस्कूलक 'हेडपण्डित' बनलाह। पंडितक संग 'हेड' लागब बड़ काजक भेल। 1942क अगस्त-क्रांति सँ तीन-चारिमास पूर्व हिनक 21 गोट काव्यक संग्रह 'झांकार' अबैत अछि। झांकारमे कविक इतिहास-बोध, सांस्कृतिक चेतना ओ राष्ट्रीय भावनाक संग भविष्यक प्रति एक नव आत्मविश्वास प्रकट भेल अछि। ओहि समय मे समस्त भारत स्वाधीनताक लेल आन्दोलित छल। आन-आन भाषा मे स्वतंत्रता मूलक आ आन्दोलनीक उत्साहवर्धन योग्य काव्य रचल जा रहल छल। झांकारक आधासँ अधिक काव्य एही दृष्टि सँ लिखल गेल अछि। मुदा नैयायिकक भाषामे तिल-तण्डुलवत्। तुलसी फूलक चाउरमे जेना तिल मिज्झर भय गेल हो। भावक आवेश अर्थात् ओजपूर्ण रहितो कविता सभ पदक लालित्य आ अलंकारक छटाक कारणे स्वतंत्रता-आन्दोलन योग्य स्पष्ट आ स्वतंत्र अस्तित्वक नहि भय सकल-अपन सार्थकता सिद्ध नहि कय सकल। ओना, ओहि समय मे इएह कविता काव्य-रसिक ओ स्वाधीनताकामीकेँ उत्साहित कयने हो-से भय सकैत अछि। तथा आइयो ओकर किछु पाँती, किछु वस्तु आ किछु विचारमे उत्तर आधुनिक विचारक केँ पुलकित करबाक चेतना संरक्षित छैक। इंगलैण्डक कवि मिल्टन, इटलीक लेखक मैजनी, फ्रांसक लेखक रूसो आ भौलटियर सन कवि-लेखकक विचारोत्तेजक रचना-दृष्टिसँ प्रेरणा ग्रहण करबाक आग्रह कवि कयने छथि तँ भारतमे साम्यवादक स्थापनाक आग्रह सेहो देखबैत छथि। जारशाहीक समाप्ति कामीकवि ब्रितानी हुकूमतक विरूद्ध स्वतंत्रता-सेनानीक संघर्ष पर हर्ष व्यक्त करैत देश-विदेशक तत्कालीन राजनीतिक स्थिति पर सेहो दृष्टिपात कयने छथि।

1954 ई० मे मिथिला राज्यक लेल आन्दोलन भेल छल। एहिमे मधुबनी-दरभंगा सँ कलकत्ता धरिक उत्साही मैथिल सम्मिलित भेल छलाह। ओही समय मे क्रान्ति प्रेमी मधुप मैथिल समाज केँ जगयबाक लेल उद्बोधनात्मक काव्य 'ताण्डव' (प्र. 1959) प्रस्तुत कयलनि। एहि मे ओजगुण युक्त 52 गोट पद्य छैक। यद्यपि ओजक व्यंजक वर्णक संयोजन सँ पदक रचना

नहि भेल छैक। संस्कृत काव्य-शास्त्रक निर्देश संस्कृत काव्यक लेल उपयुक्त आ अनिवार्य भय सकैत अछि, मैथिलीओक लेल होअय-ई जरूरी नहि छैक। प्राय: सएह मानि कय मधुप वीररसक उपयुक्त ताण्डव प्रस्तुत कयलनि आ सिद्ध कयलनि जे संस्कृतनिष्ठ शब्दक संग मैथिलीक अपन शब्द आ भावक सामर्थ्य सँ ओजपूर्ण काव्य रचल जाय सकैत अछि। ओना, वीररसक काव्यमे बहुधा भावक अतिरेक रहैत छैक, से एहूमे आद्यन्त अछि।

ताण्डवमे मिथिलाक तत्कालीन स्थिति, सामाजिक वातावरण, वर्ण आ वर्गभेदक रोग, अंग्रेजी सरकार ओ जमींदारी-प्रथा खतम भय गेलाक बादो लोकमे व्याप्त भय, अशान्ति आ एकताक अभावक चित्रण अछि तथा समाजकेँ जागरित करबाक प्रयासक संग स्वाधीनताक अनुभव करबाक आ ओहि सँ प्रेरणा ग्रहण करबाक अनुरोध अछि।

विषयक विविधता आ सहज अभिव्यक्तिक दृष्टिएँ 'शतदल' (प्र. 1944 ई०) केँ कविक आ मैथिलीक उपलब्धि कहल जाय सकैत अछि। हम अपनाकेँ स्वतंत्रतासँ पूर्व मधुपक युगमे ल' जाइत छी आ दृष्टिक मिलान करैत छी तँ प्रतीत होइछ जे मधुपक युवा-युगमे परतंत्रता सँ बाहर अयबाक लेल कवि-लेखक अपन सामाजिक दृष्टिक निर्माण ओ विकासक लेल व्यग्र छलाह तँ हुनक परवर्ती कवि-लेखक अपन समाजशास्त्रीय दृष्टि केँ स्वच्छंदतापूर्वक विकसित करबाक लेल आतुर रहलाह अछि। यैह आतुरता कतहु दुनू पीढ़ीक साहित्यकारकेँ एकत्र करैत अछि तँ कतहु दूरी सेहो बढ़बैत अछि। जेना, एक पीढ़ीक रहितो मधुप कोनो ठाम यात्रीक समीप छथि तँ वेशी ठाम दूर-बहुत दूर। आ यात्री अपन परवर्ती कवि राजकमलक कतहु लग छथि तँ कतहु अति दूर। एकर एकमात्र कारण अछि-काव्यगत प्रवृत्ति, ओकर उपस्थापन शैलीक चमत्कार आ विचारक नवीनता।

शतदलमे नवीन विचारक उत्प्रेक्षापूर्ण उपस्थापन भेल अछि। जीवनक महत्त्व ओ आदर्श, अछूतोद्धार, मनुष्यताक विकास आदि प्रसंग पर जमि कय कवि अपन युगक बहल बसातक अनुरूप भावक अभिव्यंजन कयलनि अछि। जीवन सँ अधिक जाति, जाति सँ अधिक वंश आ वंश सँ अधिक धन केँ महत्त्व देनिहार तथाकथित सभ्यवर्ग केँ जाहि तरहेँ मधुप साहित्यिक व्यंजना सँ

लथारलनि अछि आ आगत समयक पूर्वाभास देलनि अछि ओ आइयो प्रासंगिक अछि आ ताबत धरि प्रासंगिक रहत जाबत मनुक्खक असमान मूल्य पर भाओ-बट्टा होइत रहत।

'गंगातरंगावली' (1974 ई०) खण्डकाव्य (सन्देश काव्य) थिक। लालित्यपूर्ण एहि काव्यमे साहित्यिक पाण्डित्य देखौलनि अछि-मधुप। विशेषता ई जे पण्डित कवि एहि मे सामाजिक विषमता, प्रशासनिक अक्षमता ओ धार्मिकता पर विमर्श करैत नहरक निर्माण कय कृषिकार्यक हेतु गंगाजलक उपयोग करबाक प्रयोजनकेँ रेखांकित कयलनि अछि। भावतत्त्व प्रधान एहि काव्य मे नारीक स्वावलम्बिता पर कविक ध्यान अधिक गेल अछि। ओ चाहैत छथि जे गंगे जकाँ नारी अपन जीवनक निर्धारण स्वयं करय।

पूर्वभूमि ओ समापन अंश सहित सात सय पैंसठि दोहाक संकलन थिक-'मधुप सप्तशती' (1992 ई०)। ई दोहा सूक्ति थिक, जे उपदेशप्रद होइत अछि।

मधुपक परिचय शतक (1988 ई०) संदेशकाव्य थिक। ई कविक आत्मपरिचय नहि, जन-जीवनक परिचय थिक। मधुपकेँ जे पढ़य चाहथि ओ परिचय शतक सँ पढ़ब शुरू करथि तँ हुनक कवित्व शक्ति आ शिल्प-शैली ओ वस्तुक उपस्थापनमे उत्तरोत्तर भेल परिवर्तन-परिवर्धन सँ परिचित होयबामे सुलभता हेतनि।

मधुपक 'घसल अठन्नी' सर्वप्रिय कथाकाव्य अछि। एहि कथाक मुख्यपात्र बुचनी बारहो कलासँ ऊगल जेठी सूर्यक तापकेँ सहन कय लैत अछि, मुदा तत्कालीन जमींदारक प्रतापकेँ सहन नहि कय पबैत अछि। श्रमजीवी पर पूँजीपतिक अत्याचार ओ अमानुषिक कार्य-व्यापारक उदाहरण स्वरूप एहि कथाकाव्यक विशेष महत्व अछि। प्रस्तुत कथामे असहाय विधवा बुचनीक हत्याक उपरान्त घसल अठन्नीक मानवीकरण होइत अछि। चन्द्रमाक सविषादहास द्वारा अर्थात् कृष्णपक्षक पड़ीव (प्रतिपदा)क एक कलाहीन चन्द्रबिम्बक लालीमे, जखन धरती पर झलफले रहैत छैक, मूल्यहीन मनुष्यताक प्रतीक ओ घसल अठन्नी बजै अछि-'हम कतय जाउ?' सामन्ती युगमे दीन-हीन मनुक्खक जहिना सभ दिस सँ शोषण भेलैक तहिना मनुष्यताक

अवमूल्यन सेहो भेलैक। शोषित श्रमजीवी केँ श्रम मात्रक बल छलैक जकर नेपथ्य मे निर्गुण बनल कलाहीन मनुष्यता नुकायल छल। तेँ ओ घसल अठन्नी चिन्तित मनसँ कहैत अछि जे 'हम फेर घसले अदृष्टबला लग जाउ'? आइयो ई प्रश्न विश्वीकरण युगमे हमरा सभकेँ तखन-तखन निरुत्तर कऽ दैत अछि, जखन-जखन भारतमे धन-कुबेर सबहक स्वेच्छाचारितासँ निष्ठुरतापूर्वक मानवता ओ राष्ट्रीयताक हत्या होइत अछि। 1940 ई० सँ 50 ई०क मध्य रचल गेल मधुपक बारहो कथाकाव्य (द्वादशी, प्र. 1979) अपना युगक प्रगतिशील समाचार प्रस्तुत करबा मे सफल भेल अछि।

गीतकाव्यक क्षेत्रमे मधुपक अधिक ख्याति अछि। लोकप्रिय भास पर प्रचुर गीतक रचना कयलनि। कथाकाव्यक निर्माण विकल्पमे कयने छलाह। संस्मरणात्मक (वा आत्मकथात्मक) काव्यग्रंथ 'प्रेरणा पुंज' (प्र. 1980 ई०) मे कवि कहलनि अछि जे कवि-सम्मेलन मंच पर गीतक प्रस्तुति मे ईशनाथ झा सर्वाधिक यश प्राप्त करैत छलाह। तखन ओ कथाकाव्यक निर्माण आ मंच पर ओकर कलात्मक पाठ कय यश पयबामे मंचीय वा समारोही कवि सभसँ अगुअयलाह। श्रोता-समुदाय शृंगार सँ वेशी वीर, वीर सँ वेशी हास्य आ हास्य सँ वेशी करुण रस सँ प्रभावित ओ आह्लादित होइत छल। बात-बात मे एक बेर सहरसा-स्थित कविसम्मेलन-मंच पर काव्य-पाठक समय मे हास्यरसावतार प्रो० हरिमोहन झा तथा करुणरसक एकाधिकार कवि मधुपक बीच प्रतिस्पर्धात्मक काव्य-पाठ शुरू भेल। मधुपक 'नवान्न' कथाकाव्य सुनि कय प्रो० झा भाव-विह्वल भय गेलाह आ हृदय सँ मधुपकेँ सफलताक साधुवाद देलथिन।

मैथिल महासभाक विद्वत् परिषद् द्वारा मधुप 'कविचूड़ामणि'क सम्मानोपाधि पओने छलाह। विद्वज्जनक ओहि ऋण सँ उऋण होयबाक लेल चाहय कृतज्ञता ज्ञापित करबाक उद्देश्य सँ 'राधा विरह' (प्रका. 1969 ई०) महाकाव्यक रचना कयलनि। सत्रह सर्ग मे विभाजित राधा विरह 976 छन्द ओ कथा-प्रसंगक अनुकूल कतिपय गीतक संयोजन सँ विप्रलंभ (वियोग) शृंगारक महत्त्वपूर्ण प्रबन्ध काव्यमे परिगणित होइत रहत। नायकेँ कृष्णक मथुरागमन केँ आधार बनाय कथा-वस्तुक विस्तार भेल अछि। नायिका छथि राधा, जे कृष्णक वियोगमे लौकिक-अलौकिक मनोभावक अभिव्यक्ति सँ कथाकेँ चमत्कृत करैत छथि। मदन-मानमर्दनक प्रसंग, महारासक पहिने कृष्णक अनासक्तियोग, राधाक

स्वप्न-वर्णन तथा उद्धवक प्रति राधाक कथन मे नारीक प्रति पुरुषप्रधानसमाजक क्रिया-कलापक उद्भावन-कवि चूड़ामणि मधुप स्वत: स्फूर्तकल्पना सँ कयलनि अछि। पदलालित्य आ अर्थगौरवक दृष्टिएँ राधा विरह मैथिलीक श्रेष्ठ महाकाव्य मे जानल-मानल जायत। मुदा आधुनिकताक दृष्टि सँ अपन रचना कालक प्रतिनिधित्व कऽयवला ई प्रबन्ध काव्य नहि भ' सकल।

राधा-विरह मात्र नहि, मैथिलीक अधिकांश प्रबन्धकाव्य मैथिलीक स्वभावक अनुकूल नहि, संस्कृत प्रबन्धकाव्यक अनुरूप रचल गेल अछि। फलस्वरूप, एहि प्रबन्धकाव्य सभमे रस भेटत, अलंकार भेटत, संस्कृतनिष्ठ शब्द भेटत आ सन्धियुक्त ओ सामासिक पद भेटत। मुदा सोझाँ-सोझी जीवन नहि भेटत, युगक यथार्थ चित्र आ लौकिक पक्षक राग-विराग नहि भेटत। जेना ओ साहित्यिक कृति अपना युगक लोकक लेल नहि, भारवि-दण्डी ओ माघकेँ आश्वस्त करबाक लेल लिखल गेल हो। आचार्य भामहक कथन एतय सटीक बैसैत अछि जे 'काव्य यदि शास्त्रे जकाँ गंभीर भ' जाय, बिना गुरुसँ पढ़ने ओकर अर्थ नहि लागय तँ काव्य आ शास्त्रमे अन्तरे की रहि जायत'?

मधुपक काव्य-क्षेत्र बहुत विस्तुत अछि। ओहिमे कवि, पण्डित कवि आ कविचूड़ामणि-एहि तीनू रूपकेँ साधिकार स्थापित कयलनि अछि। हुनक बहुतो रचनाक उल्लेख एतय नहि भ' सकल अछि। गीतक माध्यम सँ अपन सकभरि ओ आनभाषाक प्रभावकेँ रोकने रहलाह। मैथिलीक लेल सतत साहित्यिक संघर्ष करैत रहलाह आ अपन विविध रचना सँ जन-जनक कवि होयबाक गौरव अर्जित कयलनि। अन्तमे, निस्संदेह कहल जा सकैछ जे मधुप आ हुनक काव्यकेँ जखन-जखन मन पाड़ल जायत, साहित्यिक आ सामाजिक विमर्शक हेतु प्रासंगिकता परिलक्षित होइत रहत।

■

मधुपक 'मुक्त-मधुप'

देवकान्त मिश्र

मैथिली-साहित्यक वर्त्तमान युगक सर्वाधिक लोकप्रिय महाकवि कविचूड़ामणि प० काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क एकमात्र महाकाव्य 'राधा-विरह' प्रकाशित छनि, जाहि अमर कृति पर कवि केँ 1970 ई०क साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्राप्त भेल छलनि। राधा-विरह सत्रह सर्गमे विभाजित अछि। राधा-विरह नायिका-प्रधान महाकाव्य थिका। स्पष्ट अछि, एकर नायिका राधा थिकीह। एहि मे कृष्णक मथुरागमन केँ केन्द्र मानि राधाक विरह-व्यथाक विस्तृत वर्णन भेल अछि। 'विद्यापति' नामक दोसर महाकाव्यक चर्चा यत्र-तत्र सर्वत्र चलैत रहल, मुदासे अपूर्ण भेल एखनो अप्रकाशित छनि।

'मुक्त-मधुप' कविचूड़ामणि 'मधुप'क तेसर महाकाव्य थिकनि जे पूर्ण भेल एखन धरि अप्रकाशित छनि। यद्यपि एहि ग्रन्थक पाण्डुलिपि सम्प्रति प्रेसमे छपबाक हेतु चल गेल अछि, विश्वास करैत छी जे यथाशीघ्र सुधी पाठक-वृन्दक हाथ मे ई आबि जायत।

'मुक्त-मधुप'क रचना कविचूड़ामणि 1977 ई० मे कयने छलाह। अपन सेवा-निवृत्तिक अवसर परा दि० 15 फरवरी 1977 ई० केँ एकर रचना आरम्भ भेल छल आ बीच बीच मे एगारह टा दिन केँ छोड़ि 4 अप्रील 1977 ई० केँ एहि ग्रन्थक समापन भेल छल। अर्थात् सैंतिस दिन मे एहि महाकाव्यक रचना 'मधुप' सम्पन्न कयलनि। हुनकहि शब्दमे –

'फर्वरीक पन्द्रह तारिख सँ त्यक्त एगारह दिन बिच केर,
लिखित, चारि एप्रिल सतहत्तरि केँ लेने भावनाक ढेर
'मुक्त-मधुप' परिपूर्ण कैल सेवा सँ मुक्त मधुप, जयकार
करइत माता मैथिलीक एखनौं सुनाओल निज गुञ्जार'

एहि कृतिक समापनक सूचना मैथिली अकादमीक तत्कालीन अध्यक्ष परमश्रद्धेय श्रीकान्त ठाकुर विद्यालंकार केँ प्राप्त भेलनि। ओ अपन जिज्ञासा 'मधुप'क लग प्रेषित कयलनि। दि० 2.8.77 केँ 'मधुप' हुनका अपन उत्तर पठौने छलाह। ताहि पत्रक किछु अंश हम एत' प्रस्तुत कर' चाहब–

'....................

....

श्रीमान्! थिक सत्ते,
निज अवकाशप्राप्तिक दिन हित,
सैंतिस दिनमे विरचित,
पन्द्रह सर्गात्मक अछि नूतन
मुक्त-मधुप अभिधानेँ परिचित
महाकाव्य सेवार्थ उपस्थित।
प्रकृति-चित्र, ऋतुवर्णन,
छन्दक परिवर्तन, करुणाक, सघन घन,
सकरी सँ दक्षिण बहेड़ा धरि केर
विकीर्ण विलुप्त प्राय इतिहास
ऐतिहासिक पावन थल,
भेल भग्न अवशिष्ट
तथा बहेड़ा केर
चतुर्दिक-संस्थित-तीर्थ
नदी पुरान गढ़ डीह,
ख्यातनामा विशिष्ट जन केर
सत्य-चित्रण सँ चित्रित-काय-निकाय सरूप,
जगदम्बाक कृपासँ अल्प-समय-कृतजे सम्पन्न।
किन्तु एकर नायक हम अपनहिं,
आ आर्थिक युग केर,
सर्वश्रेष्ठ-सुन्दरी ख्याता छथि सेवा साक्षात्।
तनिके ग्रहण त्याग
योग वियोग उपेक्षा

करूण-अपेक्षा-वश-अनुराग,
एवं हमरे आत्मकथात्मक वस्तुजात सविभाग
ऐ पुस्तकमे प्रस्फुट कैलक 'मधुप'क गुञ्जन-राग।
एतदर्थ एकादमीक जौं प्राप्त हुए आदेश,
शीघ्र प्रेस कापी करबा क' प्रस्तुत करबे
अनुगृहीत भ'ल' बिनु लवणक साग

....

....................................,

अकादमीक द्वारा पाण्डुलिपि मङाओल गेल। समय बितैत रहल। लगभग दू वर्ष बीति गेल। पत्राचार चलैत रहल। मुदा, एहि कृतिक प्रकाशन अकादमी द्वारा नहि भेल। अध्यक्षक इच्छा रहितो तत्कालीन महंथ लोकनिक अनिच्छाक कारणेँ एकर प्रकाशन-कार्य दाबल रहल। अत्यन्त व्यथित भेल 'मधुप' पाण्डुलिपि घुरा देबाक आग्रह कयने छलाह आ अकादमी पाण्डुलिपि 'मधुप' केँ घुरा देने छल।

उपर्युक्त पत्रकेँ आ' प्रसंगकेँ हम मात्र एहि लेल उल्लेख कयल अछि जे एक तँ पत्रक द्वारा मधुपेक शब्दमे महाकाव्यक विषय-वस्तु आ विशेषता पर प्रकाश पड़ैत अछि आ दोसर ई जे अकादमीक षड्यन्त्र सँ जखन 'मधुप' एहि तरहेँ प्रभावित भ' सकैत छथि, तखन सामान्य साहित्यकारक परिस्थिति केँ श्रोता आ पाठक स्वतः आकलन क' सकैत छथि। ओना एत' इहो कहि दी जे एहि घटनाक किछु समयक बाद जखन 'मधुप' केँ अकादमीक द्वारा एकल काव्य-पाठक लेल आमंत्रित कयल गेलनि तँ ओ अपन सबटा व्यथा केँ बिसरि गेलाह। ओ तँ मान अपमान सँ ऊपर छलाह। लिखनहु छथि–

'क्यो प्रशंसा पूल बान्हथु, निन्द्य अथवा क्यो वखानथु,
देथु क्यो सम्मान माला, वा पिआवथु ग्लानि हाला,
किन्तु नहि से भेद हमरा, जेँ 'मधुप' अविकार छी हम
एक टूटल तार छी हम'

अकादमीक आग्रह केँ स्वीकार करैत 'मधुप' पटना गेल छलाह। एकल काव्य-पाठ भेल छलनि। आ ताहि लिखित एकल काव्य-पाठक पाण्डुलिपि केँ

पाछाँ 'प्रेरणा-पुञ्ज' नामेँ प्रकाशित क' अकादमी यशस्वी बनल। पुनि प्रायश्चित-स्वरूप कविचूड़ामणिक गाम (कोर्थु) आबि अकादमीक पदाधिकारी लोकनि हुनका प्रेरणा-पुञ्ज पर 1983 ईक 'विद्यापति पुरस्कार' सँ सम्मानितो कयने छलाह।

'मधुप' साहित्यक गहन अध्येता आ सुविख्यात साहित्यकार-समीक्षक डा० भीमनाथ झा मुक्त-मधुपक प्रसंगेँ अपन कृति 'कविचूड़ामणिक काव्यसाधना' मे लिखैत छथि–'सन् 1939 ई०मे कवि सिमरा (मुजफ्फरपुर) संस्कृत विद्यालयमे अध्यापन-कार्य आरम्भ कयलनि तथा सन् 1940 ई० सँ 5 अप्रैल 1977 ई० धरि जयानन्द उच्च विद्यालय, बहेड़ा (दरभंगा) मे प्रधान पण्डितक पद पर रहलाह। एहि जीविका सँ अवकाश ग्रहण करबाक अवसर पर कवि पाछाँ दिस घूरि क' तकलनि तथा एहि अन्तराल मे घटित अनेक घटनाकेँ, जीवनक विभिन्न आयामकेँ, उत्थान-पतन केँ, पद्यबद्ध क' लेलनि। एहि काव्यमे कविक जीवनक 38 वर्षक इतिहास तँ सहजहिं जोगाओल अछिए, एहि अवधिक मैथिलीक विकास-गाथा, साहित्यिक इतिवृत्ति, संस्मरण आदि सेहो गुंफित अछि।' पृ.सं.– 217-218

'मुक्त-मधुप' महाकाव्यक कथा-वस्तु केँ संक्षेप मे क्रमशः सर्गात्मक रूपमे हम प्रस्तुत करैत छी–

पहिल सर्ग

आरम्भ मे दू पद्यमे मंगलाचरण अछि जाहिमे कवि अपन इष्टदेवी छिन्नमस्ताक स्वरूप ध्यान करैत एहि कृति केँ निर्विघ्न सम्पन्न करयबाक मंगल कामना कयने छथि–

'प्रत्यालीढ़ पदन्यस्ता, कचमोचन विन्यता, जगदम्ब-
विध्वस्तारि-छिन्नमस्ताकेँ सुमिरि 'मधुप' बुझि निज अवलम्ब
मुक्त-मधुप लिखि रहल सहसदल-मुक्त-मधुप बनबथु से माय
मुक्तमधुप-रूचि न जँ निजे पद सँ न मुक्त 'मधुप'क हो काय'-पद सं.-2

एहि सर्गमे सेवाक महत्ता सेवकक परिस्थितिक बड़ नीक जकाँ आ वृहद रूपेँ वर्णन भेल अछि। साहित्य-व्याकरणक आचार्य क' वेदान्तक शास्त्री कयलाक बाद पारिवारिक भार सँ दबल 'मधुप' केँ मुजफ्फरपुर जिलाक सिमरा

संस्कृत विद्यालयमे प्रधानाध्यापक पद पर सेवा आरम्भ कर' पड़ल छलनि 1939 ई० मे, तकर वर्णन भेटैत अछि। सेवकक परिस्थितिक एकटा चित्र–

'शिशिरक शीत-लहरि सँ हरि हरि करइत सिर सिर गात
चूल्हि बन्न, बिनु अन्न देखि कनइत हकन्न नवजात
केहनो समय, सभय ड्यूटी हित सेवक दशक बजैत
अक्षर-ब्रह्मक रक्षा हित हस्ताक्षर अछि न तजैत'– पद सं०-10

द्वितीय सर्ग

एहि सर्गक आरम्भ मे सिमरा प्रवासमे भरपूर सुख-सुविधाक वर्णन, निवासस्थानक आगाँ मे बहैत गण्डकीक शोभाक कथा, गामक सम्पन्नताक आ ग्रामीणक विद्या-कला-संस्कृतिक प्रति समर्पणक चित्रक संग-संग अपन दैनिक चर्याक उल्लेख पबैत छी। सब तरहेँ सुखमय समय बितबितो अपन कष्ट केँ कवि निम्न रूपेँ वर्णन कयने छथि–

'हो न कलेशक लेश तते, जतबा लिखबाक न अवसर पाबि
पाबित छन बितबी, बित भरिहित हारी थान मुधा मुँह बाबि
कर्म-कलाप-अरातिक तेजल, बारह बजइत रातिक बाद
मैथिलीक सेवाक लीक केँ पकरि चली, मचली साह्लाद' – पद सं.-27

भरि भरि राति कविता लिखबाक कारणेँ जागरण आ भरि दिन अध्यापनमे समय बितैब। कविक मानसिकता बदल' लगलनि, स्वास्थ्य खस' लगलनि। नौकरी केँ छोड़ि अपन सम्पूर्ण समय मातृभाषाक सेवामे आ मैथिलीक आन्दोलनमे लगा देबाक भावनाक उदय हृदयमे उत्पन्न भेलनि–

तेँ झट पट निष्कपट मातृ-मन्दिर-पट खोलि अर्चना हेतु,
मन सँ माँ केँ काव्य-सुमन पढ़बैत उड़ाबी भाषा केतु
करी न अकरी बनि जीवन भरि नौकरीक कखनौँ विचार
ध्येय सर्वदा राखी मिथिला मैथिल मैथिलीक उद्धार– पद सं.-34
ल' निर्णय, सेवाक त्यागक' देबा लै देवादिक अम्ब-
केर ध्यान क' कलमे नहि रहितहुँ कलमेक कैल अवलम्ब
लीखक हेतु निवेदन, गूनि वेदन बढ़ि रहले हो न सम्हार,
हार नयन-जल-कण-मोती केर दैत माँक पद पर उपहार'– पद सं.-35

एहि निर्णयक क्रममे रातिक एक बाजि रहल छल, कविक आँखि लागि गेलनि। ओ सपना देख' लगलाह–

'सहासा सोल्लासा हरइत निराशा सुनयनी
समुन्नाशा, नशातुरक जनु साक्षात जननी
नय-प्रीता, रामा, परम अभिरामा गुणवती
दिऐ शिक्षा-भिक्षा मुखर-मुख-पद्माञ्चल ल'क' – पद सं.-37

तेसर सर्ग

स्वप्नमे कविकेँ सेवा-देवीक द्वारा जीवनमे सेवा (नौकरी) क महत्ताक वर्णन वृहद रूपेँ करैत छथि। जे व्यक्ति सम्पन्न नहि अछि, ओ जँ सेवाकेँ त्यागि जीवन-पथ पर अग्रसर होम' चाहत तँ से असम्भव। परिवारक भरण-पोषणक लेल, अपन सर्वांगीण विकासक लेल, साहित्य आ समाजक सेवाक लेल, कोनो युगमे आजीविका अनिवार्य रहल अछि। आजीविकेक छत्रछाया मे लोक जीवन-पथ पर गतिशील रहि सकैत अछि। सेवा-देवीक व्याजसँ कवि सेवाक अनिवार्यता पर बड नीक जकाँ प्रकाश दैत छथि। उदाहरणार्थ निम्नांकित अंशकेँ देखल जाय–

'कलमे केवल वल बुझि कल मे रहक न करू मनसूवा
अर्थक बिना अनर्थक संभव, देखू घुमि भरि सूवा
घरक समस्या प्रथम नमस्या, तखन बजौ इसराजे हे– पद सं.-4
घुमि झुमि कविते टा पढ़ि देखि न सकब चूल्हिमे उत्करे
मकरा-सूत-वितान-झपलि तनिका लखि होयब मूक रे
शिशु निरन्न कनइत हकन्न लखि सन्न हेता कविराज हे– पद सं.-7

सेवा-देवी जीवनक परम-सत्य सँ परिचित करबैत अन्तर्धान भ' जाइत छथि, कविक निन्न टूटि जाइत छनि, ओ स्वप्न-कथित वार्त्ता पर तर्क-वितर्क मे लागि जाइत छथि।

चारिम सर्ग

निन्न टुटला पर कवि अपन स्थिति पर विचार कर' लगैत छथि। सेवाक महत्ता आ ताहि सँ फराक भ' केवल मातृभाषाक सेवा कयला सँ जे विषम

परिस्थिति उत्पन्न भ' सकैत छनि ताहि पर नीक जकाँ चिन्तनशील बनैत छथि। अंततः नौकरीकेँ आवश्यक मानैत ओ निष्कर्ष करैत छथि–

'तदुपरान्त अतिश्रान्त कतेको शोचि कैल निष्कर्ष
मध्यम मार्ग बुद्ध भगवानक धैनहिं हैब सहर्ष
करब नौकरी सैह, जाहिमे थोड़े लागय काल
समय बचाय, नचायब कलमो, रहितहुँ गृह-जंजाल'– पद सं.-16

किन्तु ताहिमे सिमराक नौकरी वाधक बनैत छनि। नीक आय आ सुख-सुविधा रहितो मिथिलाक माटि सँ हटल रहबाक कारणेँ जाहि तत्परताक संग मातृभाषाक सेवाक व्रत ठनने छथि, ई स्थान ताहिमे बाधक भ' रहल छनि–

'एहिठाम सुनि सहन करत नहि क्रान्तिक कटु ललकार,
एहिठाम मैथिली-मुकुट-मणि गढि न सकब सोद्गार
एहिठाम झरि जैत व्यर्थमे कल्पनाक सब फूल
एहिठाम भ' जैब ढ़ेङ सँ दावल दूविक तूल'– पद सं.-24

सिमरामे रहैत मधुपक आर्थिक स्थितिमे बहुत सुधार भेल छलनि। तकरा छोड़ैत चिन्तित अवश्य भेलाह, मुदा एतेक संतोष अवश्य छलनि जे वर्ष भरिक लेल पारिवारिक खर्चाक ओरियान क' ओ गृहिणीकेँ द' आयल छथि। फलतः ओ त्याग-पत्र द' देलनि आ निर्णय कयलनि–

'या' भेटत नहि मनक नौकरी 'ता' पढ़बे वेदान्त
दूइ खण्ड आचार्यक से सम्पन्न करब सिद्धान्त
ल' हिय, सब सामान-सहित गेलौहँ मुजफ्फरपुर
विदा छनक जन-जन नयनक जल सम्बल ल'द' पूर'– पद सं.-30

पाँचम सर्ग

मधुप मुजफ्फरपुर स्थित धर्म समाज संस्कृत महाविद्यालयमे पण्डित प्रवर जटेश्वर झाजीसँ वेदान्त पढ़' लगलाह, जमिकेँ कविता लिख' लगलाह। मित्र-वर भुवनजीक संग मिथिला-मैथिल-मैथिलीक हित साधनक बात सोच' लगलाह। 'विभूति' पत्रिकाक लेल कविताक सृजन कर' लगलाह। किन्तु, इहो चिन्तन चलैत रहलनि जे किछु दिनक बाद परिवारोक खर्चा घटत, अपन जेबी

से छुच्छ रहैछ। एहन समयमे अपन वाल्यकालसँ एखन धरिक एक-एकटा घटना मोन पड़ैत छलनि। कोन परिस्थितिमे गाम (कोइलख) छोड़ि मातृक (कोर्थु) मे रहब आरम्भ कयलनि, केहन विषम परिस्थिति सबसँ जुझैत प्रथमा, मध्यमा, शास्त्री ओ व्याकरण आ साहित्य मे आचार्यक पढ़ाई सम्पन्न कयलनि। कोना मध्यमाक बादे हिरणी (कुशेश्वर स्थान) मे विवाह भेलनि आ ओत' सँ पढ़बामे सहयोग भेट' लगलनि आदि प्रत्येक प्रसंग केँ बड़ स्पष्ट रूपेँ एहिमे वर्णन भेल अछि। एहि सर्गमे 'मधुप' अपन शिक्षा, पारिवारिक परिस्थिति, मैथिलीक सेवा, सुख आ दुख एहि सभक वर्णनक संग-संग अपन भावी जीवनक प्रति जे चिन्ता ताहि सब पर नीक जकाँ प्रकाश दैत छथि।

सिमरा छोड़ि मुजफ्फरपुरमे अध्ययन करैत, जमिकेँ कविता आ गीत लिखैत, 'मधुप'केँ भविष्यक प्रति चिन्ता छनि। यद्यपि नौकरीक कमी नहि, किन्तु से मिथिलाञ्चल सँ बाहर, अपन मनोनकूल नहि। पारिवारिक चिन्ता बेर-बेर अशांत बनाब' लगलनि। ओ मुजफ्फरपुर छोड़ि बैद्यनाथधाम जाकेँ शिवक आराधना करबाक विचार कयलनि–

'दृढ़ क' ई बाते पुलकित गाते होइत निपाते दृग झरना
चल पाते पाते, लहि आघाते, मन काते तजि सब शरणा
शिव माँ ओ ताते, हुनि जलजाते-पद-तज-पाते दुखहरणा
दोसर की नाते, बुझल अगाते, वेलपाते सँ ओ ढरना'– पद सं.-38

छठम सर्ग

यद्यपि बैद्यनाथ धाम जयबाक लेल सामान सब सरियाब' लगलाह, मुदा जेताह कोना? से चिन्ता सताब' लगलनि। कारण, संगमे एकहुटा पाइ नहि, जेबी पूर्णतः छुच्छ। ककरा सँ माङब? एहन स्थितिमे के सहयोग करत? चिन्ता बढ़ैत गेलनि। एहनेमे संयोगवश सासुर हिरणी सँ सार प्रताप बाबूक द्वारा प्रेषित एक सौ रुपैयाक मनिऑर्डर प्राप्त भेलनि, संकट हटलनि। 'मधुप' बैद्यनाथक शरणमे विदा भ' गेलाह।

ट्रेनमे एक युवा मैथिल शैव-संयासी सँ भैंट होइत छनि। ओहि व्यक्तिक असीम धैर्य, अपूर्व विद्वता आ अद्भुत क्षमाशीलता सँ कवि आकृष्ट आ' चमत्कृत होइत छथि। झाझा स्टेशन पर उतरबासँ पहिने ओ हिनका कहलनि–

'मुदा एखन माइक आराधन हित कामाख्या अछि जैबाक
योगबलेँ तुअ चिन्ताजानी, विह्वल होइत न बनू अवाक
सैह नौकरी शीघ्र अहाँकेँ भेटत जकर करी अभिलाख
ततइ रहैत पाबि ऐहिक सुख सब समाजमे रखइत धाख
केतु उड़ायब मैथिलीक, ध' अहींक लीक चलते कत लोक
काव्य महाकाव्यक रचना क' दैत रहब जगकेँ आलोक
अन्त जगज्जननीक भक्तिसँ उत्तम गति सन्मति सँ पैब
कहु विशेष की? आबि गेल झाझा, हमरा कामाख्या जैब'–
पद सं.–37 एवं 38

गाड़ी सँ उतरैत ओ संयासी अदृश्य भ' गेल छलाह, आ हुनके ध्यानमे चिन्तनशील 'मधुप'क यात्रा बैद्यनाथधाम धरि सकुशल सम्पन्न होइत छनि।

सातम सर्ग

देवघर स्टेशन उतरितहिं बैद्यनाथक प्रति कविक हृदयमे जे भक्ति भाव जागल अछि तकरा ओ वृहद रूपेँ वर्णन करै छथि। अठारह टा पद्यमे शिवक महत्ताक वर्णन करैत एकठाम ओ कहैत छथि–

'सुखद विल्वपर्ण रहैत, प्रिय अपर्णेक छथि भेल जे
त्रिभुवन-भङ्ग-निमित्त, गौरि-भ्रू-भङ्ग त्रस्त भ' गेल जे
भक्त-मान-भङ्ग न देखैत, लखि भङ्ग, मुदित ई हाल हे'– पद सं.–6

बैद्यनाथ धाममे भक्तक अजस्र भीड़, शिव-रंगमे रङल नर-नारी, पूजा-अर्चनामे बेहाल एक-एक व्यक्ति, मन्दिर प्राङ्गणक अद्भुत शोभा आदिकेँ देखैत, अपन हृदयक भावनाकेँ सदाशिव सँ निवेदन करैत शिवपूजाक बाद कवि एकटा टटका षट्पदक रचनाक संग ममतामयी माता गौरीक पूजा सम्पन्न करैत छथि। षट्पदक अंतमे ओ लिखैत छथि–

'गाबिक' ई 'मधुप' षट्पद, बनओ तुअ पद-पद्म-षट्पद
नहि मनोरथ आन, तुअ गुणगान-रथ प्रबले'– पद सं.–43

शिवा-शिवक आराधना सम्पन्न क' कवि जखन मन्दिरक प्राङ्गण सँ बाहर होम' लगैत छथि तखने अपन ममिऔत भाइ अच्युतानन्द बाबू सँ भेँट होइत छनि। ओ कहैत छथिन–

'बहेड़ा हाइस्कूल मध्य भ' गेल अहाँक नियुक्ति,
बाबू रामप्रकाश झाक ई थीक समादक उक्ति
जे छथि सेक्रेटरी ताहिमे, तेँ जल्दी चल जाइ
हमरा अछि रहबाक एखन, ऐबे कैलहुँ अछि आइ'– पद सं.–46

'मधुप' समाद सुनि पुलकित चित होइत छथि, एतेक शीघ्र मनोरथ-पूर्ति केँ भवरानीक प्रसाद मानैत छथि, आ दोसरे दिन नव उमंगक संग बैद्यनाथधामसँ नव सेवास्थल हित विदा भ' जाइत छथि।

आठम सर्ग

सकरी स्टेशन उतरि 'मधुप'क डेग नव आजीविका स्थल हित बढ़ैत छनि। 'चरम चैत-नचैत-दुपहरियाक तवधल सदृश चैतन' समयमे धूरासँ भरल पथ पर ओ चलि पड़ैत छथि। आम्रोपवनक बीच बसल दहौड़ा गाम सबसँ पहिने भेटैत छनि, नारायणपुरक बाद लीचीक वाग सँ सुशोभित, आमक विशाल बगानक पश्चिम राघोपुरक आरम्भे मे बाबू-कृष्णनन्दन सिंहजीक आस-खास देखैत छथि। आगाँ घोरदौड़ पोखरि आ राजवाड़ा, जे कहियो मिथिलानरेश शिवसिंहक राजधानी छलनि आ महाकवि विद्यापतिक साधनास्थल। किन्तु तत' आइ–

'टाँहि द' ता' काक-कटुका-टाहि, ध्याने आहि! तोड़ल,
देखल, जे खल केर चोंच फेनैल नीरा केर बोड़ल,
प्रिय पियाक समान जानि पियाक राही हित सुराही,
धैल साकिक, तकर, करइत फेन छल सँ वाहवाही'– पद सं.–27

शिवसिंह समयक गौरवपूर्ण एहि स्थलक स्मरण करैत खिन्न-मन कविक डेग आगाँ बढ़ैत छनि। महाराज हरिसिंह देव द्वारा खुनौल रजोखरि पोखरिक भव्य-स्वरूपसँ आकृष्ट होइत छथि। मन पड़ैत छनि–

'किम्वदन्ती अछि, जकर यज्ञक समयमे शत चतुर्दश,
आबि मीमांसक एत' कय शास्त्र मीमांसा विशद यश
देल स्वागत पाबि, एखनहुँ छठिक स्वर्णिम पर्व अबिते
सहस सुरवाला समाने सुन्दरी-समुदाय गबिते'– पद सं.–32

आगाँ डेग बढ़बैत कवि 'दोवगली उत्तुङ्ग सुन्दर सौध' नेहरा गामकेँ देखैत छथि। हरिपुर गाम टपैत-टपैत रातिक साढ़े आठ बाजि जाइत अछि, ओ हावीभौआर पहुँचैत छथि। रूप बाबू नामक एक भद्र व्यक्तिक ओत' आतिथ्य ग्रहण करैत छथि–

'भोजन क' सानन्द पाबि सुखद शय्या मृदुल
थकनी यदपि अमन्द, बुझल न मातल निन्न सँ'-पद सं.-45

नवर्म सर्ग

प्रात होइतहिं 'मधुप'क डेग बेहड़ा-पथ पर बढ़' लगैत छनि। पूव दिशामे लालिमा व्याप्त भ' जाइछ। कविक कल्पना दौड़' लगैछ–

'परम प्राचीना, नवीना बनलि प्राची नायिका ई
राति भरि रस सँ उभरि शशि संगमैक विधायिका की?
रवि-करेँ पकरलि लजा क' रक्तवदना भेलि वामा
व्यक्त छाया करय तकरे कमलिनी हसि पूर्णकामा'– पद सं.-10

कवि डेग केँ बढ़बैत कोन्थूडीह पहुँचैत छथि। मन पड़ैत छनि ओ इतिहास जे कोना पूर्वमे हिनका गामक सोनक भगवतीक चोरी भेलनि, आ जगदम्बेक इच्छानुसार एहिगामक एकटा डीहकेँ कोड़ि ताहिसँ प्राप्त शिला-खण्डकेँ स्थापित क' कोर्थुक लोक पूजा-अर्चना करैत रहल अछि। पूर्वक ताहि घटनाकेँ स्मरण करैत, सुस्तैत, पुनः चलैत धरौड़ा पहुँचैत छथि। धरौड़ाक सटले बहेड़ा, आरम्भे मे स्कूल जयानन्द उच्च विद्यालय। ऑफिसमे परिचय देलाक बाद–

'विविध हास परिहास, होइत पाबि स्वागत तत'
क' दसखत सोल्लास, भेलहुँ नियुक्तिक देखि दल'– पद सं.-37

दसम सर्ग

1940 ई०क मार्च मासक पहिल तारिखकेँ 'मधुप' बहेड़ा स्कूलमे अपन योगदान देलनि। बाबू विष्णुगुलाम झाजे ताहि समयमे स्कूलक कर्त्ता-धर्त्ता पुरुष छलाह, हुनका सँ अपन स्थिति स्पष्ट कयलनि–

'अङ्गी हमर मैथिली सेवा, अङ्ग तकर सेवा-कर्त्तव्य,
-जकरा वलेँ चला परिवारो रचइत रहब काव्य नित नव्य,

वाधा तकर पाबि आधा छन साधारणो, होइत चलचित्त,
तेजि असाधारण लाभोकेँ, जय मैथिली सुनायब मित्त'– पद सं.-9

विष्णुगुलाम झाजीक द्वारा आश्वासन भेटलनि–'जे जे सुविधा हैत अपेक्षित, शक्तिक सम्भव से सब देब।' संगहिं ओ स्पष्ट कयलथिन जे दरमाहा मात्र आठे टाका रहत। ओना–

'परिवारक चिन्ता की कातिक वैशाखो दू धेनुगर मास
बाँचि पुराण ताहि दुनूमे करब तकर पोषण सोल्लास
काटब तकर न टाका, सचिवो देता सहित वेतन अवकाश
साते घंटी पढ़ा कलम चलबैत करब मैथिलीक विकास'– पद सं.-15

झाजी आगाँ आरो स्पष्ट कयलनि जे विभिन्न सम्मेलनमे जयबाक हेतु हम विशेष छूट केर व्यवस्था करब। अहाँ छात्रक भविष्यकेँ देखी आ हम अहाँक प्रत्येक सुविधा पर ध्यान राखब–

'सभा समिति मे जैब अवश्ये किन्तु राखि कय निशि दिन ध्यान,
कोर्शक विषय पूर्ण हो, एवं वढ़ै क्रमिक छात्रो केर ज्ञान
तथा परीक्षा फल अपनेक विषय केर रहै उत्तमे भेल
कतउ जाउ, कहुँ रहु, किछु करू, क्यो किछु कय सकत न ई वर देल'
पद सं.-17

'मधुप' अपन इच्छित स्थान केँ पाबि आनन्द सँ रह' लगलाह। प्रत्येक शनिकेँ गाम जाथि, रविकेँ रहथि आ सोमकेँ पुनः स्कूल चल आवथि। स्कूल सँ गामक चारि कोसक दूरी केँ ओ पैदल पार करथि। समय बितैत रहलनि, कविता आ गीत रचैत रहलाह। ताही क्रममे एक दिन सोचलथि–

'मिथिला मैथिल मैथिलीक हित कविता करइत एक दिन
शोचल एखनहुँ मञ्च नाटकक चलै न हिन्दी गीत बिन
तथा वाल आ वृद्ध विवाहक प्रथा न छोड़ै देश केँ
तेँ नव नव भासक किछु लिखी गीत उचारि गणेश केँ'– पद सं.-38

आ 'मधुप' तत्कालीन प्रसिद्ध भास सब पर 'सरल, सरस, झमकाब' बला चूनि शब्द, किछु खास द' केँ जे गीत सब लिखलनि सैह हुनक पहिल गीत-संग्रह 'अपूर्व रसगुल्ला' नामेँ चर्चित भेल–

'देल छपा चट द- अपूर्व रसगुल्ला जकरा पाबि क'
गुञ्जित मिथिला भेल नवोदित-धुनि निबद्ध ई गाबिक'
ततबे नहि प्रेरणा एहि सँ पाबि कते ऐ बाट केँ
धय बढ़ला, बढ़बैत एहिना अपन चमत्कृत चाटकेँ'–पद सं.-40

एगारहम सर्ग

'मधुप' नव स्कूलमे नव उत्साहक संग समय व्यतीत कर' लगलाह। नव-नव जनसँ सम्पर्क बढ़ब' लगलाह। पढ़ाइक बाद ओ बहेड़ा परिसरमे स्थित विभिन्न गाममे जाय-जाय ताहिठामक इतिहास बुझथि, ऐतिहासिक स्थलक दर्शन करथि, मैथिलीक प्रचार-प्रसार करथि। एहिक्रममे ओ मझौड़ा, घोंघिया, नवादा, रामपुर, बेनीपुर, आशापुर, डखराम, नवानी, वसुहाम, चौगमा आदि विभिन्न गाम घुमलाह। विभिन्न गाम आ' विभिन्न स्थल इतिहासक पन्ना सबकेँ खोलैत गेलनि। चौगमाक प्रसंगेँ कवि लखैत छथि–

'सब देखैत अबिते चौगामा, तकर लेल रज भाल
मानल मनमे, एकर दर्शने सँ बनि गेलहुँ नेहाल
थीक महाकवि सुविदित सीताराम झाक ई गाम
जत' जन्म ल' बना देल मैथिल हित चारू धाम'

एहि सर्गमे बहेड़ा परिसरक विभिन्न पक्षक बड़ नीक जकाँ व्याख्या भेल अछि।

बारहम सर्ग

यद्यपि 'मधुप' केँ स्कूलमे अल्प वेतन भेटैत छनि, मुदा ओ प्रसन्न छथि। अपन साहित्यिक विकासक संग-संग ओ सम्पूर्ण वातावरणमे मातृभाषाक प्रेमकेँ जगबैत छथि, नव-नव लोककेँ काव्य सृजन करबाक लेल प्रोत्साहित करैत गामे-गाम मैथिलीक गोष्ठी चलबैत छथि। ओ पैदल यात्रा करैत, साहित्यक विकासक गतिकेँ बढ़बैत, अपन सेवाक प्रति सतत सचेष्ट छथि–

'स्वास्थ्य तेहेन इसकुल घंटी क', चारि बजैत पदे शकटीक
वल पर दश दश मील जाय परवाहि न करइत यात्रा छीक
कविसम्मेलन क' एटेन्ड, घुरिआबी इसकुल होइते भोर
लिखि पढ़ पढ़बी, 'आ' पढ़बी मैथिलीक गति होइत विभोर'– पद सं.-12

टटका जिलेबी, शतदल, झाङ्कार, गीतमंजरी आदि ग्रन्थ लिखाइत रहलनि, साहित्यिक मंच पर 'मधुप' प्रतिष्ठित होइत रहलाह। बहेड़ा परिसर हिनकर सक्रियताक कारणेँ पूर्ण साहित्यिक भ' उठल। बहेड़ाक अणु अणुकेँ ई मणिपद्म बना देलनि–

'सेंतालिसे मध्य आगत मणिपद्मक सरस सुरभि एकान्त,
राधाबाबूक व्यङ्ग्य-सुधा, गोपालजीक मधुमय स्वरकान्त
अणुजिक नक्षणक छवि, के.एन. दासक 'हाथ न छोड़ह' गीत
सुस्वर बहुतो छात्रक गायन पाबि बहेड़ा बनल अजीत'– पद सं.-70

गामे गाम 'विद्यापति पर्व समारोह' होम' लागल, मैथिली साहित्य परिषदक सफल आयोजन सेहो भेल। ताहि समयक बहेड़ाक प्रसंगेँ कवि लिखैत छथि–

'सफल एत' साहित्य परिषदो भेल कविक दल पाबि हकार,
कैल सरस बहेड़ाक भूमिकेँ स्वागत पाबि मुदित सोद्गार
कौखन कविवर 'किरण' कोनो खन सरस सुमन कखनहुँ विख्यात-
कवि 'यात्री', खन सुकवि 'अमर', खन सीताराम कहाकवि, ख्यात' –
पद सं.-72

'मधुप'क सम्मान बढ़ैत गेलनि, त्रिवेणीक प्रकाशन आ ताहि पर भारत सरकारक द्वारा पहिल मैथिलीक कविक रूपमे पुरस्कार प्राप्त भेलनि। सहरसाक विद्वत् परिषद् द्वारा 'कविचूड़ामणिक उपाधि सँ सम्मानितो भेलाह।

तेरहम सर्ग

आरम्भक आठ पद्यमे कवि 1962 ई०क भीषण शीत लहरि केर वर्णन बड़ जीवन्त रूपमे कयने छथि। उदाहरणार्थ–

'जे जल, कहबय जीवन, तकरा छुवि जीव न, तेहने हो भान
जगती-हित-दिनकर अन्तर्हित, हित बनि क्यो कय सकय न त्राण
अनलक क्यो अनलक बोरसियो, तैँ, तै सँ कंपनी नहि जाय
ऊन, ऊन बनि काज करै नहि, कम्बल, कम वल बनल झमाय'–पद सं-2

एहन विकट समय रहितो 'मधुप' परिस्थितिवश स्कूलक आवासकेँ छोड़ि गामे सँ प्रतिदिन बस सरभिससँ जाइ आब' लगलाह। एहि तरहेँ चारि वर्ष बीति

गेलनि, मुदा, तकर बाद वात आ उदर-रोग सँ पीड़ित भ' गेलाह। दवाई आ पथ्य काज नहि करनि। तथापि सेवाक क्रम नहि टुटलनि। परिवारक प्रत्येक सदस्य, इष्ट-बन्धुक इच्छा जे आब नौकड़ी छोड़ि दी। ताहि समयक अपन स्थितिकेँ स्पष्ट करैत ओ लिखैत छथि-

'याताऽयात करैत देखथि जे इष्ट बन्धु, तनिको रूचि सैह,
कौखन घोर होइत अपनो मन कहै शीघ्र इस्तीफा देह
किन्तु प्रधानाध्यापक आ सहकर्मी शिक्षक समक सिनेह
तेना बान्हि रखने छल निश्छल, तजि न सकी बुझि शिथिलो देह'-पद सं.-22

आ अंततः -

'रहि, पूरा कय समय, नियमवश चैत पूर्णिमा-तिथि केँ आज
विरह-वेदना सँ नचैत मन, विदा केर देखइत सब साज
सतहत्तरिक चारि एप्रिलकेँ तजि रहलहुँ सेवित इसकूल
ओह! मोह नहि तजै तकर, जे सेवा अरपल सुरभित फूल'- पद सं.-29

चौदहम सर्ग

एहि सर्गक आरम्भ निम्नांकित पद सँ होइछ-

'जाहि सुन्दरी-सेवाकेँ लहि पाओल पूर्ण विकास हे
नियम-निवद्ध आइ तनिके कर छुटय, प्राप्त अवकाश हे'- पद सं.-1

सेवा-निवृत्तिक क्षणमे 'मधुप' केँ एखन जीवनक एक एकटा घटना मानस-पटल पर अंकित भ' रहल छनि। ओ जेहने आजीविका चाहलथि ईश्वर सैह देलथिन। ताहि सुन्दरी-सेवाक सेवा करैत ओ सामान्य सँ असामान्य बनलाह। प० काशीकान्त मिश्र मैथिली-साहित्यक 'कविचूडामणि मधुप' प्रसिद्ध भेलाह। काव्य-कुञ्जमे कल्पनाक उड़ान पर उड़ैत मैथिली माताक काव्य विद्याकेँ भरपूर सेवा करबाक सुअवसर भेटलनि। 'मधुप'केँ तेँ पूर्ण संतोष छनि जे आइ सम्पूर्ण मिथिलामे प्रत्येक मैथिल आवालवृद्ध बनिता हिनका अपन प्रिय कवि स्वीकार क' लेने छथिन। ई कविक आत्मविश्वास थिकनि से सत्य एहि रूपेँ प्रकट भेल अछि-

'झमकय पद, कम कय विरोधी-मन, गमकय सुहृदय-सरोज रे
छमकय गबइत गीत सुमुखि, चमकय कत बेकत उरोज रे
ठमकय प्रतिद्वन्द्वि-दल, तमकय-ताण्डव-गति सोल्लास हे'-पद सं.-4

'मधुप' जाहि समयमे मातृभाषाक सेवाक व्रत लेने छलाह तहिया मैथिली उपेक्षिता छलीह, किन्तु आइ अपन सेवासँ मुक्त होयबाक क्षणमे ओ देखि रहल छथि जे राष्ट्रीय स्तर पर ई भाषा अपन स्थान बना लेलक अछि। साहित्यक विभिन्न विधाकेँ सुपुष्ट करबामे अनेकानेक साहित्यकार लोकनि जमिकेँ काज क' रहल छथि, यशस्वी भ' रहल छथि। एक-एक चर्चित साहित्यकार एखन हुनका मन पड़ि रहल छथिन। अपन पूर्ववर्त्ती, समकालीन आ नवीन रहितो प्रतिष्ठित प्रत्येक साहित्य साधककेँ ओ स्मरण करैत छथि। उदाहरणार्थ-

'तेँ तँ कविवर, क्रान्ति-किरीट-सुहृद-किरणक हरिनाद सँ
कहुँ आचार्य-सिनेहि-सरस-सुमनक सुरभित आह्लाद सँ
खिंचल, मैथिली-मञ्च सेवि, सूनी सुनाबी कत रास हे'- पद सं.-12

'मधुप' मातृभाषाक सेवार्थ गाम-घरसँ देशक विभिन्न शहर-नगरक यात्रा करैत रहलाह, मातृभाषाक अलख जगबैत रहलाह। ताहि मैथिलीकेँ पूर्ण प्रतिष्ठित भेल देखि ओ विभोर छथि। ई सबटा जाहि सेवा-प्रेयसिक कारणेँ सम्भव भ' सकल तकरा प्रति अपन कृतज्ञताकेँ निम्नांकित रूपेँ प्रकट करैत छथि-

'लिखु गुण ओकर कतेक, कर गहइत जै प्रेयसिक
भेटल ढेरक ढेर सुख सुविधा सब काल मे'- पद सं.-51

पन्द्रहम सर्ग

'मधुप आइ सेवा-निवृत्त भ' सेवा-सुन्दरीक संग छोड़ि गाम जयबाक लेल विवश छथि। एहन क्षणमे मन स्थिर कोना रहतनि। आइ बहेड़ा परिसरक एक एकटा स्वजनक संग छूटि रहल छनि। जाहि परिसरमे रहैत, साहित्य-साधना करैत, मातृभाषाक सर्वांगीण विकासक लेल संघर्षशील रहलाह, आइ तत' सँ दूर भ' रहल छथि। परमसत्यकेँ बुझितो ओ व्यथाक अथाह सागरमे उब-डुब क' रहल छथि-

'गमन तथा आगमन थीक मन-कल्पित फुसिए बात रे
आत्मा अविचल नित्य सतत, परिवर्तनशीले गात रे
बुझितहुँ ममता-निर्ममता सँ मम ताड़ित तन झाम हे'—पद सं.-3

विदाक क्षणमे एक एकटा स्वजनक प्रति अपन आत्मियता आ तनिका सँ संग छुटबाक संयोग केँ करूण-रस-सम्राट 'मधुप'क द्वारा जे एहि सर्गमे वर्णन भेल अछि से केहनो कठोर हृदयक लोककेँ विह्वल बना देबाक सामर्थ्य रखैत अछि।

आ अंततः, 'मुक्त-मधुप' महाकाव्य केँ कवि चूड़ामणि 'मधुप' अपन धर्मपत्नीकेँ निम्नांकित शब्देँ समर्पित कयने छथि–

'जे कनिञो रहि आय हमर लय कहियो घरक देल नहि भार,
सस्मित सतत कार्यरत, आर्यक पथ पर चलइत हृदय उदार
माङल किछु न, माङ लसिते सिन्दूरे मात्रकेँ भूषण मानि
तै सहधर्मिणीक कर कञ्जाङ्कित ई करय 'मधुप' सम्मानि'

प्रस्तुत महाकाव्यक प्रसंगमे अधिक कहब हमरा कठिन लागि रहल अछि। मैथिली महाकाव्यक श्रेणीमे ई एकटा पृथक विशिष्ट महाकाव्य थीक। एकर विशेषता आ विषय-वस्तु 'मधुप'क पत्र जे ओ परमश्रद्धेय श्रीकान्त ठाकुर विद्यालंकारजीक नामेँ लिखने छथि, ताहि सँ नीक जकाँ सुस्पष्ट होइतहिं अछि। वास्तवमे मौलिक महाकाव्य कही तँ एकरे, कारण कोनो महाकाव्य प्रायः पूर्वक पुराण-आख्यान पर आधारित रहिते अछि। आचार्य विश्वनाथक महाकाव्य नायकक प्रसंगेँ जे मान्यता रहल अछि ताहि दृढ़-बन्धन केँ कवि चूड़ामणि 'मधुप' काटि देने छथि। एहन नवीनता आनब 'मधुपे' सँ सम्भव छल। विश्वास करैत छी जे प्रकाशित भ' ई महाकाव्य मैथिली-साहित्यमे 'माइल पाथर' सिद्ध होयत।

■

बैद्यनाथ मिश्र

जखन-कखनो मौका भेटैए, हमरालोकनि छाती फुला क' कहै छी जे हमर मैथिली साहित्य कोनो भारतीय भाषा सँ पछुआएल नहि अछि। मुदा, छाती पर हाथ राखि क' कने सोची जे हमरालोकनिक रचनाकार ठेठ आधुनिक काल मे आबि क' अपन आत्मकथा पद्य मे लिखैत छथि आ आइयो एकैसम शताब्दी मे हम सभ अनेक तर्क सँ साबित करै छी जे 'मुक्त मधुप' एकटा महाकाव्य थिक। अरे, ओकरा पद्यात्मक आत्मकथा कहियौ तँ अपेक्षाकृत बेसी न्याय भ' सकतै रचनाक संग। विश्वनाथ लिखलनि जे महाकाव्य सर्गबद्ध होइत अछि। 'मुक्त मधुप' सेहो सर्गबद्ध अछि, तेँ ओ महाकाव्य भ' गेल? बस, यैह होइ छै आधुनिक महाकाव्य?

1914 मे 'हरिऔध'क 'प्रियप्रवास' छपल छनि आ 'राधाविरह' 1950क बाद के रचना थिक। मुदा देखियौ जे 'प्रियप्रवास' मे हरिऔध जीक कते उच्च विचार छनि जे ओकर राधा कनिञो तड़पै नहि छै कृष्णक लेल, ओ राधा कहै छै—'प्रिय जीवें जनहित करें, गेह चाहे आवे न आवें।' कारण जे समसामयिक परिस्थिति सँ ओ जुड़ल छै। देशक परतंत्रताक सन्दर्भ मे एक नायकक की कर्त्तव्य-तकर ओतय झलक भेटैए। एम्हर मधुपजी की कथ्य अथवा सन्देशक स्तर पर ततय धरि पहुँचि सकलाह अछि? भाषाक स्तर पर सेहो बेस झंझट छै। तत्सम सँ गछाड़ि दियौ आ तखन अलंकार सँ तोपि दियौ। ई युगानुरूप भेलै? स्थिति तँ ई छै जे क्रियापद केँ हँटा दियौ तँ ओकरा आसानी सँ संस्कृतक महाकाव्य साबित कएल जा सकैए। ओही ठाम यात्रीजीक कविता केँ देखी। ओहो तँ संस्कृतेक पंडित रहथि। संस्कृतक समस्त बात सँ परिचित। मुदा हुनक कविता मिथिलाक माटिपानिक कविता थिक।

प्रतिमा

हम मधुपजीक कथाकाव्यक सम्बन्ध मे अपन किछु विचार राख' चाहै छी। समकालीन समय आ वर्त्तमान स्थिति-परिस्थिति कें विषय बना क' काव्यमय भाषा मे कथा कहबाक प्रयोग सभ सँ पहिने, मैथिली मे कविचूड़ामणि मधुपे जी आरंभ केलनि। स्त्री-जीवनक दैन्य आ विडम्बना हुनका कविता मे जतेक दारुण रूप मे स्पष्ट भेल अछि ओते हुनक समकालीन कोनो कविक कविता मे नहि भेल छनि। विषयक एते पैघ फलक आ विभिन्न भाषा-शिल्पक प्रयोग हुनका बेजोड़ कवि साबित करैं छनि।

कथाकाव्य-संकलन 'द्वादशी' हम पढ़ने छी। ओकर कविता सभ मानव-जीवनक विवशता आ करुणा सँ भरल अछि। विस्तार सँ व्याख्या करी तँ 'घसल अठन्नी' आइयो प्रासंगिक अछि। 'तृप्त पिपासा' आइयो अर्थवान अछि। आइयो मिथिला आ देशक आन भाग मे प्रेम-विवाह अथवा मनपसन्द व्यक्ति सँ विवाह करबा लेल युवावर्ग कें शशिकान्ते जकाँ विद्राह कर' पड़ै छै। हुनका कहय पड़ै छनि जे 'सन्तति-विक्रयी पिताक बात मानबो मानवोचित नहिञे। पशु जकाँ मनुष्यक हो विक्रय ओ जरओ राष्ट्र पातककारी।' देशक आर्थिक स्थितिक ह्रासमान एहि अवस्था 'घसल अठन्नी' आइयो महत्त्वपूर्ण भ' उठैत अछि–'सविषाद हासमे चन्द्रमाक, ओ घसल अठन्नी बाजि उठल–हम कतय जाउ, अवलम्ब पाउ, हो जकर घसल अदृष्ट।' जाहि जमीन्दार आ मजूरनीक वार्त्तलाप एहि कविता मे भेल अछि, से स्थिति आइ नहि अछि। दलित आ श्रमिकक चेतना आइ बड़ आगू आबि गेल अछि। आजुक स्त्री सेहो बहुत किछु सोच' लागल अछि। मुदा, प्रतीक अर्थ मे जँ आइ श्रमिकक पीड़ा आ स्त्रीक विडम्बना कें देखल जाय तँ आइयो 'घसल अठन्नी'क प्रासंगिकता स्पष्ट भ' उठैत अछि। विश्व बाजार मे आइ भारतीय मुद्रा 'घसल अठन्नी' जकां खिया रहल अछि, नेतावर्ग जमीन्दारे जकाँ मदमत्त बनल अछि, अपन श्रमजीवी जनता पर धौंस जमा रहल अछि आ विदेशी शक्ति लग नांगरि डोला रहल अछि। तें भाग्यवाद सँ बाहर निकलबाक परिस्थिति आइयो की आएल अछि?

अशोक कुमार मेहता

हमरा बुझने, मधुपजी जे सभ सँ बेसी चर्चित भेलाह, से चाहे समर्थनक कारणें आकि विरोधक कारणे-से अपन पैरोडी-गीत कें ल'क' चर्चित भेलाह, जे कि ओ हिन्दी फिल्मी गीतक भास पर लिखने रहथि। हमरा सभ कें देखबाक चाही जे ठेठ मैथिली शब्दक प्रयोग कें ल' क' कोनो कट्टरता मधुपजी मे नहि रहनि। समाज मे रचल-पचल कतेको अंग्रेजी, उर्दू, फारसी, अरबी शब्दोक प्रयोग ओ अपन गीत मे केने छथि। आइ बहुतो लोक मैथिली गीत लिखै छथि। हुनकालोकनि कें सेहो मधुपजी सँ प्रेरणा लेबाक चाही।

हीरेन्द्र कुमार झा

मधुपजीक पैरोडी-लेखन पर काफी चर्चा होइत रहल अछि। ताहि समय मे तँ हमर जन्मो नहि भेल छल। मुदा, वयोवृद्ध लोक सभ सेहो एहि सभागार मे उपस्थित छथि। ओ लोकनि कहताह जे ताहि दिन मे पारसी थियेटर के कते चलती छलै आ तकरा सँ टक्कर ल'क' मैथिली गीत कें लोकप्रिय बनेबाक अभियान कते पैघ बात छल। हमरा तँ लगैए जे कोनो स्वतंत्रता-संग्रामी जकाँ मधुपजी अपन भाषाक लेल लड़लाह। तहिया, हिन्दीक जे कवि लोकनि छलाह जेना गोपाल सिंह 'नेपाली', ओहो फिल्मी गीत लिख' लागल छलाह। मैथिली के तँ तहिया कोनो अस्तित्व नै छलैए। ताहि समय मे ओ की करितथि?

ताहि दिन मे मधुपजी ककरा लेल लिखथि? कोनो साहित्य अकादेमी वा कोनो प्रतिष्ठान लेल वा कि कोनो आलोचक लेल नहि। तखन? ओ नटुआक लेल लिखथि। नटुआ कें जेहन गीत चाही, तेहने लिखै छलाह।

हमरा तँ ईहो लगैत अछि जे हम सभ जे कहै छी जे विद्यापतिक गीत गाम-घर मे ब्राह्मणीलोकनि गबै छलीह, से एकदम फूसि बात थिक। मधुपजीक चला-चलती देखि क' विद्यापति सेहो चलती पकड़लनि कारण ताधरि विद्यापति-गीतक पुस्तक छपि गेल छल। पहिने कोना गबितथि? हँ, नटुआ सभ गबैत हएत, से जरूर भ' सकैए।

हम तँ मधुपजी केँ यैह बुझै छियनि जे जेना हमरा गाम मे आमक एकटा गाछ अछि। गरमीक महिना मे जखन चहुँदिस तबधल रहै छै तँ हरबाह ओहि सँ छांह ल' लैए। नेना सभ केँ टिकुलाक काज होइ छै तँ झटहा मारि क' टिकुला ल' लैए। पकला पर गाछक मालिक पकलाहा आम ल' जाइ छथि। जकरा जे काज होइ छै, मधुपजी सभक लेल उपलब्ध रहलखिन अछि। नटुआ केँ काज होइ तँ ओ गीत लैए। साहित्य अकादेमी केँ जँ चाही 'राधा-विरह' ल' लेथु। मधुपजी कल्पवृक्ष-समान छलखिन। सभक लेल हुनका लग सामग्री उपलब्ध छलनि।

अजित कुमार आजाद

हम मोन पाड़' चाहब जे परसू एक प्रश्न ठाढ़ भेल रहय जे विडम्बना आ संत्रास सँ भरल एहि समय मे जखन हमरा देश-विदेशक अनेक-अनेक कवि आ हुनकर कविता मोन पड़ैत अछि, तखन मुदा मधुपजी हमरा मोन नहि पड़ैत छथि। हमरा होइ छल जे ई प्रश्न विमर्शक विषय बनत आ एहि पर बात आगू बढ़त। मुदा से नहि भेल अछि।

हमरा लगैत अछि जे समाज आ भाषाक प्रति जे मधुपजीक कमिटमेन्ट (प्रतिबद्धता) रहनि, जे हुनका गीत लिखबा लेल बाध्य केलकनि, ओ अपन समय मे हल्लुक हेबाक खतरा उठेलनि। ई वस्तुतः अपना केँ हल्लुक करब नहि छल, जनसरोकारक प्रति हुनक आस्था छल।

कमल मोहन चुन्नू

मधुपजीक पैरोडीक मादे बहुत रास गप भेल अछि। आँखि मूनि क' जँ एकरा निरस्त करबाक बात हो तँ हम किछु उदाहरण एहि ठाम राखै छी। गीत गोविन्दक वेणु गीत केँ देखल जाय। श्रीमद्भागवत के वेणुगीत देखल जाय। विद्यापतिक 'आब ने बजाउ विपिन बसिया' देखल जाय। आ ओतहि देखल जाय-घनश्याम एना नहि वेणु बजा। हमरा लगैए भाषाशास्त्रीय दृष्टिजे या काव्यदृष्टि जे-ई सभ एक ओजन के गीत छै। तेँ आँखि मूनि क' एकरा नहि खारिज कएल जाय जे ओ पैरोडी लिखलनि। ओ पैरोडी नहि लिखितथि तँ की

करितथि? ओहि समय मे मिथिलाक अपन पारंपरिक संगीत एतेक लोकप्रिय रहै? विदुर मल्लिकक पुत्र रामकुमार मल्लिक जँ ठीक कहि रहल छथि तँ संगीत सँ लोक पड़ाएल जाइत रहै। एखनो तँ कमोबेश वैह हाल छै।

ओना, व्यक्तिगत रूप सँ हम हुनका सँ आधा सहमत आधा असहमत छी जे जँ पारंपरिक धुन नहि छलै तँ मौलिक रूप सँ कोनो नव धुन बनबितथि जे काज रवीन्द्रनाथ ठाकुर जी केलखिन। गीत हुनकर अपन छलनि आ संगीतो अपन छनि। निश्चित रूप सँ एहि मे मधुपजीक कोनो बाध्यता रहल हेतनि।

मधुपजीक सहकर्मी एकटा शिक्षक रहथिन जे हमरा राघोपुर मे भेटल रहथि। हुनकर आशु-कवित्व के परिचय दैत ओ कहलनि जे एक बेर एकटा विद्यार्थी एलै जे हमरा भैया के कोजागरा छनि, तै मे एकटा गीत गाबक छै, हमरा एकटा गीत लिखि देल जाय। तँ, मधुपजी कहलखिन जे धुन अनलैहें? तँ नै, धुन तँ नै अछि बूझल। तँ, धुनो अहीं क' दियौ आ गीतो अहीं क' दियौ। तँ ओ कहलखिन जे छुट्टीकाल मे अबिहें आ छुट्टी काल मे गीत-संगीत ओकरा तैयार भेटि गेलै।

■

अध्यक्षक भाषण

गोविन्द झा

हम पहिने रमानाथ झाक सम्बन्धमे किछु शब्द कह' चाहब। रमानाथ बाबू आ मधुपजीक बीच सम्बन्ध छनि जे एक जँ शास्त्र कैँ धेलनि तँ दोसर काव्य कैँ। काव्यशास्त्र विनोदेन कालो गच्छति धीमताम्– दुनू महान धीमान् छलाह। आर, संयोगवश, हम तँ कविता वा कथा जे किछु लिखलहुँ से सहज प्रेरणा सँ नहि अपितु लौलवश–हमर मुख्य विषय तँ शास्त्रे रहल। मुदा धीमान् लोकनिक संसर्ग मे जते जे किछु केलहुँ जे आइ कने साहित्यो दिस दाबी अछि कने शास्त्रो दिस। से हम दुनू गोटे कैँ एके संग प्रणाम करैत छियनि।

एहि संगोष्ठी मे दुनू गोटे पर खूब चर्चा भेल अछि। ताहि सँ जे बात बहरा क' आयल अछि से ई जे एकगोटे नकलची, माने सिनेमा–गीतक नकल केलनि आ दोसर गोटे नकलची–माने अतीतक नकल केलनि। हमरा जनैत अतीत के नकल जतेक खराब थिक, ततबे वर्त्तमानोक नकल खराब थिक। नकल वस्तुए ठीक नहि थिक। मधुपजी नकल केलनि–श्रोताक रुचि जँ कुमार्गे मे छलनि–जेना मेरचाइ खेबाक रुचि होइनि पाहुनक तँ हम सब खूब मेरचाइ पीसि क' द' दै छियै– तँ सैह मधुपजी केलनि। ओकरा आवश्यकताक हेतुएँ पूर्त्ति केलखिन, यैह भेल नकल।

एकटा मुदा बीच के रस्ता छै, जकर चर्चा एहिठाम नहि भेल। से मुदा, बहुत प्रासंगिक छै। एहि ठाम अध्यक्षताक लेल रवीन्द्र नाथ ठाकुर बजाओल गेलाह, से बहुत ठीक भेल अछि। ई ने प्राचीन गीतक नकल केलनि अछि आ ने आधुनिक गीतक नकल करै छथि। रवीन्द्रजीक एकटा मध्यमार्ग छनि जे ओ अपने सृष्टि करै छथि। आ, सृष्टि जे ओ करै छथि से परम्पराक भित्ति पर करै छथि। हुनका बाद सरसजी सेहो एहि दिशामे काज केलनि अछि। असल बात छै जे अहाँ पुरान ट्यूनिंग कैँ कते दिन धरि उघैत रहब? ओ आब म्यूजियम मे राख' योग्य वस्तु भ' गेल अछि। तेँ आगाँ जे यात्रा चलतै ताहि मे रवीन्द्रजी सन–सन लोक जन्म लिअय, से हमर कामना अछि। मधुपजी एकर मार्ग प्रशस्त केलनि जे लोक कैँ जे आकांक्षा छै तकर अहाँ पूर्त्ति करियौ। लोक आब पुरना गीत गबैत–गबैत अकच्छा गेला अछि, ओकरा आब किछु नब दियौ।

मिथिला तँ विद्वानक भूमि थिक। एखनो जे साहित्यकार लोकनि छथि से क्यो अपना कैँ छोट विद्वान नहि बुझै छथि। परन्तु, साहित्य विद्या नहि थिक।

ओ एक प्रकारक अविद्या थिक। ओ बहुत चिन्तन नहि थिक। ओ एक प्रकारक प्रवाह थिक। लोक मे एखनो शृंगार–भावना, रस–पक्ष बहुत प्रबल छै। जतेक एखन गजल सुनै छी, ओहि मे 90% एखनो शृंगार रस के धारा बहैत रहै छै। तँ, मैथिलीक गीत मे जँ अहाँ रस नहि देबै तँ लोक ओकरा गाओत कोना क'? कवियो लोकनि एखन रस सँ बहुत भागल जा रहल छथि। लगैए जे चिन्तन हुनका सभक माथ पर तेना सवार भ' गेलनि अछि जे रस सभटा सुखा गेलनि अछि। कविता नीरस भेल जा रहल अछि। रवीन्द्रजी आ आन किछु कवि–गीतकार लोकनि छथि जनिका मे रस के धारा छनि। रस मे सेहो अन्तर छै। एकटा रस एलैए जकरा कहल जाय–क्षेत्रीय रस। सांस्कृतिक रस। एहन गीतक अनुवाद बंगला, मराठी, गुजराती आदि मे नहि भ' सकैए। एकरा ततेक स्थानीयता आ एहि ठामक क्षेत्रीय संस्कृति पकड़ने छै जे एहन विषय पर जे गीत अबै छै से समाज कैँ सभ सँ बेसी ग्राह्य होइ छै। मधुप जीक ई महत्त्व छनि जे गीतक एकटा पक्षकैँ धेलनि जे बहुत नीक जकाँ जनता धरि पहुँचलाह।

मधुपजी कैँ चिन्हबा मे बहुत गोटे कैँ भ्रम होइ छनि। कारण जे मधुपजीक काल कैँ आ हुनका परम्परा कैँ ओ सभ नहि जनने रहैत छथि। मधुपजी शुद्ध पंडित छलाह। कवि छलाह। संस्कृत सँ लिखब शुरू केने छलाह। ओहि समय मे जानकी वल्लभ शास्त्री आ सुरेन्द्र झा 'सुमन' सेहो संस्कृते मे कविता–लेखन शुरू केने छलाह। ओ लोकनि संस्कृतक संस्कार सँ ततेक अभिभूत छथि जे हुनका मे जँ अहाँ लोकगीतक संस्कार तकबै तँ से नहि भेटत। मैथिलीक ई दुर्भाग्य छै जे अपना कैँ ओ ततेक सुसंस्कृत बनौने जा रहल अछि जे लोकजीवन सँ कटल जा रहल अछि। मधुपजी ओहि मे एकटा क्रान्ति अनलनि।

मधुपजीक कालक कवि मे हरिमोहन झाक कविता मे कोनो आर्थिक पक्ष नै, कोनो सामाजिक दरिद्रताक चित्रण नहि, कोनो अन्य वर्गक प्रतिनिधित्व नहि, राजनीति पर कोनो हस्तक्षेप नहि–एहि सभक कतहु गन्ध नहि भेटत, एकरा सभ कैँ ओ अछूत बुझलनि। मधुपजी, सीताराम झा आदि किछु विशिष्ट कवि सभ छथि से एहि बंधन सँ दूर भ' जाइत छथि। ओ सभ नव वस्तु कैँ सेहो छूब' चाहै छथि। समय कैँ देखै छथिन, वर्त्तमान काल कैँ देखै छथिन, आ तकरा पकड़ै छथि। सीताराम झा अछूतोद्वार पर लिखलनि। जे कुकूर कैँ हम सभ कोरा क' लै छी आ हरिजन कैँ घर नहि टप' दै छियै। पंडितो मे सँ किनको–किनको मे युगक भावना आब' लागल छलनि। मैथिलीक कवि लोकनि मे देखै छी तँ

मधुपजी ओहि मे बहुत आगू छलाह। हुनक आरंभकालिक जे रचना सभ छनि से श्रृंगारिक भावनाक छनि। ओकरा बाद, देशदशाक वर्णन, राजनीतिक आ आर्थिक स्थिति पर जे ओ लिखलनि से बहुत महत्त्वपूर्ण छनि। ओ छलाह तँ दोसर परम्पराक मुदा एलनि हुनका मे दोसर भावना। ओ रमि नहि सकलाह। किरणजी जाहि तरहेँ रमि गेलाह, यात्रीजी जेना रमि गेलाह– ओकरे ओ साध्य बुझलनि, चरम बुझलनि– मधुपजी केँ मुदा से नहि भेलनि। ओ अपने धारा मे बहैत गेलाह। ओ राजनीतिक तरंग मे सेहो एलाह। एकटा कवि होइ छल पहिने जकरा 'बर्सेटाइल' कहल जाइ छै, से ओ छलाह। हमर गाम इसहपुर मे आएल रहथि, से हमरा मोन अछि। कान्तिपुरक बाबू छथि, तिनकर बेटाक विवाह इसहपुर मे। ओहि मे ओ बरियाती आएल रहथि। आ ताहि बरियाती मे ओ कोबर-गीत गौलनि भरि राति। पोथियो लिखलनि, सेहो बाद मे छपलनि। से, हुनका जे कोबर मे कहलकनि गबै लेल तँ ताहू लेल ओ तैयार भ' गेलाह। तेँ कहबनि की जे हुनकर ओ दरबारी करै छलाह! ओ एहन कवि छलाह जे जत' जे आकांक्षा होइ छलै तकर पूर्त्ति लेल ओ तैयार भ' जाइ छलाह। एक्कहि कलम सँ ओ त्रिलोक के वर्णन क' सकैत रहथि, तेहना सन। एखने सुन्दरी के वर्णन केलहुँ आब ब्रह्म के वर्णन सेहो क' सकै छी। संस्कृतनिष्ठ सेहो लिखि सकै छी। कठिन सँ कठिन। महाकाव्य सेहो लिखि सकै छी। जे हमरा कही से हम लिखि देब। ई अद्भुत प्रतिभा, जकरा बर्सेटाइल कहै छै, से हुनका मे रहनि। एक दिस–हम जेबै कुसेसर भोर, पहिरि क' काड़ा, झमकाय झमाझम झाड़ा लिखि सकै छथि तँ दोसर दिस 'राधा विरह' के मंगलगीत जे छै, तकर अर्थ एहि ठाम बहुत कमे केँ लगतनि, तेहनो लिखि सकैत रहथि। ओ दुनू तरहक रहथि–मैं पंडित भी हूँ, मैं सामान्य नागरिक भी हूँ।

एकटा आक्षेप हुनका पर होइ छनि। अहाँ लिखै छियै अछूतोद्धार पर आ अपने अहाँ अछूत सँ दूरै रहै छी। ई भेल पाखण्ड। ओकरा मुदा हम पाखण्ड नहि बुझै छियै। ओकरा हम कहै छियै जे ई भावना जन्म ल' रहल छल। हुनका मे ओ बीजरूप मे एलै। गाँधीजी जकाँ महावृक्ष रूपमे नहि एलनि जे हरिजनक उद्धार लेल ओ कूदि पड़थि। हुनका मे एलनि जे ई वांछनीय थिक। हम ओकरा नहि क' सकलहुँ। दस गोटाक बीच मे ओ डोम संगे खा लीतथि, से साहस हुनका नहि भेलनि, गाँधीजी मे ई साहस छलनि। ई भावना मुदा हुनका मे अंकुरित भेलनि। हुनकर काव्य मे हमरा ई वस्तु भेटैत अछि। तेँ ई आरोप करबै जे ओ सभ पाखण्ड लेखन केलनि अछि, से हम नहि मानै छी।

■

समापन भाषण

मोहन भारद्वाज

एहि संगोष्ठी मे पठित एक आलेख सँ ई सूचना भेटल जे रमानाथ झा आ मधुप मे प्रतिस्पर्धा करबाक लेल दुनूक नाम केँ सम्मिलित क' ई आयोजन कयल गेल अछि। आरो किछु गोटेक एहन विचार छनि। हमरा एहि प्रसंग मे मोन पड़ैए जे अपना सभक ओहि ठाम प्रतियोगिताक एकटा बड़ पुरान खिस्सा अछि। प्रतियोगिता बहुत पहिने कहियो भेल रहै खरहा आ कछुआ मे। खरहा माटि के जीव, कछुआ पानि के जीव। आयोजनकर्त्ता दुनूक प्रतियोगिता करौलनि आ तकरा बाद माटि पर पानिक जीव के विजय भेल। प्रतिकूल परिस्थिति मे विजय कोना प्राप्त होइ छै, तकर ई कथा अन्यतम उदाहरण अछि। मुदा, हमरा लगैए जे रमानाथ झा आ मधुपजी मे एहि प्रकारक कोनो विभेद नहि छल। एकटा माटिक आ दोसर पानिक जीव होथि, से हम नहि मानै छी, अहूँ सभ नहि मानैत होयब। ई बात सत्य जे एक गोटे केवल गद्य लिखलनि, दोसर केवल पद्य लिखलनि, मुदा ई कोनो विभेद नहि भेलै–इच्छा, रुचि, आकर्षण आदि बहुत कारण होइ छै, जाहि सँ ई अन्तर भेलै। दुनू गोटे मे जे साम्य छलनि, तकरो चर्चा भ' चुकल अछि। दुनू गोटे एक कालक रचनाकार छलाह, समकालीन छलाह, समकालीन दृष्टि सँ रचना केलनि। दुनू गोटे मे आर साम्य की छनि? मोन पड़ैए जे दुनू गोटे अपन रचना तहिये आरंभ केलनि जहिया दुनू गोटे छात्र छलाह। मधुपजी कविता मे शुरु केलनि आ रमानाथ झाक पहिल रचना मैथिली साहित्यक इतिहास छलनि। डॉ० जयकान्त मिश्र अपन पुस्तक मे जे ओकर उद्धरण देलनि अछि ततबे आब हमरा सभ लग उपलब्ध अछि आ ताहि सँ पता चलैए जे हुनकर दृष्टि, हुनकर चिन्तन कतय छलनि। एहि प्रकारेँ देखी तँ साहित्यक स्फुरणक सन्दर्भ मे सेहो दुनू गोटे मे साम्य छलनि।

एम्हर मैथिली साहित्य मे बहुत हर्षजनक बात आबि रहल अछि जे वयोवृद्ध लोक सभक पहिल पोथी प्रकाश मे आबि रहल छनि। सामान्यतः साहित्यक

जन्म किशोरावस्था मे होइ छै। ई दुनू रचनाकार किशोरावस्था मे रचना आरंभ केने रहथि आ दुनूक चिन्ताक केन्द्रमे एक्के टा बात रहनि। मधुपजी के पहिल किताब छनि 'चौंकि चुप्पे'। अपूर्व रसगुल्ला, टटका जिलेबी आदि ओहि कालखंडक रचना छनि। रमानाथ झाक प्रारंभिक लेखन छनि– बिहार मे मैथिली भाषाक स्थान। मैथिली, मिथिला ओ मैथिल। चिन्ता के केन्द्र मे, दुनू गोटे केँ, मिथिला रहनि, मैथिली रहनि। ई ओहि कालक आवश्यकता छलैए। एहि आयोजनक रूपरेखा बनबैत काल हमरा सभक समक्ष ई बात छल जे दुनू गोटे पैघ रचनाकार छथि। मुदा, पैघत्वक मापदण्ड की? हिनका लोकनिक प्रासंगिकता। ओ अपना समयक रचनाकार छलाहे, किन्तु ओ कते कालजयी रचनाकार छथि, से देखब हमरा लोकनिक उद्देश्य छल। जँ ओ कालजयी नहि छथि, अपन समय मे बन्हा क' रहि गेलाह तँ ओ आइ प्रासंगिक नहि छथि, महत्त्वपूर्ण नहि छथि। कतहु ने कतहु आयोजकक मन मे आ दृष्टिकोण मे ई भावना रहलनि अछि। एहि दृष्टि सँ देखी तँ दुनू रचनाकार हमरा लेल महत्त्वपूर्ण छथि आ दुनू मे ने कोनो प्रतियोगिता अछि आ ने विरोध।

एकटा अद्भुत साम्य अछि रमानाथ झा आ मधुपजी मे। रमानाथ झा भाषा पर काज केलनि। भाषाक पर्याय वाणी आ वाक् थिक। वाणी आ वाक् वाचिक भाषा केँ कहल जाइ छै। 'भाषा' सेहो ओकरे रूप थिक। रमानाथ झा वाचिक आ लिखित दुनू भाषा पर गप केने छथि। मधुपजी सेहो केने छथि। मुदा जखन ओ 'चौंकि चुप्पे' आदि लिखै छथि तँ गेबाक लेल, गायन-परम्पराक लेल लिखै छथि। विद्यापतिक जे उद्देश्य छलनि, ताही उद्देश्य सँ प्रेरित भ' क' लिखै छथि। ओकर वाचिक परम्परा केँ आगू बढ़ेबाक लेल लिखै छथि।

एहि संगोष्ठी मे दू प्रकारक आलेख प्रस्तुत कयल गेल अछि। एकटा लिखित आ दोसर मौखिक। जे लिखित प्रस्तुत केलनि हुनको सुनलहुँ, लेकिन ओहि सँ कनेको कमजोर, कनेको कम महत्त्वपूर्ण मौखिक भाषण सेहो नहि रहल अछि। कोनो संगोष्ठीक प्राण ओकर लिखित-आलेख नहि होइ छै, ओ तँ मात्र एकटा आधार प्रस्तुत करै छै। मौखिक विमर्श ओकरा आगाँ बढ़बै छै। एहि आयोजनक एकटा उपलब्धि रहल अछि जे एहि ठाम विचार-विमर्श मौखिक विमर्शक द्वारा आगाँ बढ़ल अछि। ई आयोजन एहि तरहक वातावरण

तैयार केलक जाहि मे विचारक ऊष्मा प्रकट भ' सकय। से सभ गोटे देखलहुँ जे कते वैचारिक ऊष्मा पूरा आयोजन मे प्रकट होइत रहल।

एतबे नहि, एकटा आलेख मे भाइ तारानन्द वियोगी अपन टिप्पणी मे कहने छलाह जे रमानाथ झा स्वप्नद्रष्टा नहि रहथि। स्वप्नद्रष्टाक अर्थ जँ ई होइ छै जे भविष्य केँ देखब, तँ एहि ठाम हमरा एकटा अन्तर्विरोध-सन लगैए जे यदि ओ स्वप्न द्रष्टा नहि छलाह तँ प्रासंगिक कोना छथि? ई बात हमरा बहुत स्पष्ट नहि होइए। दोसर बात, जे तथ्यात्मक विवरण अछि, एकटा आलेख मे– सरिसव पाही मे आयोजित मैथिली साहित्य परिषद्क अधिवेशन मे रमानाथ झा कहने छलाह जे मैथिलीक लेल हम सभ माँग क' रहल छी– अपन लेख मे सेहो ओ लिखित रूप मे माँग केने छथि–जे हमरा वि.वि. मे मैथिलीक पढ़ाइ चाही, आठम अनुसूची मे मैथिली चाही, बी.पी.एस.सी., यू.पी.एस.सी. मे मैथिली चाही– ओ सभ जतेक तरहक माँग छल तकर आइ पूर्त्ति भ' चुकल अछि। तेँ, की मैथिली आन्दोलन के आइ कोनो आवश्यकता नहि रहि गेल अछि? की रमानाथ झाक लेख बेकार भ' गेलै? ओकरा आइ पढ़क कोनो आवश्यकता नहि छै? हम मानै छी जे से बात नहि छैक। आइ मैथिली आन्दोलन के जते आवश्यकता अछि, तकर रूप निर्धारण क' देलनि रमानाथ झा – जखन ओ कहलखिन जे हमरा लेल अधिकार महत्त्वपूर्ण नहि अछि, हमरा लेल कर्त्तव्य महत्त्वपूर्ण अछि। आठम अनुसूची के बाद जे हमर कर्त्तव्य अछि से बढ़ि गेल अछि। एहि कर्त्तव्यक हमरा ज्ञान हो, तकर उल्लेख ओ बहुत पहिनहि क' गेल छथि।

एतबे नहि। मधुपजी सेहो सैह कयलनि। हमर उद्घाटक महोदय उद्घाटन करैत काल कहलनि जे भोजपुरी के गीत आइ बहुत आगू बढ़ि रहल अछि। भोजपुरी फिल्मोक लोकप्रियता आइ बढ़ि गेलैए आ हम पछुआएल छी। मैथिली मे गीत आगाँ नहि बढ़ल अछि से बात नहि छै। फिल्म के माध्यम सँ ओ नहि बढ़ल अछि। किन्तु, मधुपजी फिल्मी भास पर जे गीत लिखलनि की तकरा पाछाँ वैह दृष्टिकोण नहि छलैए जे आइ भोजपुरीबला सभ केँ छनि? हमरा आजुक परिवेश मे एहू पर विचार करक चाही जे भोजपुरी फिल्म मे आ ओकर गीत मे जे अश्लीलता छै, हमरो किछु साहित्यकार बन्धुलोकनि, कखनहु-कखनहु ओहि दिशा मे अग्रसर होइत देखाइत छथि। ओ चाहे भोजपुरी

मे हो वा मैथिली मे, काम्य नहि अछि। लोकप्रियता एकटा मर्यादाक सीमा मे हेबाक चाही। से जखन हेतै तखने हम आगाँ बढ़ि सकब।

मधुपजी पर अपना समय मे आरोप लगलनि जे अश्लील गीत लिखि रहलाह अछि। ओ ततेक डरेलाह जे अपन नाम बदलि लेलनि। चोरा क' एकटा पोथीक प्रकाशन केलनि, जाहि मे अपन नाम ने काशीकान्त मिश्र लिखलखिन ने मधुप, अलि लिखलखिन। छद्मनाम, चोरीक नाम, ई डर छलनिहें। एहि रूपमे मधुपजी काज केने छथि मैथिलीक लेल आ गीतक प्रचार-प्रसार केने छथि।

एकटा बन्धु कहलनि जे मधुप जी के गीत आइ हमरा नहि मोन पड़ैए। हमरा बुझबा मे नहि आबि रहल अछि जे ई मधुपजीक सीमा छियनि आ कि हिनकर सीमा छियनि।

'हम जेबै कुसेसर भोर रँगि क' ठोर'-जे मिथिलाक गाम मे रहल होयत से एहि पांती केँ जरूर सुनने हेतै, आ एकरा मोन रखबाक लेल कोनो रटबाक जरूरति नहि छै। अस्तु।

एकटा महत्त्वपूर्ण बात हमरा देखबा मे आयल अछि-आलोचनाक बदलैत स्वरूप। ई कतेक स्तर पर भेल अछि। पहिने जे आलोचना होइत छल, ओकर रूप छलै- भाषा आ शिल्पक विशेषता, आ ई भेलनि कथ्य। जे आलेख सभ पढ़ल गेल, ताहि मे कतहु सँ अकादमिक समीक्षाक गंध हमरा नहि लागल। अकादमिक समीक्षा सँ फराक जा क' समीक्षा क जे ठोस रूप छै, तकर हमरा प्रमाण भेटल अछि, प्रयोग भेटल अछि आ एहि प्रमाण-प्रयोगक आधार के खुट्टा बना क' हम सभ आगाँ बढ़ि सकै छी।

दोसर जे बात हमरा देखबा मे आयल-पहिलुका आलोचक लोकनि, वक्ता आ भाषणकर्त्ता लोकनि, कोनो भाषण करै छलाह तँ दू डेग, चारि डेग पर संस्कृतक एकटा श्लोक, आचार्य लोकनिक कोनो उक्तिक उद्धरण अवश्य दैत छलाह। एहि संगोष्ठी मे जे आलेख सभ आयल, ताहि मे फूल चन्द्र मिश्र भामहक नाम लेलनि, वैद्यनाथ जी विश्वनाथक नाम लेलनि-एकाध आरो हो तँ हो, मुदा एहि सँ बेसी संस्कृत आचार्यक उद्धरण प्रस्तुत नहि भेल। ठीक एकर विपरीत, अंग्रेजी के बहुत लेखक, आलोचक, विचारक लोकनिक नाम लेल गेल। की एकर ई अर्थ बूझल जाय जे मैथिली आलोचना पंडितक दरबार सँ

अँग्रेजी पढ़ल लोकक खरिहान मे जा रहल अछि? जँ से जा रहल अछि तँ मैथिलीक लेल जते पंडिताम भाषा खराब छलैए, ततबे अंग्रेजियाह आलोचना सेहो हमरा जनैत खराब बात थिक। हमरा मैथिलीक आलोचना चाही। हम मैथिलीक विचारक लोकनिक, कवि लोकनिक उद्धरण किए नहि दैत छिऐक? कोनो एहन बिन्दु नहि छै जाहि पर रमानाथ झा विचार नहि केने छथि, मुदा उद्धरण दैत काल ओ हमरा किए नहि मोन पड़लाह?

रमानाथ झा आ मधुपजी दुनूक शिष्य लोकनि एहि ठाम उपस्थित छथि। शिष्य माने खाली यैह नहि जे ओ हुनका लोकनिक क्लास मे बैसि क' शिक्षा प्राप्त केने होथि। हमर तात्पर्य अछि-हुनकर मान्यता, परम्परा केँ आगाँ बढ़ब' बला लोक सँ। रमानाथ झाक सान्निध्य मे हुनका संग काज कर' बला लोक- पं० गोविन्द झा, डॉ० जयधारी सिंह, डॉ० शंकर कुमार झा एहि ठाम उपस्थित छथि। आ ठीक तहिना मधुपजी पर आर सभ चर्चा तँ भेल मुदा ई बात छूटल रहि गेल जे हुनकर सभ सँ पैघ विशेषता छलनि जे ओ आशुकवि छलाह- हुनका मे जे आशुकवित्व छलनि, तकर उल्लेख अनेक ठाम भेटैए। हम आइ भीमनाथ झा मे ओ आशुकवित्व पबै छी। ओ हुनकर शिष्य एहि रूप मे अवश्य छथि। सभकेँ बूझल होयत जे मधुप जी पत्रो पद्ये मे लिखै छलाह। भीमनाथ झा केँ ओ सोलह टा पत्र लिखने छलखिन-पद्य मे - आ भीमनाथ झा ओहि सोलहो पत्रक उत्तर पद्येमे देने छलखिन। ई जे हमर परम्परा अछि, तकर खोज करबाक आवश्यकता अछि।

कोनो पोथीक, कोनो संगोष्ठीक, हमरा जनैत सभ सँ पैघ उपलब्धि ई होइ छै जे- जेना रमानाथ झा आ मधुपजी केँ ल'क' श्रोता वा पाठकक मन मे नाना प्रकारक जिज्ञासा छै, तकर शमन करय, तकर जवाब दिअय। ई संगोष्ठी जिज्ञासाक शमन केलक अछि। संगहि, संगोष्ठीक महत्त्व एहू मे छै जे ओ जिज्ञासा केँ जन्म सेहो देलक अछि। से जन्म प्रत्यक्ष आ अप्रत्यक्ष दुनू रूप मे देलक अछि। जेना, हम सभ विषय रखने छलहुँ-मधुपजीक गीत, मधुपजीक काव्य। रमानाथ झा ई फर्क नहि मानैत रहथि। ओ सभ केँ गीते कहै छथि- प्राचीन गीत, नवीन गीत। ओ काव्य केँ गीते कहलनि। हम सभ एतय गीत पर अलग गप केलहुँ, काव्य पर अलग, जेना दुनूक एक आरि खेत नहि हो। मुदा रमानाथ झा से किए कहलनि अछि? हमरा लगैत अछि जे 'राधाविरह' आ

'मुक्त मधुप' पर जँ आरो विस्तार सँ गप कयल जाइत एहि दृष्टिकोणक मादे तँ बेसी नीक बात होइत।

अन्त मे कहब जे संगोष्ठीक जे एकटा पूर्व प्रारूप हमरा मैथिली जगत मे उपलब्ध छल, ताहि सँ ई संगोष्ठी हमरा कनेक फराक लागल अछि। आलेख पढ़ल गेल, सत्यनारायण कथा सुनि लेलहुँ, घर गेलहुँ–से बात नहि भेल अछि। विमर्शक एहि ठाम दोसर रूप देखार भेल अछि। जे आलेख पढ़लनि से जेना डॉक मे ठाढ़ छथि, अनेक-अनेक प्रश्न उठि रहल छै– एहि संगोष्ठीक एकटा ईहो उपलब्धि रहल अछि, जे एहि मे प्रश्नक माध्यम सँ संगोष्ठी कें आगाँ बढ़ाओल गेल अछि। अशोकजी अपन संचालन मे बेर-बेर कहलनि जे एकटा तार्किक परिणति पर संगोष्ठी पहुँचय। हमरा लगैए जे ईहो एकटा 'पायस-विस', शुभाकामना, भ' सकैए। आलेख, विमर्श आ तकर तार्किक परिणति– आ ई कहब जे एकर यैह परिणति छै, आब अंत भ' गेल से प्राय: संभव नहि होइ छै। प्रक्रिया यैह थिक जे विमर्श जारी रहय। ओ चलैत रहय। आ ताहि दृष्टिकोण सँ ई विमर्श चलैत रहय–तकर इच्छा आ आवश्यकता ई संगोष्ठी अवश्य प्रस्तुत केलक अछि। जन्मशती तँ एकटा बहाना थिक। कोनो जरूरी नहि छै जे रमानाथ झा पर गप करक लेल कोनो बहाना चाहबे करी। हमरा भीतर ई आकांक्षा हेबाक चाही जे कोनो अवसर पर एहन विमर्श हम सभ करी, करैत रही। किरणजी कहने छथि जे कोनो प्रयोग जखन बेर-बेर होइत अछि तँ आगाँ वैह परम्परा बनि जाइत अछि। संगोष्ठीक ई प्रयोग आगाँ अपन परम्परा बना सकय, से कामना अछि।

■

समाचार

रमानाथ और कवि चूड़ामणि काशीकान्त की जन्मशती पर संगोष्ठी 15 से

पटना। मैथिली साहित्य के प्रसिद्ध आलोचक आचार्य रमानाथ झा एवं कवि-गीतकार कवि चूड़ामणि काशीकान्त मिश्र 'मधुप' की जन्मशती के अवसर पर दीपनारायण सिंह क्षेत्रीय सहकारी प्रबन्धन संस्थान, पटनामे 15 सितम्बर से तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया है। संगोष्ठी का आयोजन 'प्रतिमान' पटना एवं भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित की गयी है।

संस्था प्रतिमान की ओर से आयोजित संवाददाता सम्मेलन में संगोष्ठी के आयोजक एवं साहित्यकार मोहन भारद्वाज ने यह जानकारी दी। इस मौके पर संस्था के सचिव अशोक एवं कोषाध्यक्ष नरेन्द्र झा उपस्थित थे। श्री भारद्वाज ने कहा कि राष्ट्रीय संगोष्ठी में रमानाथ झा एवं मधुपजी के महत्व और प्रासंगिकता के साथ ही मैथिली आलोचना, मैथिली भाषा, मैथिली गीत एवं मैथिली काव्य पर आलेख-पाठ और विचार-विमर्श होगा। संगोष्ठी में दोनों साहित्यकारों से संबंधित पुस्तिका का भी प्रकाशन होगा। उन्होंने कहा कि संगोष्ठी का उद्घाटन मैथिली साहित्य परिषद् के पूर्व प्रधानमंत्री तथा राजनीतिशास्त्र के विद्वान डा. शंकर कुमार झा करेंगे। विभिन्न सत्रों की अध्यक्षता जाने-माने विद्वान एवं साहित्यकार अरूण प्रकाश, कवि-उपन्यासकार मायानन्द मिश्र, आलोचक डा. जयधारी सिंह, समाजशास्त्री डा. हेतुकर झा, गीतकार रवीन्द्रनाथ ठाकुर तथा कवि-कथाकार जीवकान्त करेंगे।

संस्था के सचिव अशोक ने कहा कि संगोष्ठी में कई साहित्यकारों द्वारा आलेख भी प्रस्तुत किया जाएगा।

इसमें प्रसिद्ध आलोचक मोहन भारद्वाज, डा. भीमनाथ झा, रामलोचन ठाकुर, डा. विभुति आनन्द, डा. फूलचन्द मिश्र 'रमण', डा. नारायणजी, डा. देवशंकर नवीन, डा. तारानन्द वियोगी, नवीन चौधरी, श्रीधरम्, रमण कुमार सिंह

एवं डा. देवकान्त मिश्र शामिल है। इसके अलावा उषा किरण खान, उदय चन्द्र झा 'विनोद' साकेतानन्द, महाप्रकाश, गौरीनाथ, पंकज पाराशर, अशोक कुमार मेहता, ज्योत्सना चन्द्रम, मंजर सुलेमान, सत्यनारायण मेहता, सुकान्त सोम, वन्दना झा, अभय यादव, अरविन्द अक्कू एवं छत्रानन्द सिंह झा भी अपने विचार रखेंगे।

दैनिक आज-14-9-2006

National Seminar : Cultural group Pratimaan has organised three-day national seminar on the contributions of literary critics in Maithili language Acharya Ramanath Jha and Kashikant Mishra, who were born respectively on September 21 and Otober 2. The national seminar would begin from September 17 in Deep Narayan Singh Kshetriya Sahakari Prabandh Sansthan, Shastrinagar, Patna

Times of India 14-9-06

भारतीय भाषा संस्थान मैसूर और प्रतिमान पटना के तत्वावधान में आचार्य रमानाथ झा एवं कवि चूड़ामणि काशीकान्त मिश्र 'मधुप' का जन्मशती के अवसर पर दीप नारायण सिंह क्षेत्रीय सहकारी प्रबंध संस्थान शास्त्री नगर, पटना में राष्ट्रीय संगोष्ठी 11.00 बजे।

राष्ट्रीय सहारा 15.9.06

संगोष्ठी में मिथिला संस्कृति पर चर्चा

प्रतिमान व भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर के संयुक्त तत्वावधान में शुक्रवार को दीप नारायण सिंह संस्थान में आयोजित संगोष्ठी में मिथिला संस्कृति पर जोरदार चर्चा हुयी। यह संगोष्ठी आचार्य रमानाथ झा व कवि चूडामणि काशीकांत मिश्र 'मधुप' के सौवीं जन्मशती के अवसर पर आयोजित की गयी है जो तीन दिनों तक चलेगी। संगोष्ठी का उद्घाटन शंकर कुमार झा ने किया। जबकि अध्यक्षता डा० प्रभाकर झा ने की। इससे पहले कार्यक्रम का संचालन करते हुए प्रतिमान के सचिव अशोक ने आचार्य रमानाथ झा को मैथिली साहित्य का महान आलोचक बताया और कहा कि रमानाथ झा यथार्थवादी ब्राह्मण समाज से अधिकतर दूर नही जा पाये क्योंकि उनके दृष्टिकोण से हर जगह सहमत

होना जरूरी नहीं, उनके लेखन में समाज नहीं शासक वर्ग का रूप दिखता था। इस अवसर पर श्रीधरम ने रमानाथ झा के बारे में कहा कि वे अंग्रेजी पढ़ रहे थे, पर उनके चिंतन में यथार्थवाद रहता था। वहीं मोहन भारद्वाज ने कहा कि कवि काशीकांत मिश्र 'मधुप' आधुनिक कविता को मोड़ देने वाले में से सबसे साफ कवि माने जाते हैं। स्व० मधुप की अन्तिम कविता 'घसल अठन्नी' बहुत ही प्रचलित व सफल कविता है। इस दौरान संगोष्ठी मे मैथिली किताब का बुक स्टाल भी पहली बार लगाई गई। संगोष्ठी में रामलोचन ठाकुर, महेन्द्र मलंगिया, प्रो. मायानंद मिश्र, डा. भीमनाथ झा, रविन्द्र नाथ ठाकुर, प्रो. उमाकांत, डा. विभूति आनंद और मत्रेश्वर झा सहित अन्य साहित्यकार व शीर्ष मैथिली के विद्वान मौजूद थे।

दैनिक जागरण 16.9.06

रमानाथ झा ने मैथिली को रिप्रोड्यूस किया : प्रभाकर

पटना : मैथिली के पहले आलोचक माने जानेवाले रमानाथ झा की दृष्टि केवल प्राचीन साहित्य को क्लासीफाइ करने तक ही सीमित नहीं थी बल्कि उन्होंने इसको मोडिफाइ भी किया। प्रख्यात भाषाविद लेखक प्रभाकर झा ने शुक्रवार को रमानाथ झा व काशीकांत मधुप की जन्मशती पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में मैथिली भाषा को उनके अवदान के बारे में कहा कि जब मैथिली में लिखने की परंपरा नहीं थी, एक ही लेख मे तीन तरह की मैथिली प्रयुक्त होती थी और जब यह अभी बोली ही थी, इसे भाषा के रूप में मान्यता नहीं दी जा रही थी, इस ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य मे रमा बाबू ने इसे एकरूपता दी। इसमें लिखने की नीवं डाली। वास्तव में उन्होंने इसे रिप्रोड्यूस किया। झा ने वर्तमान मैथिली परिप्रेक्ष्य पर चिंता जताते हुए कहा कि इस भाषा में प्रिंट कल्चर नहीं है। यहाँ किताबें तो छपती हैं, मगर कोई अखबार इस भाषा में नहीं है। संगोष्ठी में देश के जानेमाने मैथिली बुद्धिजीवियों ने अपने विचार रखें। कार्यक्रम की शुरूआत महेन्द्र झा के स्वागत गान से हुई। इसके बाद शंकर कुमार झा ने उद्घाटन वक्तव्य रखा। उन्होंने कहा कि मैथिल साहित्य आज जो है वह

रमानाथ बाबू के बगैर नहीं हो सकता था। रमा जी ने शोध करके इस भाषा के प्राचीन गौरव को निकाल कर नये संदर्भों से जोड़कर नयी पीढ़ी के सामने रखा। प्रख्यात मैथिली आलोचक मोहन भारद्वाज ने रमा बाबू के समीक्षा, संपादन, अनुवाद आदि पक्षों को रेखांकित किया। उन्होंने बताया कि मैथिली मे उनके पहले गद्य की परंपरा नहीं मिलती, मगर रमाबाबू ने इसकी परंपरा डाली। गद्य के लिए भाषा को व्यवस्थित किया, उनका विशेष योगदान विद्यापति साहित्य को परिभाषित करने, प्रकाश मे लाने और उसकी व्याख्या करने की है। गोष्ठी में आये मुख्य लोगों में डॉ० भीमनाथ, डॉ० विभूतिआनन्द, डॉ० देवशंकर नवीन, महेन्द्र मलंगिया, मंत्रेश्वर झा, गोरीनाथ, रमण सिंह, पंकज पराशर, श्रीधरम व कर्मेंदु शिशिर आदि शामिल थे। अध्यक्षता रमा बाबू के नाती प्रभाकर झा ने की और संचालन अशोक जी ने किया।

प्रभात खबर 16.9.06

मैथिली साहित्य के दो मनीषियों पर गर्व है पूरे राष्ट्र को

पटना। मैथिलीके अनन्य समालोचक समीक्षक यशस्वी साहित्यकार आचार्य रमानाथ झा और मैथिली गीति काव्य के यशस्वी साहित्यकार कवि चूड़ामणि काशीकान्त मिश्र 'मधुप' की जन्मशती समारोह पर तीन दिनों का राष्ट्रीय संगोष्ठी भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर और मैथिली साहित्यक पत्रिका 'प्रतिमान' के संयुक्त तत्वावधान में दीपनारायण सिंह सहकारिता प्रबन्धन प्रशिक्षण संस्थान शास्त्रीनगर के सभागार में आज से आरंभ हुआ। संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए मिथिला विश्वविद्यालय के पूर्व मैथिली विभागाध्यक्ष डा. शंकर झा ने कहा कि आचार्य रमानाथ झा को विद्यापति समग्र का गहन अध्ययन था। विद्यापति के पदों में व्यक्त शब्दों का कोश आचार्य रमानाथ झा का अतिविशिष्ट योगदान है मैथिली साहित्य को। डा. शंकर कुमार झा ने मधुपजी को सम्पूर्ण कार्य के रूप में व्यक्त करते हुए कहा कि उनकी रचनामें फिल्मी गीतों कीं ओर से ध्यान खींचकर मैथिली गाने की ओर करने की क्षमता थी। इसीलिए मैथिलीके परम यशस्वी गीतकार के रूप में लोकप्रिय हुए मधुपजी। मधुपजी और आचार्य रमानाथ झा दोनों सकारात्मक भावके व्यापक दृष्टिकोण

वाले विद्वान थे। डा. शंकर कुमार झाने उन दोनों की अप्रकाशित कृतियों की जन्मशती वर्षके अवसर पर प्रकाशित करने की आवश्यकता बतायी। आचार्य रमानाथ झा के महत्व पर आलेख पाठ करते हुए समालोचक मोहन भारद्वाज ने आचार्य रमानाथ झा को समालोचकों एवं समीक्षकों के महान प्रेरणास्रोत के रूप में व्यक्त किया। भारद्वाज ने कहा कि आज से 75 वर्ष पूर्व रमानाथ झा की उक्ति थी 'भारतीय कहयबा सँ पूर्व मैथिल कहाएव आवश्यक अछि।' आचार्य रमानाथ झा आर्थिक भौतिक उन्नति को नहीं विद्या वैभव, आचार विचार को महत्व देते थे।

सभ्यता और संस्कृति के विकास को समर्पित रहे रमानाथ झा। संगोष्ठीकी अध्यक्षता करते हुए कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय अमेरिका में अंग्रेजी के यशस्वी विद्वान आचार्य रमानाथ झा के दौहित्र डा. प्रभाकर झा ने मैथिली के वर्तमान में प्रिंट कल्चर अभाव पर चिन्ता व्यक्त करते हुए कहा कि मैथिली के क्लासीफिकेशन की नहीं कोडीफिकेशन करने की जरूरत है। डा. प्रभाकर झा ने कहा कि कल्चरल नेशनालिज्म समाज के आन्तरिक विषमता को दूर करके सांस्कृतिक अस्मिताको स्थापित करने की कोशिश करता है। एक समयमें हरिमोहन झा जैसे कथाकार यात्रीजी जैसे कवि और रमानाथ झा जैसे गद्यकार के अवदानों से वह बहुत अधिक प्रेरणादायक युग हुआ। इस अवसर पर यशस्वी विद्वान डा. भीमनाथ झा, डा. फूलचन्द्र मिश्र रमण, कथादेश के उपसंपादक श्रीधरम, मायानन्द मिश्र, महेन्द्र मलंगिया, कर्मेन्दु शिशिर, डा. विभूति आनन्द, शरदेन्दु चौधरी, मन्त्रेश्वर झा, नारायणजी झा सहित राज्य के विभिन्न जिलों से मैथिली के विद्वान ने विचार रखें संचालन कथाकार अशोक कुमार झा ने किया।

दैनिक आज 16.9.06

रमानाथ झा व 'मधुप' के जन्मदिन पर संगोष्ठी

पटना, 15 सितम्बर। प्रतिमान एवं भारतीय भाषा संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में आज आचार्य रमानाथ झा और कविचूड़ामणि काशीनाथ मिश्र 'मधुप' के जन्मदिन पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

दीप नारायण सिंह क्षेत्रीय सहकारी प्रबंध संस्थान में आयोजित इस संगोष्ठी में मोहन भारद्वाज, श्री धरम, भीमनाथ झा एवं रमण कुमार सिंह ने आलेख पाठ किया। संगोष्ठी में स्वागत डा. प्रभाकर झा एवं अध्यक्षता मायानंद मिश्र ने की। संगोष्ठी में वक्ताओं ने उनके व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला।

राष्ट्रीय सहारा 16.9.06

रमा बाबू की आलोचना दृष्टि को विस्तार देने की जरूरत : जयधारी सिंह

पटना : शिक्षाविद् जयधारी सिंह ने कहा कि मैथिली साहित्य में आलोचना की भाषा व सिद्धांत आज बदल चुका है। ऐसे में रमानाथ झा की आलोचना दृष्टि को आज विस्तार देने की जरूरत है। श्री सिंह शनिवार को दीप नारायण सिंह प्रबंध संस्थान में आयोजित त्रिदिवसीय रमानाथ झा व काशीकांत मिश्र जन्मशती समारोह में बोल रहे थे। राष्ट्रीय भाषा परिषद्, मैसूर व प्रतिमान, पटना के संयुक्त तत्वावधान में रमानाथ झा व मैथिली आलोचना विषय पर आयोजित संगोष्ठी में मुख्य आलेख देवशंकर नवीन, ताराकांत वियोगी, रामलोचन ठाकुर व विभूति आनंद ने पढ़ा। वियोगी ने कहा कि रमा बाबू सिर्फ मैथिली ही नहीं, बल्कि संपूर्ण भारतीय साहित्य के लिए अनुसरणीय हैं।

प्रभात खबर 17.9.06

'मैथिली भाषा' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

पटना (सं. सू.)। प्रतिमान व भारतीय भाषा परिषद्, मैसूर के तत्वावधान में 'आचार्य रामनाथ झा एवं मैथिली भाषा' विषय पर तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी दीप नारायण सिंह सहकारी प्रबंध संस्थान के सभागार में आयोजित किया गया। संगोष्ठी की अध्यक्षता डा. जयधारी सिंह ने की। इस अवसर पर डा. तारानन्द वियोगी ने कहा कि रामनाथ झा की आलोचना भाषा इतनी जीवंत एवं स्पंदनशील है कि यह मैथिली ही नहीं सम्पूर्ण भारतीय साहित्य के लिए अनुसरणीय है। इस मौके पर डा. देवशंकर नवीन, प्रो. हेतुकर झा, रामलोचन

ठाकुर, डा. विभूति आनन्द, महेन्द्र मलंगिया, डा. भीम नाथ झा, डा. बासुकी नाथ झा, डा. प्रभाकर झा, उमाकांत, डा. विरेन्द्र झा आदि उपस्थित थे।

हिन्दुस्तान 17.9.06

Birth Centenary : At a function held to celebrate the birth centenary of Maithili writers, Ramanath Jha, and Kashi Nath Mishra 'Madhup' on Saturday, discussions were held on the topics, "Ramnath Jha and Maithili criticism" and "Ramanath Jha and Mathili language. Pratiman, Patna, and Bharatiya Bhasha Sasthan, Mysore, jointly organised the function.

Times of India 17.09.06

Birth Centenary celebration

THE POETRY of Pandit Kashikant Mishra 'Madhup' was marked by expression of realism, struggle and hope, saidspeakers at a three-day birth centenary celebration of Acharya Ramanath Jha and Pandit Kashikant Mishra 'Madhup', jointly organised by literary outfit Pratiman and Central Institute of Indian Languages, Mysore.

Hindustan Times 19.09.06

समापन

पटना : साहित्यिक संस्था प्रतिमान एवं केन्द्रीय भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित त्रिदिवसीय आचार्य रामनाथ झा एवं पं० काशीकांत झा मधुप जन्मशती समारोह समाप्त हो गया। अध्यक्षता वरिष्ठ साहित्यकार पं० गोविन्द झा ने की। दैनिक जागरण 19.09.06

मधुप की काव्य परंपरा ही मिथिला की काव्य परंपरा

पटना : पं० काशीनाथ मिश्र मधुप जनसरोकारो से आबद्ध कवि-गीतकार थे। उनकी रचनाओं में जीवन का यथार्थ, संघर्ष और आशा समकालीन संदर्भों में अभिव्यक्त हुआ है। मधुप की काव्य परंपरा ही मिथिला की मौलिक काव्य परंपरा है, जिसका विस्तार करने की, आज सख्त आवश्यकता है। उक्त बातें गत रविवार को साहित्यिक संस्था प्रतिमान और केन्द्रीय भारतीय भाषा संस्थान मैसुर के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित त्रिदिवसीय आचार्य रमानाथ झा और

पं. काशीकांत मिश्र मधुप जन्मशती समारोह के अंतिम दिन मधुप के गीत व कविता पर विस्तार से चर्चा की गयी। इस अवसर पर प्रथम सत्र की अध्यक्षता, गीतकार रविन्द्रनाथ ठाकुर ने की जबकि आलेख पाठ नवीन चौधरी व डा. नारायण ने किया। प्रतिमान के सचिव अशोक ने संचालन किया। इसमें भाग लेने वालों में मोहन भारद्वाज, डा. देवशंकर नवीन, अजित कुमार आजाद, अशोक कुमार मेहता, वैद्यनाथ मिश्र, पं. गोविन्द झा, डा. फूलचन्द मिश्र व देवकांत मिश्र सहित अनेक लोगों के नाम शामिल है।

प्रभात खबर 19.09.06

मैथिली साहित्याकाश में एक रचनात्मक पहल

अरुण नारायण

पिछले दिनों साहित्य के दो महत्वपूर्ण स्तंभ–आचार्य रमानाथ झा और कवि चूड़ामणि काशीकान्त मिश्र 'मधुप' के जन्माशताब्दी समारोह के बहाने उन पर एक राष्ट्रीय सेमिनार प्रतिमान पटना और भारतीय भाषा संस्थान मैसूर द्वारा आहूत किया गया। तीन दिन तक चले इस राष्ट्रीय स्वरूप के आयोजन में कुल 6 सत्र थे जिसमें दर्जनों वक्ताओं ने लिखित और मौखिक संभाषण दिए। पहले दिन का पहला सत्र का विषय था–'रमानाथ झा का महत्व।' इस सत्र की अध्यक्षता रमानाथ झा के नाती प्रभाकर झा ने की और आधार वक्तव्य मोहन भारद्वाज और श्रीधरम ने पढ़ा। दूसरा सत्र कवि चूड़ामणि काशीकान्त मिश्र 'मधुप' के महत्व पर केन्द्रित था जिसकी अध्यक्षता मायानंद मिश्र ने की और आधार वक्तव्य डा. भीमनाथ झा और युवा कवि रमण कुमार सिंह ने पढ़ी। आयोजन का दूसरा दिन रमानाथ झा पर केन्द्रित था। पहले सत्र का विषय 'रमानाथ झा और मैथिली आलोचना' था, जिसकी अध्यक्षता डा. जयधारी सिंह ने और आधार वक्तव्य डा. देवशंकर नवीन और तारानंद वियोगी ने पढ़ा। दूसरे सत्र का विषय–'रमानाथ झा और मैथिली भाषा' था जिसकी अध्यक्षता हेतुकर झा ने और आधार वक्तव्य रामलोचन ठाकुर और विभूति आनंद ने पढ़ा। आयोजन का तीसरा दिन काशीकान्त मिश्र मधुप के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर केन्द्रित था। पहले सत्र

का विषय था–'मधुप और मैथिली'। इस सत्र की अध्यक्षता रवीन्द्र नाथ ठाकुर ने और आधार वक्तव्य नवीन चौधरी और नारायण जी ने पढ़ा। दूसरा सत्र 'मधुप और मैथिली काव्य' पर फोकस था जिसकी अध्यक्षता गोविंद झा ने और आधार वक्तव्य डा. फूलचंद मिश्र रमण और मधुप के बेटे देवकांत मिश्र ने पढ़ा।

मैथिली साहित्य के सभी लोग इस बात को स्वीकार करते हैं कि रमानाथ झा से ही मैथिली भाषा में आलोचना की शुरूआत हुई। वे पहले आलोचक थे जिन्होंने मैथिली साहित्य के शुरूआती दौर में पाठ्य निर्धारण किया और पाठ्य पुस्तकों की शुरूआत की। साहित्य अकादमी में मैथिली के वे पहले प्रतिनिधि थे जिन्होंने अनुसंधान और शोध पक्ष की एक मजबूत परम्परा शुरू की। मैथिली भाषा में इतने महत्वपूर्ण पक्ष की शुरूआत चंदा झा ने गिर्यसन के साथ मिलकर की थी और उसे व्यवस्थित किया रमानाथ झा ने।

गोष्ठी में मुद्दे बहुत उभरे, पक्ष और विपक्ष दोनों ही तरह के। तारानंद वियोगी के आलेख में रमानाथ की विशेषताओं को बिंदुवार रूप में बड़े सटीक ढंग से दर्शाया गया था। श्रीधरम की असहमति में उतनी व्यापक पड़ताल न थी उनका आलेख ऊपरी तौर पर काफी विचारोत्तेजक लगा लेकिन वह सीमित निष्कर्षों पर ही आधारित था। आलोचक मोहन भारद्वाज ने रमानाथ झा के महत्व को बेशक स्थापित किया लेकिन कई बिन्दुओं पर अपनी असहमति भी जतायी।

कवि चूड़ामणि काशीकान्त मिश्र 'मधुप' आधुनिक मैथिली काव्य के पुरोधा के रूप में स्थापित हैं। मैथिली की जो कविता परम्परा और प्रगति की सीमा रेखा पर ठहरी थी उन्होंने उसे उस जकड़बंदी से उबारा। उनकी 'घसल अठन्नी जैसी वाम चेतना से लैस कविता की आज भी कोई सानी नहीं। गोष्ठी में फूलचन्द्र मिश्र रमण ने ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में रचनाकार को देखने की जो साहित्यिक पहल कदमी की वह महत्वपूर्ण थी। उन्होंने मधुप के काव्य कर्म पर कई मौलिक स्थापनाएँ रखीं। नवीन चौधरी ने भी मधुप के गीत वाले पद की गहन पड़ताल की।

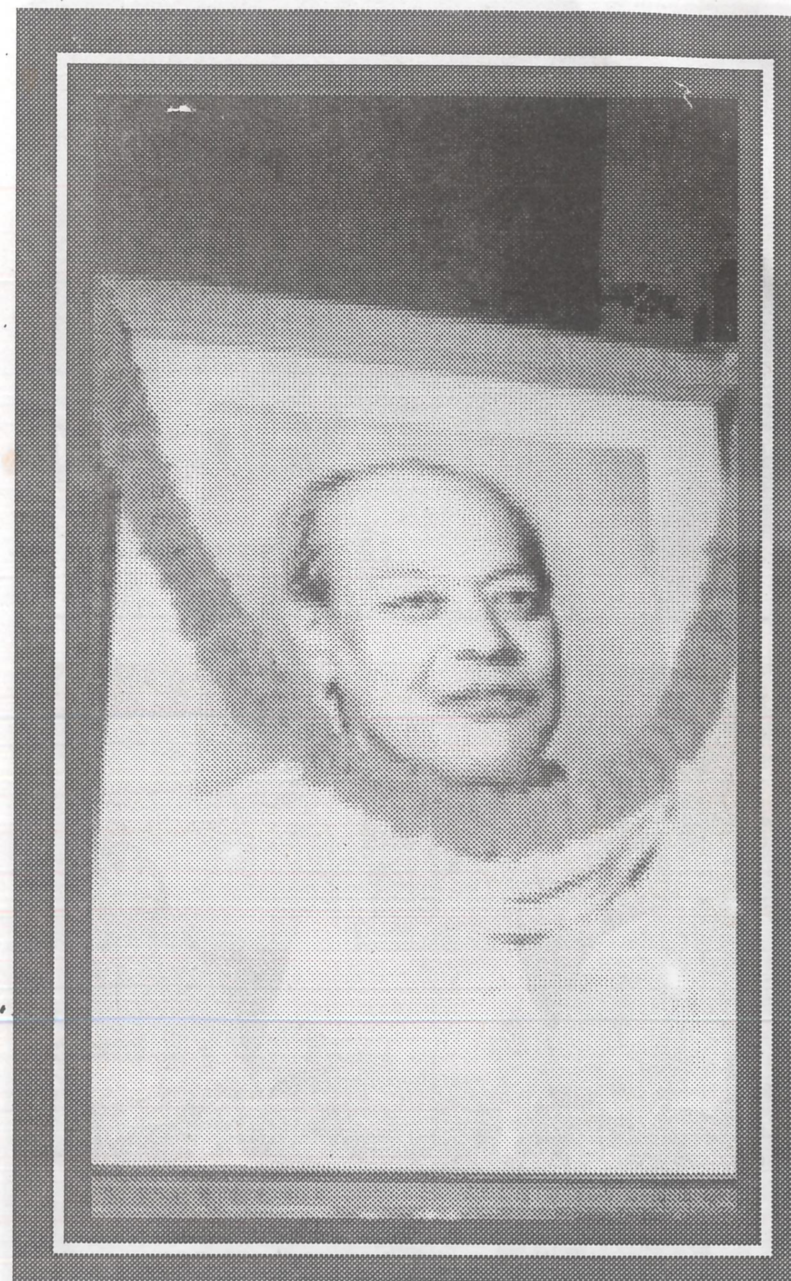
यह गोष्ठी कई मायने में मैथिली में अब तक हुई गोष्ठियों से भिन्न थी। अब तक मैथिली की साहित्यिक गोष्ठियों का स्वरूप या ट्रेन्ड यह रही है कि रस्म अदायगी के तौर पर पर्चे पढ़े गए और उस पर थोडी बहुत टिका-टिप्पणी

हुई और गोष्ठी सफल मान ली गई। प्रतिमान के इस आयोजन ने अरसे से चली आ रही इस जड़ता को न सिर्फ तोड़ा अपितु गोष्ठी में लिखित और हस्तक्षेप करने वाले दोनों ही किस्म के वक्ताओं ने अपने जो अदीठ विचार व्यक्त किये और उससे बहस मुबाहिसा का जो स्वरूप खड़ा हुआ– वह अद्‌भुत था। इस बाबत प्रतिमान के सचिव और मैथिली के महत्वपूर्ण कथाकार अशोक कहते हैं–'अभी तक मैथिली में जो सेमिनार होते थे वे व्यक्ति प्रभावित थे। गोष्ठियों में पढ़ने और सुनने की एक जटिल उबाऊ प्रक्रिया का चलन था। प्रतिमान इस उबाऊ प्रक्रिया से इतर एक स्वस्थ संवाद की प्रक्रिया में विश्वास रखती है और इस संवाद की प्रक्रिया तक वाद-विवाद के फलस्वरूप ही पहुँचा जा सकता है।'

इस गोष्ठी को वाद-विवाद और संवाद की शुरूआत कह सकते हैं लेकिन उसका जो अपना एक अनुशासन चाहिए, उसका यहाँ अभाव था। गोष्ठी को अग्निपुष्प, गौरीनाथ, पंकज पराशर, अजित आजाद, मेघन प्रसाद, अशोक कुमार मेहता, वैद्यनाथ मिश्र, प्रतिमा झा, उषाकिरण खान, उमाकांत, डा. पन्ना झा, डा. वीरेन्द्र झा, कमल मोहन चुन्नू और दमन कु. झा ने भी अपने हस्तक्षेप से महत्वपूर्ण बनाया।

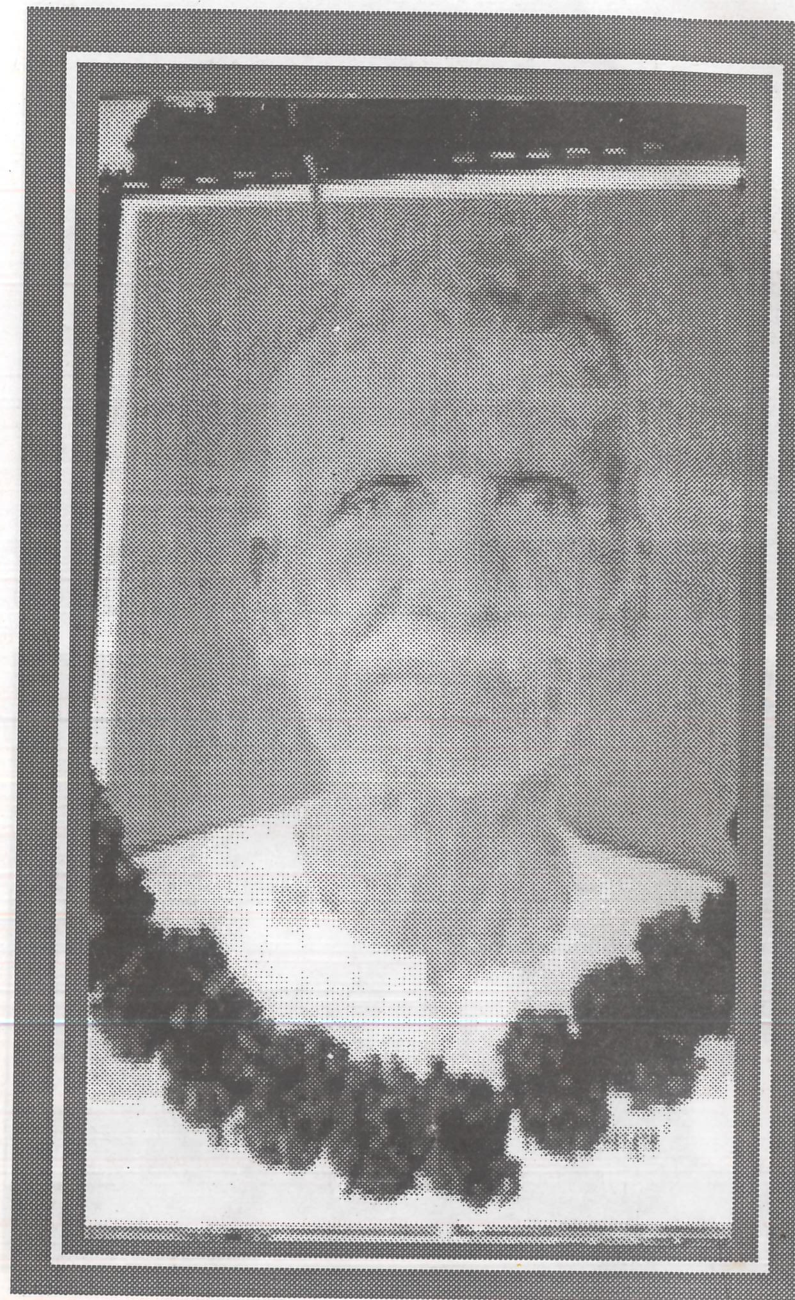
दैनिक हिन्दुस्तान 29.09.06

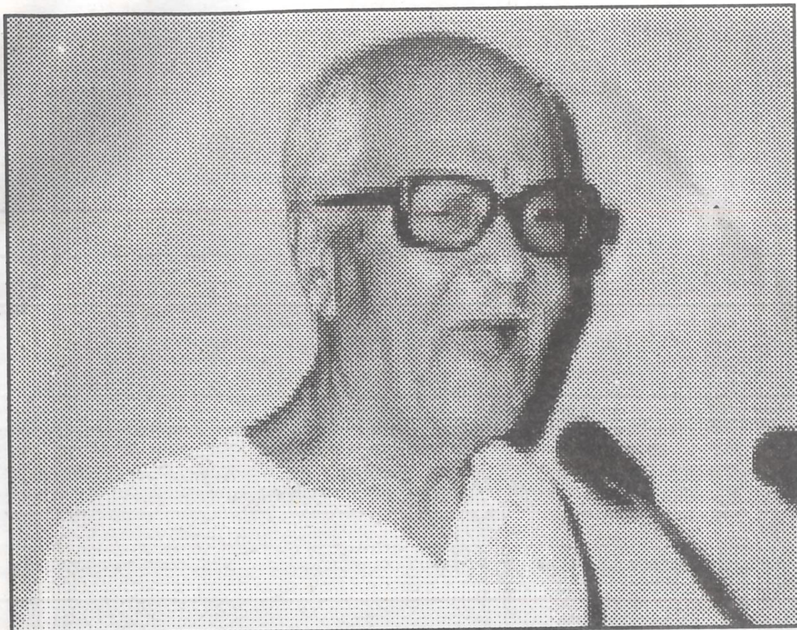
■







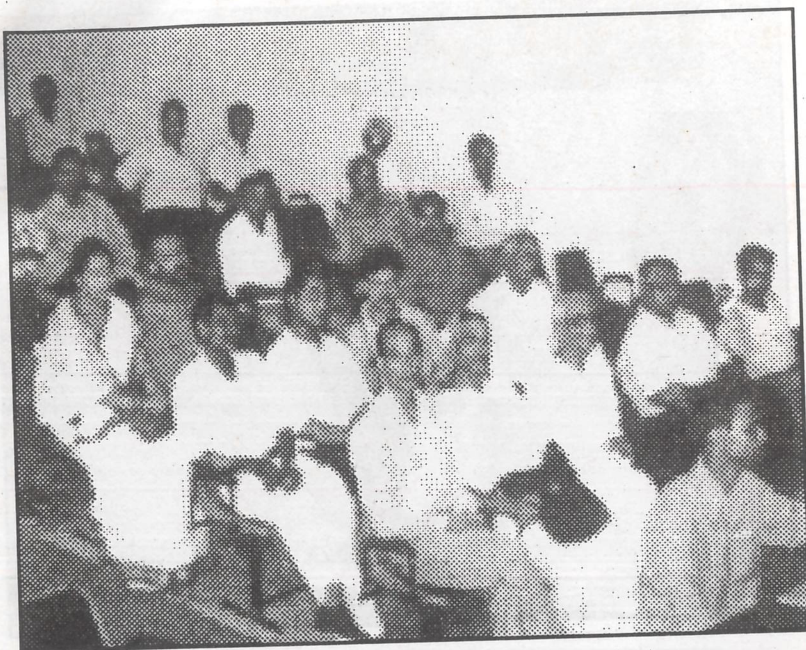














प्रतिमान द्वारा आयोजित
समारोहक अन्य कृति
किरण
सम्पादक : मोहन भारद्वाज

प्रकाशक : अशोक, सचिव, प्रतिमान
मुद्रक : सरस्वती प्रेस, पटना, 9304625963